

A Descriptive Catalogue
of
The Sanskrit Manuscripts,

acquired for and deposited in the
Sanskrit University Library (Sarasvati Bhavana), Varanasi,
during the years 1791-1950

Volume VII

PŪRVOTTAR-MĪMĀṂSĀ AND SĀṂKHYA-YOGA MSS.

Compiled by the
Staff of the Manuscripts Section of the
Sanskrit University Library, Varanasi,

1961

PUBLISHED BY THE DEPARTMENT OF PUBLICATIONS, SANSKRIT UNIVERSITY,
VARANASI (INDIA).

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS, VARANASI.

वाराणसेयसंस्कृतविश्वविद्यालयस्थ-
सरस्वतीभवनपुस्तकालये

ख्रिस्तीय १७९१ तमवर्षात् १९५० तमवर्षपर्यन्तं सङ्गृहीतानां
हस्तलिखितसंस्कृतग्रन्थानां

विवरणापञ्जिका

तस्या अयं

साङ्ख्य-योग-पूर्वोत्तरमीमांसाग्रन्थनामसङ्ग्रहात्मकः

सप्तमो भागः

वाराणसेयसंस्कृतविश्वविद्यालयस्थ-
सरस्वतीभवनाख्यपुस्तकालयहस्तलिखितविभागसंवद्धविद्वद्भिः
सम्पादितः
१८२२तमे शकाब्दे।

The first four volumes of the Catalogue of the Manuscripts preserved in the Sarasvati Bhavan Library of the Government Sanskrit College, Varanasi were published before establishment of the Vārāṇaseya Saṁskṛta Viśvavidyālaya on March 22, 1958. Now the said Viśvavidyālaya has taken up the same work and as such it has been continued with Vol. V with necessary modifications.

Users of this catalogue are requested to take note of the fact that in a large number of cases it so happens that manuscripts of more than one work are included in a single codex. In respect of such codices we have entered the title of the first MS. in the second column and have mentioned the others in the last one. In the alphabetical index, all titles mentioned in either of the two columns have been included. This being such they need not be amazed if they find in the index some titles of subjects, other than Vedānta, Mīmāṃsā and Sāṁkhya-Yoga. It is proposed to include all such titles in appropriate subsequent supplementary volumes.

It is regretted that the number of mistakes in this volume, for one or other reason is large and the users are requested to consult the corrigenda before forming any impression with regard to any item.

The present opportunity is availed of to request the readers and institutions desirous of obtaining volumes of the catalogue of our manuscripts, including those published by the Superintendent of Printing and Stationery, Govt. of U. P., Allahabad, to place their orders with the "Department of Publications. Sanskrit University, Varanasi".

VARANASI,
the 27th January, 1961.

SUBHADRA JHĀ
Librarian,
Sanskrit University.

विषयानुक्रमणिका

| विषयाः | पृष्ठाङ्काः |
|--|-------------|
| १. वेदान्तग्रन्थसूची | २—२०७ |
| २. मीमांसाग्रन्थसूची | २१०—२८५ |
| ३. साङ्ख्ययोगग्रन्थसूची | २८८—३२१ |
| ४. वेदान्तग्रन्थनामाक्षरानुक्रमणिका | १—२३ |
| ५. मीमांसाग्रन्थनामाक्षरानुक्रमणिका | २४—२६ |
| ६. साङ्ख्ययोगग्रन्थनामाक्षरानुक्रमणिका | ३०—३३ |
| ७. शुद्धिपत्रम् | १—७ |

हस्तलिखितग्रन्थविवरणपत्रिकायाः

सप्तमो भागः

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|---------------------|----------------------------|
| २६६९७ | स्वरूपप्रकाशः | सदानन्दः | २ । (गणनया) |
| २६६९८ | वृत्तिनिरूपणम् | | १-९, ११-१९ । |
| २६६९९ | खण्डनखण्डखाद्यटीका | शङ्करः | १-११ । |
| २६७०० | " | | १-२१ |
| २६७०१ | मिथ्यात्वनिरुक्तिः | गोकुलनाथः | १-६ । |
| २६७०२ | पञ्चीकरणवार्त्तिकम् | सुरेश्वराचार्यः | १-९ । |
| २६७०३ | वेदान्तपरिभाषा | धर्मराजाध्वरीन्द्रः | १-२ । |
| २६७०४ | शिवाद्वैतदर्पणम् | शिवयोगीन्द्रः | १-३३ । |
| २६७०५ | आनन्दतारतम्यसमर्थनम् | | १-१४ । |
| २६७०६ | काथबोधविवेकः | सन्तोषानन्दः | ७-२७ । |
| २६७०७ | तत्त्वबोधः | | १-२ । |
| २६७०८ | तत्त्वविवेकटिप्पणम् | | १-७ । |
| २६७०९ | पञ्चपादिकाविवरणोपन्यासः | विनायकः | ३-८, ११-१२, १५-३३, ३६-३७ । |
| २६७१० | पञ्चीकरणवार्त्तिकम् | सुरेश्वराचार्यः | १-९ । |
| २६७११ | " | " | १-९ । |
| २६७१२ | " | " | १-४ । |
| २६७१३ | " | " | १-२ । |
| २६७१४ | " | " | १-४ । |
| २६७१५ | षोडशपदवाक्यार्थः | | १-४ । |
| २६७१६ | ब्रह्मचिन्तनम् | शङ्कराचार्यः | १-२ । |
| २६७१७ | तत्त्वमसिबोधः | " | १-२ । |
| २६७१८ | महावाक्यार्थप्रबोधविधिः | | १ । |
| २६७१९ | " | | १-३ । |
| २६७२० | अनुभूतिप्रकाशः | विद्यारण्यः | १-८, १-८ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|-----------------------------------|
| १२२ × ३७ | ८ | ४८ | दे. ना. | का. | | अपू० | आत्मतत्त्वदर्शननामा १ परिच्छेदः । |
| १०८ × ४९ | ९ | ३५ | " | " | | " | |
| १०३ × ४६ | १३ | ५१ | " | " | | " | शाङ्करीति - नामान्तरम् । |
| १०४ × ३ | ८ | ४९ | " | " | | " | हेत्वाभासनिराकरणविवेकः । |
| १३१ × ५१ | १३ | ६८ | " | " | | पू० | |
| ४५ × ४४ | १२ | २० | " | " | | " | |
| ९७ × ४४ | ९ | २९ | " | " | | अपू० | |
| ८५ × ७ | ११ | १६ | " | " | | पू० | |
| १२६ × ४८ | ९ | ४० | " | " | | " | |
| ९१ × ४९ | ११ | ३४ | " | " | १८८१ | अपू० | |
| १० × ४४ | १३ | ४५ | " | " | | पू० | |
| ९५ × ३८ | ११ | ४३ | " | " | | अपू० | |
| १०५ × ३५ | १० | ५४ | " | " | | " | |
| ८४ × ४४ | ९ | ३० | " | " | | " | |
| ७२ × ४१ | ८ | १५ | " | " | | " | |
| ८२ × ४३ | ८ | २२ | " | " | | " | |
| ७८ × ३९ | १७ | ३७ | " | " | १७३९ श. | " | |
| ८९ × ४७ | १२ | ३१ | " | " | | " | |
| ७४ × ४४ | १२ | २५ | " | " | | " | |
| ८४ × ४ | ८ | ३० | " | " | | " | |
| ७२ × ५ | १२ | २२ | " | " | | " | विचारण्यकृत उपदेशश्च । |
| १९५ × ५ | ४१ | १५ | " | " | | पू० | |
| ७४ × ३६ | ६ | २१ | " | " | | " | |
| ८७ × ४५ | ११ | २४ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------|------------------|-------------------|
| २६७२१ | वाक्यवृत्तिः | शङ्कराचार्यः | १-५ । |
| २६७२२ | पञ्चीकरणवार्त्तिकम् | सुरेश्वराचार्यः | १-७ । |
| २६७२३ | तत्त्वबोधः | | १-७ |
| २६७२४ | अनुभूतिप्रकाशः | विद्यारण्यः | १-२५ । |
| २६७२५ | वेदान्तसारः | सदानन्दः | १-२२ । |
| २६७२६ | वेदान्तसारटीका | नृसिंहसरस्वती | १-९३ । |
| २६७२७ | महावाक्यार्थविवरणम् | | १-३५ । |
| २६७२८ | पञ्चदशी | | ३-१० । |
| २६७२९ | आत्मानात्मविवेकः | | १-२ । |
| २६७३० | वाक्यसुधा | शङ्कराचार्यः | १-८ । |
| २६७३१ | ब्रह्मसूत्रम् | कृष्णद्वैपायनः | १-२३, २३-२४ । |
| २६७३२ | अनुभूतिप्रकाशः | विद्यारण्यः | १-२८ । |
| २६७३३ | वेदान्तप्रक्रिया | | १-८ । |
| २६७३४ | परमहंससमानविधिः | | १-२ । |
| २६७३५ | पञ्चीकरणमहावाक्यार्थः | शङ्कराचार्यः | १६-१७ । |
| २६७३६ | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | " | १-१०१ । |
| २६७३७ | जीवन्मुक्तिप्रकरणम् | " | १-७५ । |
| २६७३८ | वाक्यसुधा सटीका | " | १-६ । |
| २६७३९ | जीवन्मुक्तविवेकः | विद्यारण्यः | ६४-८५ । |
| २६७४० | पञ्चीकरणम् | | १-८ । |
| २६७४१ | वाक्यवृत्तिः | शङ्कराचार्यः | १-४ । |
| २६७४२ | पञ्चदशी सटीका | टी.का. रामकृष्णः | १-१०० । |
| २६७४३ | द्वादशमहावाक्यार्थ- निरूपणम् | शङ्कराचार्यः | १-५२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आश्रयः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|--------|----------|-------------------------|-------------------------|
| ८'३ × ४ | ८ | २० | दे. ना. | का. | | पू० | ११-१२ अध्यायौ । |
| ८'४ × २'४ | ५ | ३० | " | " | | " | |
| ६'२ × ४'१ | ९ | २० | " | " | | " | |
| ६'५ × ५ | ११ | १९ | " | " | | " | |
| ८'५ × ४'५ | १० | २१ | " | " | १७९६ | " | |
| ७'९ × ४'३ | ९ | २३ | " | " | | " | |
| १०'२ × ४'५ | ९ | २६ | " | " | १८०० | " | |
| ८'१ × ३'४ | १० | २६ | " | " | | अपू० | |
| १०'२ × ४'५ | ९ | २४ | " | " | | " | |
| ७'९ × ४'२ | ७ | २० | " | " | १९२२ | पू० | |
| ६'२ × ३'८ | ८ | २२ | " | " | | " | |
| ६'८ × ४'७ | १० | १९ | " | " | | " | १३ अध्यायः । |
| ९'३ × ४'२ | ७ | २५ | " | " | | अपू० | |
| ६ × ४'१ | ९ | १८ | " | " | | पू० | |
| ६'५ × ५ | १० | १९ | " | " | | अपू० | |
| ११'२ × ४'९ | ११ | ४१ | " | " | | पू० | |
| १३'९ × ५'२ | १० | ५२ | " | " | | " | |
| ८'९ × ४'५ | ११ | २८ | " | " | | अपू० | |
| १०'२ × ५ | १२ | ३७ | " | " | | " | |
| ८ × ३'७ | ९ | २४ | " | " | | पू० | |
| ८ × ३'६ | १० | ३० | " | " | | " | |
| १४'२ × ३'२ | १२ | ८५ | वज्र. | " | | " | मोहमर्दनीति टीकानाम । |
| १२'९ × ५'१ | ६ | ३५ | दे. ना. | " | १८८५ | " | परमहंसमार्गनिरूपणं वा । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------------|------------------|---|
| २६७४४ | महावाक्यार्थप्रबोधप्रकारः | शङ्कराचार्यः | १-१२ । |
| २६७४५ | पञ्चीकरणवार्त्तिकम् | सुरेश्वराचार्यः | १-२० । |
| २६७४६ | सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहः | अप्पयदीक्षितः | १-४० । |
| २६७४७ | अद्वैतदीपिकाविवरणम् | नारायणाश्रमः | १-१३६, १-१२०-१३६ । |
| २६७४८ | भामती | वाचस्पतिमिश्रः | २१-८८ । |
| २६७४९ | आत्मानात्मविवेकः | शङ्कराचार्यः | १-१० । |
| २६७५० | " | " | १-१३ । |
| २६७५१ | वाक्यसुधा | | १-१० । |
| २६७५२ | वाक्यवृत्तिः सटीका | टी.का.आनन्दगिरिः | १-६ । |
| २६७५३ | तत्त्वबोधः | | १-५ । |
| २६७५४ | " | | १-६, ६-१५ । |
| २६७५५ | षोडशमहावाक्यस्मरणम् | | १-३ । |
| २६७५६ | " | | १-३ । |
| २६७५७ | " | | १-४ । |
| २६७५८ | द्वादशमहावाक्यसिद्धान्त- विचारः | | १-३३ । |
| २६७५९ | " | | २-१७, १९-४२ । |
| २६७६० | महावाक्यार्थप्रबोध- प्रकारन्याख्या | | १-२ । |
| २६७६१ | महावाक्यसङ्ग्रहः | | १ । |
| २६७६२ | शारीरकमीमांसाभाष्य- रत्नप्रभा | गोविन्दानन्दः | ३-४१, ५३-८८, ८८-१५८ ; १-८२, ८४-१०९ ; १-७९ ; १-१९ । |
| २६७६३ | ब्रह्मसूत्रम् | कृष्णद्वैपायनः | १-१४ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--|
| ६*२ × ३ | ६ | १४ | दे. ना. | का. | | पू० | |
| ४*२ × २*७ | ६ | १० | " | " | | अपू० | |
| ९*७ × ४*४ | ९ | ४३ | " | " | | पू० | १ परिच्छेदः । |
| ११*३ × ६*२ | १० | ३६ | " | " | | " | १-२ परिच्छेदौ । |
| ११*१ × ४*३ | १० | ४६ | वङ्ग. | " | | अपू० | शारीरकमीमांसाभाष्यटीका । |
| ९*७ × ४*१ | ९ | ३२ | " | " | | पू० | |
| १२*६ × ३*२ | ४ | ४४ | " | " | | " | |
| १३*२ × ३*६ | ९ | ७० | " | " | | अपू० | दृग्दृश्यप्रकरणटीका । |
| १२ × ७*४ | १८ | ६४ | दे. ना. | " | १९३० | पू० | " |
| ७*९ × २*९ | ९ | ३९ | " | " | | " | |
| ९*६ × ३*९ | ७ | ३८ | वङ्ग. | " | | " | (१ अध्यायः) प्रणवहृदयं प्रणवा- नुस्मृतिः प्रणवमालामन्त्रः प्रणव- गीता प्रणवाष्टोत्तरशतनाम प्रणव- पोडशनामानि च । |
| ७*७ × ३*६ | ९ | ३० | " | " | | " | कौपीनपञ्चकञ्च । |
| १३*१ × ३*२ | ७ | ४६ | " | " | | " | पञ्चीकरणमहावाक्यार्थविवरणञ्च । |
| १३ × ३*२ | ८ | ६१ | " | " | | " | पञ्चीकरणमहावाक्यार्थविवरणम् । सन्ध्योपनिषत् शङ्कराचार्यचाण्डा- ल्योः संवादश्च । |
| १० × ४*३ | ९ | ३६ | दे. ना. | " | १७२१ | " | |
| ९*९ × ३*९ | ७ | ३६ | " | " | १७६२ | अपू० | |
| ११*६ × ३*८ | ६ | २४ | वङ्ग. | " | | पू० | |
| ७*२ × ९*९ | २९ | २० | " | " | | " | शुकाष्टकञ्च । |
| १०*८ × ४*८ | १३ | ४१ | दे. ना. | " | | अपू० | ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यटीका । |
| ७*२ × ४*६ | ११ | २३ | " | " | | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------|--|-------------------|
| २६७६४ | ब्रह्मचिन्तनम् | शङ्कराचार्यः | १-९ । |
| २६७६५ | " | " | १-२ । |
| २६७६६ | " | " | १-६ । |
| २६७६७ | पञ्चीकरणवार्त्तिकम् | सुरेश्वराचार्यः | १-९ । |
| २६७६८ | " | " | १-६ । |
| २६७६९ | " | " | ४-९ । |
| २६७७० | पञ्चीकरणमहावाक्य- सिद्धान्तः | शङ्कराचार्यः | १-५ । |
| २६७७१ | पञ्चीकरणटीका | | १-३ । |
| २६७७२ | पञ्चीकरणम् | | १-२ । |
| २६७७३ | वेदान्तसारः | सदानन्दः | १-१४ । |
| २६७७४ | वेदान्तोपदेशः | अद्वैतानन्दः | १-१८ । |
| २६७७५ | व्याससूत्रं सभाष्यम् | भा. का. नागोजिभट्टः | १-६१ । |
| २६७७६ | अद्वैतमकरन्दः सव्याख्यः | लक्ष्मीधरकवीन्द्रः, व्या.का.स्वयम्भ्र- काशयतिः | १-१३ । |
| २६७७७ | अपरोक्षानुभूतिः | शङ्कराचार्यः | १-१९ । |
| २६७७८ | अनुभूतिप्रकाशिका | विचारयण्मुनिः | १-२४ । |
| २६७७९ | वेदान्तकल्पतरुः | अमलानन्दः | २-२८ । |
| २६७८० | शाङ्करभाष्यटीका | आनन्दगिरिः | १-२ । |
| २६७८१ | दृग्दृश्यप्रकरणम् | शङ्कराचार्यः | १-९ । |
| २६७८२ | ब्रह्मामृतचन्द्रिका | जयकृष्णब्रह्ममुनिः | १-१४ । |
| २६७८३ | अद्वैतसिद्धिः | | १-१३ । |
| २६७८४ | वेदान्तसंज्ञाप्रकरणम् | | १-१५ । |
| २६७८५ | पञ्चीकरणवार्त्तिकम् | सुरेश्वराचार्यः | २-११ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|------------------------------|
| ६'४ × ४'४ | ७ | १५ | दे. ना. | का. | १७९४ श. | पू० | |
| विभिन्नः | ४२ | १९ | " | " | | " | |
| ६'४ × ४'४ | ११ | १६ | " | " | | " | |
| ६'२ × ४'४ | ७ | १८ | " | " | १९२९ | " | |
| ६'४ × ४'४ | १० | १६ | " | " | | " | |
| ९'८ × ३'६ | ६ | ३१ | वज्र | " | | " | |
| ६'२ × ४'४ | ७ | १६ | दे. ना. | " | | " | |
| १२'५ × ३'६ | ११ | ४६ | वज्र. | " | | अपू० | |
| ८'७ × ५'६ | ८ | १९ | " | " | | पू० | |
| ६'९ × ४'४ | १५ | ३२ | दे. ना. | " | | " | |
| ६'४ × ४'५ | ९ | २१ | " | " | | " | |
| १०'४ × ४'५ | १२ | ४९ | " | " | | " | ब्रह्मसूत्रमिति नामान्तरम् । |
| ९'८ × ५ | १७ | ३७ | " | " | | " | |
| ८'१ × ४'४ | ८ | १८ | " | " | | " | |
| ६'३ × ४'३ | ११ | २० | " | " | | " | १७ अध्यायः । |
| १३'५ × ५ | १६ | ७१ | " | " | | अपू० | १ अध्यायः । |
| १३'६ × ४'६ | १४ | ४६ | वज्र. | " | | " | |
| विभिन्नः | ९ | ४० | " | " | | पू० | अपरोक्षानुभूतिश्च । |
| ९'४ × ४ | ८ | २७ | दे. ना. | " | | " | |
| १२' × ४'२ | ७ | ४० | वज्र | " | | अपू० | |
| १७'२ × ६'७ | १४ | ७३ | दे. ना. | " | | पू० | |
| ६'८ × ४ | १० | २२ | " | " | १८४१ | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------------|--------------------|-------------------|
| २६७८६ | पञ्चीकरणवार्त्तिकम् | | १-४ । |
| २६७८७ | ब्रह्मभावनानिर्णयः | | १-४ । |
| २६७८८ | पञ्चदशी | विद्यारण्यमुनिः | १-२ । |
| २६७८९ | सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहः | | (१ = २) २-१९ । |
| २६७९० | अद्वैतामृतम् | जगन्नाथसरस्वती | १-२६ । |
| २६७९१ | ब्रह्मानुचिन्तनम् | " | १-२ । |
| २६७९२ | वेदान्तपरिभाषाव्याख्या | रामकृष्णाध्वरी | १ । |
| २६७९३ | वेदान्तसिद्धान्तसङ्ग्रहः | | १-१४ । |
| २६७९४ | वाक्यवृत्तिः | शङ्कराचार्यः | १-५ । |
| २६७९५ | स्थितप्रज्ञलक्षणम् | | १-२, ४ । |
| २६७९६ | स्वात्मानन्दप्रकाशिकार्या | | १-७, ७-९ । |
| २६७९७ | श्रद्धाप्रकरणम् | अद्वैतानन्दः | १-३० । |
| २६७९८ | अपरोक्षानुभूतिः | शङ्कराचार्यः | १-११ । |
| २६७९९ | अध्यात्मपूजनम् | " | १-२ । |
| २६८०० | पोडशमहावाक्यानि | | ३-७ । |
| २६८०१ | तत्त्वबोधः | शङ्कराचार्यः | १-६ । |
| २६८०२ | पोडशमहावाक्यानि | | १-२ । |
| २६८०३ | महावाक्यार्थः | | १, ३-५ । |
| २६८०४ | तत्त्वार्थदीपप्रकाश- वरणभङ्गः | पुरुषोत्तमगोस्वामी | ९९-१२१ । |
| २६८०५ | ब्रह्मचिन्तनम् | | १-४ । |
| २६८०६ | ब्रह्मानुचिन्तनम् | शङ्कराचार्यः | १-७ । |
| २६८०७ | महावाक्यार्थप्रबोधप्रकारः | | १-६ । |
| २६८०८ | अध्यात्मविद्याप्रबोधप्रकारः | " | १-८ । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------|------------------------|-------------------|
| २६८०९ | तत्त्वदीपनम् | | १-३१ । |
| २६८१० | षोडशमहावाक्यस्मरणम् | | १-३ । |
| २६८११ | षोडशमहावाक्यानि | | १ । |
| २६८१२ | पञ्चीकरणवार्त्तिकम् | सुरेश्वराचार्यः | १० । (गणनया) |
| २६८१३ | महावाक्यार्थप्रबोधविधिः | | ६ । (गणनया) |
| २६८१४ | ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम् | | १-१० । |
| २६८१५ | न्यायामृतम् | | १-६ । |
| २६८१६ | वेदान्तसारः | सदानन्दः | १-१६ । |
| २६८१७ | " | " | १-१६ । |
| २६८१८ | वेदान्तसारव्याख्या | रामतीर्थयतिः | १-४७ । |
| २६८१९ | तत्त्वानुसन्धानम् | महादेवसरस्वती | १-४६ । |
| २६८२० | पञ्चीकरणवार्त्तिकम् | सुरेश्वराचार्यः | १-१० । |
| २६८२१ | तत्त्वबोधप्रकरणम् | | १-४ । |
| २६८२२ | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | शङ्कराचार्यः | ९१ । (गणनया) |
| २६८२३ | " | | ११२ । (गणनया) |
| २६८२४ | " | " | १-१११, ११३-१६७ । |
| २६८२५ | पञ्चदशी सटीका | व्या० का० रामकृष्णः | १-३ । |
| २६८२६ | आत्मानात्मविवेकः | | १-३ । |
| २६८२७ | पञ्चीकरणवार्त्तिकम् | सुरेश्वराचार्यः | ९-१२ । |
| २६८२८ | वेदान्तसारः | | १-१८ । |
| २६८२९ | ब्रह्मसूत्रव्याख्या | | १-२ । |
| २६८३० | पञ्चीकरणवार्त्तिकम् | " | १-५ । |
| २६८३१ | वेदान्तकल्पतरुः | | X |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आवाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|------|----------|------------------------|---|
| १०*१ × ४*४ | १२ | ४६ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| १५*२ × ३*३ | ६ | ५१ | वङ्ग. | " | | पू० | पञ्चीकरणवाक्यार्थविवरणम् अपूर्णसन्ध्योपनिषत् । |
| ९*१ × ६*२ | १८ | १९ | दे.ना. | " | | " | चतुर्वेदोक्तानि । |
| ५*३ × ४*५ | ९ | १५ | " | " | | " | |
| ६*४ × ४*२ | ८ | १६ | " | " | | " | षोडशमहावाक्यानि च । |
| १६*३ × २*७ | ६ | ७५ | वङ्ग. | " | | अपू० | |
| ९*२ × ४*२ | ११ | ३४ | दे.ना. | " | | ' | |
| १३*५ × ५*१ | ८ | ३४ | वङ्ग. | " | | पू० | |
| १३*७ × ३*४ | ७ | ५३ | " | " | १६८९ श. | " | |
| १३*५ × ४*५ | १० | ५६ | " | " | | " | विद्वन्मनोरञ्जनी । |
| १३ × ३*८ | ६ | ३६ | " | " | १७५५ श. | " | |
| १२*६ × ३*७ | ५ | ४६ | " | " | | " | |
| ११*३ × ४*२ | ११ | ४७ | " | " | | " | |
| १०*५ × ३*४ | ८ | ६२ | " | " | | अपू० | |
| ११*१ × ३*४ | ८ | ५४ | " | " | | " | |
| ११*८ × ३*७ | ८ | ४२ | " | " | | " | |
| १३*९ × ७*१ | ११ | ४३ | दे.ना. | " | | पू० | महावाक्यविवेकमात्रम् । |
| १६ × ३*६ | ८ | ५७ | वङ्ग. | " | | अपू० | |
| ९*७ × ३*२ | ७ | ३४ | " | " | | पू०* | |
| १२*९ × ३*३ | ७ | ४१ | " | " | | " | हस्तामलकञ्च । |
| १२*९ × ३*४ | ५ | ४४ | " | " | | अपू० | |
| ९*७ × ३*३ | ८ | ३१ | " | " | | पू० | |
| १३ × ४*२ | ९ | ६४ | " | " | १४६४ श. | अपू० | गणनानर्हः, जीर्णत्वात् । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------|-----------------|---------------------------------|
| २६८३२ | पोडशमहावाक्यानि | | २ । (गणनया) |
| २६८३३ | " | | १-४ । |
| २६८३४ | " | | १-३ । |
| २६८३५ | तत्त्वबोधः | | १-४ । |
| २६८३६ | गौडपादीयकारिकाभाष्य-टीका | आनन्दज्ञानः | १-४९ । |
| २६८३७ | आत्मानात्मविवेकः | | १-४ । |
| २६८३८ | गौडपादीयकारिकाभाष्य-टीका | " | ९०-१०१ । |
| २६८३९ | विवरणतत्त्वदीपनम् | अखण्डानन्दः | १-१३६ । |
| २६८४० | आत्मानात्मविवेकः | शङ्कराचार्यः | १-६ । |
| २६८४१ | अद्वैतानुभूतिः | | १-३ । |
| २६८४२ | अपरोक्षानुभूतिः | | १-४ । |
| २६८४३ | पञ्चीकरणवार्त्तिकम् | सुरेश्वराचार्यः | १-६ । |
| २६८४४ | श्रुतिसारसमुद्धरणम् | त्रोटकाचार्यः | १-१७ । |
| २६८४५ | पञ्चदशी सटीका | टी.का.रामकृष्णः | १-३८ । |
| २६८४६ | वेदान्तपरिभाषाटीका | रामकृष्णाध्वरी | १-८९ (८९ = ९०) ९१-१३६ । |
| २६८४७ | वेदान्तसारसङ्ग्रहः | सदानन्दसरस्वती | १-१३, १५-२७, ३१, ३४-४०, ४२-४६ । |
| २६८४८ | पञ्चदशी सटीका | टी.का.रामकृष्णः | १-६ । |
| २६८४९ | स्वात्मानुभूतिः | शङ्कराचार्यः | १-९ । |
| २६८५० | महावाक्यरत्नावली | | १-६७ । |
| २६८५१ | महावाक्यविवेकः सटीकः | टी.का.रामकृष्णः | १-५ । |
| २६८५२ | वेदान्तसूत्रम् | | १-८ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|-------|-----------------|-------------------------|---|
| ६ × ४*३ | १० | १९ | दे. ना. | का. | | पू०* | पञ्चीकरणमहावाक्यार्थविवरणञ्च शाङ्करम् । |
| १० × ४ | ८ | ३६ | " | " | | " | |
| ७ × ३*६ | १० | २४ | " | " | | " | |
| १२*५ × ४*१ | ९ | ५० | " | " | | " | |
| १०*३ × ३*७ | १८ | ६५ | " | " | | " | |
| ९*९ × ३*३ | ११ | ४३ | " | " | | अपू० | ४ प्रकरणम् । |
| ९*७ × ४*५ | १८ | ४३ | " | " | | " | |
| १३*७ × ३*३ | १० | ७६ | वङ्ग. | " | | " | १ वर्णकमात्रम् । |
| १९*३ × ३*५ | ६ | ६६ | " | " | | " | तत्त्वविवेकप्रकरणम्, मराठीभाषा- टीका युतम् । |
| १९*३ × ३*५ | ७ | ६६ | " | " | | " | |
| ९*६ × ३ | ७ | ४५ | " | " | | " | |
| ६*७ × ३*६ | १० | २१ | " | " | | पू० | |
| ११ × ५*६ | ९ | ३० | दे. ना. | " | १९२९ | " | |
| १० × ४*१ | ८ | २७ | " | " | | " | शिखामणिः । |
| १२*८ × ६*२ | १२ | ४१ | " | " | १८६० | " | |
| १० × ४*४ | ११ | ३३ | " | " | १८२० | अपू० | |
| ८*२ × ४*२ | ११ | ३७ | " | " | १९५४ | पू० | |
| ८*३ × ४*२ | १२ | ४३ | " | " | १८६३ श. १७२९ | " | |
| ६*५ × ५ | ९ | १७ | " | " | | " | नाटकदीपप्रकरणम् । |
| ९*९ × ३*९ | ९ | ९३ | " | " | | " | |
| ११ × ४*६ | ९ | ४८ | " | " | १९३४ | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------------|---|---------------------|
| २६८५३ | तत्त्वविवेकदीपिका | रामकृष्णः | १-९, १४-१६, १८-२२ । |
| २६८५४ | शारीरकमीमांसाभाष्यटीका | आनन्दज्ञानः | ३४-१९०, १९०-१९८ । |
| २६८५५ | पञ्चदशीव्याख्या | | १-१४ । |
| २६८५६ | आर्या | शङ्कराचार्यः | १-८ । |
| २६८५७ | वेदान्ततत्त्वबोधः | | १-२ । |
| २६८५८ | स्वानुभवादर्शः | | १ । |
| २६८५९ | स्वात्मानन्दप्रकाशिकार्या | " | ६-१२ । |
| २६८६० | वाक्यसुधा सटीका | " | १-१७ । |
| २६८६१ | उपदेशपट्टकम् | " | १ । |
| २६८६२ | पञ्चीकरणविवरणम् | " | १-८ । |
| २६८६३ | ब्रह्मसूत्रम् | | १-१५ । |
| २६८६४ | सर्वोपनिषदर्थानुभूति- प्रकाशः | | ४३-१६४ । |
| २६८६५ | आत्मज्ञानोपदेशटीका | आनन्दज्ञानः | १-२२ । |
| २६८६६ | खण्डनखण्डखाद्यटीका | | २७-६१ । |
| २६८६७ | आर्या | शङ्कराचार्यः | १-१३ । |
| २६८६८ | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | " | १-११ । |
| २६८६९ | तत्त्वबोधः | | १-८ । |
| २६८७० | स्वात्मबोधः सटीकः | | १-२, ४-७ । |
| २६८७१ | ब्रह्मस्वरूपम् | | १-४ । |
| २६८७२ | लघुवाक्यवृत्तिः | " | १ । |
| २६८७३ | ब्रह्मावबोधः | वामनाश्रमः | १-६ । |
| २६८७४ | शारीरकसूत्रभाष्य- व्याख्या | भा.का.शङ्कराचार्यः व्या.का. गोविन्दानन्दः | ८१० । (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | अं- काः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|------------|----------|------------------------|--|
| ९६ × ४३ | ९ | ४० | दे. ना. | का. | | अपू० | न्यायनिर्णयाख्या । |
| ११ × ४७ | १२ | ३६ | | | | " | |
| ९७ × ४३ | ९ | ३४ | " | " | | " | |
| ८२ × ३९ | ११ | ४६ | " | " | १८६२ | पू० | |
| १२७ × ४१ | ११ | ६८ | " | " | | अपू० | |
| १२२ × ३८ | ३७ | २२ | " | " | | पू० | |
| ८ × ४ | ११ | ३४ | " | " | | अपू० | |
| ९८ × ४६ | ८ | ३६ | " | " | | " | |
| ६२ × ३८ | ७ | २० | " | " | | " | |
| ९९ × ३७ | १० | ३६ | " | " | | " | |
| ९६ × ४३ | ९ | २६ | " | " | | " | |
| १०६ × ४४ | ९ | ४१ | " | " | | " | |
| १० × ४४ | १० | ३१ | " | " | १७०७ श. | पू० | शाङ्करी । स्वात्मानन्दाख्या । टीका मराठीभाषायाम् |
| ११८ × ४४ | ११ | ६२ | " | " | | अपू० | |
| ८३ × ४ | ९ | २९ | " | " | | पू० | |
| ७१ × २९ | ११ | ४० | " | " | | अपू० | |
| ६२ × ३२ | ७ | २१ | " | " | १९४२ | पू० | |
| ६४ × ४६ | १४ | ५१ | " | " | | अपू० | |
| ७६ × ४६ | १० | २६ | " | " | १७९७ | पू० | |
| ९ × ४२ | १० | ३६ | " | " | | " | |
| ७७ × ४१ | ८ | २२ | " | " | | " | |
| १२२ × ६ | १४ | ४९ | " | " | | " | |
| | | | | | | | रत्नप्रभाख्या. १-४ अध्यायाः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------------|--|----------------------------|
| २६८७५ | शारीरकसूत्रभाष्यं सव्याख्यम् | शङ्कराचार्यः व्या. का. गोविन्दानन्दः | १-२२१, १-५६, १-१०१, १-६५ । |
| २६८७६ | पञ्चदशी सटीका | विद्यारण्यः टी.का. रामकृष्णः | २२३ । (गणनया) |
| २६८७७ | " | " | १-७ । |
| २६८७८ | " | " | १६-२० । |
| २६८७९ | " | " | १३ । (गणनया) |
| २६८८० | " | " | १-२ । |
| २६८८१ | पञ्चदशी | | १-११, १-१२ । |
| २६८८२ | तत्त्वमसिनिरूपणम् | | १ । |
| २६८८३ | वाक्यवृत्तिः | शङ्कराचार्यः | १-७ । |
| २६८८४ | " | " | १-५ । |
| २६८८५ | ब्रह्मसूत्रार्थप्रकाशिका | | ४७ । (गणनया) |
| २६८८६ | तत्त्वबोधः | वासुदेवेन्द्रयोगीन्द्रशिष्यः | १-९ । |
| २६८८७ | " | " | १-६ । |
| २६८८८ | " | " | १-२ । |
| २६८८९ | " | " | १-६ । |
| २६८९० | " | " | १-२, ४-५ । |
| २६८९१ | पञ्चीकरणवार्त्तिकम् | सुरेश्वराचार्यः | २२-२८ । |
| २६८९२ | " | " | १-७ । |
| २६८९३ | " | " | १-८ । |
| २६८९४ | " | " | १-७ । |
| २६८९५ | " | " | १-१२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आयतः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|------|----------|------------------------|--------------------------------------|
| ११ × ९७ | १२ | ३० | दे. ना. | का. | | पू० | व्या० रत्नप्रभाख्या, १ अध्यायः । |
| १०७ × ४७ | १० | ३३ | " | " | | "* | तत्त्वविवेकादिविषयानन्दप्रकरणान्ता । |
| ८९ × ४९ | ११ | ३९ | " | " | | " | नाटकदीपप्रकरणमात्रम् । |
| ९७ × ९ | ११ | २९ | " | " | | " | महावाक्यविवेकप्रकरणम् । |
| १०९ × ४९ | ११ | ४२ | " | " | | अपू० | तत्त्वबोधप्रकरणम् । |
| ९२ × ९१ | ११ | २४ | " | " | | " | पञ्चभूतविवेकप्रकरणम् । |
| ८८ × ४४ | ७ | २३ | " | " | | " | चित्रदीपतृप्तिदीपप्रकरणे । |
| ९४ × ४२ | ९ | २८ | " | " | | " | |
| ९९ × ४७ | ९ | २१ | " | " | | पू० | |
| १० × ९१ | ९ | २० | " | " | | " | |
| ११ × ४६ | १४ | ९१ | " | " | | अपू० | ११११-(??) |
| ९२ × ४९ | ९ | २० | " | " | | " | |
| ९९ × ४३ | ९ | २९ | " | " | | " | |
| ९८ × ४३ | १८ | ४१ | " | " | | " | |
| ९२ × ४२ | ८ | ३९ | " | " | | " | |
| ९९ × ४३ | ८ | ३३ | " | " | | " | |
| ६९ × ४३ | ८ | २० | " | " | | पू० | |
| ६८ × ४२ | ८ | २० | " | " | | " | |
| ६१ × ४ | ७ | १९ | " | " | | " | |
| ४१ × ४२ | ११ | २२ | " | " | | " | |
| ९३ × ४७ | १० | १४ | " | " | | " | अथर्वशिर उपनिषच्च । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------------|-----------------|-------------------|
| २६८९६ | पञ्चीकरणवार्त्तिकम् | सुरेश्वराचार्यः | १-६ । |
| २६८९७ | " | " | १-६ । |
| २६८९८ | " | " | १-६ । |
| २६८९९ | " | " | १-५ । |
| २६९०० | " | " | १-८ । |
| २६९०१ | " | " | १-६ । |
| २६९०२ | " | " | २०-२३ । |
| २६९०३ | " | " | १-३, ५ । |
| २६९०४ | " | " | १-५ । |
| २६९०५ | " | " | १-५ । |
| २६९०६ | " | " | १-४ । |
| २६९०७ | पञ्चीकरणमहावाक्यार्थः | शङ्कराचार्यः | १-६ । |
| २६९०८ | मिथ्यात्वविचारः | | १ । |
| २६९०९ | पञ्चीकरणम् | | १-४ । |
| २६९१० | पञ्चीकरणभाष्यम् | आनन्दगिरिः | १-७ । |
| २६९११ | प्रणवपञ्चीकरणवार्त्तिकं सटीकम् | सुरेश्वराचार्यः | १-१६ । |
| २६९१२ | पञ्चीकरणवार्त्तिकाभरण- टीका | " | १-१६ । |
| २६९१३ | महावाक्यार्थप्रबोधप्रकारः | " | १-१२ । |
| २६९१४ | महावाक्यविवरणम् | शङ्कराचार्यः | १-३ । |
| २६९१५ | " | " | १-५ । |
| २६९१६ | " | " | १-४ । |
| २६९१७ | " | " | १-६ । |

| वाक्यः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आवाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|------|----------|------------------------|--|
| ७०१ × ४६ | ९ | २१ | दे.ना. | का. | १७९४ | पू० | ब्रह्मचिन्तनिका च । |
| ७०८ × ३५ | ९ | २४ | " | " | | " | |
| ७०२ × ६ | ११ | २८ | " | " | | " | |
| ६०५ × ४०१ | ९ | २५ | " | " | | " | |
| ६०७ × ४ | ९ | १६ | " | " | | " | |
| ७०२ × ४०४ | १० | २६ | " | " | | " | |
| ९०६ × ६०३ | ९ | २५ | " | " | | अपू० | |
| ९०५ × ४०२ | ९ | ३० | " | " | | " | |
| ९ × ४०४ | ८ | २९ | " | " | | पू० | |
| ८०२ × ३०९ | १० | २९ | " | " | | " | |
| ९०३ × ४०५ | १० | २७ | " | " | | " | ब्रह्मचिन्तनिका वा । |
| ६ × ४ | ८ | १६ | " | " | श. १७८६ | " | |
| ८०३ × ३०५ | १० | ३७ | " | " | | अपू० | |
| ९०८ × ४०१ | ११ | ३७ | " | " | | पू० | |
| १२ × ५५ | १२ | ३९ | " | " | | " | |
| १२०५ × ४०८ | १२ | ५२ | " | " | | " | |
| १२०२ × ५०७ | ११ | ४३ | " | " | | " | |
| ६ × ४ | ८ | १६ | " | " | | " | |
| ८०३ × ४ | ९ | ३० | " | " | | " | |
| ९०४ × ४०२ | ९ | २९ | " | " | | " | |
| ६०२ × ४०१ | ११ | २४ | " | " | | " | वार्त्तिकाभरणाख्यटीका महावार्त्तिक- ञ्चापूर्णम् । |
| ६०५ × ४०९ | ९ | १६ | " | " | | " | सवार्त्तिकः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------------|--|-------------------|
| २६९१८ | महावाक्यविवरणम् | शङ्कराचार्यः | १-५ । |
| २६९१९ | महावाक्यार्थबोधः | " | १-४ । |
| २६९२० | महावाक्यरत्नावलिः | वासुदेवेन्द्रयोगीन्द्रशिष्यः | १-२८ । |
| २६९२१ | महावाक्यार्थसङ्ग्रहः | | २-५ । |
| २६९२२ | अपरोक्षानुभूतिः | शङ्कराचार्यः | १-९ । |
| २६९२३ | " | " | १-१३ । |
| २६९२४ | " | " | १-९ । |
| २६९२५ | " | " | १-११ । |
| २६९२६ | " | " | १-२१ । |
| २६९२७ | " सटीका | टी.का.विद्यारण्यः | १-८७ । |
| २६९२८ | " " | " " " | १-२६, २८-२९ । |
| २६९२९ | अनुभूतिप्रकाशः | " | १-३ । |
| २६९३० | शरीरस्य काशीक्षेत्रसादृश्यम् | | १ । |
| २६९३१ | " | | १ । |
| २६९३२ | ब्रह्मोपदेशविधिः | शङ्कराचार्यः | १-१८ । |
| २६९३३ | वेदान्तपरिभाषा | धर्मराजदीक्षितः | १-२८ । |
| २६९३४ | ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यटीका | रामानन्दसरस्वती | १-१५ । |
| २६९३५ | आत्मनिरूपणं सटीकम् | शङ्कराचार्यः टी.का.सच्चिदानन्द सरस्वती | १-२७ । |
| २६९३६ | आत्मज्ञानलाभोपायकारिका | | १-४ । |
| २६९३७ | जगन्मिथ्यात्वानुमानप्रकारः | | १ । |
| २६९३८ | ज्ञानाङ्कुशः | | १ । |
| २६९३९ | वैयसिकन्यायमाला | | १-१९ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आशंसः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषनिबन्धनम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|---|
| ६५ × ५ | ८ | १५ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| ६२ × ४१ | ११ | २० | " | " | | पू० | |
| ९६ × ४३ | १० | ३६ | " | " | | " | |
| ७२ × ४४ | १० | २६ | " | " | | अपू० | |
| ९५ × ५१ | ९ | २८ | " | " | | पू० | |
| ५८ × ३६ | ९ | २८ | " | " | | " | |
| ९९ × ४४ | ८ | ३१ | " | " | १७८७ | " | |
| ८९ × ४५ | १० | २८ | " | " | | " | |
| ६५ × ४४ | ८ | १९ | " | " | | " | |
| ८७ × ५१ | ८ | १७ | " | " | | " | |
| ९७ × ५१ | १२ | ३४ | " | " | | अपू० | |
| ८७ × ५ | १० | २२ | " | " | | पू० | बृहदारण्यके मधुविद्याख्यो नाम पोडशोऽध्यायः । |
| ९८ × ४४ | १३ | ३६ | " | " | | " | |
| ८४ × ४१ | २६ | १६ | " | " | | " | |
| १०१ × ६४ | ११ | ३६ | " | " | | " | |
| १२ × ६२ | १३ | ३८ | " | " | | " | |
| ११६ × ६१ | ९ | २८ | " | " | | अपू० | रत्नप्रभाख्या । |
| १२ × ५३ | १३ | ४७ | " | " | १८.१ | पू० | टीका स्वानुभवार्थ्याख्या । |
| ५४ × ८८ | १८ | २१ | " | " | | अपू० | |
| ९९ × ४६ | १४ | ३५ | " | " | | " | |
| १०३ × ४९ | १२ | ५५ | " | " | | पू० | |
| ९५ × ५१ | ११ | ३१ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------------|--------------------------------|-------------------|
| २६९४० | सप्ताष्टकम् | | १ । |
| २६९४१ | अद्वैतमकरन्दः | लक्ष्मीधरः | १-२ । |
| २६९४२ | अन्तःकरणचिच्छायात्व- निरूपणम् | | २ । (गणनया) |
| २६९४३ | वेदान्तसारः | सदानन्दः | १-२५ । |
| २६९४४ | वेदान्तसारटीका | | १-१५ । |
| २६९४५ | मौनदशकम् | | १-२ । |
| २६९४६ | " | | १ । |
| २६९४७ | मुक्तिविचारः | | १ । |
| २६९४८ | महावाक्यविवेकः | | १ । |
| २६९४९ | ब्रह्मसूत्रम् | व्यासः | १-१४ । |
| २६९५० | " | " | ८ । (गणनया) |
| २६९५१ | ब्रह्मसूत्रभाष्यम् | भा.का.आनन्तीर्थः | १-५० । |
| २६९५२ | ब्रह्मसूत्रदीपिका | टी.का.शङ्करानन्दः | ८ । (गणनया) |
| २६९५३ | महावाक्यार्थनिदिध्यासन- विधिः | शङ्कराचार्यः | ३-४ । |
| २६९५४ | वाक्यवृत्तिप्रकरणम् | " | १-५ । |
| २६९५५ | लघुवाक्यवृत्तिप्रकरणं सटीकम् | " | १-५ । |
| २६९५६ | अध्यासप्रकारः | | १-३ । |
| २६९५७ | विवेकचूडामणिः | " | १-२९ । |
| २६९५८ | आर्यापञ्चाशीतिः | शेषः | १-८ । |
| २६९५९ | अद्वैतसिद्धिटीका | वंशीधरमिश्र- शिष्यः सदासुखः | १-४६ । |
| २६९६० | द्वादशमहावाक्यसिद्धान्तः | | १-२६ । |
| २६९६१ | देहातिरिक्तात्मप्रकरणम् | शङ्कराचार्यः | १-३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|---------------------------------|
| ११'२ × ४'७ | १२ | ४९ | दे.ना. | का. | | अपू० | वेदान्तसिद्धान्तप्रतिपादनपरम् । |
| ८'२ × ४ | ९ | ३१ | " | " | | पू० | |
| ९'८ × ४'३ | १४ | ४८ | " | " | | अपू० | |
| ८'२ × ४'२ | ९ | २८ | " | " | | " | |
| ८ × ३'४ | ८ | ३७ | " | " | | " | |
| ९'४ × ४'३ | ८ | ३१ | " | " | | पू० | |
| ६'४ × ४ | १० | २४ | " | " | | अपू० | |
| ८'५ × ४'२ | ११ | ३२ | " | " | | पू० | |
| ७'२ × ४'५ | ९ | २३ | " | " | | " | |
| ८'८ × ४'७ | ९ | २१ | " | " | | " | १-४ अध्यायाः । |
| ८'४ × ४'४ | ५ | २२ | " | " | | " | प्रथमाध्यायः । |
| ९'६ × ४'४ | १६ | ६२ | " | " | | " | |
| ६'३ × ७'९ | १० | १५ | " | " | | अपू० | |
| ९'४ × ४'२ | ९ | ३१ | " | " | | " | |
| ८'४ × ४ | ९ | २७ | " | " | | " | |
| ९'३ × ४'४ | १३ | ३७ | " | " | | " | पुष्पाञ्जल्यभिधटीका । |
| ९'५ × ५'१ | ९ | २६ | " | " | | पू० | |
| ९'६ × ५ | ११ | ३६ | " | " | | " | |
| ८'५ × ४'४ | ९ | ३० | " | " | | " | परमार्थसारो वा । |
| ९'७ × ४'५ | ९ | ३४ | " | " | | अपू० | अद्वैतसिद्धिटीका सारचन्द्रिका । |
| १०'५ × ४'८ | १० | ३१ | " | " | | पू० | |
| ९'५ × ४'३ | ८ | ३१ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---|---------------------------------|---------------------|
| २६९६२ | देहातिरिक्तात्मप्रकरणम् | शङ्कराचार्यः | १-२ । |
| २६९६३ | सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहः | | १-६५ । |
| २६९६४ | एकजीवपक्षः | | १-४ । |
| २६९६५ | आर्या | शङ्कराचार्यः | १-९ । |
| २६९६६ | जीवन्मुक्तप्रकरणम् | | १-१३ । |
| २६९६७ | सङ्क्षिप्तनिर्गुणब्रह्मविचार- प्रकरणम् | | १-५ । |
| २६९६८ | " | | १-५, १-२, १-६ । |
| २६९६९ | वेदान्तप्रवृत्तिविचारः | | १ । |
| २६९७० | स्वरूपस्थितिः | | १-२ । |
| २६९७१ | स्वात्मनिरूपणम् | | २-१५ । |
| २६९७२ | वाक्यरत्नाकरः सटीकः | | १-२, ४-६, ८-१४ । |
| २६९७३ | सङ्क्षिप्तवेदान्तार्थोपन्यासः | | १ । |
| २६९७४ | आर्या | शङ्कराचार्यः | १-१६ । |
| २६९७५ | ब्रह्मचिन्तनम् | " | १-४ । |
| २६९७६ | उपदेशसाहस्री | | १ । |
| २६९७७ | पञ्चीकरणवार्त्तिकम् | | २-७ । |
| २६९७८ | " | सुरेश्वराचार्यः | १-१२ । |
| २६९७९ | पञ्चीकरणं सटीकम् | " | १-१५ । |
| २६९८० | उपदेशसाहस्रीव्याख्या | रामतीर्थः कृष्ण- तीर्थशिष्यः | १-(२५० = २५१) २७० । |
| २६९८१ | पञ्चदशी सटीका | | १-५९, १-९६, १-११२ । |
| २६९८२ | वेदान्तकल्पतरुः | अमलानन्दः | २-२१५ । |
| २६९८३ | सिद्धान्तलेशः | अप्पयदीक्षितः | ११८ । (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| ९°७ × ४°३ | ११ | ४१ | दे. ना. | का. | | पू० | १ परिच्छेदमात्रम् । |
| ९°६ × ४ | ७ | ३६ | " | " | | " | |
| ८°३ × ९°३ | १३ | २४ | " | " | | " | |
| ८°८ × ४°९ | ११ | ३३ | " | " | | " | |
| ८ × ९°३ | १३ | २९ | " | " | | अपू० | |
| ८°३ × ४°९ | १३ | ३३ | " | " | | पू० | ब्रह्मात्मैकत्वसिद्धान्तरहस्यप्रकरणं प्रत्यग्ब्रह्मनिर्णयप्रकरणञ्च । |
| ८°४ × ४°९ | १४ | ३६ | " | " | | " | |
| ९°९ × ९°१ | १२ | २९ | " | " | | " | |
| ८°४ × ३°७ | ९ | २९ | " | " | | " | |
| ९°६ × ४°४ | ९ | २९ | " | " | | अपू० | |
| ९°८ × ३°८ | १२ | ६९ | " | " | | " | |
| ६°४ × ३°९ | ११ | २९ | " | " | | पू० | |
| ६°९ × ३ | ९ | ३ | " | " | | " | |
| ७°८ × ३°९ | ७ | २७ | " | " | | " | |
| ७°१ × ३°७ | ८ | २० | " | " | | अपू० | |
| ९ × ३°९ | ११ | २७ | " | " | | " | चित्तिस्वरूपप्रकरणम् । |
| ६°६ × ४°२ | ६ | १४ | " | " | | पू० | टीका वार्त्तिकभरणाख्या । |
| ११°९ × ९°१ | ११ | ४९ | " | " | | " | |
| १२°४ × ४°६ | ९ | ३१ | " | " | | " | |
| ११°७ × ९°७ | ९ | २९ | " | " | | अपू० | त्रिपदीपट्टमिदीपध्यानदीपत्रयम् । रामकृष्णकृतमराठीटीकासहिता । |
| ९°६ × ४°४ | ८ | ३८ | " | " | | " | १-३ अध्यायाः । |
| ९°२ × ४°२ | ११ | ३९ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|---|----------------------------|
| २६९८४ | न्यायोपदेशमकरन्दः | आनन्दबोधः | १-९४ । |
| २६९८५ | अपरोक्षानुभूतिः सटीका | विद्यारण्यः टी. का. वाल्लभोपालयतिः | १-५४ । |
| २६९८६ | द्वादशमहावाक्यविवरणम् | | १-६९ । |
| २६९८७ | वेदान्तसारटीका | रामतीर्थयतिः | १-८२ । |
| २६९८८ | वेदान्तवाक्यनिचयः | | ८-७८ । |
| २६९८९ | वाक्यसुधा सटीका | शङ्कराचार्यः टी. का. ब्रह्मानन्द- भारती | १-५४ । |
| २६९९० | ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम् | | १-९ । |
| २६९९१ | तत्त्वप्रकाशिका | जयतीर्थमुनिः | २९२-(३३० = ३३१) ३६६ । |
| २६९९२ | वार्त्तिकसारः | | १-४७ । |
| २६९९३ | शतश्लोकी सटीका | शङ्कराचार्यः टी. का. आनन्द- ज्ञानः | १-५३ । |
| २६९९४ | भामती | टी. का. वाचस्पति- मिश्रः | १-३, ३३-१०२, १३-१११, ११३ । |
| २६९९५ | शरीरकसूत्रसाराथ्यचन्द्रिका | गङ्गाधरः | (१=२)-५६ । |
| २६९९६ | बोधसारः | नित्यमुक्तनरहरिः | १-११७ । |
| २६९९७ | उपदेशसाहस्री सव्याख्या | शङ्कराचार्यः न्या. का. रामतीर्थः | १-६९ । |
| २६९९८ | पञ्चरत्नविवरणम् | शङ्कराचार्यः | १-७ । |
| २६९९९ | आर्या | " | २-९ । |
| २७००० | वेदान्तवाक्यनिचयः | | १-२२ । |
| २७००१ | लघुवाक्यवृत्तिः | शङ्कराचार्यः | १-५ । |
| २७००२ | परमार्थसारः | शेषः | १-७ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|--|
| ११ × ३७ | ८ | ४२ | दे.ना. | का. | | पू० | |
| ९८ × ४३ | १० | ३७ | " | " | | अपू० | |
| ६४ × ४ | ६ | १७ | " | " | १७९७ | पू० | |
| ८१ × ९७ | १३ | २३ | " | " | | " | टीका विद्वन्मनोरञ्जनी । |
| ९९ × ९२ | २६ | १९ | " | " | | अपू० | विविधशास्त्रोक्तोपयोगिवचनानां सङ्ग्रहः । |
| १०८ × ४९ | ७ | ३२ | " | " | १९०८ | पू० | |
| १११ × ९१ | १० | ४० | " | " | | अपू० | चतुःसूत्रीपर्यन्तम् । |
| १०७ × ४८ | १० | ३२ | " | " | | " | ३ अध्यायस्य २-३ पादौ । |
| ११७ × ९४ | १२ | ३३ | " | " | | पू० | |
| १२३ × ९९ | १२ | ३६ | " | " | | " | |
| ११३ × ४ | ९ | ४१ | " | " | | अपू० | ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यटीका । |
| ११८ × ४९ | ११ | ४४ | " | " | १७९३ शा. | पू० | १ अ० १-४ पादाः । |
| ९९ × ४६ | ८ | ३० | " | " | १८३७ | " | |
| ११९ × ९४ | ११ | ४१ | " | " | | " | गद्यभागस्य व्याख्या । |
| ९६ × ४२ | ९ | २२ | " | " | | " | |
| ९२ × ९१ | १२ | ३४ | " | " | | अपू० | |
| ६ × ४१ | २२ | ३३ | " | " | | " | विविधशास्त्रोक्तोपयोगिवचनानां सङ्ग्रहः । |
| ९५ × ४९ | १० | २४ | " | " | | पू० | जीवब्रह्मैकत्वं विद्युन्मालास्तोत्रम् अध्यासविचारव्यापारः । |
| ९२ × ४८ | ९ | ३१ | " | " | | " | आर्यापञ्चाशीतिर्वा । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|--|-------------------|
| २७००३ | स्वात्मनिरूपणम् | शङ्कराचार्यः | १-२३ । |
| २७००४ | देहातिरिक्तात्मप्रकरणम् | " | १-३ । |
| २७००५ | आत्मानात्मविवेकः | स्वयम्प्रकाश- योगीन्द्रः | १-५ । |
| २७००६ | ब्रह्मवादः | | १, १-३ । |
| २७००७ | (वेदान्त)संज्ञाप्रकरणम् | | १-२० । |
| २७००८ | ब्रह्मविद्याप्रयोजनविचारः | | १ । |
| २७००९ | शारीरकसूत्रटीका | गङ्गाधरः | १ । |
| २७०१० | खण्डनखण्डखाद्यं सटीकम् | | १-८ । |
| २७०११ | शारीरकसूत्रं सटीकम् | टी. का. गङ्गाधरः | १-३० । |
| २७०१२ | मुक्तिवादः | | १-१० । |
| २७०१३ | वाक्यवृत्तिः सटीका | शङ्कराचार्यः टी. का. विश्वेश्वर- पण्डितः | १-३५ । |
| २७०१४ | ब्रह्मचिन्तनिका | शङ्कराचार्यः | १-५ । |
| २७०१५ | आत्मानात्मविचारः | सच्चिदानन्दनाथः | १-४ । |
| २७०१६ | तत्त्वबोधः | वासुदेवेन्द्रयोगी | १-१५ । |
| २७०१७ | तत्त्वबोधप्रकरणम् | | १-४ । |
| २७०१८ | तत्त्वानुसन्धानव्याख्या | महादेवानन्दसर- स्वती स्वयम्प्रका- शानन्दसरस्वती- शिष्यः | १-३० । |
| २७०१९ | आत्मज्ञानोपदेशः सटीकः | शङ्कराचार्यः टी. का. आनन्दज्ञानः | १-१८ । |
| २७०२० | अद्वैतमकरन्दः सव्याख्यः | लक्ष्मीधरकवीन्द्रः व्या. का. स्वयम्प्र- काशयतिः | १-४० । |
| २७०२१ | वेदान्तपरिभाषा | | १ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णपूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|-----------------------------|
| ७८ × ४४ | ७ | १९ | दे.ना. | का. | | पू० | स्वात्मानन्दप्रकाशिकार्या । |
| ८४ × ४१ | १० | ३१ | " | " | | " | |
| ७१ × ३७ | ९ | २३ | " | " | | " | |
| ९२ × ४२ | १३ | ५८ | " | " | | अपू० | |
| १० × ४४ | ११ | ३४ | " | " | १८८६ | " | |
| १०७ × ४९ | १९ | ३७ | " | " | | " | |
| १२ × ५ | १० | ४० | " | " | | " | |
| १३७ × ५४ | १४ | ५७ | " | " | | " | |
| १२५ × ५१ | ११ | ४४ | " | " | | " | सुबोधिनी टीका । |
| ६५ × ३३ | ६ | २८ | " | " | १७६६ | पू० | |
| १२२ × ५६ | १२ | ३८ | " | " | | " | टीका वाक्यवृत्तिप्रकाशिका । |
| ६ × ४ | ७ | १७ | " | " | १७९० श. | " | |
| ५३ × ३७ | ९ | २० | " | " | | " | वेदान्तसारे । |
| ६९ × ४२ | ६ | १७ | " | " | १९१९ | " | |
| ८४ × ५९ | १२ | २५ | " | " | | " | |
| १२ × ४८ | १२ | ४१ | " | " | | " | |
| १२ × ४६ | ८ | ४१ | " | " | | " | १-४ खण्डाः । |
| ११८ × ५१ | ९ | २६ | " | " | | " | |
| १०७ × ४६ | १९ | ४७ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------------|--|------------------------|
| २७०२२ | सर्ववेदान्तसारभूतोपदेशः | | १-३ । |
| २७०२३ | सर्ववेदान्तसारामृतोपदेशः | | १-८ । |
| २७०२४ | भेदधिकारः सञ्ख्याख्यः | नृसिंहाश्रममुनिः व्या.का. नारायणा- श्रमः | १-८ । |
| २७०२५ | वेदान्तसारः | सदानन्दः | १-१० । |
| २७०२६ | वेदान्तपोडशमहावाक्यानि | | १-४ । |
| २७०२७ | वेदान्तरहस्यम् | वागीशभट्टः | १-८ । |
| २७०२८ | परमामृतप्रकरणम् | महादेवेन्द्रसरस्वती प्रज्ञानेन्द्रशिष्यः | १-१५ । |
| २७०२९ | वाक्यवृत्तिः सटीका | शङ्कराचार्यः टी.का. विश्वेश्वरपण्डितः | १-२९ । |
| २७०३० | भामतीभावार्थसङ्ग्रहः | | १ । |
| २७०३१ | रत्नप्रभा | गोविन्दानन्दः | १५-१७, १९-२८, ३०-३२ । |
| २७०३२ | आत्मानात्मविवेकामृतम् | स्वयम्प्रकाशयोगी | १-४ । |
| २७०३३ | अपरोक्षानुभूतिः सटीका | | १-३७ । |
| २७०३४ | तत्त्वविवेकः | शङ्कराचार्यः | १-१० । |
| २७०३५ | जीवन्मुक्तिहेतुनिरूपणम् | | १-३७ । |
| २७०३६ | संक्षिप्तवेदान्तशास्त्रप्रक्रिया | ” | ६-४० । |
| २७०३७ | वार्तिकसारकारिका | सुरेश्वराचार्यः | १-२२, १-३, १-१६, १-३ । |
| २७०३८ | अद्वैतसिद्धान्तविद्योतनम् | ब्रह्मानन्दसरस्वती | १-४० । |
| २७०३९ | ब्रह्मसूत्रम् | | १-१० । |
| २७०४० | अपरोक्षानुभूतिः | | १-६ । |
| २७०४१ | अध्यात्मविद्योपदेशविधिः | | १-१२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | काव्यः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|--------|----------|------------------------|---|
| ९*२ × ६ | १३ | ३१ | दे.ना. | का. | | पू० | |
| ९*२ × ६*१ | १६ | ३४ | " | " | | " | |
| ११*६ × ६*३ | १२ | ३३ | " | " | | अपू० | श्रुतेर्भेदपरत्वाभावनिरूपणम् । |
| १२ × ९*७ | १३ | ४० | " | " | | पू० | |
| ९*३ × ३*२ | ८ | १४ | " | " | | " | |
| ७*८ × ४*४ | ११ | २८ | " | " | | " | |
| ६*८ × ३*२ | १२ | २२ | " | " | | " | |
| १२ × ९*९ | १२ | ४१ | " | " | | " | टीका वाक्यवृत्तिप्रकाशिका । |
| १०*६ × ४*३ | ११ | ३८ | " | " | | अपू० | अध्यासखण्डः । |
| ८*४ × ३*८ | ११ | ४९ | " | " | | " | ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यटीका । |
| ८*३ × ९*४ | १९ | २९ | " | " | | पू० | |
| ७*२ × ४*७ | ७ | २२ | " | " | | " | मराठीभाषायां पद्यबद्धा टीका अष्टम- प्रकरणान्ता । |
| ७*२ × ४*७ | ७ | २० | " | " | | " | |
| ७*१ × ४*७ | ७ | २२ | " | " | | अपू० | |
| ६*२ × ३*३ | ७ | १६ | " | " | १७७१ | " | |
| ८*२ × ६*१ | १९ | १८ | " | " | | " | मध्येऽजपाविधिः अन्तेच अधिकारि- परीक्षा । |
| १०*४ × ४*७ | १२ | ३८ | " | " | | पू० | प्रथमपरिच्छेदः । |
| १०*२ × ४*९ | १० | २९ | " | " | १७२४ | " | मूलमात्रम् १-४ अध्यायाः । |
| ११*९ × ९*१ | ११ | ३४ | " | " | | " | |
| ८*३ × ३*९ | १३ | ४२ | " | " | | " | अज्ञानबोधिनी शङ्कराचार्यकृतात्म- बोधस्य भागः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------------|-------------------------------------|-------------------------------|
| २७०४२ | आत्मज्ञानोपदेशः सटीकः | शङ्कराचार्यः टी. का. आनन्दज्ञानः | १-२५ । |
| २७०४३ | वेदान्तसूत्रभाष्यटीका | | २-१८ । |
| २७०४४ | पञ्चीकरणमहावाक्यार्थ- विवरणम् | | १-२ । |
| २७०४५ | मत्तनप्रकारः | वासुदेवयतिशिष्यः | १-६० । |
| २७०४६ | गौडपादकारिकाभाष्यटीका | टी. का. आनन्दगिरिः | ३-११६ । |
| २७०४७ | गौडपादकारिका सभाष्य | भा. का. शङ्कराचार्यः | ३-५४ । |
| २७०४८ | भामती | | २-२० । |
| २७०४९ | तत्त्वप्रदीपः | | २-२५ । |
| २७०५० | आत्मज्ञानोपदेशः | | १-५ । |
| २७०५१ | विवरणोपन्यासः | विद्यारण्यः | १-७, ९-११९, १२१-१३३, १३५-५५ । |
| २७०५२ | पञ्चीकरणवार्त्तिकम् | | १-१८ । |
| २७०५३ | तत्त्वानुसन्धानम् | | १-१३ । |
| २७०५४ | पञ्चीकरणविवरणम् | आनन्दगिरिः | १०-११ । |
| २७०५५ | वेदान्ततत्त्वविवेकः | नृसिंहाश्रमः | १ । |
| २७०५६ | वेदान्ततत्त्वविवेकटीका | " | २ । (गणनया) |
| २७०५७ | वेदान्तामृतम् | गोपालेन्द्रसरस्वती | २-१८ । |
| २७०५८ | अनुभूतिप्रकाशः | विद्यारण्यः | १-९१ । |
| २७०५९ | श्रुतिसारसमुद्धरणम् | त्रोटकचार्यः | १-१२ । |
| २७०६० | अध्यात्मविद्योपदेशविधिः | शङ्कराचार्यः | १-११ । |
| २७०६१ | वैयासकन्यायमाला | भारतीतीर्थमुनिः | १-९ । |
| २७०६२ | सङ्क्षेपशारीरकम् | | १ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आश्रयः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|--------|----------|------------------------|--|
| ९८ × ४२ | ११ | ३९ | दे.ना. | का. | १८६९ | पू० | |
| १० × ४१ | ११ | ३७ | " | " | | अपू० | |
| १२३ × ४१ | ७ | ५६ | वज्र. | " | | पू० | |
| ९४ × ४८ | १७ | ४३ | दे.ना. | " | | " | |
| ९९ × ४४ | १० | ४० | " | " | | अपू० | |
| १०१ × ४६ | ११ | ४२ | " | " | | " | |
| १० × ४४ | ११ | ३३ | " | " | | " | |
| ९७ × ४४ | ११ | ३३ | " | " | | " | |
| १०६ × ४ | १२ | ३२ | " | " | | " | |
| ११४ × ३६ | ७ | ४२ | " | " | | " | |
| १२९ × ३३ | ९ | ५७ | " | " | | पू० | आदौ प्रातःस्मरणादिकमप्यस्ति । |
| १२९ × ६६ | १५ | ४९ | " | " | | अपू० | |
| ९ × ३९ | ७ | ३० | वज्र. | " | | " | |
| १०२ × ५ | ३३ | ८१ | " | " | | " | |
| १०२ × ५ | ३३ | ८१ | " | " | | " | अद्वैतरत्नकोशाख्या । |
| ८४ × ४६ | ९ | २१ | दे.ना. | " | | " | नृसिंहोत्तरतापिन्युपनिषद्- व्याख्या च । |
| १२७ × ५ | १२ | ४७ | " | " | | पू० | |
| १०३ × ४४ | १० | ४७ | " | " | | " | |
| ८८ × ४७ | ११ | २५ | " | " | | अपू० | |
| ८४ × ४ | ८ | २३ | " | " | | पू० | ३-४ अध्यायो । |
| १०७ × ४८ | २१ | ४७ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------------------|-------------------|-------------------|
| २७०६३ | वाक्यसुधा | विद्यारण्यः | १-३ । |
| २७०६४ | अद्वैतदीपिका | | १-१४, १६-१७ । |
| २७०६५ | प्रमाणपद्धतिभावविवरणम् | वेदेशभिधुः | ४३-८२ । |
| २७०६६ | वेदान्तसिद्धान्तमुक्तावली सटीका | | १-९ । |
| २७०६७ | अध्यासप्रकारः | | १-२ । |
| २७०६८ | वेदान्तसङ्ग्रहः | | १-६९ । |
| २७०६९ | महावाक्यविवरणम् | शङ्कराचार्यः | १-३ । |
| २७०७० | षोडशमहावाक्यम् | | १-६ । |
| २७०७१ | " | | १ । |
| २७०७२ | पञ्चदशीटीका | | १-१२ । |
| २७०७३ | षोडशमहावाक्यस्मरणम् | | ५-८ । |
| २७०७४ | अपरोक्षानुभूतिः | " | १-८ । |
| २७०७५ | " | " | १-९ । |
| २७०७६ | " | " | १-६, ८-११ । |
| २७०७७ | आत्मानात्मविवेकः | " | १-७ । |
| २७०७८ | " | " | १-१० । |
| २७०७९ | चित्सुखी सटीका | | १-११ । |
| २७०८० | भेदधिकारः | नृसिंहाश्रमः | १-१८ । |
| २७०८१ | भेदधिकारटीका | " | १-७४ । |
| २७०८२ | तत्त्वसारः | " | १-९ । |
| २७०८३ | पञ्चदशी सटीका | टी. का. रामकृष्णः | २२ । (गणनया) |
| २७०८४ | ब्रह्ममृतम् | | १-३२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आश्रयः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|--------|----------|------------------------|---|
| १२ × ४*२ | १२ | ४० | दे. ना. | का. | | पू० | |
| ९*८ × ४*३ | ७ | ३० | " | " | | अपू० | |
| ९*३ × ४*३ | १० | ३७ | " | " | | " | |
| १०*७ × ४*६ | १० | ४५ | " | " | | " | |
| १३ × ५ | ११ | ४२ | " | " | | " | |
| १० × ६*२ | २१ | १८ | " | " | | " | |
| १२*१ × ३*८ | ६ | ३५ | वङ्ग. | " | | पू० | |
| १२*५ × ३*१ | ६ | ३८ | " | " | | " | पञ्चीकरणं महावाक्यार्थः पञ्ची- करणवार्त्तिकञ्च । |
| १२*७ × ३*७ | १० | ६५ | " | " | | " | पञ्चीकरणमहावाक्यार्थविवरणञ्च । |
| ९*९ × ४*३ | ७ | २७ | दे. ना. | " | | " | चक्रिकाख्या । |
| ९*६ × ३*९ | ७ | ३२ | वङ्ग. | " | | " | पञ्चीकरणमहावाक्यार्थविवरणञ्च । |
| १०*७ × ४ | ९ | ३८ | " | " | | " | |
| १३*२ × २*९ | ७ | ४५ | " | " | | " | |
| १३*९ × ४*३ | ९ | ४० | " | " | | अपू० | |
| १३*२ × ३*८ | ६ | ३६ | " | " | | पू० | |
| १३ × ३*८ | ६ | ४३ | " | " | | " | |
| १३*७ × ५*२ | १४ | ४७ | दे. ना. | " | | अपू० | |
| १३*८ × ५*५ | १० | ४६ | " | " | | पू० | |
| १३*९ × ५*४ | १० | ५१ | " | " | | " | |
| १२*५ × ५ | ७ | ४१ | " | " | १९९१ सं. | " | |
| १०*३ × ४*५ | ८ | ३५ | " | " | | अपू० | |
| १०*९ × ४*९ | १२ | ५० | " | " | | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|------------------------------|-------------------|
| २७०८५ | तत्त्वानुसन्धानम् | महादेवसरस्वती | १-५५ । |
| २७०८६ | ब्रह्मसूत्रम् | व्यासः | १-१० । |
| २७०८७ | ब्रह्मसूत्रभाष्यव्याख्या | गोविन्दानन्दः | २९१ । (गणनया) |
| २७०८८ | तत्त्वबोधः | वासुदेवेन्द्रयोगीन्द्रशिष्यः | १-८ । |
| २७०८९ | " | " | १-४ । |
| २७०९० | पञ्चीकरणम् | | १-२ । |
| २७०९१ | " | | ६-११ । |
| २७०९२ | " | | ७-८ । |
| २७०९३ | " | | १, १ । |
| २७०९४ | पञ्चीकरणवार्त्तिकम् | सुरेश्वराचार्यः | ४-१२ । |
| २७०९५ | " | " | १-४ । |
| २७०९६ | " | " | १-२ । |
| २७०९७ | " | " | १-३ । |
| २७०९८ | वहिर्मुखान्तःकरणबालबोधिनी | शङ्कराचार्यः | १-४ । |
| २७०९९ | अद्वैतानुभूतिः | | १-३ । |
| २७१०० | वैयासकन्यायमाला | भारतीतीर्थविद्यारण्यः | १-२६ । |
| २७१०१ | वेदान्तसारः | सदानन्दः | १-१३ । |
| २७१०२ | " | " | १-१९ । |
| २७१०३ | " | " | १-११ । |
| २७१०४ | मोक्षानन्दतरङ्गिणी | रघूत्तमतीर्थः | १-२९ । |
| २७१०५ | त्रिपुटीप्रकरणम् | शङ्कराचार्यः | १-८ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | ज्ञानः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|--------|----------|-------------------------|--|
| १०°९ × ४°६ | ७ | ३६ | दे.ना. | का. | | पू० | |
| १४ × ९°९ | ९ | ४६ | " | " | | " | |
| १४ × ९°९ | ११ | ५२ | " | " | | "* | |
| ९°६ × ३°२ | ५ | ३२ | " | " | | " | |
| १२°२ × ३°६ | ७ | ४० | " | " | | " | |
| १२ × ४°४ | ८ | ३४ | वङ्ग. | " | | " | महावाक्यार्थश्च । |
| १२°१ × ३°५ | ७ | ४१ | " | " | | " | पञ्चीकरणवार्त्तिकं चौरविधिश्च । |
| १२°५ × ३°८ | ६ | ४४ | " | " | | " | महावाक्यार्थबोधप्रकारश्च । |
| १२°७ × ४°२ | ११ | ३७ | " | " | | " | " |
| १०°५ × ३°३ | ५ | २१ | " | " | | अपू० | |
| १२°५ × ४°३ | ८ | ३९ | " | " | | पू० | भक्तधारणमन्त्रश्च । |
| ९°९ × ४°४ | १५ | ४० | " | " | | " | |
| १३ × ४°८ | १२ | ४१ | " | " | | " | |
| १०°८ × ३°९ | ९ | ३६ | " | " | | " | साधनप्रकरणमात्रम् । |
| १४ × ४°३ | ११ | ५६ | " | " | | " | |
| ६°८ × ३°८ | ११ | ३० | दे.ना. | " | | " | |
| १५°६ × ३°१ | ७ | ५९ | वङ्ग. | " | | " | |
| १२°३ × ३°९ | ६ | ३५ | " | " | | " | |
| १२°४ × ५ | ९ | ३५ | " | " | | अपू० | |
| ९°५ × ४°१ | ९ | ३० | " | " | | " | |
| ८°५ × ५°३ | १५ | ३६ | दे.ना. | " | | पू० | उपदेशविधिः पञ्चीकरणम् वहिर्मु- खान्त प्रवणवालयोधिनी च । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------|-------------------------------------|--|
| २७१०६ | पञ्चदशी सटीका | | २, ५-६८, ६८-७८, ८०, ८२-१५६, १६०-१६२, १६९-१७५ । |
| २७१०७ | " " | | १-५ । |
| २७१०८ | पञ्चीकरणम् | | १ । |
| २७१०९ | " | | १-२ । |
| २७११० | " | | १-३ । |
| २७१११ | " | | १-३ । |
| २७११२ | पञ्चीकरणवार्त्तिकम् | सुरेश्वराचार्यः | १-५ । |
| २७११३ | " | " | १-६ । |
| २७११४ | " | " | १-४ । |
| २७११५ | पञ्चीकरणविवरणतत्त्व-चन्द्रिका | | १-१७ । |
| २७११६ | वेदान्तसारः | सदानन्दः | १-८ । |
| २७११७ | वेदान्तसारटीका | | १-५ । |
| २७११८ | " | रामतीर्थयतिः | १-३३ । |
| २७११९ | वेदान्तपरिभाषा | धर्मराजाध्वरीन्द्रः | १-२१ । |
| २७१२० | पञ्चदशी सटीका | विद्यारण्यमुनिः टी.का. रामकृष्णः | १-७ । |
| २७१२१ | तत्त्वानुसन्धानव्याख्यानम् | महादेवानन्दसर- स्वती | ३३६ । (गणनया) । (१-१०४, १-११४, १-६८, १-५०) । |
| २७१२२ | महावाक्यार्थः | | १ । |
| २७१२३ | पोडशमहावाक्यस्मरणम् | | १-३ । |
| २७१२४ | शारीरकभाष्यम् | शङ्कराचार्यः | ३४१ । (गणनया) |
| २७१२५ | ब्रह्मज्ञानम् | " | १ । |
| २७१२६ | वाक्यसुधा | | १४ । (गणनया) |
| २७१२७ | सिद्धान्तचन्द्रिका | रामयतिः | १-४ । |

| क्रमांकः | पक्षि- मस्या | पक्षि- संख्या | विधिः | स्थानः | लिपिस्थलः | पूर्णाङ्क- विधिः | विशेषविवरणम् |
|------------|-----------------|------------------|--------|--------|-----------|---------------------|--------------------------------|
| १४'७ x ९'७ | १६ | ६१ | चक्र. | फा. | | अपू० | |
| १४'७ x ९'८ | १६ | ६० | " | " | | " | " |
| ९'६ x ४'३ | १० | ३१ | दे.ना. | " | | पू० | |
| १३ x ३'३ | ८ | ६९ | चक्र. | " | | " | महावाक्यार्थबोधप्रकारश्च । |
| ९'७ x ३'४ | १० | २६ | " | " | | " | " |
| ८'८ x ३'८ | ८ | २९ | " | " | | " | " |
| १०'१ x ४ | ८ | ३४ | " | " | | " | |
| ८ x ३'३ | ७ | ३० | " | " | | " | |
| १०'९ x ४'९ | ९ | ३६ | दे.ना. | " | | " | |
| १९'३ x ३'० | ८ | ८१ | चक्र. | " | | " | |
| ३'९ x ४'२ | ९ | ६३ | " | " | | " | दक्षिणामूर्तित्वोद्गच्छ । |
| १८'२ x ३'९ | ८ | ६० | " | " | | अपू० | |
| १९ x ४'४ | १० | ७३ | " | " | | पू० | विद्वन्मनोरञ्जनी । |
| १९ x ४'४ | १० | ७० | " | " | | " | |
| १९ x ४'४ | ९ | ९६ | " | " | | " | तत्त्वविवेकाख्यं प्रकरणम् । |
| १०'८ x ४'८ | ७ | ३८ | दे.ना. | " | | " | अद्वैतकीस्तुभाख्यम् । |
| ९'७ x ३'३ | ७ | ३८ | " | " | | " | |
| १०'३ x ४'४ | ७ | ३३ | " | " | | " | पञ्चीकरणमहावाक्यार्थविवरणश्च । |
| १० x २'९ | १० | ९१ | " | " | १९२६ | " | |
| ९'६ x ३'८ | ९ | ३९ | " | " | | " | |
| ११'९ x ८ | ९ | ४९ | " | " | | अपू० | |
| १०'१ x ४'८ | ८ | ३६ | चक्र. | " | | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------|---|-------------------|
| २७१२८ | अद्वैतमकरन्दः | | ३ । (गणनया) |
| २७१२९ | सहस्रोपदेशीप्रकरणम् | | ३ । (गणनया) |
| २७१३० | अद्वैतमकरन्दः सटीकः | लक्ष्मीधरकविः टी. का. स्वयंप्रका- शयतिः | १-११ । |
| २७१३१ | ब्रह्मसूत्रं सटीकम् | | १-१३, १५-३२ । |
| २७१३२ | अद्वैतसिद्धिटीका | ब्रह्मानन्दसरस्वती | ६३२ । (गणनया) |
| २७१३३ | शारीरकभाष्यव्याख्या | व्या. का. अद्वैता- नन्दः | १-३, ५-३३, १-३३ । |
| २७१३४ | शारीरकभाष्यटीका | टी. का. गोविन्दा- नन्दः | १-१९ । |
| २७१३५ | तत्त्वबोधप्रकरणम् | वासुदेवयोगीन्द्र- शिष्यः | १-४ । |
| २७१३६ | " | " | १-४ । |
| २७१३७ | जीवेश्वरविभागः | | १ । |
| २७१३८ | भामती | वाचस्पतिः | १-२२ । |
| २७१३९ | वेदान्तसारः | सदानन्दः | १-३ । |
| २७१४० | " | " | १-११ । |
| २७१४१ | " | " | १-२ । |
| २७१४२ | " | " | १-१४ । |
| २७१४३ | वेदान्तसारटीका | टी. का. रामतीर्थ- यतिः | १-४७ । |
| २७१४४ | पञ्चीकरणम् | | १ । |
| २७१४५ | पञ्चकोशविवेकप्रकाशिका | सदाशिवतीर्थः नारायणतीर्थशिष्यः | १ । |
| २७१४६ | " | | १ । |
| २७१४७ | पञ्चीकरणवार्त्तिकटीका | टी. का. सदाशिवा- नन्दतीर्थशिष्यः | १-२२ । |

| आकारः | पक्षि- मंख्या | जशर- मंख्या | क्रिपिः | जामरः | निविकानः | पूर्णावृत्त- नितरः | विशेषविवरणम् |
|------------|------------------|----------------|---------|-------|----------|-----------------------|-------------------------------------|
| १०'८ × ४'८ | २० | ४९ | दे. ना. | वा. | | अपू० | |
| १०'८ × ४'९ | २२ | ५१ | " | " | | " | |
| १० × ४ | १७ | ४९ | वज्र. | " | | पू० | टीका रस्ताभिव्यञ्जिकाख्या । |
| ११ × ४'९ | १३ | ५१ | दे. ना. | " | | अपू० | टीका नारायणतीर्थकृतेति प्रतिभाति । |
| १४ × ५'४ | १० | ४० | " | " | १९२३ | पू०क्षे | लघुचन्द्रिकाख्या |
| ११'५ × ४'८ | ९ | ४२ | " | " | | अपू० | २ अध्यायस्य १-२ पादौ । |
| १२'६ × ४'५ | १३ | ६० | वज्र. | " | | " | रत्नप्रभाख्या १-२ सूत्रयोः । |
| १६'४ × ३'८ | ७ | ४८ | वज्र. | " | | पू० | |
| १२ × ३'५ | ८ | ८ | " | " | | " | |
| ८'५ × ५ | २१ | ४४ | दे. ना. | " | | अपू० | |
| १२'४ × ४ | ८ | ६१ | मैथि. | " | | " | ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यटीका |
| १३'२ × ४'६ | ६ | ३९ | वज्र. | " | | " | |
| ११'९ × ४'१ | १० | ४५ | " | " | | पू० | |
| १२ × ४'७ | ९ | ३८ | " | " | | अपू० | |
| १२'४ × ४'७ | ८ | ४५ | " | " | १७६० श. | पू० | |
| ११'९ × ४'१ | ११ | ४७ | " | " | | " | विद्वन्मनोरञ्जनी । |
| ९'८ × ३'३ | ७ | ३८ | " | " | | अपू० | |
| १०'२ × ७ | १५ | ४६ | दे. ना. | " | | " | |
| १० × ४'२ | १७ | ६४ | वज्र. | " | | " | |
| १०'५ × ७'७ | १७ | ४३ | दे. ना. | " | | पू० | पद्मीकरणवार्त्तिनार्थप्रकाशिका वा । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------------|--|-------------------|
| २७१४८ | स्वाराज्यसिद्धिः | गङ्गाधरसरस्वती | १-१२ । |
| २७१४९ | तत्त्वमसीतिवाक्यार्थविचारः | | १ । |
| २७१५० | वेदान्तपरिभाषा | धर्मराजाध्वरीन्द्रः | १-९२ । |
| २७१५१ | वेदान्तसारः | | १-७ । |
| २७१५२ | वेदान्तसारटीका | टी.का. रामतीर्थ- यतिः | २-३९ । |
| २७१५३ | " | | १-३४ । |
| २७१५४ | " | टी. का. नृसिंह- सरस्वती (कृष्णा- नन्दशिष्यः) | १-५२ । |
| २७१५५ | " | टी का. रामतीर्थ- यतिः | १-२८, ३६-४७ । |
| २७१५६ | पञ्चीकरणम् | | १ । |
| २७१५७ | पञ्चीकरणवार्त्तिकभरणम् | | १-१२ । |
| २७१५८ | पञ्चीकरणवार्त्तिकम् | सुरेश्वराचार्यः | २-३ । |
| २७१५९ | पञ्चीकरणमहावाक्यार्थ- विवरणम् | शङ्कराचार्यः | १-९ । |
| २७१६० | पञ्चीकरणम् | | १-४ । |
| २७१६१ | द्वादशमहावाक्यविवरणम् | " | १-३३ । |
| २७१६२ | महावाक्यार्थबोधप्रकारः | | १ । |
| २७१६३ | षोडशमहावाक्यम् | | १-९ । |
| २७१६४ | मायाविचारः | | १ । |
| २७१६५ | महावाक्यार्थबोधप्रकारः | | १ । |
| २७१६६ | वेदान्तसूत्रम् | व्यासः | १-१० । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आवाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|------|----------|------------------------|--|
| १२ × ४'४ | १२ | ४३ | वङ्ग. | का. | | पू० | जीवनमुक्तिनिरूपणं नाम तृतीयं प्रकरणम् । |
| ८'४ × ४'७ | १६ | ३० | दे.ना. | " | | अपू० | |
| ८'१ × २'५ | ५ | २७ | वङ्ग. | " | | पू० | |
| १० × ४ | ७ | २८ | " | " | | अपू० | |
| १२'५ × ३'३ | १२ | ७० | " | " | | " | विद्वन्मनोरञ्जनी । |
| १३'२ × ४'१ | ७ | ४३ | " | " | | " | सुबोधिनी । |
| १४'४ × ३'२ | ९ | ६२ | " | " | १०१० श. | पू० | " |
| १२ × ४'७ | १३ | ५० | " | " | | अपू० | विद्वन्मनोरञ्जनी । |
| १२'४ × ४'६ | १५ | ६४ | " | " | | पू० | |
| १३'५ × ५ | ११ | ४९ | " | " | | " | |
| १२ × ४'९ | ११ | ४२ | " | " | | अपू० | |
| ९'२ × ३'७ | ७ | २४ | " | " | | पू० | पञ्चीकरणवार्तिकं षोडशमहावाक्य- स्मरणञ्च । |
| १३ × ३'३ | ५ | ३९ | " | " | | " | महावाक्यार्थबोधप्रकारश्च । |
| १४'७ × ३ | ६ | ६१ | " | " | | " | |
| ९'७ × ३'९ | ९ | ३२ | " | " | | अपू० | |
| १४'१ × २'७ | ७ | ४७ | " | " | | पू० | पञ्चीकरणं महावाक्यार्थः पञ्ची- करणवार्तिकं पञ्चीकरणवार्तिकं- शाङ्करम् शान्तिपाठः मङ्गलपाठः मानसिकस्नानञ्च । |
| ८'४ × ४'७ | २७ | १५ | दे.ना. | " | | अपू० | |
| ६'६ × ३'८ | ११ | ३२ | वङ्ग. | " | | " | |
| १३ × ५'१ | १० | ३८ | दे.ना. | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------|--|--------------------------|
| २७१६७ | स्वात्मनिरूपणं सटीकम् | शङ्कराचार्यः टी.का. सच्चिदा- नन्दसरस्वती | २-१६ । |
| २७१६८ | वेदान्तसूत्रम् | व्यासः | १-११ । |
| २७१६९ | तत्त्वबोधः | वासुदेवेन्द्रयोगी- न्द्रशिष्यः | १-२ । |
| २७१७० | " | " | १-७ । |
| २७१७१ | " | " | १-५ । |
| २७१७२ | " | " | १-२, १-५ । |
| २७१७३ | आत्मानात्मविवेकः | शङ्कराचार्यः | १-५ । |
| २७१७४ | " | " | १-४ । |
| २७१७५ | " | " | ३-९ । |
| २७१७६ | खण्डनखण्डखाद्यं सटीकम् | | ३१०-३१३ । |
| २७१७७ | अद्वैतमकरन्दपरीक्षा | वासुदेवगौडा- चार्यः | १-७ । |
| २७१७८ | अपरोक्षानुभूतिः | | १-६ । |
| २७१७९ | अद्वैतमकरन्दः | | ३-४ । |
| २७१८० | पञ्चपादिका | पद्मपादाचार्यः | १-११ । |
| २७१८१ | शास्त्रसिद्धान्तलेशसङ्ग्रहः | | १-६६ । |
| २७१८२ | ब्रह्मसूत्रम् | | ३-४, ६-८, १०-११, १४-१८ । |
| २७१८३ | " | | १-१३ । |
| २७१८४ | " | | १-१२ । |
| २७१८५ | " | | १-५ । |
| २७१८६ | त्रिपुटीप्रकरणम् | | २०-२७, २९-३४ । |
| २७१८७ | वाक्यसुधाप्रकरणं सटीकम् | | १९ । (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आशङ्कः | लिपिकालः | पूर्णपूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|--------|----------|-----------------------|----------------------------------|
| १२८ × ६४ | १६ | ५० | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| १०४ × ४४ | ८ | ३४ | " | " | | पू० | |
| १२९ × ४८ | ९ | ५६ | " | " | | " | |
| ८३ × ३५ | ८ | ३३ | " | " | | " | |
| ११९ × ४५ | १० | ५५ | " | " | | " | उपदेशपञ्चकस्तोत्रञ्च । |
| १५५ × ३९ | ९ | ५७ | " | " | | " | आत्मानात्मविवेकः मनीषापञ्चकञ्च । |
| १२९ × ४९ | ९ | ४५ | " | " | | " | |
| १४२ × ४६ | १३ | ४९ | " | " | | " | |
| १२३ × ४९ | ७ | ३४ | " | " | | अपू० | |
| १४ × ५४ | ११ | ५१ | " | " | | " | |
| ११६ × ३८ | १२ | ५७ | वङ्ग. | " | | " | |
| १२५ × ३२ | ७ | ४९ | " | " | | " | |
| १२ × ४१ | ११ | ४८ | " | " | | " | |
| ९२ × ३७ | १० | ३२ | दे. ना. | " | | " | द्वितीयवर्णकमात्रम् । |
| ११७ × ४५ | १२ | ५० | वङ्ग. | " | | पू० | सिद्धान्तलेशसंङ्ग्रहो वा । |
| १३१ × ४७ | | | | | | | |
| ७५ × ३७ | ७ | १८ | दे. ना. | " | | अपू० | |
| ७८ × ३४ | ९ | २६ | " | " | १६९६ | पू० | |
| १० × ४ | ९ | २६ | " | " | | अपू० | |
| १२५ × ५१ | १५ | ५० | " | " | | पू० | |
| ८ × ३७ | ५ | २३ | " | " | | अपू० | लघुवाक्यवृत्तिश्च । |
| १०३ × ४९ | ९ | ३५ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------------|---------------------|----------------------------------|
| २७१८८ | लघुवाक्यवृत्तिप्रकरणम् | शङ्कराचार्यः | १-२ । |
| २७१८९ | ज्ञानबोधः | शुकयोगी | १-२ । |
| २७१९० | शारीरकभाष्यम् | | २३-३६ । |
| २७१९१ | अद्वैतसिद्धिः | मधुसूदनसरस्वती | १-१०१, १०१-२०३ (= २०४) २०५-४७८ । |
| २७१९२ | मननप्रकरणम् | | ५ । (गणनया) |
| २७१९३ | वेदान्तप्रकरणम् | | १ । |
| २७१९४ | शतश्लोकी सटीका | शङ्कराचार्यः | १-३५ । |
| २७१९५ | वेदान्तकल्पतरुपरिमलः | | ७ । (गणनया) |
| २७१९६ | सुमुक्षुचित्तसमाधान- प्रकरणम् | | १-७ । |
| २७१९७ | आत्मविचारः | | १ । |
| २७१९८ | अद्वैतसिद्धिः | मधुसूदनसरस्वती | १-१४, १६-१४२, १४२-१६३, १८४-२९८ । |
| २७१९९ | प्रबोधसुधाकरः | शङ्कराचार्यः | १-८ । |
| २७२०० | तत्त्वविवेकः | | ११-१७ । |
| २७२०१ | अपरोक्षानुभूतिः | | २-२२ । |
| २७२०२ | जीवन्मुक्तिविवेकः | सायणाचार्यः | १-७० । |
| २७२०३ | पञ्चीकरणविचारः | | १-२ । |
| २७२०४ | पञ्चदशी सटीका | विचारण्यमुनिः | १-३९, १-२८ |
| २७२०५ | तत्त्वबोधप्रकरणम् | शङ्कराचार्यः | ६, ८-१२ । |
| २७२०६ | मननप्रकारः | वासुदेवेन्द्रशिष्यः | १-८७ । |
| २७२०७ | अणुभाष्यव्याख्या | | १-१९, १-२५, १-३२ । |
| २७२०८ | अणुभाष्यप्रदीपः | इच्छारामः | १-१०९ । |
| २७२०९ | अणुभाष्यटीका | | १-१० । |
| २७२१० | अणुभाष्यम् | वल्लभाचार्यः | १-४८, १-१५, १-४९, १-२२ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | काण्डः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-----------|----------------|--------------|---------|--------|----------|--------------------|-----------------------|
| ९५ × ६ | ९ | २३ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ८२ × ३०९ | १० | २८ | " | " | | " | |
| १२३ × ६३ | १५ | ५७ | " | " | | " | |
| १०८ × ४०८ | १० | ४१ | " | " | | पू० | १-४ परिच्छेदाः । |
| १०८ × ४६ | २१ | ५६ | " | " | | मू० | |
| १०७ × ४६ | १७ | ५० | " | " | | अपू० | |
| १३१ × ५० | १३ | ५६ | " | " | १८५४ | पू० | |
| ११२ × ४० | १४ | ६२ | वज्र. | " | | अपू० | |
| ८३ × ४०६ | ८ | २० | " | " | | पू० | |
| ६ × ३. | २४ | १८ | " | " | | " | |
| १०८ × ४० | ७ | ३९ | " | " | | अपू० | १-४ परिच्छेदाः । |
| ८ × ५ | १७ | ३२ | " | " | | पू० | |
| ९३ × ३३ | ११ | ३८ | " | " | | अपू० | |
| ९२ × ४५ | ८ | २५ | " | " | | " | मराठी टीकासहिता । |
| १०६ × ४५ | १० | ३९ | " | " | | " | |
| १२५ × ४२ | १० | ४८ | " | " | | पू० | |
| १२ × ४०१ | ११ | ३८ | " | " | | अपू० | |
| ५८ × ४ | ८ | १८ | दे. ना. | " | | " | |
| ११६ × ४८ | १२ | ३५ | " | " | | पू० | |
| १२५ × ५६ | ८ | ३० | " | " | | अपू० | मरीचिका ३-४ अध्यायौ । |
| १२५ × ६२ | १० | ३० | " | " | | " | |
| ९१ × ४५ | ११ | ३२ | " | " | | " | भावप्रकाशाख्या । |
| १२५ × ५४ | ११ | ५२ | " | " | | पू० | १-४ अध्यायाः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--|---|--|
| २७२११ | अणुभाष्यम् | वह्मभाचार्यः | १-७७, १-२६, १-४२ । |
| २७२१२ | न्यायामृतकण्टकोद्धारः | न्यासतीर्थः | १-१४, १-९८ । |
| २७२१३ | न्यायामृततरङ्गिणी | टी.का. रामाचार्यः | १-२७, २७-१२९, १२९-४५० । |
| २७२१४ | ब्रह्मसूत्रश्रीभाष्यव्याख्या | | ९ । (गणनया) |
| २७२१५ | ब्रह्मसूत्रविचारः | मुरलीधरः | १-३ । |
| २७२१६ | ब्रह्मसूत्रभाष्यटीका | जयतीर्थः | १-१७, १-१४, १-२२, १-१२ । |
| २७२१७ | " | " | १-३३, १-१४, १-२३, १-१४ । |
| २७२१८ | ब्रह्मसूत्रभाष्यम् | आनन्दतीर्थः | १-६३ । |
| २७२१९ | प्रमाणपद्धतिटीका | टी.का. वेदेशतीर्थः | २-२६ । |
| २७२२० | प्रमाणलक्षणं सटीकम् | आनन्दतीर्थः टी.का. जयतीर्थ- भिक्षुः | १-५२ । |
| २७२२१ | प्रमाणसङ्ग्रहः | वनमाली | १-३३ । |
| २७२२२ | ब्रह्ममीमांसाभाष्यम् | भा.का. श्रीकण्ठ- शिवाचार्यः | १-४९, १-१४ (= १४+१५) १६-२६, १-३६, १-२२-३० |
| २७२२३ | प्रत्यगात्मविचारः | गोपिकारमणसेवन- लब्धसंज्ञः | १-४ । |
| २७२२४ | वेदान्तशास्त्रीयपदार्थसङ्ग्रहः | | २-७ । |
| २७२२५ | मौनस्थितिप्रकारविचारः | | ९ । (गणनया) |
| २७२२६ | ब्रह्मसूत्रसिद्धान्तमुक्तावलिः | वनमाली | १-३१ । |
| २७२२७ | प्रपञ्चमिथ्यात्वमानखण्डन- पञ्चिकाटीका | टी.का. न्यासयतिः | १-७८ । |
| २७२२८ | मायावादखण्डनपञ्चिका- टीका | " | १-२० । |
| २७२२९ | पञ्चदशी सटीका | विद्यारण्यमुनिः टी.का. रामकृष्णः | १-२७, ३०-३२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| १०*५ × ४*५ | १० | ३८ | दे. ना. | का. | १७११ | अपू० | |
| १० × ४*५ | १० | ४१ | " | " | | " | न्यायामृतटीका । |
| १०*३ × ४*४ | १० | ४० | " | " | १७१२ | पू० | १-२ परिच्छेदौ । |
| ९*४ × ४*३ | १२ | ४१ | " | " | | अपू० | |
| १०*३ × ४*७ | ८ | ३२ | " | " | | " | प्रथमसूत्रस्य । |
| ९*७ × ४ | १३ | ४८ | " | " | | पू० | तत्त्वप्रकाशिकाख्या । द्वितीयाध्यायस्य १-४ पादाः । |
| १० × ४ | १२ | ४२ | " | " | | " | तत्त्वप्रकाशिकाख्या । प्रथमाध्यायस्य १-४ पादाः । |
| ९*७ × ४ | १२ | ४३ | " | " | १७७३ | " | |
| ९*३ × ४*३ | ९ | ३६ | " | " | | अपू० | प्रथमपरिच्छेदमात्रम् । |
| १०*२ × ३*२ | ८ | ३२ | " | " | | पू० | |
| ११*३ × ३*६ | ८ | ४८ | " | " | | अपू० | |
| १० × ४*३ | १२ | ४७ | " | " | | पू० | चतुर्थपादमात्रम् । |
| ९*२ × ४*२ | ९ | ३२ | " | " | | " | |
| ६*६ × ४*५ | ८ | २५ | " | " | | अपू० | चतुर्विंशतितत्त्वोत्पत्तिप्रकारश्च । |
| ९*६ × ६*४ | १२ | ३१ | " | " | | " | स्वप्ननिवेदनं बुद्धिविश्रान्तिप्रकारश्च । |
| १०*७ × ४*६ | १२ | ४३ | " | " | | " | |
| १०*३ × ४*२ | १० | ४८ | " | " | | पू० | भावप्रकाशिकाख्या । |
| १०*४ × ४*२ | १० | ४७ | " | " | | " | " |
| १३ × ६*९ | २२ | ६१ | " | " | | अपू० | चित्रदीपनाटकदीपाख्यप्रकरणद्वयम् । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---|-------------------------------------|-------------------|
| २७२३० | प्रमाणपद्धतिः | जयतीर्थः | २-६, १०-२४ । |
| २७२३१ | प्रपञ्चमिथ्यात्वमान- खण्डनपञ्चिका | | १-८, १०-१६ । |
| २७२३२ | प्रपञ्चमिथ्यात्वानुमान- खण्डनविवरणम् | जयतीर्थभिक्षुः | २-१२ । |
| २७२३३ | आत्मपदकभाष्यम् | | १-४ । |
| २७२३४ | प्रस्थानरत्नाकरः | | १-८२ । |
| २७२३५ | वेदान्तसिद्धान्तमुक्तावली सटीका | टी.का. नाना- दीक्षितः | २०९ । (गणनया) |
| २७२३६ | प्रमेयरत्नार्णवः | बालकृष्णभट्टः | १-४४ । |
| २७२३७ | अद्वैतसिद्धिः | | १-१८ । |
| २७२३८ | ब्रह्मसूत्रं सभाष्यम् | व्यासः, भाष्यकारः रामानुजाचार्यः | १-३३, ३३-११० । |
| २७२३९ | तत्त्वमसीतिमहावाक्य- व्याख्यानम् | | १-१० । |
| २७२४० | स्वानुभवादर्थः | | ३ (गणनया) । |
| २७२४१ | स्वानुभवप्रकाशिका | | १-३ । |
| २७२४२ | सङ्क्षेपशारीरकम् | | ३ । (गणनया) |
| २७२४३ | पञ्चदशी सटीका | | २ । (गणनया) |
| २७२४४ | ब्रह्मविचारः | | १ । |
| २७२४५ | अद्वैतानन्दः | | १ । |
| २७२४६ | वेदान्तदीपिका | वनमाली | १-२९, २९-३४ । |
| २७२४७ | वेदान्तसिद्धान्तकौतुकम् | वेणीदत्तभट्टः | १-१७ । |
| २७२४८ | वेदान्तसिद्धान्तमुक्तावली | वनमाली | ३२-९३, ९३-१५९ । |
| २७२४९ | वेदान्तसिद्धान्तसङ्ग्रहः | " | १-१४२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|--|
| १०४ × ३६ | १५ | ४९ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| ८७ × ३१ | ९ | ३६ | " | " | | " | |
| १०३ × ४२ | १० | ४६ | " | " | | " | |
| ५ × ३२ | ७ | १७ | " | " | | " | |
| १०१ × ४३ | ११ | ४४ | " | " | | पू० | प्रमाणपरिच्छेदः । |
| १४१ × ७ | १६ | ४० | " | " | १९१२ | " ❀ | |
| ११८ × ५३ | ९ | ३९ | " | " | | " | |
| १२७ × ४७ | १० | ३८ | " | " | | अपू० | |
| ११६ × ५८ | १० | ३६ | " | " | | पू० | प्रथमाध्यायस्य प्रथमपादमात्रम् । |
| ६४ × ३३ | ८ | २१ | " | " | | " | चतुर्वेदोक्तमहावाक्यसहितश्रुत्यादि- न्यासध्यानादिकं, परमहंसधर्म- निरूपणञ्च । |
| ११ × ५ | २१ | ५४ | " | " | | अपू० | |
| १०८ × ४६ | १७ | ४६ | " | " | | पू० | |
| १०८ × ४८ | २२ | ४७ | " | " | | अपू० | |
| १०८ × ४६ | १६ | ४५ | " | " | | " | |
| १०६ × ४६ | १२ | ४३ | " | " | | " | |
| १०८ × ४६ | १७ | ३९ | " | " | | " | |
| ११ × ४८ | ११ | ५६ | " | " | | " | |
| १० × ३६ | ९ | ३६ | " | " | | " | |
| १०८ × ४७ | १२ | ४३ | " | " | | " | |
| १०८ × ४८ | ८ | ५३ | " | " | | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|---|-------------------|
| २७२५० | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | रामानुजाचार्यः | १-१९१ । |
| २७२५१ | सृष्टिक्रमः | | १ । |
| २७२५२ | अविद्यादिविचारः | | ३ । (गणनया) |
| २७२५३ | आत्मप्रतीतिप्रकारः | | ३ । (गणनया) |
| २७२५४ | स्वानुभवादृशः | | २ । (गणनया) |
| २७२५५ | तत्त्वविवेकटीका | | १००-१४१ । |
| २७२५६ | अध्यात्मविद्योपदेशविधिः | | १ । |
| २७२५७ | महावाक्यार्थविचारः | | २० । (गणनया) |
| २७२५८ | तत्त्वविवेकः | | २-३८ । |
| २७२५९ | " | | ५० । (गणनया) |
| २७२६० | सङ्क्षेपशारीरकं सटीकम् | टी.का. रामतीर्थः | २-१२ । |
| २७२६१ | ब्रह्मसूत्रं सभाष्यम् | कृष्णद्वैपायनः भाष्य० आनन्द- तीर्थः | २-४५ । |
| २७२६२ | ब्रह्मसूत्रभाष्यम् | बल्लभाचार्यः | २४८ । (गणनया) |
| २७२६३ | आत्मबोधः सटीकः | | ५ । (गणनया) |
| २७२६४ | रत्नत्रयपरीक्षा | अप्पयदीक्षितः | १-३६ । |
| २७२६५ | खण्डनखण्डखाद्यटीका | टी.का. शङ्करमिश्रः | १-४ । |
| २७२६६ | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | शङ्कराचार्यः | १-२३ । |
| २७२६७ | वेदान्तसारटीका | रामतीर्थः | २४ । (गणनया) |
| २७२६८ | ब्रह्मविमर्शः | | १२५ । (गणनया) |
| २७२६९ | वेदान्तप्रकरणसूची | | २ । (गणनया) |
| २७२७० | वाक्यवृत्तिः सटीका | | १-१० । |
| २७२७१ | " | | २७ । (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | का. सं. | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-----------|--------------------|------------------|---------|---------|----------|------------------------|---|
| ६०५ × ४१ | १० | ४१ | दे. ना. | का. | १७७७ | पू० | प्रथमाध्यायमात्रम् । |
| १००७ × ४९ | २१ | ४७ | " | " | | अपू० | |
| १००७ × ४६ | १८ | ४८ | " | " | | " | |
| १००७ × ४९ | २० | ४५ | " | " | | " | |
| १०९ × ४९ | २१ | ५० | " | " | | " | |
| ९६ × ४२ | १२ | ३१ | " | " | | " | |
| ६०८ × ३६ | ८ | २२ | " | " | | " | अज्ञानवोधिनीति नामान्तरम् । |
| १३०७ × ४४ | १० | ५१ | " | " | | " | |
| ५०१ × २०८ | ६ | २२ | " | " | | " | |
| ११३ × ३५ | ७ | ४८ | " | " | | " | |
| १०७ × ४३ | १२ | ४४ | " | " | | " | टीका अन्वयार्थप्रकाशिका द्वितीया- ध्यायमात्रम् । |
| १०७ × ४७ | १५ | ४९ | " | " | | " | |
| १०९ × ४५ | ९ | ४५ | " | " | १९३३ | पू०* | |
| १०९ × ३६ | १४ | ५५ | वङ्ग. | " | | अपू० | |
| ८३ × ४३ | ९ | ३१ | दे. ना. | " | | पू० | |
| १३९ × ५३ | ९ | (६४) | " | " | | अपू० | चतुर्थः परिच्छेदः |
| १११ × ५३ | १२ | ५७ | " | " | | " | |
| १०३ × ४६ | १४ | ४८ | " | " | | " | |
| १०४ × ४६ | ११ | ५१ | " | " | | " | |
| १०६ × ४६ | १८ | ३० | " | " | | " | लोकसमुद्रदेशादिसूची च । |
| ९३ × ३९ | ११ | ४० | " | " | | " | |
| १०५ × ३८ | ११ | ५८ | " | " | १७७९ | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------------|--------------------|--|
| २७२७२ | पञ्चप्रकरणी | | २-२१ । |
| २७२७३ | स्वानुभूतिप्रकाशः | देवेन्द्रः | २-७२ । |
| २७२७४ | अद्वैतसिद्धान्तविद्योतनम् | ब्रह्मानन्दसरस्वती | ७१ । (गणनया) |
| २७२७५ | मायोत्कर्षादिविचारः | | १४ । (गणनया) |
| २७२७६ | पञ्चपादिकाविवरणतत्त्व- दीपनम् | अखण्डानन्दमुनिः | १६८ । (गणनया) |
| २७२७७ | वेदान्तकल्पतरुः | | १-२७ । |
| २७२७८ | वेदान्तकल्पतरुटीका | अप्पयदीक्षितः | ५४२ । (गणनया) |
| २७२७९ | वेदान्तसारः | सदानन्दः | १-१८ । |
| २७२८० | पञ्चीकरणतात्पर्यचन्द्रिका | रामानन्दसरस्वती | ३-८७ । |
| २७२८१ | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | शङ्कराचार्यः | ५१-२१४ । |
| २७२८२ | सङ्क्षेपशारीरकम् | सर्वज्ञात्ममुनिः | ७३ । (गणनया) |
| २७२८३ | " | " | १-६६, १, १-४ । |
| २७२८४ | " | | ४ । (गणनया) |
| २७२८५ | शारीरकन्यायनिर्णयः | आनन्दज्ञानः | १३२ । (गणनया) |
| २७२८६ | पञ्चपादिकाविवरणम् | | ३-७९, ८२-१०५ । |
| २७२८७ | तत्त्वालोकः | जनार्दनः | २-४२ । |
| २७२८८ | तत्त्वप्रदीपिका | | १२ । (गणनया) |
| २७२८९ | भामती | | १६-३०, ३५-३७, ३७-८२, ८३-१०७ । |
| २७२९० | ब्रह्मसूत्रभाष्यटीका | आनन्दतीर्थः | १०-४३ । |
| २७२९१ | सङ्क्षेपशारीरकटीका | मधुसूदनसरस्वती | १-४८, ४३-५२, ५२-५४, ५६-१३४, १४२- १६२, १-१७, १४-५२, १-९१, १-१६ । |
| २७२९२ | पञ्चपादिकाविवरणम् | प्रकाशात्मभगवान् | ७-९०, ९०-११२ । |
| २७२९३ | भामती | वाचस्पतिमिश्रः | ३-८३, ८५-९५ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | माघाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|----------------------|-------|----------|-------------------------|------------------------------------|
| ९७ × ४१ | ८ | २४ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| १० × ४५ | ११ | ४४ | " | " | | " | |
| ११७ × ३५ | ६ | ३९ | " | " | | पू०* | अनिर्वचनीयभाष्यमात्रम् । |
| १०७ × ४९ | २० | ५२ | " | " | | अपू० | |
| १० × ३८ | ९ | ४७ | " | " | | " | पञ्चपादिकाविवरणव्याख्यानम् । |
| १२८ × ५ | ११ | ५२ | " | " | | " | प्रथमाध्यायस्य प्रथमपादः । |
| १२७ × ४७ | ९ | ५७ | " | " | | " | परिमलः । |
| १२७ × ५ | ७ | ४३ | वङ्ग. | " | | पू० | |
| १०९ × ४७ | १० | ३६ | दे.ना. | " | | अपू० | |
| ११३ × ४२ | १२ | ६२ | वङ्ग. | " | | " | |
| १२ × ३२ | ७ | ५८ | दे.ना. | " | | " | |
| १०५ × ३९ | ८ | ४६ | " | " | | पू० | |
| ७ × ३७ | ७ | २१ | " | " | | अपू० | |
| १२ × ५ | १७ | १० | " | " | | " | |
| ९९ × ४५ | ११ | ३५ | " | " | | " | |
| ११३ × ४६ | १२ | ४६ | " | " | | " | १-२ अध्यायौ । |
| १०८ × ४५ | ९ | ३८ | " | " | | " | चित्सुखीति नामान्तरम् । |
| ११ × ४६ | ११ | ३५ | " | " | | " | ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यटीका । |
| ८७ × ३६ | ११ | ३६ | " | " | | " | तत्त्वप्रकाशिका । |
| ११८ × ४१ | ९ | ४५ | वङ्ग. दे.ना. च | " | | " | सारसङ्ग्रहाख्या, १-४ अध्यायान्ता । |
| ११ × ३७ | १३ | ७५ | वङ्ग. | " | | " | समन्वयसूत्रान्तम् । |
| ११५ × ५ | १० | ५३ | दे.ना. | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|----------------|----------------------|
| २७२९४ | भामती | वाचस्पतिमिश्रः | ३-१५ । |
| २७२९५ | " | " | २-७१ । |
| २७२९६ | " | " | २-५१, ५३-५५, ५८-७६ । |
| २७२९७ | " | " | २४७ । (गणनया) |
| २७२९८ | " | " | ३२६ । (गणनया) |
| २७२९९ | वाक्यसुधा सटीका | शङ्कराचार्यः | २-१८ । |
| २७३०० | वाक्यसुधा सव्याख्या | " | १-१२ । |
| २७३०१ | सङ्क्षेपशारीरकव्याख्या | | ६८-१२१ । |
| २७३०२ | वेदान्तकल्पतरुः | अमलानन्दः | ५४१ । (गणनया) |
| २७३०३ | तत्त्वबोधः | वासुदेवेन्द्रः | १-७ । |
| २७३०४ | वेदान्तकल्पतरुः | | ४१-४३ । |
| २७३०५ | " | अमलानन्दः | ४१० । (गणनया) |
| २७३०६ | वेदान्तकल्पलतिका | | २-६ । |
| २७३०७ | पञ्चपादिका | | ६५-९२ । |
| २७३०८ | " | | १-४२, १-२६, ३७-५८ । |
| २७३०९ | " | | १४ । (गणनया) |
| २७३१० | मुमुक्षुसर्वस्वम् | | २४ । (गणनया) |
| २७३११ | पञ्चीकरणम् | | २-५ । |
| २७३१२ | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | शङ्कराचार्यः | ३-७१ । |
| २७३१३ | " | " | २२४ । (गणनया) |
| २७३१४ | " | " | ३-४६ । |
| २७३१५ | अद्वैतामृतम् | जगन्नाथसरस्वती | २-३७ । |
| २७३१६ | वेदान्तसिद्धान्तमुक्तावली | प्रकाशानन्दः | १-२५ । |
| २७३१७ | न्यायरत्नावली | ब्रह्मानन्दः | १-३८, ४०-९४ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | लघु- लक्षणः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|----------------|----------|------------------------|-----------------------------------|
| ११ × ४९ | १२ | २९ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| १०३ × ४९ | ११ | ८० | " | " | | " | |
| १०५ × ४३ | १४ | ५३ | " | " | | " | |
| १२ × ३९ | ७ | ५० | " | " | | " | |
| १०५ × ३६ | ९ | ४० | " | " | | " | |
| ९५ × ४३ | ११ | ४३ | " | " | | " | |
| १२१ × ५ | १३ | ५३ | " | " | १७३९ | पू० | दृग्दृश्यविवेक इति नामान्तरम् । |
| १०९ × ५२ | ११ | ४१ | " | " | १६३६ | अपू० | सुबोधिनी नाम्नी । |
| ९ × ३८ | ११ | ३२ | " | " | | पू० | भामतीव्याख्या । |
| ९७ × ५१ | ९ | ३३ | " | " | | " | |
| १२९ × ४८ | १५ | ५४ | " | " | | अपू० | भामतीव्याख्या । |
| १२८ × ४९ | ११ | ४६ | " | " | | " | " |
| ८६ × ३८ | ७ | ३५ | " | " | | " | |
| १०६ × ३९ | ८ | ४४ | " | " | | " | |
| ८६ × ३८ | ९ | ३४ | " | " | | " | |
| ९७ × ४४ | ९ | ४० | " | " | | " | |
| ९२ × ४५ | १० | ४० | " | " | | " | |
| ९३ × ४५ | १० | ३५ | " | " | | " | महावाक्यार्थप्रबोधप्रकरणादिकञ्च । |
| ९७ × ३५ | ७ | ३९ | " | " | | " | |
| १२ × ५२ | १० | ३४ | " | " | | " | |
| ९७ × ३५ | ८ | ४३ | " | " | | " | |
| ७३ × ३७ | ११ | २५ | " | " | | " | |
| १०५ × ४८ | ११ | ३२ | " | " | | " | |
| १०९ × ५ | १० | ४८ | " | " | १८२० | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|--|-------------------|
| २७३१८ | तत्त्वविन्दुः | वाचस्पतिमिश्रः | १६-१६ = १७-२८ । |
| २७३१९ | सङ्क्षेपशारीरकटीका | मधुसूदनसरस्वती | १-२२ । |
| २७३२० | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | शङ्कराचार्यः | २९ । (गणनया) |
| २७३२१ | " | " | ४७ । (गणनया) |
| २७३२२ | तत्त्वानुसन्धानम् | महादेवसरस्वती | २-२७ । |
| २७३२३ | ज्ञानप्रबोधमञ्जरी | | २-११ । |
| २७३२४ | वेदान्तकल्पलता | | ३-३६ । |
| २७३२५ | विचारमाला | | १-१८ । |
| २७३२६ | तत्त्वदीपः | | १-८, ११-१३ । |
| २७३२७ | तत्त्वविवेकः | | २-१५ । |
| २७३२८ | तत्त्वविवेकटीका | नृसिंहाश्रमः | ११९ । (गणनया) |
| २७३२९ | तत्त्वविवेकः | | १७-५१ । |
| २७३३० | तत्त्वानुसन्धानम् | | १-६ । |
| २७३३१ | तत्त्वविवेकटीका | | ३-१४ । |
| २७३३२ | अद्वैतसिद्धिटीका | | २-१४ । |
| २७३३३ | वेदान्तसारः | | २-७, ९ । |
| २७३३४ | तत्त्वचन्द्रिका | | १-२२ । |
| २७३३५ | श्रुतिसारसमुद्धरणं सटीकम् | तोटकाचार्यः टी. का.सच्चिदानन्द- योगीन्द्रः | २-२० । |
| २७३३६ | वेदान्तपरिभाषाटीका | रामकृष्णाध्वरिः | १-१२ । |
| २७३३७ | " | " | २-२३ । |
| २७३३८ | वेदान्तपरिभाषा | धर्मराजाध्वरीन्द्रः | १-३ । |
| २७३३९ | पञ्चपादिकाविवरणम् | प्रकाशात्मयतिः | २-१८ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|--|
| १५ × ४२ | ९ | ३७ | दे. ना. | का. | | पू० | चतुर्थाध्यायमात्रम् । |
| ११६ × ४१ | ९ | ४९ | " | " | | " | |
| १२ × ३८ | १० | ५० | " | " | | अपू० | |
| १०४ × ४४ | ११ | ३३ | " | " | | " | |
| १२४ × ४७ | १० | ५५ | " | " | | " | |
| १०३ × ४७ | ९ | ३३ | " | " | | " | |
| ११३ × ५२ | ११ | ३९ | " | " | | " | १-८ विश्रामाः । |
| १०५ × ४६ | ७ | ३४ | " | " | | पू० | |
| ९८ × ३५ | ९ | ४४ | " | " | | अपू० | |
| ११५ × ३७ | ८ | ५६ | " | " | | " | |
| ११८ × ३९ | ९ | ५३ | " | " | १८२८ | पू० | |
| ९१ × ४ | १३ | ३९ | " | " | | अपू० | |
| १०२ × ५२ | १३ | ३८ | " | " | | " | पञ्चीकरणविवरणटीका । टीका तत्त्वदीपिका । |
| १०१ × ४४ | १५ | ५१ | " | " | | " | |
| १३ × ५ | १२ | ५७ | " | " | | " | |
| ८९ × ३८ | ९ | ४१ | " | " | | " | |
| ८३ × ३५ | १० | ३५ | " | " | १७७१ | पू० | |
| १०२ × ३९ | १२ | ४७ | " | " | | अपू० | |
| १३ × ५ | १३ | ५३ | " | " | | " | शिखामण्याख्या । |
| १३४ × ५ | ११ | ६६ | " | " | | " | |
| १३७ × ५५ | १८ | ४९ | " | " | | " | |
| १२९ × ५ | १९ | ६९ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------------------|-----------------------------------|---------------------|
| २७३४० | सिद्धान्तलेशसङ्ग्रह- न्याख्या | टी.का.अच्युतकृ- ष्णानन्दतीर्थः | ५६-८३, १-३४, ३-१८ । |
| २७३४१ | वेदान्तसिद्धान्तमुक्तावली- टीका | | २-१३ । |
| २७३४२ | पञ्चपादिकाविवरणतत्त्व- दीपनम् | अखण्डानन्दमुनिः | २०८ । (गणनया) |
| २७३४३ | शारीरकन्यायनिर्णयः | आनन्दज्ञानः | ३३१ । (गणनया) |
| २७३४४ | वेदान्तस्यमन्तकः | | १-४ । |
| २७३४५ | " | | १-४ । |
| २७३४६ | अद्वैतामृतम् | जगन्नाथसरस्वती | १-२९, ३१-४३ । |
| २७३४७ | पञ्चपादिकाविवरणतत्त्व- दीपनम् | अखण्डानन्दमुनिः | २१२ । (गणनया) |
| २७३४८ | अद्वैतसिद्धिः | मधुसूदनसरस्वती | १-१५३, १-१०३, १-७ । |
| २७३४९ | ब्रह्मसूत्रवृत्तिः | | १-१३, ५१-५९ । |
| २७३५० | सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहः | अप्पयदीक्षितः | १-९५ । |
| २७३५१ | वेदान्ततत्त्वविवेकः | | २-२६ । |
| २७३५२ | वाक्यसुधा-सटीका | | २-२० । |
| २७३५३ | तत्त्वविवेकटीका | | ४-९, १२-१५ । |
| २७३५४ | " | | २-८०, ८०-९८ । |
| २७३५५ | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | | ८९ । (गणनया) |
| २७३५६ | ब्रह्मसूत्रम् | | २-१० । |
| २७३५७ | " | व्यासः | ६-११ । |
| २७३५८ | " | | २-६ । |
| २७३५९ | " | | २-७ । |
| २७३६० | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | शङ्करः | १-११५ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|---|
| १३°८ × ९°६ | १२ | ९९ | दे.ना. | का. | १८२७ | अपू० | कृष्णालङ्काराख्या |
| १२°८ × ४°८ | १२ | ६६ | " | " | | " | |
| ११°३ × ९ | १२ | ९४ | " | " | | " | |
| १२°६ × ४°८ | १० | ९२ | " | " | | " | |
| ८°३ × ९°६ | १४ | २९ | " | " | | " | प्रकृतितत्त्वनिरूपणाख्यश्चतुर्थः किरणः । |
| १०°८ × ९°७ | १४ | ३९ | " | " | | " | जीवतत्त्वनिरूपणाख्यस्तृतीयः किरणः । |
| १०°९ × ४°९ | ८ | ३२ | " | " | १८९९ | पू० ॐ | १-९ कवलाः । |
| १०°८ × ४°८ | ७ | २१ | " | " | | अपू० | |
| १३ × ९ | ११ | ९१ | " | " | | " | |
| १३°९ × २°१ | ११ | ९३ | " | " | | " | |
| ११°३ × ९.३ | १२ | ४२ | " | " | | पू० | |
| ८°९ × ३°८ | १० | ३१ | " | " | | अपू० | |
| १० × ९°३ | १२ | २८ | " | " | | " | |
| १०°१ × ४°१ | ११ | ४१ | " | " | | " | |
| १°८ × ४°२ | १० | ४९ | " | " | | " | |
| १०°८ × ४°९ | ११ | २८ | " | " | | " | |
| ९°९ × ४°२ | ११ | ३३ | " | " | | " | |
| ८°९ × ४ | ७ | २६ | " | " | | " | |
| १० × ९°२ | १९ | ३४ | " | " | | " | |
| १०°८ × ४°६ | १३ | ४२ | " | " | | " | वेदान्तसूत्रमिति ग्रन्थे । |
| १०°१ × ३°८ | ९ | ४९ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|--|------------------------------|
| २७३६१ | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | | ३१-७५ । |
| २७३६२ | आत्मविवेकः | | ३ । (गणनया) |
| २७३६३ | पञ्चीकरणवार्त्तिकम् | सुरेश्वराचार्यः | १-७ । |
| २७३६४ | ज्ञानप्रदीपः | | १-३, १-६, ९ । |
| २७३६५ | वाक्यसुधा | शङ्कराचार्यः | १-१५ । |
| २७३६६ | वाक्यभाष्यम् | | १-५ । |
| २७३६७ | न्यायामृतम् | न्यासयतिः | १-१४४, १-१०१, १-१८, १-१४ । |
| २७३६८ | " | " | ८०-१५४, १-५५, ५८-१२४, १-३३ । |
| २७३६९ | ब्रह्मसूत्रव्याख्या | | २ । (गणनया) |
| २७३७० | श्रुतिपुराणरहस्यतात्पर्यम् | | १४-२५ । |
| २७३७१ | ब्रह्मसूत्रभाष्यम् | आनन्दतीर्थः | १-१४६ । |
| २७३७२ | ब्रह्मसूत्रं सभाष्यम् | वल्लभाचार्यः | ९-६८, ७९-९३, १०३-२४४ । |
| २७३७३ | जीवन्मुक्तिविवेकः | विद्यारण्यः | १-१२३ । |
| २७३७४ | कालतत्त्वनिरूपणम् | | १-२ । |
| २७३७५ | सर्वात्मतत्त्वविचारः | | १ । |
| २७३७६ | स्वप्रकाशप्रदीपिका | | १-९३ । |
| २७३७७ | ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यटीका | | २५ । (गणनया) |
| २७३७८ | तत्त्वविवेकटीका | | १-४ । |
| २७३७९ | वेदान्तसारः | | २-३ । |
| २७३८० | पञ्चदशीविवरणम् | | ७ । (गणनया) |
| २७३८१ | वेदान्तसिद्धान्तमुक्तावली | प्रकाशानन्दः | २-४०, ४३ । |
| २७३८२ | शारीरकार्थसङ्क्षेपविवृतिः | महादेवः (स्वयं- प्रकाशतीर्थ- शिष्यः) | १-५८ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | संख्याः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|---------|----------|------------------------|---|
| ९०८४३०६ | ८ | ३८ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| १००६४४०६ | २१ | ४१ | " | " | | " | |
| ८०३४४०६ | ९ | २६ | " | " | | पू० | |
| १३०१४३०७ | ७ | ३८ | वङ्ग. | " | | अपू० | गायत्र्युत्पत्तिः आत्मबोध- प्रकाशश्च । |
| १००८४४०३ | १४ | ३३ | दे. ना. | " | | " | सभाष्या । |
| ९०८४४०४ | १० | ३४ | " | " | | " | |
| १००१४४०२ | ९ | ६० | " | " | | पू० | |
| ९०४४०२ | १२ | ४२ | " | " | १६७३ | अपू० | |
| १३०७४४ | १२ | ४९ | " | " | | " | |
| १००२४४०६ | १० | ३८ | " | " | | " | |
| १००३४४०४ | ८ | ३२ | " | " | | पू० | |
| १००३४४०७ | ८ | ३८ | " | " | | अपू० | अणुभाष्यमिति नामान्तरम् । |
| १००६४४०६ | ९ | ३७ | " | " | श. १७६७ | पू० | |
| ७०१४३०७ | ८ | २० | " | " | | " | वेदान्तस्यमन्तके । |
| ९०९४४०६ | ३७ | १९ | " | " | | अपू० | |
| ९०७४४०४ | ७ | ३२ | " | " | | " | |
| १३४९ | ११ | ६८ | " | " | | " | |
| ११०१४४०६ | ११ | ४२ | " | " | | " | |
| १००९४४०७ | १६ | ४३ | " | " | | " | |
| १००८४४०६ | १७ | ४३ | " | " | | " | |
| ८०७४३०७ | १० | ३३ | " | " | | " | |
| १३०३४४०६ | ७ | ३४ | " | " | १७३० | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------------|------------------------------|----------------------------------|
| २७३८३ | शब्दवृत्तिविवेकः | | १ । |
| २७३८४ | सङ्क्षेपशारीरकटीका | मधुसूदनसरस्वती | १-२५१, १-९०, १-१२५, १-२६ । |
| २७३८५ | वेदान्तसारः | | १ । (गणनया) |
| २७३८६ | सङ्क्षेपशारीरकम् | | ४ । (गणनया) |
| २७३८७ | परमवेदान्तसिद्धान्त- रत्नाञ्जलिः | हरिव्यासदेवः | १-७० । |
| २७३८८ | भौतिकसृष्टिः | | २ । (गणनया) |
| २७३८९ | वेदान्तसंज्ञाप्रकरणम् | | १-२४ । |
| २७३९० | ब्रह्मसूत्रम् | कृष्णद्वैपायनः | १-१५ । |
| २७३९१ | शारीरकसूत्रभाष्यसार- सङ्ग्रहः | भास्करभाउशर्म- कविः | २-४, १३१-१५०, १६०-१६१, १६३-१६५ । |
| २७३९२ | सङ्क्षेपशारीरकम् | | ४-३३, ३५-३६, ४४-४८ । |
| २७३९३ | सङ्क्षेपशारीरकसङ्गति- सङ्ग्रहः | | १६-४३ । |
| २७३९४ | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | शङ्करभगवत्पादः | ६४ । (गणनया) |
| २७३९५ | आत्मज्ञानोपदेशः | | १ । (गणनया) |
| २७३९६ | तत्त्वनिरूपणम् | चरदनायकसूरिः | १-१६ । |
| २७३९७ | चण्डमारुतः | वनमाली | १-३५, ३४-१५० । |
| २७३९८ | ब्रह्मसूत्रं सभाष्यम् | | २-९ । |
| २७३९९ | नैष्कर्म्यसिद्धिः | | १-२ । |
| २७४०० | आस्वादसुन्दरप्रकरणम् | वेणीदत्तशर्म- भट्टाचार्यः | १-५, ५-१८ । |
| २७४०१ | सिद्धान्तवाङ्मालाप्रकाशः | पुरुषोत्तमः | १-१५ । |
| २७४०२ | प्रस्थानरत्नाकरः | पुरुषोत्तमगोस्वामी | १-२७ । |
| २७४०३ | अध्यासविचारः | | १ । |
| २७४०४ | अर्थपञ्चकम् | नारायणयतीश्वरः | १-९ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|-------------------|
| ८°७ × ३°२ | ११ | ११ | वङ्ग. | का. | | अपू० | सारसङ्ग्रहाख्या । |
| १०°१ × ४°१ | १० | ४० | दे.ना. | " | १९०६ | पू० | |
| १०°८ × ४°६ | १६ | ३९ | " | " | | अपू० | |
| १०°१ × ४°४ | २१ | ११ | " | " | | " | |
| ९°९ × ४°३ | ९ | २४ | " | " | | पू० | |
| १०°४ × ४°७ | २० | ३९ | " | " | | अपू० | |
| ९°७ × ४°४ | ८ | ३१ | " | " | | पू० | |
| ९°६ × ३°२ | ८ | ४८ | " | " | | " | |
| ८°१ × ४°३ | ७ | २१ | " | " | | अपू० | |
| ११°१ × ३°२ | ७ | १८ | " | " | | " | |
| १०°४ × ३°८ | ९ | १० | " | " | | " | |
| १२ × ४°१ | १३ | १४ | " | " | | " | |
| १०°८ × ४°७ | २० | ४१ | " | " | | " | |
| ९°८ × ४°४ | १० | ४३ | " | " | | पू० | द्वितीयाध्यायः । |
| १०°६ × ४°६ | ११ | ४३ | " | " | १७४३ | " | |
| १०°६ × ४°६ | १७ | ३१ | " | " | | अपू० | |
| १०°६ × ४°६ | १६ | ३४ | " | " | | " | |
| १०°७ × ४°९ | १२ | ३१ | " | " | | " | |
| १२°१ × ४°८ | १० | ४४ | " | " | १८६० | " | प्रमेयप्रकरणम् । |
| १० × ४°४ | ११ | १८ | " | " | | " | |
| १०°७ × ४°७ | १८ | ४० | " | " | | " | |
| ९°१ × ४°१ | ९ | ३२ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------------|---------------------|-------------------|
| २७४०६ | अध्यासस्वरूपम् | | २ । (गणनया) |
| २७४०६ | वेदान्तपरिभाषा | | ४ । (गणनया) |
| २७४०७ | पञ्चदशी | | १ । |
| २७४०८ | पञ्चकोशप्रकरणम् | | १ . |
| २७४०९ | वेदान्तपरिभाषा | धर्मराजाध्वरीन्द्रः | १-२७ । |
| २७४१० | वेदान्तसारः | सदानन्दः | १-१२ । |
| २७४११ | " | " | १-१० । |
| २७४१२ | वेदान्तपरिभाषाटीका | रामकृष्णाध्वरिः | १-३४ । |
| २७४१३ | वेदान्तसिद्धान्तसूक्तिमञ्जरी सटीका | गङ्गाधरेन्द्रः | १-४८ । |
| २७४१४ | वेदान्तसारः | सदानन्दः | ३-१२ । |
| २७४१५ | " | " | १४ । (गणनया) |
| २७४१६ | शतद्रूपणी | | १-१७१, १९५-२९१ । |
| २७४१७ | भाष्योपनिषद्वाक्य- विवरणम् | श्रीरङ्गः | २-८८, ८८-१७५ । |
| २७४१८ | वैयासिकन्यायमाला | भारतीतीर्थः | १-५६, ५८-७४, ७६ । |
| २७४१९ | " सव्याख्या | | १-२५ । |
| २७४२० | " | " | १-११३ । |
| २७४२१ | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | शङ्करभगवत्पादः | २-५७ । |
| २७४२२ | " | " | ३२-७० । |
| २७४२३ | ब्रह्मसूत्रशङ्करभाष्यम् | " | १-११, ११-२६ । |
| २७४२४ | तत्त्वप्रकाशिकाविवरणम् | | १-२० । |
| २७४२५ | " | जयतीर्थः | १-२४ । |
| २७४२६ | तत्त्वविवेकविवरणम् | " | १-१३ । |
| २७४२७ | महावाक्यार्थप्रबोधप्रकारः | | १-२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|-----------------------------------|
| १०°८ × ४°९ | १९ | ४१ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| १०°८ × ४°६ | १६ | ५० | " | " | | " | |
| १०°८ × ४°४ | १६ | ४३ | " | " | | " | विषयानन्दप्रकरणम् । |
| १०°७ × ४°८ | १९ | ४० | " | " | | " | |
| ९°६ × ४°३ | ११ | ५५ | " | " | १७२६ | " | |
| १०°५ × ४°५ | ११ | ४१ | " | " | | पू० | |
| १२°७ × ४°७ | १२ | ५५ | " | " | | " | |
| १०°७ × ४°५ | ११ | ४५ | " | " | | " | शिखामण्याख्या । |
| १०°७ × ४°३ | ९ | ४८ | " | " | | अपू० | |
| ९°१ × ४°१ | ८ | २७ | " | " | | पू० | |
| ८°९ × ४°१ | १२ | ३६ | " | " | | अपू० | |
| १३°२ × ५ | १० | ४७ | " | " | | पू०* | |
| १२°४ × ४°५ | १२ | ५० | " | " | १८८८ | अपू० | |
| | | | " | " | | " | |
| ११°९ × ४°९ | १२ | ४३ | | | १८२४ | " | वेदान्ताधिकरणमाला । |
| १०°५ × ५°१ | १३ | २९ | " | " | | " | |
| १२°५ × ५°३ | १० | ३५ | " | " | श. १७७१ | पू० | वेदान्ताधिकरणमाला । |
| १०°६ × ४°५ | ९ | ३३ | " | " | | " | प्रथमाध्यायस्य तृतीयापादमात्रम् । |
| १० × ४°१ | १३ | ४९ | " | " | | अपू० | प्रथमाध्यायमात्रम् । |
| ११°७ × ४°८ | १२ | ४६ | " | " | | " | तृतीयाध्यायमात्रम् । |
| ९°५ × ३°५ | १० | २३ | " | " | | " | उपाधिखण्डनस्य । |
| ९°३ × २°२ | ५ | ४३ | " | " | | " | " |
| ९°४ × २°२ | ५ | ३९ | " | " | | पू० | |
| १०°७ × ४°७ | १६ | ३१ | " | " | | " | तत्त्वबोधश्च । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------------------|---------------------------------------|---|
| २७४२८ | तत्त्वसंख्यानविवरणम् | | १-१३ । |
| २७४२९ | प्रपञ्चमिध्यात्वमानखण्डन- पञ्चिका | | १-४ । |
| २७४३० | " | जयतीर्थः | १-२६ । |
| २७४३१ | शारीरकशास्त्रदर्पणम् | | १००-१८६ । |
| २७४३२ | ब्रह्मसूत्रभाष्यम् | आनन्दतीर्थः | १-१२६ । |
| २७४३३ | ब्रह्मसूत्रभाष्यटीका | जयतीर्थः | १-३११ । |
| २७४३४ | नास्तिकाचार्य्यसिद्धान्तः | | १ । |
| २७४३५ | जगदुत्पत्तिक्रमः | | १ । |
| २७४३६ | आत्मज्ञानोपदेशविधिः | | ४ । (गणनया) |
| २७४३७ | शतदूषणी | निवासदासः | १-८ । |
| २७४३८ | वेदान्तपरिभाषा | धर्मराजाध्वरीन्द्रः | १-२९ । |
| २७४३९ | ब्रह्मसूत्रवृत्तिः | | १-२६ । |
| २७४४० | प्रश्नोत्तरमालिका | शङ्कराचार्यः | १ । |
| २७४४१ | प्रश्नोत्तररत्नमाला | शुकयतिः | १-४ । |
| २७४४२ | वेदान्तसारः सटीकः | सदानन्दः, टी० का० नृसिंह- सरस्वती | १-३० । |
| २७४४३ | भेदधिकार | नृसिंहाश्रमः, टी. का. नारायणाश्रमः | १-३१, ३३-३६ । |
| २७४४४ | " | " | १-६३ (= ६३-६४) ६५-७८ । |
| २७४४५ | भामती | वाचस्पतिमिश्रः | १८९-२०९, २११-२२३, २२५-२२६, २३०-२५९, २६३-२६७, २६९-२७१ । |
| २७४४६ | ब्रह्मसूत्रम् | व्यासः | १-८ । |
| २७४४७ | सङ्क्षेपशारीरककारिका | सर्वज्ञात्ममहामुनिः | ९७ । (गणनया) |
| २७४४८ | वेदान्ततत्त्वमुक्तावली | | २-५३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | विभिन्नः | आकारः | विभिन्नः | पूर्वापूर्व- विभिन्नः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|----------|-------|------------------|--------------------------|-------------------|
| १'३ x २'२ | ९ | ४५ | वै.ना. | का. | | पू० | |
| ८'९ x ३'९ | ८ | २१ | " | " | | अपू० | |
| ९'३ x २'२ | ९ | ३८ | " | " | | पू० | |
| ९'७ x ४'२ | १२ | ३५ | " | " | | अपू० | ३-४ अध्यायी । |
| १०'६ x ४'५ | ७ | ३२ | " | " | १९०२ | पू० | |
| ९'८ x ४'५ | ११ | ३५ | " | " | | अपू० | |
| १०'८ x ४'७ | १९ | ५१ | " | " | | पू० | |
| १०'८ x ४'३ | १६ | ४६ | " | " | | " | |
| ११ x ४'९ | १९ | ४३ | " | " | | अपू० | |
| ११'५ x ५'२ | १५ | ४९ | " | " | | पू० | |
| ११'५ x ५ | १२ | ३८ | " | " | | " | |
| १०'७ x ४'६ | २१ | ७३ | " | " | | अपू० | |
| १०'१ x ४'१ | ११ | ३५ | " | " | | पू० | |
| ८'९ x ४'७ | ७ | २९ | " | " | १८६८ | " | |
| ११ x ४'१ | ९ | ३१ | " | " | | " | टीका मुद्रोपिनी । |
| १४'८ x ७'१ | २२ | ६९ | " | " | | अपू० | |
| ११'९ x ५'४ | १२ | ६२ | " | " | १९०९ | पू० | |
| १२ x ४'१ | १५ | ५७ | " | " | १४९० रा. १३५४ | अपू० | |
| १०'८ x ५'६ | १३ | ४३ | " | " | | पू० | |
| १०'७ x ४'७ | ९ | ४३ | " | " | १९०५ | " | |
| ११'५ x ३'४ | ८ | ६० | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------------|---|---------------------------|
| २७४४९ | सिद्धान्तविन्दुः सटीकः | मधुसूदनसरस्वती, टी०का० नाराय- णयतिः | १-३४ । |
| २७४५० | सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहः सटीकः | टी०का० अच्युत- कृष्णानन्दतीर्थः | ४-१३०, १-७५, १-५२, १-२५ |
| २७४५१ | सुखपदार्थनिरूपणम् | | १ । |
| २७४५२ | स्वात्मप्रकाशः | शङ्कराचार्यः, टी० का० रामचन्द्र- शिष्यः | १-१२ । |
| २७४५३ | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | | १-२९ । |
| २७४५४ | ब्रह्मसूत्रभाष्यम् | रामानुजः | ६ । (गणनया) |
| २७४५५ | त्रिपुरी | शङ्कराचार्यः | १-३ । |
| २७४५६ | वेदान्तकौमुदी | रामाद्वयः | ४९-६१ । |
| २७४५७ | तत्त्वानुसन्धानम् | महादेवसरस्वती | १-४२ । |
| २७४५८ | ब्रह्मविद्याभरणम् | | १४०-१८० । |
| २७४५९ | वेदान्ततात्पर्यनिवेदनम् | | १-२, २, ४-२०, २०, २२-७६ । |
| २७४६० | अद्वैतब्रह्मसुधा | | १-५० । |
| २७४६१ | शारीरकसूत्रवृत्तिः | | १-२० । |
| २७४६२ | सङ्क्षेपशारीरकं सटीकम् | जगन्नाथाश्रमः, टी.का.नृसिंहाश्रमः | ४३७-६८८ । |
| २७४६३ | वेदान्तरत्नम् | | १-१५ । |
| २७४६४ | स्वानुभवादशः सटीकः | माधवभिक्षुः | १-६९ । |
| २७४६५ | भावनावाक्यरत्नमञ्जूपा | भावागणेशः | १-२४ । |
| २७४६६ | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | शङ्कराचार्यः | ३३० । (गणनया) |
| २७४६७ | शारीरकन्यायनिर्णयः | आनन्दज्ञानः | ५५२ । (गणनया) |
| २७४६८ | वेदान्तसिद्धान्तसूक्तिमञ्जरी सटीका | गङ्गाधरेन्द्रसरस्व- तीटी.का. ” | १-१८, १८-२९, २९ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णपूर्ण- निवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|-------|---------------------|-----------------------|---------------------|
| १३°३ × ५°१ | १३ | ६२ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| १३°१ × ४°६ | १३ | ५७ | " | " | | " | |
| ९°३ × ६°४ | ९ | २३ | " | " | | " | |
| १३°७ × ७ | १५ | ४७ | " | " | श. १७४६ सं. १८८१ | पू० | |
| १०°९ × ४°७ | १२ | ५४ | " | " | | अपू० | |
| १२°४ × ४°७ | १० | ५७ | " | " | | " | |
| ११°६ × ५ | १० | ४७ | " | " | | पू० | |
| १३°२ × ८°३ | ३२ | ३९ | " | " | | अपू० | १ अध्यायः । |
| १०°२ × ४°५ | ८ | ३४ | " | " | | पू० | |
| ११°२ × ४°४ | ६ | ५८ | " | " | | अपू० | |
| ११°८ × ४°८ | १० | ५० | " | " | १८७८ | पू० | |
| ९ × ३°५ | ११ | ३६ | " | " | | " | |
| १२°५ × ४°७ | १० | ४८ | " | " | | " | १ अध्याये १ पादः । |
| १३°१ × ८°२ | ३५ | ३१ | " | " | | अपू० | तत्त्वबोधिनी टीका । |
| ११°३ × ४°७ | ९ | ३८ | " | " | | पू० | |
| १२°६ × ५ | १० | ४६ | " | " | | " | |
| ८°९ × ३°८ | १० | ४० | " | " | | " | |
| १२°९ × ५ | ११ | ४६ | " | " | १८५९ | " | |
| १२°८ × ५ | ११ | ५१ | " | " | १८६० | " | |
| ९°७ × ४°२ | १० | ३७ | " | " | | अपू० | प्रकाशनाम्नी टीका । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------------|--|---------------------|
| २७४६९ | सिद्धान्तलेशसङ्ग्रह- व्याख्या | अच्युतकृष्णा- नन्दीर्थः | १, १-११३, १४२-१८४ । |
| २७४७० | सङ्क्षेपशारीरकम् | सर्वज्ञात्ममुनिः | १-४१ । |
| २७४७१ | षोडशमहावाक्यप्रकरणम् | | ३-४, १० । |
| २७४७२ | वैयासिकन्यायमाला | भारतीतीर्थमुनिः | १-३७ । |
| २७४७३ | वेदान्तपरिभाषा | धर्मराजाध्वरीन्द्रः (धर्मराजदीक्षितः) | १-४४ । |
| २७४७४ | ब्रह्मसूत्रम् | | १ । |
| २७४७५ | " | | १-१७ । |
| २७४७६ | " | | १-१४ । |
| २७४७७ | वेदान्तपरिभाषा | धर्मराजाध्वरीन्द्रः (धर्मराजदीक्षितः) | १-२६ । |
| २७४७८ | लघुवाक्यवृत्तिः | | २ । (गणनया) |
| २७४७९ | वाक्यवृत्तिः | शङ्कराचार्यः | १ । |
| २७४८० | वागर्थविवृतिः | मधुसूदनः | १-१४ । |
| २७४८१ | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | शङ्कराचार्यः | १-८ । |
| २७४८२ | शारीरकमीमांसाभाष्यं सव्याख्यम् | | १-६७ । |
| २७४८३ | शारीरकभाष्यं-सव्याख्यम् | शङ्कराचार्यः, व्या- का. गोविन्दानन्दः | २३६-२३९ । |
| २७४८४ | न्यायनिर्णयः | आनन्दज्ञानः | २९९-४१८, ४१७-४२२ । |
| २७४८५ | वेदान्तसूत्रवृत्तिः | नारायणतीर्थस्वामी | १-६६ । |
| २७४८६ | जीवेश्वरविभागः | | ४ । (गणनया) |
| २७४८७ | वेदान्तसूत्रवृत्तिः | | १ । |
| २७४८८ | अनिर्वचनीयतादिविचारः | | ३-१८ । |
| २७४८९ | सिद्धान्तलेशः | अप्पयदीक्षितः | १-२० । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-------------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|---|
| ७°८ × ४°३ | १३ | ३२ | दे.ना. | का. | | अपू० | १-३ अध्यायाः । |
| ८°४ × ३°४ | ११ | ४२ | " | " | | " | |
| ६°२ × ३ | ८ | १८ | " | " | | " | |
| ७°८ × ३°६ | ५ | २५ | " | " | | पू० | |
| १०°३ × ४°३ | ९ | ३७ | " | " | १९०२ | " | वेदान्तसूत्रमिति ग्रन्थे । |
| १०°९ × ४°६ | १० | ३३ | " | " | | अपू० | |
| ५°९ × ३°८ | १० | २० | " | " | | पू० | |
| १० × ४°५ | ९ | २९ | " | " | १७२१ | " | |
| १०°५ × ४°७ | १५ | ३० | " | " | | " | १ अध्याये ३ पादः । व्याख्या- रत्नप्रभा । |
| ६°२ × ४°५ | ९ | १९ | " | " | | "* | |
| ८°८ × ४°३ | १२ | ३६ | " | " | | " | |
| ९°६ × ४°४ | १० | ४१ | " | " | १७१९ | " | |
| ११°५ × ५ | १४ | ४१ | " | " | | अपू० | व्याख्या रत्नप्रभा । |
| १३°६ × ६°१० | १३ | ४२ | " | " | | पू० | |
| १३°२ × ६°६ | १३ | ४८ | " | " | | अपू० | |
| १२°५ × ६°६ | २२ | ४६ | " | " | १८७६ | " | |
| १२°५ × ५°७ | १७ | ५५ | " | " | | पू० | गायत्रीशापोद्धारश्च । |
| १०°९ × ४°९ | १७ | ३७ | " | " | | अपू० | |
| १२°३ × ६°२ | १० | ६० | " | " | | " | |
| ११ × ४°८ | १७ | ५९ | " | " | | " | |
| ९°८ × ४°६ | १५ | ३७ | वङ्ग. | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|------------------------------------|------------------------------|
| २७४९० | सङ्क्षेपशारीरकम् | सर्वज्ञात्ममहामुनिः | ३-१३, १९-२७, १९-३१, ३३, ३७ । |
| २७४९१ | तत्त्वविन्दुः | वाचस्पतिमिश्रः | २-१२ । |
| २७४९२ | वेदान्तपरिभाषा | धर्मराजाध्वरीन्द्रः | १-३९ |
| २७४९३ | अद्वैतसिद्धान्तविद्योतनम् | ब्रह्मानन्दसरस्वती | १-२२ । |
| २७४९४ | अद्वैतामृतम् | ब्रह्मेन्द्रसरस्वती | १-६, ७-३३, १-७२ । |
| २७४९५ | अपरोक्षानुभवः | शङ्कराचार्यः | १-१३ । |
| २७४९६ | अद्वैतसिद्धान्तविद्योतनम् | ब्रह्मानन्दसरस्वती | १-२४ । |
| २७४९७ | दृग्दृश्यविमर्शः सटीकः | | १-१९ । |
| २७४९८ | वेदान्तसिद्धान्तमुक्तावली | वनमाली | २-१४६ । |
| २७४९९ | आचार्यमण्डनसंवादः | | १ । |
| २७५०० | पञ्चश्लोकवार्त्तिकम् | | १-८ । |
| २७५०१ | पञ्चदशी | | १ । |
| २७५०२ | पञ्चदशी सटीका | विद्यारण्यः, टी.का.रामकृष्णः | १-१६, २२-३९, ४२-२२२ । |
| २७५०३ | " | विद्यारण्यः, टी.का.रामकृष्णः | १-१२३ । |
| २७५०४ | न्यायदीपावली | आनन्दबोधः | १-१७ । |
| २७५०५ | वेदान्तसारः सटीकः | सदानन्दः, टी. का. नृसिंहसरस्वती | १-५० । |
| २७५०६ | पञ्चदशी सटीका | विद्यारण्यः, टी.का.रामकृष्णः | १-९० । (गणनया) |
| २७५०७ | तत्त्वबोधः | | १-४ । |
| २७५०८ | सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहः | | २ । |
| २७५०९ | पञ्चीकरणवार्त्तिकं सटीकम् | सुरेश्वराचार्यः | १-३१ । |
| २७५१० | " " | " | १-४-१ |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|----------------------------------|
| १०*६ × ४ | १३ | ६७ | वङ्ग. | का. | | अपू० | १-२ अध्यायौ । |
| १३*९ × ३*९ | १२ | ६९ | " | " | | " | |
| १६*४ × ३*६ | ६ | ६९ | " | " | | पू० | |
| १२*९ × ४*९ | १९ | ९३ | दे.ना. | " | | " | |
| १०*७ × ४*९ | ९ | ४४ | " | " | | अपू० | |
| ६*२ × ४ | १० | १९ | " | " | १८६८ | पू० | |
| १३*७ × ३*९ | ११ | ६२ | वङ्ग. | " | | " | १ परिच्छेदः । |
| १२*४ × ४*६ | ९ | ४२ | दे.ना. | " | | " | |
| ९*६ × ४ | १२ | ६६ | " | " | १७७३ | अपू० | |
| १०*७ × ४*७ | १७ | ४७ | " | " | | " | ज्वरौषधिश्च । |
| ९*८ × ४*२ | ९ | २७ | " | " | | " | |
| ९ × ४ | १० | ३० | " | " | | पू० | |
| ११ × ४*४ | १० | ६६ | " | " | | अपू० | |
| १३*२ × ६*७ | १७ | ४९ | " | " | | पू० | |
| १०*१ × ३*९ | ९ | ४३ | " | " | | " | |
| १०*९ × ४*९ | १० | ३८ | " | " | | " | |
| १०*९ × ४*७ | १२ | ६६ | " | " | | " | |
| ७*१ × ४*९ | १० | ३६ | " | " | | " | |
| ११ × ४*६ | १९ | ६२ | " | " | | अपू० | |
| ७*९ × ४*१ | ९ | ३३ | " | " | श० १७६४ | पू० | टीका पञ्चीकरणवार्त्तिकभरणाख्या । |
| १०*३ × ६ | ११ | ३४ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------------------|------------------------------------|---------------------------------|
| २७६११ | पञ्चीकरणविवरणम् | | १-१० । |
| २७६१२ | प्रबोधसुधाकरः | शङ्कराचार्यः | १-८ । |
| २७६१३ | वेदान्तकौमुदीव्याख्या | | १-३४ । |
| २७६१४ | मन्त्रशारीरकम् | नीलकण्ठः | १-२४ । |
| २७६१५ | पञ्चीकरणसन्ध्या | | १-२ । |
| २७६१६ | तत्त्वोद्योतः सविवरणः | आनन्दतीर्थः, वि. का.जयतीर्थेभिः | १, ३-४१, ४३-६५ । |
| २७६१७ | अद्वैतब्रह्मसुधाकारिका सटीका | | १-१२२, १२४-१३० । |
| २७६१८ | तत्त्वप्रकाशिकाविवरणम् | जयतीर्थः | २-२९ । |
| २७६१९ | वेदान्तकतकः | नीलकण्ठः | १-५८ । |
| २७६२० | " | " | १-४१ । |
| २७६२१ | अपरोक्षानुभूतिः | शङ्कराचार्यः | १-८ । |
| २७६२२ | तत्त्वप्रदीपिका | चित्सुराचार्यः | २६ । (गणनया) |
| २७६२३ | आत्मबोधः | शङ्कराचार्यः | १-१४ । |
| २७६२४ | ईश्वरनित्यसुखव्यवस्था- पनविचारः | | १-८ । |
| २७६२५ | आत्मबोधः | | १-७, ७-१२ । |
| २७६२६ | तत्त्वदीपिका | | ३-५, ८-९, १४-१६, २२-२४, ३६-२८ । |
| २७६२७ | मन्त्रशारीरकम् | नीलकण्ठः | १-२० । |
| २७६२८ | पञ्चीकरणमहावाक्यम् | | ४ । (गणनया) |
| २७६२९ | श्रीभाग्यम् | रामानुजाचार्यः | २४४ । (गणनया) |
| २७६३० | मन्त्रशारीरकम् | नीलकण्ठः | १-७५ । |
| २७६३१ | भेदधिकारः | | ८ । (गणनया) |
| २७६३२ | वेदान्तसूत्रमुक्तावलिः | ब्रह्मानन्दसरस्वती | १-९७ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्व- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|--|
| ८०४ × ३१ | ७ | ३३ | दे.ना. | का. | | पू० | |
| ८०२ × ४०२ | १५ | ३० | " | " | | अपू० | |
| ९०६ × ८०५ | १२ | ३९ | " | " | | " | |
| १३०४ × ८०५ | २७ | २२ | " | " | | पू० | |
| १००७ × ४०६ | १७ | ३९ | " | " | | " | |
| ८०३ × ३०९ | १३ | ३४ | " | " | | अपू० | |
| ९०९ × ५०२ | ७ | २३ | " | " | | " | |
| ९०७ × ४०४ | १२ | ५६ | " | " | | " | उपाधिखण्डनस्य । |
| १२०५ × ४०७ | ११ | ५१ | " | " | | पू० | शारीरकसूत्रवृत्तिरूपः । १ अध्यायः । |
| १२०६ × ४०७ | १० | ५४ | " | " | सं. १८७७ | " | परिभाषापरिच्छेदः । |
| ९०४ × ४०१ | ९ | ३६ | " | " | | " | |
| ११ × ३०६ | १० | ५५ | " | " | | अपू० | |
| १३०८ × ५०३ | १२ | ५० | " | " | | पू० | |
| ८०६ × ३०३ | ७ | ३६ | " | " | | " | |
| १००६ × ४०५ | ९ | ३२ | " | " | | अपू० | |
| १००२ × ४०२ | १३ | ४० | " | " | | " | |
| ९०२ × ४०३ | ११ | ३९ | " | " | | " | |
| ८०७ × ४ | ८ | २६ | " | " | | " | |
| १३०६ × ५०३ | ११ | ४० | " | " | | " | |
| १००२ × ४०६ | १० | ३३ | " | " | १७:० | पू० | |
| १००८ × ४०९ | १० | ३७ | " | " | | अपू० | |
| ११०५ × ५ | १२ | ४५ | " | " | | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------------------|------------------------------|---------------------------------------|
| २७५३३ | सङ्क्षेपशारीरकम् | | १-२२ । |
| २७५३४ | मानसोल्लासवृत्तान्तः | | २३-२७, २९-३२ । |
| २७५३५ | सिद्धान्तलेशसारसङ्ग्रहः सटीकः | | १-४ । |
| २७५३६ | वाक्यचन्द्रिका | कृष्णभट्टः (भौनी) | १-१९ । |
| २७५३७ | वेदान्तसारः | | ६-८, १०, १२-२१ । |
| २७५३८ | वैयासिकन्यायमाला | भारतीतीर्थः | १-५, ७-१४८ । |
| २७५३९ | समानशतकम् | दत्तात्रेयः | १-५ । |
| २७५४० | तत्त्वनिरूपणम् | | १-२ । |
| २७५४१ | वाक्यसुधाप्रकरणम् | शङ्कराचार्यः | १-४ । |
| २७५४२ | सिद्धान्तचन्द्रिका | रामानन्दसरस्वती | १-५ । |
| २७५४३ | वेदान्तकौमुदीव्याख्या | | ३५-९२ । |
| २७५४४ | " | | १-४८ । |
| २७५४५ | " | | १-६२ । |
| २७५४६ | सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहः | अप्पयदीक्षितः | १-७४ । |
| २७५४७ | शङ्करसर्वस्वम् | वेदान्तवागीश भट्टाचार्यः | ५७ । (गणनया) |
| २७५४८ | स्वात्मनिरूपणम् | दक्षिणामूर्तिः | १-८ । |
| २७५४९ | स्वात्मानन्दप्रकाशिका | शङ्कराचार्यः | १५ (गणनया) |
| २७५५० | ब्रह्ममीमांसाभाष्यम् | श्रीकण्ठशिवाचार्यः | १-५३, १-२७, १-२२, (२२=२३) २४-४०, १-२० |
| २७५५१ | पञ्चदशी सटीका | विद्यारण्यः | १-११ । |
| २७५५२ | " | " | १-२२ + १, २३-६३ । |
| | | टी.का. रामकृष्णः | |
| २७५५३ | " | " | १-४५ । |
| २७५५४ | पञ्चीकरणवार्त्तिकं सव्याख्यम् । | व्या. का. सुरेश्वराचार्यः | १-१२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | का. का. | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|------------|----------|------------------------|--------------------------|
| ८*२ x ४ | ८ | २२ | दे. ना. | का. | | अपू० | मानसोल्लासटीका वा । |
| ८*७ x ४ | ९ | ३० | " | " | | " | |
| ९*९ x ४*३ | १२ | ४२ | " | " | | " | |
| ९*८ x ४*५ | ८ | ३२ | " | " | | पू० | |
| ८*२ x ४*१ | १० | ३१ | " | " | | अपू० | |
| ६*३ x ३*७ | १० | २६ | " | " | | " | |
| १३*२ x ५*१ | १० | ४६ | वङ्ग. | " | | " | आर्यापञ्चशती । |
| १०*४ x २*८ | ४ | ४१ | " | " | | पू० | |
| ८*७ x ५ | ९ | २५ | दे. ना. | " | १८३३ | " | |
| ९*७ x ४*२ | ९ | २५ | " | " | १८३३ | " | |
| १३*७ x ८*३ | ३४ | ३८ | " | " | | अपू० | |
| १३*५ x ८*४ | ३४ | ३६ | " | " | | " | |
| १३*३ x ८*३ | ३१ | २३ | " | " | | " | भावदीपिकाख्या । |
| १०*५ x ४*५ | १० | ४० | " | " | | पू० | |
| १०*२ x ३*९ | ९ | ३० | " | " | | अपू० | |
| १२ x ५*९ | १३ | ४३ | " | " | | पू० | |
| ७*१ x ४*१ | ८ | २६ | " | " | १७९२ | अपू० | |
| १०*२ x ४*५ | १२ | ४१ | " | " | १७८५ | पू० | |
| ९*३ x ४*१ | ११ | ३९ | " | " | | " | कूटस्थदीपप्रकरणमात्रम् । |
| ९*७ x ४*२ | ९ | ३५ | " | " | | " | तृप्तिदीपप्रकरणमात्रम् । |
| ९*७ x ४*२ | ९ | ४१ | " | " | | " | चित्रदीपप्रकरणमात्रम् । |
| १२*१ x ५*८ | १४ | ४५ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|--|---------------------------------|
| २७६५५ | वेदान्तसारसङ्ग्रहः | सदानन्दयतिः | १-७३ । |
| २७६५६ | न्यायमकरन्दटीका | चित्सुखमुनिः | १०८ । (गणनया) |
| २७६५७ | महावाक्यार्थविवरणम् | | १-३८ । |
| २७६५८ | वेदान्तानुमितिनिरूपणम् | रामनारायणः | २-९ । |
| २७६५९ | प्रबोधसुधाकरचन्द्रिका | गोविन्दः | १-१४ । |
| २७६६० | भेदप्रकाशः | शङ्करमिश्रः | १-३४ । |
| २७६६१ | पञ्चकोशविवेकः सटीकः | विद्यारण्यमुनी- श्वरः, व्या. रामकृष्णः | १-२१ । |
| २७६६२ | अखण्डार्थनिरूपणम् | रामानन्दसरस्वती | १-९३ । |
| २७६६३ | अद्वैतरत्नम् | मधुसूदनसरस्वती | १-१२९ । |
| २७६६४ | अद्वैतमकरन्दव्याख्या | स्वयम्प्रकाशः | १-१६ । |
| २७६६५ | „ | गोपालरामकविः | १-६ । |
| २७६६६ | गोविन्दभाष्यं सटीकम् | | १-२५ । |
| २७६६७ | ब्रह्मसूत्रं सभाष्यम् | भा. का. गोविन्दः | १५-१३२, १३२-२५२, २५४, २५४-२६१ । |
| २७६६८ | गोविन्दभाष्यपीठकम् | | १-१२६ । |
| २७६६९ | पञ्चदशीटीकाटिप्पणम् | काशीनाथः | १-१०, १०-१५, १७-४४ । |
| २७६७० | „ | „ | १-२९, २९-४६, १-३, ७-१८ । |
| २७६७१ | पञ्चपादिका | | १-१८, १८-३१ । |
| २७६७२ | सत्सुखानुभवः | इच्छारामस्वामी | १-१६ । |
| २७६७३ | तत्त्वमुक्तावली | पूर्णानन्दः | ११ । (गणनया) |
| २७६७४ | उपदेशसाहस्री सटीका | शङ्कराचार्यः, भा. का. रामतीर्थः | १-१३९ । |
| २७६७५ | „ | शङ्कराचार्यः | १-४० । |
| २७६७६ | सप्तश्लोकी | | १ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|--------------------------------|
| १३'४ × ३'५ | ६ | ५० | वङ्ग. | का. | | अपू० | पञ्चरत्नस्तोत्रञ्च । |
| ९'३ × ३'४ | ९ | ३५ | दे. ना. | " | | " | |
| ८'८ × ४'९ | ११ | २५ | " | " | | पू० | |
| ८'८ × ४'५ | ८ | २६ | " | " | | अपू० | |
| ८ × ४'२ | ११ | ३० | " | " | | पू० | |
| १०'८ × ३'२ | ७ | ५५ | " | " | १५७९ | " | |
| १२'३ × ६'२ | ९ | ३३ | " | " | | " | |
| ८'८ × ४'१ | ९ | २८ | " | " | श. १६५० | " | |
| ११ × ४'४ | १० | ३१ | " | " | | " | |
| १३'४ × ५'४ | ११ | ४६ | " | " | | " | रसाभिव्यञ्जिकाख्या । |
| ११'८ × ५'६ | १५ | ५२ | " | " | | " | पानपात्रीनाम्नी । |
| १२'६ × ६'३ | १५ | ३३ | " | " | | अपू० | |
| १२'६ × ६'५ | १४ | ५३ | " | " | | " | सूक्ष्मव्याख्यायुतं भाष्यम् । |
| १२'१ × ९ | १२ | ४५ | " | " | | " | सिद्धान्तरत्नाख्यं सटिप्पणम् । |
| ७'८ × ६'७ | २१ | १९ | " | " | | " | |
| ८'८ × ६'८ | २१ | २० | " | " | | पू०* | |
| ९'६ × ४'४ | ११ | ३५ | " | " | | " | प्रथमवर्णकम् । |
| १२'४ × ६ | ११ | ४० | " | " | | " | पञ्चप्रकरणी इति नामान्तरम् । |
| ९'८ × ४'८ | १० | ३८ | " | " | | " | |
| १४ × ५'५ | ११ | ५६ | " | " | सं० १७५२ | " | |
| १४'१ × ५'५ | ११ | ५३ | " | " | | अपू० | |
| ११'९ × ६'१ | ११ | ४१ | " | " | | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------|--|-------------------|
| २७५७७ | तत्त्वत्रयम् | नारायणमुनिः | १-७ । |
| २७५७८ | शारीरकन्यायनिर्णयः | | ३० । (गणनया) |
| २७५७९ | वेदान्तवादः | | १-४ । |
| २७५८० | न्यायामृतम् | | १-२, २०-१६ । |
| २७५८१ | विशुद्धाद्वैततत्त्वम् | | १-९ । |
| २७५८२ | जीवन्मुक्तिविवेकः | | १-२१, २३-९४ । |
| २७५८३ | त्रिपुरीविवरणम् | आनन्दज्ञानः शुद्धानन्दशिष्यः | १-११ । |
| २७५८४ | त्रिपुरीप्रकरणम् | शङ्कराचार्यः | १-५ । |
| २७५८५ | अद्वैतमकरन्दः सव्याख्यः | लक्ष्मीधरकविः, व्या. का. स्वयंप्रकाशयतिः | १-२६ । |
| २७५८६ | अद्वैतमकरन्दः | लक्ष्मीधरकविः | १-४ । |
| २७५८७ | अद्वैतसुधा | महेश्वरानन्दसर- स्वती | १८० । (गणनया) |
| २७५८८ | अद्वैतमकरन्दः सटीकः | खड्गराजकविः (खड्गेश्वरः) | २७ । (गणनया) |
| २७५८९ | अद्वैतसिद्धान्तविद्योत्तनम् | ब्रह्मानन्दसरस्वती | १-४३ । |
| २७५९० | अद्वैतमकरन्दः सटीकः | लक्ष्मीधरः | १-१४ । |
| २७५९१ | अद्वैतामृतम् | जगन्नाथसरस्वती | १-३० । |
| २७५९२ | अद्वैतमकरन्दः सटीकः | लक्ष्मीधरः | १-३ । |
| २७५९३ | अद्वैतसिद्धिः | मधुसूदनः | १-११ । |
| २७५९४ | अद्वैतामृतम् | जगन्नाथसरस्वती | १-३२ । |
| २७५९५ | " | " | २-३० । |
| २७५९६ | " | ब्रह्मेन्द्रसरस्वती | १-५८, ६०-१४३ । |
| २७५९७ | वैयासिकन्यायमाला | भारतीतीर्थमुनिः | १-२६, २६-९० । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | का. ना. | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|------------|----------|------------------------|--------------------------------------|
| १३.१ × ६.३ | १२ | ३७ | दे. ना. | का. | | पू० | |
| १४.२ × २.९ | १२ | ९३ | " | " | | अपू० | |
| ९.९ × ३.६ | ९ | ४१ | " | " | | पू० | |
| ९.२ × ४.७ | १० | ३५ | " | " | | अपू० | |
| १२.८ × ४.९ | ११ | ५३ | " | " | | " | |
| १०.२ × ५.१ | ९ | ३२ | " | " | | " | |
| ६.३ × ३.५ | ९ | २८ | " | " | | पू० | |
| ६.३ × ३.५ | ९ | २८ | " | " | | " | |
| ८.२ × ४.३ | १० | ३० | " | " | शकः १७६६ | " | रसाभिव्यञ्जिकानाम्नी व्याख्या । |
| ६.४ × ३ | ७ | २० | " | " | | " | |
| १२ × ५.५ | ११ | ४४ | " | " | | " | अद्वैतचन्द्रिकाटीकायाः १ परिच्छेदः । |
| ९.६ × ४ | ९ | ३५ | " | " | | अपू० | |
| ९.८ × ४.२ | ९ | ३९ | " | " | | पू० | १ परिच्छेदः । |
| १०.७ × ५.६ | १४ | ३१ | आन्ध्र | " | | " | |
| ९.६ × ३.९ | १० | ३८ | दे. ना. | " | | " | १-५ कल्पः । |
| ८.९ × ३.६ | १० | ३६ | " | " | | अपू० | |
| १३.८ × ४.२ | ७ | ५४ | " | " | | पू० | |
| ९.६ × ४.५ | ९ | ४२ | " | " | | " | |
| ८.५ × ३.३ | ९ | ३४ | " | " | | अपू० | |
| १०.७ × ४.४ | १० | ४४ | " | " | | पू०* | १ परिच्छेदः । |
| ११.४ × ३.८ | ९ | ४८ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|--|--------------------|
| २७६९८ | वेदान्तसारटीका | | ४५-६३ । |
| २७६९९ | न्यायदीपावलीटीका | अनुभूति- स्वरूपाचार्यः | १, ३-५, ७-२१ । |
| २७६०० | पञ्चदशी सटीका | विद्यारण्यः, टी. का. रामकृष्णः | १-२१, १-१४, १-७ । |
| २७६०१ | „ | „ | १-७, ९-१९, १९-२० । |
| २७६०२ | तत्त्वकौस्तुभः | भट्टोजिभट्टः | १-९ । |
| २७६०३ | अप्रोक्षानुभूतिः सटीका | शङ्कराचार्यः | १-३० । |
| २७६०४ | „ | शङ्कराचार्यः, टी. स्वरूपानन्दशिष्यः | १-३६ । |
| २७६०५ | आत्मबोधः | शङ्कराचार्यः | १० । (गणनया) |
| २७६०६ | अद्वैतसिद्धान्तविद्योतनम् | ब्रह्मानन्दसरस्वती | १-३७ । |
| २७६०७ | आत्मबोधः सटीकः | शङ्कराचार्यः, व्याख्यात्री दुर्गा | १-२६, २६-४३ । |
| २७६०८ | आत्मबोधप्रकरणं सटीकम् | | १-१५ । |
| २७६०९ | पञ्चपादिकाविवरणम् | प्रकाशात्मयतिः | १-६८ । |
| २७६१० | अद्वैतसुधा | नारायणसरस्वती | १-३६ । |
| २७६११ | अद्वैतमकरन्दः सञ्चाख्यः | लक्ष्मीधरकविः, टी. स्वयंप्रकाश- यतिः | १-२० । |
| २७६१२ | उपदेशसाहस्री | शङ्कराचार्यः | १-१४ । |
| २७६१३ | स्वाराज्यसिद्धिः | | १-१८ । |
| २७६१४ | तत्त्वदीपनम् | | ३, ५-१८, २०-३९ । |
| २७६१५ | तत्त्वविवेकटीका | | ९४ । (गणनया) |
| २७६१६ | तत्त्वविवेकः | | १-११ । |
| २७६१७ | तत्त्वविवेकः | नृसिंहाश्रमः | ४८ । (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-------------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| १०*९ × ३*९ | १० | ४३ | दे. ना. | का. | | पू० | |
| ११*११ × ३*९ | ११ | ६० | वङ्ग. | " | | " | |
| ९*५ × ४*२ | ७ | ३५ | दे. ना. | " | | " | ध्यानदीपनाटकदीपपञ्चकोश- विवेकप्रकरणानि । |
| ९*३ × ४*८ | १० | ३३ | " | " | | अपू० | तत्त्वविवेकप्रकरणम् । |
| ९ × ४*५ | १२ | ३४ | " | " | | पू० | ३ परिच्छेदः । |
| १०*२ × ५*१ | ११ | ३४ | " | " | सं० १८५२ | " | टीका दीपिकाख्या । |
| १०*८ × ५*५ | १० | ४९ | " | " | | अपू० | टीका परमार्थप्रदीपिकाख्या |
| १२*६ × ६*४ | १० | ३७ | " | " | | " | |
| १२*३ × ४*७ | १० | ५१ | " | " | | पू० | |
| ९*२ × ४*१ | ११ | ३८ | " | " | | " | |
| ९*९ × ६*३ | १० | ३९ | " | " | | " | |
| ११*३ × ४ | १० | ४३ | " | " | सं० १६१९ | " | प्रथमवर्णम् । |
| १०*१ × ४*३ | ८ | २५ | " | " | | " | |
| ९*२ × ४*२ | ११ | ३७ | " | " | | " | रसाभिव्यञ्जिकाख्या टीका । |
| ११*९ × ४*७ | ११ | ४३ | " | " | सं० १८६२ | " | |
| १३*४ × ४*२ | ७ | ४२ | " | " | सं० १९३१ | " | |
| ८*७ × ४*१ | १० | ३६ | " | " | | अपू० | |
| ११*५ × ३*२ | ८ | ४७ | " | " | | " | |
| १०*१ × ३*४ | ९ | ४७ | " | " | | " | |
| ११*५ × ३*३ | ८ | ५९ | " | " | | पू० | १-२ परिच्छेदौ । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------------|--|---|
| २७६१८ | तत्त्वविवेकदीपनम् | नृसिंहाश्रमः | १ । |
| २७६१९ | भेदधिकारसत्किया | नारायणाश्रमः | १-११२ । |
| २७६२० | पञ्चदशी सटीका | विद्यारण्यः, टी. रामकृष्णः | १-२३ । |
| २७६२१ | वेदान्तकल्पतरुः | अमलानन्दः | १-२८ (= २९) ३०-३७, ३७-४३ (४३ = ४४ ४५-१४२ । |
| २७६२२ | परमपुरुषार्थत्व- निरूपणम् | | १-२ । |
| २७६२३ | आनन्दमयाधिकरणविचारः | | १-२ । |
| २७६२४ | पञ्चदशी सटीका | विद्यारण्यः, टी. रामकृष्णः | १-१६ । |
| २७६२५ | " | " | १-५ । |
| २७६२६ | भेदखण्डनं सटीकम् | | २-३ । |
| २७६२७ | महाभूतोत्पत्तिविचारः | | २-४ । |
| २७६२८ | ब्रह्मसूत्रम् सवृत्तिकम् | वृ. का. अनूप- नारायण- भट्टाचार्यः | ३-६२ । |
| २७६२९ | " | वृ. का. रामानन्दः | ४७ । (गणनया) |
| २७६३० | भामती | वाचस्पतिमिश्रः | १-३९, ४१-१०१ । |
| २७६३१ | वेदान्तसारविवरणम् | | ९३ । (गणनया) |
| २७६३२ | प्रमाणमाला | आनन्दबोधः | १-१७ । |
| २७६३३ | नैष्कर्म्यसिद्धिः | | १-४३ । |
| २७६३४ | असम्भावनामुख्यत्वविचारः | | २ । (गणनया) |
| २७६३५ | अद्वैतसिद्धिटीकाव्याख्या | | १-४९ । |
| २७६३६ | मानदीपिका सव्याख्या | वालब्रह्मानन्दसूरिः, व्या. का. वासु- देवानन्दभट्टः | १-२९ (= २९+३०), ३१-५३, १-१९ १-४ (४+५) ६-१०१, १-४ (= ४+५ + ६) ७-७३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| १०३ × ३४ | ७ | ४८ | दे. ना. | का. | १६६२ | अपू० | भेदधिकारन्याख्या । तत्त्वविवेकप्रकरणम् । |
| ९५ × ४१ | ९ | ३१ | " | " | | पू० | |
| ९६ × ४१ | ९ | ३१ | " | " | | " | |
| ११४ × ४ | ११ | ३६ | " | " | | " | |
| ९४ × ४३ | १६ | ३१ | " | " | | " | |
| ९२ × ४७ | १४ | ४० | " | " | | अपू० | द्वैतविवेकप्रकरणम् । महावाक्यविवेकप्रकरणम् । |
| ९६ × ४२ | ८ | ३८ | " | " | | पू० | |
| ९७ × ४३ | १० | ३८ | " | " | | " | |
| ९२ × ४७ | १५ | ३७ | " | " | | अपू० | |
| ९२ × ४७ | १६ | ४४ | " | " | | " | |
| ९५ × ४ | ११ | २९ | " | " | १८५९ | " | समञ्जसानाम्नी वृत्तिः । |
| ८ × ३५ | १० | २४ | " | " | १७४१ | " | ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यटीका । |
| १०५ × ३८ | १० | ३७ | " | " | | " | |
| १०८ × ३८ | ९ | ३७ | " | " | | " | |
| ९ × ५ | १४ | ३४ | " | " | | पू० | |
| १० × ४५ | १० | ३६ | " | " | १८२५ | " | |
| ९५ × ४ | ११ | ३७ | " | " | १६७३ | अपू० | गौडब्रह्मानन्दी लघुचन्द्रिकान्याख्या विद्वलेशोपाध्यायी । |
| १०७ × ५६ | १६ | ३५ | तेलुगु | " | | " | |
| १३५ × ५२ | १३ | ५३ | दे. ना. | " | | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------|--|---|
| २७६३७ | खण्डनखण्डखाद्यम् | श्रीहर्षः | १३ । (गणनया) |
| २७६३८ | " | " | १-१२९ । |
| २७६३९ | " | " | १३०-१७२ । |
| २७६४० | रत्नप्रभा | गोविन्दानन्दः | १-६८, १-४५, १-६१, १-९ । |
| २७६४१ | आत्मस्वरूपप्रकरणं सटीकम् | शङ्कराचार्यः, टी० भगवदानन्द- गिरिः | १-९ । |
| २७६४२ | खण्डनखण्डखाद्यटीका | | १-३६, ३८-७८, ११३-११९ । |
| २७६४३ | अनुभूतिप्रकाशः | विद्यारण्यः | १-११७ । |
| २७६४४ | जीवन्मुक्तिः | " | १-८० । |
| २७६४५ | चन्द्राद्वैतरूपणम् | | १-४ । |
| २७६४६ | कोशरत्नप्रकाशः | अनुभवानन्दः | १-१४४ । |
| २७६४७ | खण्डनफक्किकाविभजनम् | आनन्दपूर्णः | १-१० । |
| २७६४८ | कोशरत्नप्रकाशः | | १-१०० = १०१-११४ = ११५-२३६ । |
| २७६४९ | अद्वैतसिद्धिटीका | ब्रह्मानन्दसरस्वती | ५ । (गणनया) |
| २७६५० | " | " | १-१७ । |
| २७६५१ | " | " | १-१४ । |
| २७६५२ | " | " | १-६४ (= ६५)-१४५, १४५-२५० (= २५१-२५३)-२६५, २६५-२८२ १-१३१ । |
| २७६५३ | लघुवाक्यवृत्तिः सटीका | शङ्कराचार्यः | १-६ । |
| २७६५४ | वाक्यवृत्तिः सव्याख्या | " व्या.भगवदानन्दः | १-९ । |
| २७६५५ | वेदान्तसंज्ञा | | १-३१ । |
| २७६५६ | " | | १-१३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|--|
| १२ × ३'७ | ७ | ६४ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| ११'८ × ३'६ | ७ | ६२ | " | " | | " | |
| ११'९ × ३'६ | ७ | ४९ | " | " | | " | |
| १२'९ × ४'८ | १० | ६६ | " | " | | " | शारीरकमीमांसाभाष्यव्याख्या- व्याख्या । |
| १०'३ × ४'९ | ८ | ४१ | " | " | | पू० | |
| १०'९ × ३'४ | ८ | ६४ | " | " | | " | |
| ११'९ × ९ | ११ | ३९ | " | " | | " | |
| ८'८ × ४'२ | ८ | ३४ | " | " | | " | |
| ९'४ × ३'८ | ८ | ३१ | " | " | | " | |
| १० × ४'३ | १० | ३८ | " | " | | " | अद्वैतरत्नकोशाख्यायास्तत्त्वविवेक- टीकायाष्टीका, द्वितीयः परिच्छेदः । |
| १४ × ९'९ | ३२ | ११२ | " | " | | अपू० | विद्यासागरी व्याख्या । |
| १०'२ × ४'९ | १२ | ३९ | " | " | | पू० | प्रथमपरिच्छेदः । अद्वैतरत्नकोशा- ख्यायास्तत्त्वविवेकटीकायाष्टीका । |
| १२'७ × ९ | १२ | ६७ | " | " | | अपू० | लघुचन्द्रिकाख्या । |
| १२'९ × ४'८ | ९ | ६८ | " | " | | " | " । चतुर्थः परिच्छेदः । |
| १३ × ९ | १२ | ६४ | " | " | १८७३ | " | " |
| १३ × ९ | १२ | ४८ | " | " | | " | " |
| १२'६ × ६'७ | १० | ३० | " | " | | पू० | पुष्पाञ्जलिनाम्नीटीका । |
| १२'६ × ९'९ | १२ | ६० | " | " | १९२० | " | |
| ८ × ४'२ | ९ | २७ | " | " | | " | |
| १२'९ × ६'९ | १९ | ३८ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--|--|-----------------------------|
| २७६५७ | चित्सुखीन्याख्या | प्रत्यक्स्वरूपः | १-१२९ । |
| २७६५८ | पञ्चदशी सटीका | विद्यारण्यमुनिः टी० रामकृष्णः | १-४९ । |
| २७६५९ | तत्त्वप्रदीपिकाटीका | प्रत्यक्स्वरूपः | १-३९ । |
| २७६६० | तत्त्वविवेकीकाविवरणम् | भट्टोजिदीक्षितः | १-१८, १८-(२६ = २७) २८-१०३ । |
| २७६६१ | " | " | २-९४, ९९-१०९ । |
| २७६६२ | तत्त्वानुसन्धानम् | महादेवसरस्वती मुनिः | १-२९ । |
| २७६६३ | " | " | १-२९ । |
| २७६६४ | वेदान्तोपनिषद्वाचिक- वृत्तिः | | १-५५ । |
| २७६६५ | वेदान्तप्रकाशापवादः | शिवानन्दसरस्वती जगन्नाथसरस्वती शिष्यः | १-३१, ३७-४३ । |
| २७६६६ | वेदान्तसंज्ञाप्रकरणम् | | १-१६ । |
| २७६६७ | वेदान्तप्रकाशाध्यारोपः | शिवानन्दसरस्वती जगन्नाथसरस्वती शिष्यः | ३-३९ । |
| २७६६८ | पूर्णचन्द्रोदयः | शाश्वतेन्द्र- सरस्वती | १-१९ । |
| २७६६९ | विद्यासागरः | भगवन्नारायणेन्द्र सरस्वती | १-१० (= १० + ११) १२-२९ । |
| २७६७० | स्वात्मानुभवार्थाप्रकरणं सख्याख्यम् | शङ्कराचार्यः, व्या. का. सच्चिदानन्द- सरस्वती | १-२८ । |
| २७६७१ | तत्त्वविवेकीपनम् | नृसिंहाश्रममुनिः | १-३०, ३७-१०७ । |
| २७६७२ | " | " | १-१००, १-५४ । |
| २७६७३ | तत्त्वानुसन्धानम् | महादेवसरस्वती | १-४६ । |
| २७६७४ | वेदान्ततात्पर्यनिवेदनम् | | ३-६८, ७२-७३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | सं- ज्ञाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|--------------|----------|------------------------|---|
| १३×४'९ | ११ | ५७ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ११'४×५'५ | ८ | ३८ | " | " | | पू० | टीका तात्पर्यबोधिनी । चित्रदीप- प्रकरणम् । |
| १०'८×३'९ | १४ | ५२ | " | " | | " | नयनप्रसादिनी । ३, ४ परिच्छेदौ । |
| १०'२×४'६ | १० | ३४ | " | " | | " | १ परिच्छेदः । |
| १०'६×३'९ | ११ | ४४ | " | " | | अपू० | " |
| ९'७×४'४ | १२ | ४२ | " | " | | पू० | |
| १३'१×७ | १३ | ३८ | " | " | | " | |
| १२×५'५ | ९ | ३३ | " | " | | " | |
| ११'२×५ | १० | ४२ | " | " | | अपू० | |
| १०×४'५ | ९ | ४७ | " | " | १८२९ | पू० | |
| ११×५ | ९ | ४६ | " | " | | अपू० | |
| ९×५ | १० | २९ | " | " | | " | |
| ९'२×५'२ | १० | २९ | " | " | १७७६ | पू० | |
| ९'२×५ | १५ | ४१ | " | " | श. १७४१ | " | |
| १०'९×४'६ | ११ | ४९ | " | " | | " | १, २ परिच्छेदौ । |
| ११×३'८ | ९ | ३९ | " | " | | " | " |
| ९'६×४'४ | १० | २८ | " | " | | " | |
| ११'२×४ | ९ | ३५ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------------------|--|--------------------------|
| २७६७६ | वैयासिकन्यायमाला | भारतीतीर्थमुनिः | १-१९। |
| २७६७६ | तत्त्वानुसन्धानम् | महादेवसरस्वती | १-२९। |
| २७६७७ | पञ्चदशी सटीका | विद्यारण्यः, टी. रामकृष्णः | २। (गणनया) |
| २७६७८ | स्वयंप्रकाशविचारः | | ३-१३। |
| २७६७९ | वैयासिकन्यायमाला | भारतीतीर्थमुनिः | १-४८। |
| २७६८० | पञ्चीकरणविवरणम् | आनन्दज्ञानमुनिः | १-६। |
| २७६८१ | स्वात्मानुभवादर्थः | माधवभिक्षुः | १-२४। |
| २७६८२ | पञ्चीकरणविवरणम् | आनन्दज्ञानः | १-१४। |
| २७६८३ | खण्डनखण्डखाद्यटीका | आनन्दपूर्णः | १-१६३, १६५-२७८, २७८-३४६। |
| २७६८४ | स्वरूपप्रकाशः | सदानन्दः काश्मीरः ब्रह्मानन्दसरस्वती- शिष्यः | १-३०। |
| २७६८५ | तत्त्वानुसन्धानं सव्या- ख्यातम् | महादेवसरस्वती- मुनिः | १-२१। |
| २७६८६ | श्रुतिसारसमुद्धरणं सव्या- ख्यम् | तोदकाचार्यः | १-३२। |
| २७६८७ | सङ्क्षेपशारीरकं सटीकम् | सर्वज्ञात्ममुनिः, टी० का० नृसिंहा- श्रमः | १-२५४, २५९-४३६, १-३५। |
| २७६८८ | तत्त्वानुसन्धानम् | महादेवसरस्वती | १-१९। |
| २७६८९ | परमार्थसारः | पतञ्जलिः | १-९। |
| २७६९० | अर्थप्रकाशिका | नागेशभट्टः | १-२२। |
| २७६९१ | ब्रह्मतर्कविवरणम् | | १-२१। |
| २७६९२ | खण्डनखण्डखाद्यटीका | शङ्करमिश्रः | १-५५, ५५-१०६। |
| २७६९३ | ” | | २। (गणनया) |
| २७६९४ | ” | | ६३। (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|---|
| ८°९ × ३°७ | १४ | ४५ | दे.ना. | का. | | पू० | १ अध्यायः । |
| १२°९ × ६°४ | १३ | ४१ | " | " | | " | |
| ११°७ × ८ | २१ | ४८ | " | " | | अपू० | चित्रदीपप्रकरणम् । |
| ११°२ × ३°५ | ८ | ६६ | " | " | | " | |
| ९°१ × ३°६ | १३ | ४१ | " | " | | " | |
| ९°४ × ४ | १२ | ४२ | " | " | | पू० | |
| ८ × ४°३ | ९ | २५ | " | " | | " | |
| ६°४ × ३°४ | ९ | २४ | " | " | | " | |
| १०°४ × ४°४ | १० | ४७ | " | " | | अपू० | |
| ११°७ × ४°३ | ९ | ५८ | " | " | | पू० | |
| १३°६ × ७°३ | २२ | ६५ | " | " | | अपू० | व्याख्यानम् अद्वैतचिन्ताकौस्तुभा- ख्यम् । १ परिच्छेदः॥ |
| १२°७ × ६°४ | १३ | ४८ | " | " | | पू० | तत्त्वदीपिकाख्या व्याख्या । |
| १३°२ × ८°२ | ३६ | २० | " | " | १९३८ | अपू० | तत्त्वबोधिनी टीका । |
| १२°९ × ४°१ | १३ | ४६ | तेलुगु | " | | पू० | |
| ११ × ४°७ | ९ | ३४ | दे.ना. | " | | " | |
| ९°७ × ४°२ | ९ | ४० | " | " | | " | परमार्थसारटीका । |
| १०°४ × ४°४ | १९ | ४५ | " | " | | अपू० | |
| १३°१ × ५ | १२ | ६२ | " | " | | " | |
| १०°१ × ४°४ | ११ | ४७ | " | " | | " | |
| १३ × ४°९ | १२ | ५५ | " | " | सं. १८८४ | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------|---------------------------------------|--|
| २७६९५ | अद्वैतामृतम् | जगन्नाथसरस्वती | १-२८ । |
| २७६९६ | तत्त्वप्रकाशिका | जयतीर्थमुनिः | १-४२ । |
| २७६९७ | ब्रह्मसूत्रवृत्तिः | | १-२३, १-१२, १-१८, १-१२, १-२३, १-२२, १-७, १-९, १-२२, १-११, १-२२ । |
| २७६९८ | भेदधिकारः सटीकः | नृसिंहाश्रममुनिः. टी. नारायणाश्रमः | १-३६, ३६-६६ । |
| २७६९९ | भामती | | ४१-५५, ६४-९१, ९१-९९, ९९ = १००, १०१-१०९; ११८ । |
| २७७०० | खण्डनोद्धारः | वाचस्पतिमिश्रः | १-४०, ४०-१०३ । |
| २७७०१ | वाक्यसुधा सटीका | शङ्कराचार्यः | १-१६ । |
| २७७०२ | ब्रह्मविचारः | | १-५ । |
| २७७०३ | वेदान्तसारःसटीकः | टी० नृसिंहसर- स्वती | १-३६ । |
| २७७०४ | मकरन्दपट्टपदी | रामदेवः | १-२१९ । |
| २७७०५ | वेदान्तकल्पतरुः | अमलानन्दः | ८२-१००, १०२, १२१, १२४-१७६ । |
| २७७०६ | ब्रह्मसूत्रार्थप्रदीपिका | जयरामः | १-३१, १-३६, १-३७, १-१४ । |
| २७७०७ | आत्मविवेचनिका | कुवेरानन्दः | १-५७ । |
| २७७०८ | उपदेशसाहस्री | शङ्कराचार्यः | १-२६ । |
| २७७०९ | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | " | ६-१४, १५-२०, ३७-१०१ । |
| २७७१० | वेदान्तडिण्डिमः | शिवेन्द्रसरस्वती | १-१८ । |
| २७७११ | पञ्चपादिकाविवरणव्याख्या | | १-३५ । |
| २७७१२ | खण्डनखण्डखाद्यटीका | | ३९-८८ । |
| २७७१३ | स्वात्मानुभवदर्पणः | | १-२५ । |
| २७७१४ | रत्नप्रभा | गोविन्दानन्दः | १-२५ । |
| २७७१५ | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | शङ्कराचार्यः | ७५-८६, २७१, २७९-३०३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|-------|---------------|-------------------------|--|
| ११'२ × ५ | १० | ४१ | दे.ना. | का. | | पू० | |
| ८'४ × ४'१ | ९ | २८ | " | " | | " | ब्रह्मसूत्रभाष्यटीकाव्याख्या । ४ अध्यायः |
| १२'३ × ४'७ | १० | ५८ | " | " | श. १७४६ | " | ब्रह्मासृतवर्षिणीति नामान्तरम् । |
| १३'८ × ५'५ | ११ | ५७ | " | " | | " | सत्क्रियाख्या टीका |
| ११'४ × ३'४ | ८ | ५७ | " | " | | अपू० | |
| १३ × ४ | ८ | ४३ | " | " | | पू० | शारीरकमीमांसाभाष्यटीका |
| १०'५ × ४'५ | १२ | ३९ | " | " | | " | |
| ११'३ × ४'७ | ७ | २९ | " | " | | अपू० | |
| १५'८ × ३'१ | ८ | ७४ | वङ्ग. | " | वङ्गन्दा १२६२ | पू० | |
| १०'५ × ४'२ | ११ | ४१ | दे.ना. | " | | अपू० | कस्यचिद् ग्रन्थस्य टीका । |
| १०'५ × ४'५ | १२ | ५० | " | " | सं. १५७३ | " | १-२ अध्यायौ । |
| ११'१ × ५'५ | १३ | ३७ | " | " | | पू० | १-४ अध्यायाः । |
| ९'५ × ४'२ | १० | ३८ | " | " | १७९३ | " | |
| ११'८ × ४'७ | १० | ५० | " | " | | " | |
| १०'९ × ४'२ | ११ | ४२ | " | " | १५४२ | अपू० | |
| ६'५ × ४'८ | ७ | ११ | " | " | | पू० | |
| ७'९ × ३'९ | ९ | २४ | " | " | | अपू० | |
| १०'६ × ३'३ | ७ | ५० | " | " | | " | |
| ९'२ × ४ | ९ | २८ | " | " | | पू० | |
| ११ × ५'३ | ११ | ४ | " | " | | " | १ अध्याये ४ पादः । शारीरकमीमांसाभाष्यटीका । |
| ११'६ × ४ | १० | ६० | वङ्ग. | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------------|---------------------------------------|-------------------|
| २७७१६ | शारीरकमीमांसाभाष्य- सटीकम् | शङ्कराचार्यः | १-१२ । |
| २७७१७ | मध्वतन्त्रमुखमर्दनम् | अप्पय्यदीक्षितः | ६१ । (गणनया) |
| २७७१८ | शिवपादविन्यासः सटीकः | गोपीनाथः, टी. प्राणनाथेन्द्रतीर्थः | १-९ । |
| २७७१९ | शारीरकमीमांसाभाष्य- सटीकम् | शङ्कराचार्यः, टी. रामानन्दसरस्वती | १-१३२, १-९६ । |
| २७७२० | ब्रह्मसूत्रव्याख्याभेदाः | | १ । |
| २७७२१ | सङ्क्षेपशारीरकम् | सर्वज्ञात्ममहामुनिः | १-९० । |
| २७७२२ | वेदान्तसिद्धान्तमुक्तावली- सटीका | प्रकाशानन्दः, टी. का. नानादीक्षितः | १-१०१ । |
| २७७२३ | तत्त्वप्रदीपिकाटीका | प्रत्यक्स्वरूपः | १-८० । |
| २७७२४ | सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहव्याख्या | | १ । |
| २७७२५ | ब्रह्मसूत्रं सभाष्यम् | व्यासः, भाष्यकारः श्री नीलकण्ठः | १९६ । (गणनया) |
| २७७२६ | स्वरूपनिरूपणं सटीकम् | शङ्कराचार्यः, टी. का. आनन्दज्ञानः | १-९ । |
| २७७२७ | स्वबोधरत्नम् | माधवभिक्षुः | १-२० । |
| २७७२८ | वेदान्तसिद्धान्तमुक्तावली | प्रकाशानन्दयतिः | १ ४९ । |
| २७७२९ | " | " | ३-७६ । |
| २७७३० | रामरत्नाकरः सटीकः | महाकृष्णः, टी. महामुद्गलः | १ ८०, ८३-९९ । |
| २७७३१ | तत्त्वमुक्तावली | पूर्णानन्दचक्रवर्ती | १-११ । |
| २७७३२ | सोमतत्त्वविवेकः | | ३-६ । |
| २७७३३ | सिद्धान्तरहस्यसारः | | १-९ । |
| २७७३४ | सिद्धान्तरत्नमाला | | १-४०, ५६-१२५ । |
| २७७३५ | सिद्धान्तदीपः | | १-४७, ४९-१८३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | वाच्यः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|--------|----------|-----------------------|------------------------------------|
| १३°४ × १°५ | १३ | ५६ | दे. ना. | का. | | अपू० | रत्नप्रभा टीका ३ अध्याये १ पादः । |
| १२°८ × ४°९ | ११ | ५५ | " | " | | पू० | |
| १०°७ × ४°५ | ९ | ३८ | " | " | | " | टीका सुप्रभा । |
| १३°१ × ५°४ | १४ | ४२ | " | " | | " | रत्नप्रभाख्या टीका । १-२ अध्यायौ ! |
| १२°५ × ४°८ | १४ | ५३ | " | " | | अपू० | |
| ११ × ४°६ | ९ | ४३ | " | " | | पू० | ४ अध्यायः । |
| १२°५ × ४°९ | १० | ७७ | " | " | सं. १८४५ | " | |
| १३ × ४°८ | १५ | ५७ | " | " | | अपू० | नयनप्रसादिनीति नामान्तरम् । |
| १२ × ४°७ | १२ | ४५ | " | " | | " | |
| १३°२ × ८°६ | १९ | ४२ | " | " | | पू० | |
| ९°३ × ४°४ | १२ | ४१ | " | " | | " | |
| ९°८ × ४°३ | ९ | ३० | " | " | | " | |
| ८°९ × ४°३ | ११ | ३४ | " | " | | " | |
| १०°८ × ३°४ | ६ | ४० | " | " | | अपू० | |
| ९°२ × ४°४ | १३ | ३९ | " | " | | " | |
| ११ × ५°२ | ९ | २९ | " | " | | पू० | मायावादशतदूपणीति च नाम । |
| ८°२ × ३°८ | १० | ३७ | " | " | | अपू० | |
| ११ × ४°६ | ८ | ३८ | " | " | | " | |
| १०°२ × ३°३ | ९ | ४१ | " | " | | " | |
| १३ × २°८ | ८ | ५८ | " | " | | पू० | सङ्क्षेपशारीरकन्याख्या । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------------|---------------------------------------|-------------------------------------|
| २७७३६ | वेदान्तसिद्धान्तमुक्तावली सटीका | प्रकाशानन्दः, टी. का. ज्ञानानन्दः | १-२१, २३-२५०, २५२, २५५-२७९ । |
| २७७३७ | तत्त्वविवेकव्याख्यान- विवरणम् | श्रीनिवासः | १-२५ । |
| २७७३८ | तत्त्वविवेकदीपनम् | नृसिंहाश्रममुनिः | १-७८ । |
| २७७३९ | वेदान्तसिद्धान्तमुक्तावली सटीका | प्रकाशानन्दः, टी. का. नानादीक्षितः | १-१२८ । |
| २७७४० | तत्त्वविवेकः | नृसिंहाश्रममुनिः | १-३८ । |
| २७७४१ | जीवेशाभेदधिकारः | | १-१४ । |
| २७७४२ | शारीरकन्यायनिर्णयः | भगवदानन्दः | ३० । (गणनया) |
| २७७४३ | सङ्क्षेपशारीरकम् | सर्वज्ञमुनिः | १-४८ । |
| २७७४४ | सङ्क्षेपशारीरकभाष्यम् | " | १-४० । |
| २७७४५ | ब्रह्मसूत्रव्याख्यानम् | | २४९ । |
| २७७४६ | शारीरकभाष्यव्याख्यानम् | | १-२ । |
| २७७४७ | पञ्चपादिकाविवरणतत्त्व- दीपनम् | अखण्डानन्दमुनिः | ११६ । (गणनया) |
| २७७४८ | वेदान्तकल्पलतिका | मधुसूदनः | १-४७ । |
| २७७४९ | वेदान्तकल्पतरुः | अमलानन्दः | १७३ । (गणनया) |
| २७७५० | वेदान्तपरिभाषाव्याख्या | व्या. का. रामकृष्णः | १-३७ । |
| २७७५१ | आगमशास्त्रविवरणम् | शङ्कराचार्यः | १-८२ । |
| २७७५२ | अद्वैतसिद्धिः | मधुसूदनसरस्वती | १-१४५ । |
| २७७५३ | सङ्क्षेपशारीरकव्याख्या | रामतीर्थः | ३२२ । (गणनया) |
| २७७५४ | वेदान्तसिद्धान्तमुक्तावली- सटीका | प्रकाशानन्दः, टी. का. नानादिक्षितः | १ । |
| २७७५५ | श्रुतिसारसमुद्धरणं सटीकम् | तोटाकाचार्यः, टी. का. सच्चिदानन्दः | १-३१ (३२, ३३, ३४, ३५, = ३६) ३६-६५ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आश्रयः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-----------|--------------------|------------------|---------|--------|----------|------------------------|----------------------------------|
| ९२ × ६३ | १६ | २९ | दे. ना. | का. | शक १७०२ | अपू० | सिद्धान्तदीपिका नाम्नी टीका । |
| १२० × ४०८ | ११ | ४४ | " | " | | पू० | |
| ११ × ४०८ | १२ | ४३ | " | " | | अपू० | |
| ११५ × ६१ | ९ | ४६ | " | " | | पू० | |
| १०१ × ४५ | १६ | ३३ | " | " | | " | |
| ११ × ४०७ | ११ | ४६ | " | " | १७४७ | पू० | २-४ अध्यायाः । |
| १६१ × ४ | ९ | ६४ | " | " | | अपू० | |
| १२४ × ६२ | ११ | ३४ | " | " | १९०५ | पू० | |
| १२४ × ६३ | ११ | ४१ | " | " | | " | |
| ९ × ४५ | ९ | २९ | " | " | | अपू० | |
| १० × ४०७ | ९ | ३१ | " | " | | " | शङ्करनिम्बार्कविरोधपरिहाररूपम् । |
| ११ × ४ | ११ | ६८ | " | " | | " | |
| १०६ × ४२ | ८ | २५ | " | " | | पू० | |
| १२ × ४ | ११ | ६३ | " | " | | अपू० | |
| १० × ४५ | ८ | ३५ | " | " | | " | |
| ८५ × ४५ | १० | २८ | " | " | १६०६ | पू० | शिखामणिनाम्नी । |
| १०६ × ४६ | १२ | ४९ | " | " | १६४६ | " | |
| १३१ × ५४ | ११ | ३८ | " | " | १९३८ | अपू० | |
| ९२ × ६३ | ८ | २८ | " | " | शक १७०२ | " | |
| ११४ × ६७ | १० | ४४ | " | " | १८९० | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------|---|----------------------------------|
| २७७५६ | सङ्क्षेपशारीरकन्याख्या | रामतीर्थः | १-३९, १ |
| २७७५७ | महावाक्यविवरणम् | | १-५ । |
| २७७५८ | बृहद्वाक्यवृत्तिः | | १-४ । |
| २७७५९ | ब्रह्मविद्याविलासः | सदाशिवब्रह्मेन्द्र- सरस्वती | १-६ । |
| २७७६० | ब्रह्मविद्याभरणम् | अद्वैतानन्दयतिः | ५९९ । (गणनया) |
| २७७६१ | पञ्चदशी सटीका | टी. का. रामकृष्णः | १-२० । |
| २७७६२ | पञ्चप्रकरणी | | १-१५ । |
| २७७६३ | पञ्चपादिकाविवरणं सटीकम् | प्रकाशात्मयतिः टी. का. अखण्डानन्दः | २३५ । (गणनया) |
| २७७६४ | वेदान्तसिद्धान्तरत्नमाला | श्रीवत्सलान्धुन- भट्टाचार्यः | ४८-७०, ८७-१२१, १ |
| २७७६५ | सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहः सटीकः | अप्पयदीक्षितः, टी. अच्युत- कृष्णानन्दतीर्थः | १-५ । |
| २७७६६ | वेदान्तसारसङ्ग्रहः | नारायणाश्रमः | १-३० । |
| २७७६७ | सिद्धान्तरत्नमाला | श्रीवत्सशर्मा | ४२ । (गणनया) |
| २७७६८ | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | शङ्कराचार्यः | १-४३, ४५-७३ । |
| २७७६९ | शारीरकन्यायमणिमाला | | १-२९६ । |
| २७७७० | सिद्धान्तलेशसंग्रहः सटीकः | अप्पयदीक्षितः, टी. अच्युत- कृष्णानन्दतीर्थः | १-१२५, १-३४, ३६-६८, १-४५, १-२३ । |
| २७७७१ | शारीरकन्यायरत्नामणिः | अप्पयदीक्षितः | १-६३ । |
| २७७७२ | तत्त्वविवेकटीकाविवरणम् | | ६८ । (गणनया) |
| २७७७३ | शारीरकन्यायरत्नामणिः | अप्पयदीक्षितः | २-१५० । |
| २७७७४ | " | " | १-६१ । |
| २७७७५ | " | " | १-६२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आयः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-----|----------|------------------------|----------------------------------|
| १२६ × ९३ | ११ | ९८ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| ७ × ४ | १० | २६ | " | " | | " | |
| १०२ × ९३ | ९ | ३० | " | " | १९०७ | पू० | |
| ९७ × ४३ | ९ | ३३ | " | " | | " | |
| १०८ × ९ | ११ | ३९ | " | " | | अपू० | |
| ९७ × ४३ | ९ | ३२ | " | " | | पू० | द्वितीयप्रकरणम् । |
| १०२ × ९४ | १२ | ३२ | " | " | | " | |
| १२८ × ६९ | १४ | ४६ | " | " | १८६७ | अपू० | तत्त्वदीपनं टीकानाम् । |
| ९३ × ४९ | ९ | ३० | " | " | | " | |
| ११७ × ८१ | १९ | ४४ | " | " | | " | |
| ११ × ९ | १२ | ३३ | " | " | | पू० | |
| ८८ × ४४ | ९ | ३८ | " | " | | अपू० | |
| १०४ × ४ | ८ | ३१ | " | " | | " | प्रथमाध्यायस्य प्रथमपादमात्रम् । |
| ११९ × ४९ | १० | ४१ | " | " | १६७६ | पू० | |
| १९९ × ६३ | १३ | ६१ | " | " | | ॐ | कृष्णालङ्कारनाम्नी टीका । |
| ११९ × ४२ | १२ | ४० | " | " | | " | १ अ० २ पादः । |
| ९१ × ३९ | ९ | ३८ | " | " | | अपू० | |
| १०७ × ४९ | १० | ९० | " | " | | " | १ अ० ३ पादः |
| १०३ × ४९ | १४ | ४९ | " | " | | पू० | १ अ० ४ पादः । |
| १०९ × ४९ | १४ | ४१ | " | " | | " | १ अ० १ पादः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------------|---|---------------------------|
| २७७७६ | वेदान्तपरिभाषाव्याख्या | | १-८ । |
| २७७७७ | विशिष्टाद्वैतविचारः | | १-२६ । |
| २७७७८ | भामती | | ८७ । (गणनया) |
| २७७७९ | मध्वतन्त्रमुखमर्दन- व्याख्यानम् | अप्पय्यदीक्षितः | १-६६ । |
| २७७८० | अद्वैतचिन्ताकौस्तुभः | | १२ । (गणनया) |
| २७७८१ | विधिविवर्तः | | १६ । (गणनया) |
| २७७८२ | वाक्यसुधा सटीका | शङ्कराचार्यः | १-२२ । |
| २७७८३ | वाक्यवृत्तिप्रकाशिका | रामानन्दसरस्वती | १-३६ । |
| २७७८४ | पञ्चपादिकाविवरणतत्त्व- दीपनम् | अखण्डानन्दमुनिः | १-३१, ३१-४७, ४७, ४७-१७० । |
| २७७८५ | पञ्चपादिका | | १-६७ । |
| २७७८६ | ब्रह्मसूत्रम् | | १-६ । |
| २७७८७ | ब्रह्मसूत्रभाष्यम् | आनन्दतीर्थः | १-६८ । |
| २७७८८ | पञ्चपादिकाविवरणतत्त्व- दीपनम् | अखण्डानन्दमुनिः | १-१०२, १०४-१८६ । |
| २७७८९ | स्वाराज्यसिद्धिः सटिप्पणा | टि. का. शिवरामः | १-१८ । |
| २७७९० | सिद्धान्तभूषणम् | ज्ञानेन्द्रमुनिः | १-८४ । |
| २७७९१ | सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहः | | १-४८ । |
| २७७९२ | स्वरूपनिर्णयः | सदानन्दः | १-६४ । |
| २७७९३ | वेदान्तकल्पतरुपरिमलः | अप्पय्यदीक्षितः | ६१९ । (गणनया) |
| २७७९४ | वेदान्तसिद्धान्तचन्द्रिका- सटीका | रामानन्दसरस्वती, टी. का. गङ्गाधर- सरस्वती | १-२९ । |
| २७७९५ | वेदान्तपरिभाषा | धर्मराजाध्वरीन्द्रः | १-३० । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | सं- ख्या | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------------|----------|------------------------|---------------------------------|
| १० × ४३ | ११ | ४२ | दे. ना. | का. | | अपू० | शिखामणिनाम्नी । |
| ९७ × ४२ | ११ | ३८ | " | " | | " | |
| १११ × ३७ | ९ | ५४ | " | " | | " | शारीरकमीमांसाभाष्यटीका । |
| ११३ × ४७ | १२ | ४१ | " | " | | पू० | |
| ९ × ४ | १० | २९ | " | " | | अपू० | |
| १५५ × ४४ | ८ | ३४ | " | " | | " | |
| १४ × ७ | १० | ३१ | " | " | | पू० | |
| १२९ × ५७ | १८ | ५५ | " | " | १८३५ | " | |
| १११ × ४५ | १० | ४१ | " | " | १८३३ | "क्ष | १ वर्णकः । |
| १० × ४२ | ११ | ५५ | " | " | | " | |
| ११५ × ४६ | १६ | ४१ | " | " | १८३६ | " | |
| १२६ × ४९ | ९ | ६५ | " | " | १८५४ | " | |
| १११ × ४९ | १० | ४२ | " | " | | अपू० | २-७ वर्णकाः । |
| १०८ × ५८ | १० | ३३ | " | " | | पू० | |
| ११ × ५ | १० | ३७ | " | " | | " | |
| ११८ × ४५ | १७ | ४५ | " | " | १८३६ | " | |
| १२२ × ४५ | ११ | ५३ | " | " | | " | |
| ११६ × ५ | ११ | ४२ | " | " | | " | |
| १४ × ७ | १५ | ५५ | " | " | | " | टीका सिद्धान्तचन्द्रिकोद्धारः । |
| १२५ × ४५ | ११ | ४६ | " | " | १८३९ | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------------|---------------------------------------|-------------------|
| २७७९६ | वेदान्तसारः सटीकः | सदानन्दः, टी. का. नृसिंहः (नरहरिः) | १-२८ । |
| २७७९७ | पञ्चपादिका | | १-१९ । |
| २७७९८ | न्यायमकरन्दटीका | | १-१०३ । |
| २७७९९ | सिद्धान्तशिरोमणिशतकं सटीकम् | राघवेन्द्रसरस्वती | १-४७ । |
| २७८०० | वेदान्तचन्द्रः | आनन्दानुभवः | १९४ । (गणनया) |
| २७८०१ | पञ्चपादिकाविवरणतत्त्व- दीपनम् | अखण्डानन्दमुनिः | १-५, १-५३ । |
| २७८०२ | पञ्चीकरणवार्तिकं सटीकम् | | १-१३ । |
| २७८०३ | आत्माश्लोकः | नारायणसरस्वती | १-४८ । |
| २७८०४ | न्यायमकरन्दः | | १-९८ । |
| २७८०५ | खण्डनखण्डखाद्यटीका | शङ्करमिश्रः | १-७३ । |
| २७८०६ | वेदार्थविवेकभाष्यम् | मुकुन्दमुनिः | १-३९ । |
| २७८०७ | चित्सुखीटीका | प्रत्यक्स्वरूपः | ४७ । (गणनया) |
| २७८०८ | जीवन्मुक्तिः | विद्यातीर्थमहेश्वरः | ८-९८ । |
| २७८०९ | तत्त्वमुक्तावली | गौडपूर्णानन्दकवि चक्रवर्ती | १-८ । |
| २७८१० | अद्वैतचिन्ताकौस्तुभः | महादेवसरस्वती | ८४ । (गणनया) |
| २७८११ | पञ्चीकरणविवरणटीका | | १-१२ । |
| २७८१२ | ब्रह्मसूत्रम् | वादरायणः | १-१० । |
| २७८१३ | मन्त्रशारीरकम् | | १-५२ । |
| २७८१४ | अद्वैतदीपिकाविवरणम् | नारायणाश्रमः | १-१०, २७-६९ । |
| २७८१५ | अद्वैतशास्त्रसारोद्धारः | रङ्गोजिभट्टः | १-३१ । |
| २७८१६ | गौडपादीयमाण्डूक्यकारिका | | १-३ । |
| २७८१७ | आत्मबोधप्रकरणटीका | शङ्कराचार्यः | १-१७ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आश्रयः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|--------|----------|------------------------|------------------------------|
| १०*७ X ९*३ | १० | ९३ | दे. ना. | का. | शके १९१० | पू० | टीका सुवोधिनी । |
| १४*२ X ९*३ | ९ | ३९ | " | " | १९४३ | " | |
| ११*८ X २*९ | ७ | ६१ | " | " | १९८९ | " | |
| ११*८ X ९ | ११ | ९२ | " | " | १७६८ | अपू० | टीका सिद्धान्तदीपावली । |
| १० X ३*३ | ८ | ४७ | " | " | | " | |
| ११*३ X ४*८ | ११ | ३० | " | " | | पू०* | ८-९ वर्णकौ । |
| १४ X ९*३ | ८ | ९६ | " | " | | " | टीका आभरणाख्या । |
| ९*९ X ३*७ | ७ | ३७ | " | " | | " | |
| १० X ३*८ | ९ | ३८ | " | " | १९९४ | " | |
| १०*२ X ४*९ | ९ | ४३ | " | " | | " | |
| १०*२ X ४*२ | ८ | ३९ | " | " | | " | |
| १२*८ X ४*८ | १२ | ९१ | " | " | | अपू० | नयनमोहिनी । |
| १०*९ X ४*९ | ९ | ३० | " | " | | पू० | |
| ८*५ X ४*७ | १७ | ३९ | " | " | | " | |
| १३*८ X ७*३ | २२ | ६६ | " | " | | अपू० | तत्त्वानुसन्धानन्याख्यानम् । |
| १२*४ X ६*४ | १६ | ४६ | " | " | | पू० | तत्त्वचन्द्रिकाख्या । |
| ९ X ६*२ | १४ | २९ | " | " | | " | |
| ९*७ X ४*४ | ११ | ४८ | " | " | १८९० | " | |
| ११*१ X ४ | १३ | ७९ | मै | " | | अपू० | |
| ९*९ X ४*२ | १२ | ३६ | दे. ना. | " | | " | |
| ६*३ X ४*८ | १२ | १७ | " | " | | " | |
| ६*७ X ४*७ | ११ | २९ | " | " | १७९९ | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|------------------|-------------------|
| २७८१८ | आत्मबोधप्रकरणं सटीकम् | शङ्कराचार्यः | १-१४ । |
| २७८१९ | आत्मज्ञानोपदेशटीका | | १-२१ । |
| २७८२० | भामती | वाचस्पतिमिश्रः | १-२९४ । |
| २७८२१ | आर्यापञ्चाशीतिः | शेषः | १-३ । |
| २७८२२ | सिद्धान्ततत्त्वम् | अनन्तदेवः | २ । |
| २७८२३ | पञ्चपादिकाविवरणटीका | | १-६७ । |
| २७८२४ | आत्मबोधप्रकरणभाष्यम् | शङ्कराचार्यः | १-२२ । |
| २७८२५ | ब्रह्मसूत्रम् | व्यासः | १-२१ । |
| २७८२६ | महावाक्यार्थप्रकारः | | १-२ । |
| २७८२७ | पञ्चदशी | विद्यारण्यः | १-३, ६-३९, १-३५ । |
| २७८२८ | अनुभवामृतम् | ज्ञानेश्वरः | १-२६, १-१० । |
| २७८२९ | सङ्क्षेपशारीरकम् | सर्वज्ञात्ममुनिः | १-९० । |
| २७८३० | ब्रह्मचिन्तनम् | " | १-६ । |
| २७८३१ | ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यटीका | | ७५ । (गणनया) |
| २७८३२ | ब्रह्मसूत्रम् | व्यासः | १-१४ । |
| २७८३३ | वेदान्तार्थसङ्ग्रहश्लोकाः | | १-११ । |
| २७८३४ | व्याससूत्रवृत्तिः | रङ्गनाथः | ११-३८ । |
| २७८३५ | " | " | ४३-१५९ । |
| २७८३६ | शारीरकन्यायनिर्णयः | आनन्दज्ञानः | ६२ । (गणनया) |
| २७८३७ | शारीरकार्थसङ्क्षेपः | महादेवः | १-५ । |
| २७८३८ | तत्त्वपरिशुद्धिः | ज्ञानधनः | ६०-१४८ । |
| २७८३९ | " | " | १-२०३ । |
| २७८४० | रामरत्नाकरटीका | महामुद्गलः | २-६३ । |
| २७८४१ | प्रपञ्चमिथ्यात्वम् | आनन्दबोधार्थः | १-२३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | ः को. | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|----------|----------|------------------------|----------------------------------|
| १०*४ × ४*६ | ९ | ४२ | दे. ना. | को. | | पू० | |
| ११*१ × ३*५ | ७ | ४८ | " | " | | अपू० | |
| १२*५ × ४*६ | ११ | ४७ | " | " | | पू० | ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यव्याख्या । |
| १२*८ × ६*७ | १६ | ५२ | " | " | १८६८ | " | परमार्थसार इति नामान्तरम् । |
| ९*७ × ४*१ | १० | ४२ | " | " | | अपू० | |
| १०*९ × ४*५ | १२ | ३५ | " | " | | " | टीका भावप्रकाशिनी । |
| ७ × २*७ | ६ | २८ | " | " | | पू० | |
| ८* × ४*५ | ९ | २५ | " | " | | " | |
| ६*७ × ४*३ | १० | २४ | " | " | | " | |
| ७ × ४*५ | ७ | १९ | " | " | | अपू० | |
| ७*५ × ५*५ | ११ | २६ | " | " | | " | |
| १०*५ × ३*५ | ८ | ३८ | " | " | १६१९ | पू० | |
| ६ × ४ | ७ | १४ | " | " | | " | |
| ११*५ × ५*५ | १३ | ४५ | " | " | | अपू० | |
| १०*८ × ४*४ | ९ | ३१ | " | " | | पू० | |
| ११*७ × ३*५ | ९ | ४१ | " | " | | " | |
| ९*५ × ४ | १० | ४१ | " | " | | अपू० | |
| १० × ४*२ | ११ | ४० | " | " | | " | |
| १०*५ × ४*३ | १२ | ५१ | " | " | | " | |
| ९*५ × ४*२ | ७ | ३५ | " | " | | पू० | |
| ९*४ × ४*२ | ११ | ३७ | " | " | | अपू० | २३-४६ अध्यायाः । |
| ८*६ × ३*५ | ८ | २५ | " | " | | पू० | |
| ११*५ × ४*५ | १४ | ५७ | " | " | | अपू० | कनकाभिधा । |
| ७*२ × ३ | ७ | ३१ | " | " | १५६३ | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|---|---------------------|
| २७८४२ | प्रमाणमाला | आनन्दबोधार्च्यः | १-६, ८-२१ । |
| २७८४३ | वेदान्तकल्पतरुपरिमलः | | १-५२ । |
| २७८४४ | भेदोज्जीवनम् | व्यासतीर्थः | १-९ । |
| २७८४५ | स्वात्मनिरूपणार्था सटीका | शङ्कराचार्यः, टी. सच्चिदानन्दः | १-३३ । |
| २७८४६ | ब्रह्मसूत्रं सव्याख्यानम् | | १-२५ । |
| २७८४७ | ब्रह्मसूत्रव्याख्या | | १-३, ५-७८, ७८-१०९ । |
| २७८४८ | ब्रह्मसूत्रवृत्तिः | नारायणः | १-५४ । |
| २७८४९ | न्यायदीपावली | आनन्दबोधः | १-१२ । |
| २७८५० | पञ्चदशी सव्याख्या | विद्यारण्यमुनिः, व्या. का. रामकृष्णः | १-१८ । |
| २७८५१ | ,, | विद्यारण्यमुनिः, व्या. का. रामकृष्णः | १-३५ । |
| २७८५२ | शतश्लोकी | शङ्कराचार्यः | १-१० । |
| २७८५३ | प्रबोधसुधाकरः | सूर्यसूरिः | १-८४ । |
| २७८५४ | ब्रह्मसूत्रम् | | १-१० । |
| २७८५५ | भेदधिकारः | | १-४ । |
| २७८५६ | पञ्चीकरणवार्तिकाभरणम् | | १-१४ । |
| २७८५७ | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | शङ्कराचार्यः | १-६८ । |
| २७८५८ | पञ्चदशी सव्याख्या | विद्यारण्यमुनिः, व्या. का. रामकृष्णः | १ । |
| २७८५९ | वेदान्तकौमुदीटीका | | ११२ । (गणनया) |
| २७८६० | सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहः | अप्पयदीक्षितः | १-९२ । |
| २७८६१ | रहस्यत्रयसारः | व्यङ्कटनाथः | १-१२ । |
| २७८६२ | माण्डूक्यकारिका | गौडपादाचार्यः | १-९ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | कां का | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|-----------|----------|------------------------|-------------------------------|
| ९°१ × ३°६ | ९ | १९ | दे.ना. | का. | १६६३ | अपू० | |
| १३ × ४°८ | ११ | ४५ | " | " | | " | |
| १३°५ × ५°१ | १० | ४४ | " | " | | पू० | |
| ९°३ × ४°९ | ९ | ३६ | " | " | १८७० | " | |
| १३°६ × ७°२ | १८ | ५८ | " | " | | " | |
| १३°६ × ५°२ | ९ | ३६ | " | " | | अपू० | |
| ११°८ × ४°९ | १६ | ४२ | " | " | १८३६ | पू० | |
| ११°३ × ४°५ | १० | ४९ | " | " | १६२९ | " | प्रपञ्चमिथ्यात्वप्रकरणम् । |
| १३°१ × ६°४ | ८ | ३५ | " | " | | अपू० | पञ्चकोशविवेकप्रकरणम् । |
| १२°९ × ६°३ | ९ | ३५ | " | " | | " | प्रत्यक्तत्त्वविवेकप्रकरणम् । |
| १०°२ × ५ | ११ | ३० | " | " | श. १७४० | पू० | |
| ७°२ × ४°२ | ९ | १९ | " | " | | " | |
| १२°५ × ३°४ | ९ | ५३ | वज्र. | " | | " | |
| १३°५ × ४°१ | ८ | ६८ | " | " | | अपू० | |
| १२°६ × ४°८ | ११ | ५३ | " | " | | पू० | |
| १०°५ × ४°३ | ८ | २६ | दे.ना. | " | | अपू० | |
| १२°९ × ६°३ | ७ | ३३ | " | " | | " | |
| १०°९ × ३°४ | १० | ६० | " | " | | " | |
| १०°८ × ४°५ | ११ | ३९ | " | " | | पू० | |
| ११ × ४°९ | ७ | ३४ | " | " | | " | |
| ९°५ × ४°५ | ११ | ३१ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------------|--------------------------|---|
| २७८६३ | लघुवाक्यवृत्तिपुष्पाञ्जलिः सटीकः | | १-५ । |
| २७८६४ | तत्त्वविवेकः | | १-७१ । |
| २७८६५ | तत्त्वविवेकटीका | | १२५ । (गणनया) |
| २७८६६ | तत्त्वविवेकदीपनम् | नृसिंहाश्रमः | १-१४२, १-७८ । |
| २७८६७ | अद्वैतदीपिका | " | १-९८, १-४३, ४३-९०, १-११८, १-३५ । |
| २७८६८ | वेदान्तनयभूषणम् | स्वयंप्रकाशानन्दः | १-६१ (६१+६२) ६३-२०० । |
| २७८६९ | अद्वैतदीपिकाविवरणम् | नारायणाश्रमः | १-२७, २७-१०३, १०३-२०८ । |
| २७८७० | तत्त्वप्रदीपिका | चित्सुखाचार्यः | १३४ । (गणनया) |
| २७८७१ | पञ्चपादिकाविवरणतत्त्व- दीपनम् | अखण्डानन्दमुनिः | २७२-२७३, ३२८-३५०, ३६१-५७६ । |
| २७८७२ | पञ्चपादिकाविवरणम् | प्रकाशात्मयतिः | १-१६०, १-१२४ । |
| २७८७३ | वाक्यसुधा सटीका | शङ्करः, टी. रामतीर्थः | १-२५ । |
| २७८७४ | वालवोधिनी | | १ । |
| २७८७५ | वेदान्तपरिभाषा | धर्मराजाध्वरीन्द्रः | १ । |
| २७८७६ | आत्मबोधः सटीकः | शङ्कराचार्यः | १ । |
| २७८७७ | स्वात्मनिरूपणम् | " | १३-१४ । |
| २७८७८ | परमार्थसारः | | १ । |
| २७८७९ | पञ्चदशी | | १-६ । |
| २७८८० | भेदधिकारः | नृसिंहाश्रमः | १-१३ । |
| २७८८१ | माध्वतन्त्रमुखमर्दन- सव्याख्यम् | अप्पयदीक्षितः | १-५५ । |
| २७८८२ | शारीरकमीमांसाभाष्य- व्याख्या | अद्वैतानन्दः | १-२६, १-५०, १-२८, १-१६, १-२२, १-२५, १-९०, १-३७ । |
| २७८८३ | " | " | ३३६ । (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | सं- ज्ञा | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|-------------|----------|------------------------|--------------------------------|
| १०*६ × ४*६ | १२ | ३३ | दे.ना. | का. | | पू० | |
| ९*२ × ४ | ९ | ३२ | " | " | | " | |
| ९*१ × ४ | ९ | ३० | " | " | १७०१ | " | |
| ९*२ × ४ | १० | ३४ | " | " | | " | तत्त्वविवेकटीका । |
| ९*१ × ४ | १० | ३४ | " | " | १७८० | " | १-४ परिच्छेदाः । |
| ९*६ × ४*१ | ९ | ४३ | " | " | | " | |
| ८*६ × ३*७ | ९ | २६ | " | " | | अपू० | |
| १६*४ × ३ | ६ | ६८ | वङ्ग. | " | | " | |
| १६ × २ | ७ | १२३ | " | ता. | | " | |
| १६*८ × २ | ७ | १०० | " | " | | " | तत्त्वदीपनञ्च । |
| ९*७ × ४*४ | ९ | ३४ | दे.ना. | " | १९०३ | पू० | |
| ९*३ × ४*४ | ८ | ३० | " | " | | अपू० | |
| ७*९ × ३.९ | ८ | २९ | " | " | | " | |
| ९*३ × ४*२ | १३ | ३३ | " | " | | " | दीपिकाटीका । |
| १०*४ × ४*६ | ११ | ३९ | " | " | | " | |
| १०*५ × ४*५ | १० | ३२ | " | " | | " | |
| ११*३ × ४*८ | ११ | ३५ | " | का. | | " | तृप्तिदीपप्रकरणम् । |
| ९*४ × ४*१ | १३ | ४४ | " | " | | पू० | |
| ११ × ३*९ | १० | ४९ | " | " | | " | व्याख्या मध्वमतविध्वंसनाख्या । |
| १०*६ × ४*६ | ११ | ३६ | " | " | | " | द्वितीयतृतीयाध्याययोः । |
| १०*८ × ४*१ | १२ | ३५ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------------------|---------------------------------------|-------------------|
| २७८८४ | पञ्चदशी सटीका | भारतीतीर्थः, टी. रामकृष्णः | १-१२ । |
| २७८८५ | ” | ” | १-५, ७-१० । |
| २७८८६ | वेदान्तसारः | सदानन्दः | ७ । (गणनया) |
| २७८८७ | पञ्चदशी सटीका | भारतीतीर्थः, टी. रामकृष्णः | १-८ । |
| २७८८८ | भेदधिकारसत्क्रिया | नारायणाश्रमः | १-५२ । |
| २७८८९ | अपरोक्षानुभूतिः सटीका | शङ्कराचार्यः | १-३६ । |
| २७८९० | विवेकचूडामणिः | | १८ । (गणनया) |
| २७८९१ | वाक्यवृत्तिः | | १-४ । |
| २७८९२ | नैष्कर्म्यसिद्धिः | | १ । |
| २७८९३ | वैयासिकन्यायमाला | भारतीतीर्थमुनिः | १-६९ । |
| २७८९४ | शारीरकमीमांसाभाष्यं सटीकम् | शङ्कराचार्यः, टी. आनन्दज्ञानः | १७-२५ । |
| २७८९५ | पञ्चीकरणमहावाक्यार्थ- विवरणम् | | ३ । (गणनया) |
| २७८९६ | आत्मस्वरूपनिरूपणम् | | ” |
| २७८९७ | स्थूलजगदुत्पत्तिप्रदर्शक- चित्रम् | | १ । |
| २७८९८ | अद्वैतमकरन्दः सटीकः | लक्ष्मीधरकविः, टी. स्वयंप्रकाशयतिः | २-२५, १-१५ । |
| २७८९९ | वेदान्तोपदेशः | | ५-१० । |
| २८९०० | पञ्चप्रकरणी | शङ्कराचार्यः | १-१८ । |
| २७९०१ | तत्त्वमस्युपदेशविधिः | | १-२ । |
| २७९०२ | पञ्चीकरणम् | | १-४ । |
| २७९०३ | नैष्कर्म्यसिद्धिः | सुरेश्वराचार्यः | १-५२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आ- का- रः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|-----------------|----------|------------------------|---|
| १२*१ × ४*७ | १३ | ३९ | दे. ना. | का. | | पू० | पञ्चभूतविवेकप्रकरणम् । दीपिकानाम्नी टीका । |
| १२*३ × ४*६ | १४ | ४२ | " | " | | अपू० | तृप्तिदीपप्रकरणम् । दीपिकानाम्नी- टीका । |
| ९ × ४*१ | १० | ३४ | " | " | श. १७०१ | " | |
| १२*१ × ४*६ | १४ | ४१ | " | " | | पू० | पञ्चकोशविवेकप्रकरणम् । |
| ९*४ × ४*१ | १४ | ४६ | " | " | १७९४ | " | भेदधिकारटीका । |
| ९*३ × ३*९ | ८ | २९ | " | " | | " | दीपिकानाम्नी टीका । |
| १३*७ × ६*३ | १३ | ४५ | " | " | | अपू० | |
| ९*६ × ३*७ | १० | ४४ | " | " | | पू० | |
| ८*५ × ४*५ | १४ | ३१ | " | " | | अपू० | |
| १०*६ × ४*७ | १३ | ३० | " | " | १७९१ | पू० | |
| १२*९ × ६*७ | १७ | ६० | " | " | | अपू० | टीका न्यायनिर्णयाख्या । चतुर्था- ध्यायः । |
| १३*४ × ३*६ | ९ | ५३ | वङ्ग. | " | १७८५ | पू०* | |
| १२*९ × ३*२ | १२ | ५८ | " | " | | अपू० | |
| १४*३ × ६ | १९ | ४९ | " | " | | पू० | |
| ९ × ५*५ | ९ | ३२ | दे. ना. | " | | " | सटीकप्रबोधसुधाकरश्च३। |
| ८*३ × ४*७ | ११ | २५ | " | " | १८७६ | " | |
| ८*२ × ४*५ | ११ | ३१ | " | " | | " | |
| ८*७ × ४*३ | ११ | २३ | " | " | | " | |
| ६*६ × ४ | ८ | २४ | " | " | | अपू० | |
| १२*४ × ६*४ | १२ | ३१ | " | " | | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------------|----------------------------------|-------------------|
| २७९०४ | नैष्कर्म्यसिद्धिटीका | ज्ञानोत्तममिश्रः | १-६१। |
| २७९०५ | अनुभूतिप्रकाशः | विद्यारण्यः | १-१३७। |
| २७९०६ | स्वप्रकाशात्मविवेकः सठ्याख्यः | | १-५। |
| २७९०७ | आत्मज्ञानोपदेशप्रकरणं, सटीकम् | शङ्कराचार्यः, टी. आनन्दज्ञानः | १-२५। |
| २७९०८ | पञ्चीकरणम् | | १-९। |
| २७९०९ | पञ्चीकरणवार्तिकम् | सुरेश्वराचार्यः | ११। (गणनया) |
| २७९१० | तत्त्वमसीतिमहावाक्य- व्याख्या | | १-७। |
| २७९११ | अपरोक्षानुभूतिः | | १-३२। |
| २७९१२ | शारीरकमीमांसाभाष्य- तात्पर्यम् | | १-३। |
| २७९१३ | बोधसारः | नित्यमुक्तनरहरिः | १-१३५। |
| २७९१४ | पञ्चीकरणवार्तिकम् | सुरेश्वरः | १-७। |
| २७९१५ | अपरोक्षानुभूतिः सदीपिका | शङ्कराचार्यः, टी. विद्यारण्यः | १-४२। |
| २७९१६ | ब्रह्मामृतवर्षिणी | | १-८०। |
| २७९१७ | वाक्यवृत्तिप्रकाशिका | विश्वेश्वरपण्डितः | ७-३५। |
| २७९१८ | वेदान्तपरिभाषा | धर्मराजदीक्षितः | १-२२। |
| २७९१९ | पञ्चीकरणवार्तिकम् | सुरेश्वराचार्यः | १-३। |
| २७९२० | अद्वैतसिद्धिः | मधुसूदनसरस्वती | ७०। (गणनया) |
| २७९२१ | आत्मज्ञानम् | आदित्यनाथः | १-१३। |
| २७९२२ | वेदान्तपरिभाषार्थदीपिका | शिवदत्तः | १-६५, ६५-८१। |
| २७९२३ | वेदान्तसूत्रमुक्तावली | ब्रह्मानन्दसरस्वती | १-१०७। |
| २७९२४ | वैयासिकन्यायमाला | | १-१२। |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषनिवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|-------------------------------------|
| १२*७ × ६*५ | १९ | ४४ | दे. ना. | का. | | पू० | टीका चन्द्रिकाख्या । |
| ११*६ × ९*४ | १० | ३५ | " | " | | " | १-२० अध्यायाः । |
| ८*५ × ४*७ | ९ | २४ | " | " | | " | महावाक्यविवेक इति नामान्तरम् । |
| १२*५ × ६*२ | १२ | ३४ | " | " | | " | |
| ६ × ४*२ | ९ | १८ | " | " | | " | |
| ५*६ × ४*१ | ८ | १४ | " | " | | " | |
| ६*१ × ३*९ | ७ | ८ | " | " | | " | षोडशमहावाक्यं पञ्चीकरणञ्च । |
| ९*७ × ४*५ | ९ | ३२ | " | " | | " | |
| ७*३ × ४*५ | ८ | २० | " | " | | " | |
| ८*२ × ३*९ | ९ | २५ | " | " | | " | |
| ९*५ × ४*२ | ९ | २४ | " | " | १८०२ | " | |
| ९*१ × ३*६ | ७ | २९ | " | " | | " | |
| १०*७ × ४*६ | ८ | ३७ | " | " | | " | ब्रह्मसूत्रवृत्तिः । तृतीयाध्यायः । |
| १०*४ × ४*४ | ११ | ४७ | " | " | | अपू० | |
| १३*४ × ५*२ | ११ | ५३ | " | " | | पू० | |
| ९*५ × ४*१ | १३ | ४४ | " | " | | " | |
| ८*५ × ३*९ | ९ | ३३ | " | " | | अपू० | |
| ५*६ × ३*६ | ९ | २१ | " | " | | पू० | |
| १० × ५*१ | ११ | ३१ | " | " | | " | |
| ११*२ × ५ | १२ | ४४ | " | " | | " | |
| १० × ४*९ | १० | ४० | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---|-----------------------------------|---------------------------|
| २७९२५ | ब्रह्ममीमांसाभाष्यम् | श्रीकण्ठः | १-४२ । |
| २७९२६ | पञ्चदशीटीका | | १८५ । (गणनया) |
| २७९२७ | वाक्यसुधा | शङ्कराचार्यः | १-४ । |
| २७९२८ | पञ्चदशी सटीका | विद्यारण्यमुनिः, टी. रामकृष्णः | १११-११४, ११४-१२९ । |
| २७९२९ | वेदान्तसारः | | ४ । (गणनया) |
| २७९३० | वेदान्तसिद्धान्तसूक्ति- मञ्जरीसटीका | गङ्गाधरसरस्वती टी. " | २-१९ । |
| २७९३१ | उपदेशसाहस्री | | १-२ । |
| २७९३२ | ब्रह्मोपदेशः | | १-२ । |
| २७९३३ | ब्रह्मचिन्तनम् | शङ्कराचार्यः | १-२ । |
| २७९३४ | चिवेकचूडामणिः | " | १-३०, ३०-४८ । |
| २७९३५ | वेदान्तकल्पतरुः | अमलानन्दः | १-७८, १-१०१, १-२३, १-३७ । |
| २७९३६ | ब्रह्मसूत्रभाष्यव्याख्या | गोविन्दानन्दः | १-१०३, १-६८, १-५९, १२० । |
| २७९३७ | चण्डमारुतम् | | ४३ । (गणनया) |
| २७९३८ | सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहः | अप्पयदीक्षितः | १-७१ । |
| २७९३९ | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | शङ्कराचार्यः | १८४ । (गणनया) |
| २७९४० | वेदान्तसारः सटिप्पणः | सदानन्दः टि. नृसिंहरसरस्वती | १-६ । |
| २७९४१ | सिद्धान्तशतकम् | गणेशानन्दः | १-१७ । |
| २७९४२ | तत्त्वबिन्दुः | वाचस्पतिः | १-२५ । |
| २७९४३ | वेदान्तसिद्धान्तसूक्ति- मञ्जरी सटीका | गङ्गाधरसरस्वती | १-४१ । |
| २७९४४ | पञ्चीकरणवार्त्तिकं सटीकम् | शङ्कराचार्यः | १-३७ । |
| २७९४५ | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | | १-१२३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|----------------------------------|
| १० × ४'५ | १२ | २९ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| १०'८ × ३'९ | १० | ४१ | " | " | | " | |
| ८'६ × ४'७ | १२ | २८ | " | " | | पू० | |
| ९'९ × ४'९ | ११ | ४८ | " | " | | " | ध्यानदीपप्रकरणम् । |
| १२'२ × ४'९ | २४ | १९ | " | " | | अपू० | |
| १० × ४'३ | १३ | ४९ | " | " | | " | |
| ८ × ४'९ | १२ | २५ | " | " | | पू० | दृशिस्वरूपपरमार्थदर्शनप्रकरणम् । |
| ७'३ × ४'९ | ११ | २२ | " | " | | " | दक्षिणामूर्तिस्तोत्रसहितः । |
| ६'७ × ४ | १० | २५ | " | " | | " | |
| ९'७ × ५'१ | १० | २८ | " | " | | " | |
| ११ × ३'८ | १० | ४८ | " | " | | " | २-१ अध्यायाः । भामतीटीका । |
| ९'८ × ४'२ | १५ | ३७ | " | " | | " | रत्नप्रभा । १-४ अध्यायाः । |
| ११ × ४'७ | १० | ४३ | " | " | | अपू० | |
| १२'२ × ५'९ | १५ | ४२ | " | " | | पू० | |
| १०'६ × ५ | ८ | १६ | " | " | | अपू० | |
| ९'१ × ४ | १४ | ३९ | " | " | | पू० | |
| ६'८ × ८'३ | १४ | २० | " | " | १९५५ | " | |
| ६'५ × ९'९ | १९ | २१ | " | " | | अपू० | |
| ८'५ × १०'५ | १५ | ३३ | " | " | | पू० | |
| ७'१ × ९ | २३ | १३ | " | " | | " | टीका आभरणाख्या । |
| १२'९ × ८ | १५ | ४२ | " | " | १९५८ | " | चतुर्थाध्यायः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------------|---------------------|---|
| २७९४६ | पञ्चीकरणम् | शङ्कराचार्यः | १-४६ । |
| २७९४७ | पञ्चीकरणवार्त्तिकं सटीकम् | | १-६६ । |
| २७९४८ | पञ्चीकरणवार्त्तिकार्थ- प्रकाशिका | | १-९४ । |
| २७९४९ | पञ्चीकरणवार्त्तिकं सटीकम् | | ४४ । (गणनया) |
| २७९५० | बालबोधिनी | शङ्कराचार्यः | १-६ । |
| २७९५१ | पञ्चीकरणवार्त्तिकंसटीकम् | | ३९ । (गणनया) |
| २७९५२ | महावाक्यार्थः | | १-३ । |
| २७९५३ | " | | १-३ । |
| २७९५४ | " | | १-६ । |
| २७९५५ | पञ्चदशी सव्याख्या | भारतीतीर्थः | ५-१७ । |
| २७९५६ | प्रमाणमाला | आनन्दबोधयतिः | १-२१ । |
| २७९५७ | पञ्चदशीव्याख्या | रामकृष्णः | १२५-१६८ । |
| २७९५८ | सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहः | | ६-१८ । |
| २७९५९ | अद्वैतसिद्धिः | मधुसूदनसरस्वती | ४-७१, ७१-१२६, १५८-१५९, १६८-१७०, १८१, १८१-२८४ । |
| २७९६० | पञ्चीकरणम् | सुरेश्वराचार्यः | १-२ । |
| २७९६१ | तत्त्वमसितत्त्वनिरूपणम् | | १-२ । |
| २७९६२ | तत्त्वबोधः | वासुदेवेन्द्रशिष्यः | १-४ । |
| २७९६३ | अनुभूतिप्रकाशः | विद्यारण्यः | २-९ । |
| २७९६४ | " | " | १-४ । |
| २७९६५ | " | " | १-८ । |
| २७९६६ | ब्रह्मानुचिन्तनम् | | २ । (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|-------------------------|---|
| ९°६ × ११°९ | १५ | २१ | दे.ना. | का. | | पू० | पञ्चीकरणवार्त्तिकपाठः पञ्चीकरण- वार्त्तिकं, प्रातःस्मरणादिसंग्रहः ब्रह्मचिन्तनिका च । |
| ९°६ × ११°८ | २० | २० | " | " | | " | |
| ६°५ × ८ | १८ | १६ | " | " | | " | |
| ६°५ × ६°४ | १५ | २४ | " | " | १९४९ | " | टीका आभरणाख्या । ब्रह्मचिन्तनिका सदाचारप्रकरणञ्च । |
| ९°७ × ४°७ | ९ | ३५ | " | " | | " | |
| ६°५ × ८ | १८ | २९ | " | " | | अपू० | |
| ६°६ × ३°९ | १३ | २९ | " | " | | पू० | |
| ६°६ × ३°९ | ९ | १९ | " | " | | " | |
| ७ × ४°४ | ५ | १६ | " | " | | " | |
| १२°१ × ४°५ | १२ | ४३ | " | " | | अपू० | |
| ११°५ × ५°५ | १० | ४३ | " | " | | पू० | |
| ११ × ४°६ | १५ | ४५ | " | " | | अपू० | |
| ९°६ × ४°५ | १२ | ५१ | " | " | | " | |
| १०°९ × ४°८ | १२ | ४७ | " | " | | " | |
| ५°५ × ४°३ | ९ | १५ | " | " | | पू० | |
| ८°६ × ४°८ | १२ | ०५ | " | " | | " | |
| ९°५ × ४°१ | ११ | ४० | " | " | १८५६ | " | |
| ८°७ × ४°५ | ११ | २९ | " | " | | अपू० | |
| ८°७ × ५°१ | १३ | २८ | " | " | | पू० | |
| ७°२ × ४°५ | १० | २२ | " | " | | " | |
| ८°४ × ४°६ | १२ | २२ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|--------------------|---|
| २७९६७ | वाक्यसुधा सटीका | निरञ्जनमाधवः | १-१५ । |
| २७९६८ | वेदान्तसारः सटीकः | नृसिंहसरस्वती | १-५४ । |
| २७९६९ | तत्त्वशुद्धिः | ज्ञानधनः | ६-१०३ । |
| २७९७० | तत्त्वानुसन्धानम् | महादेवसरस्वती | १-३३ । |
| २७९७१ | अद्वैतसिद्धान्तविद्योतनम् | ब्रह्मानन्दसरस्वती | १-१२ । |
| २७९७२ | आत्मज्ञानटीका | | १-२३ । |
| २७९७३ | महावाक्यविवरणम् | | १-२ । |
| २७९७४ | ब्रह्मसूत्रम् | | १-२ । |
| २७९७५ | पञ्चपादिकाविवरणम् | | १-२८ । |
| २७९७६ | ब्रह्मसूत्रव्याख्या | रामानुजः | १-४४ । |
| २७९७७ | अद्वैतसुधा | नारायणसरस्वती | १-३० । |
| २७९७८ | पञ्चपादिकाविधरणम् | | १-७९, ८१ । |
| २७९७९ | „ | प्रकाशात्मयतिः | ८७-२३० । |
| २७९८० | वेदान्तस्यमन्तकम् | राधादामोदरः | १-३३ । |
| २७९८१ | वेदान्तपारिजातसौरभटीका | निम्बार्कशिष्यः | १-११ । |
| २७९८२ | सर्वतन्त्रशिरोमणिः | रामाचार्यः | १-८ । |
| २७९८३ | वेदान्तदीपः | रामानुजः | १-७५ । |
| २७९८४ | ब्रह्मविद्यारहस्यव्याख्या | | १-३७ । |
| २७९८५ | स्वाराज्यसिद्धिव्याख्या | गङ्गाधरसरस्वती | १-६२, (६२ = ६३-६४) ६५-८८, १-१०७, १०७-२०२, १-१३० । |
| २७९८६ | खण्डनखण्डखाद्यटीका | आनन्दपूर्णः | १-२९, ३२-१३६, १३८-१६३, १६३-२००, (२००-११) २०१-२६८, १-२१, १-५, ९८ । ४०१ (गणनया) । |
| २७९८७ | तत्त्वसंख्यानव्याख्यानम् | | १-२ । |
| २७९८८ | अपरोक्षानुभवः | शङ्कराचार्यः | ३-२६ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|-------|------------|-------------------------|------------------------------------|
| ८°७ × ९°१ | १२ | ३० | दे.ना. | का. | श. १७३६ | पू० | |
| १०°५ × ४°१ | १० | ४७ | " | " | | " | सुबोधिनी टीका । |
| ११°८ × ९°३ | १० | ३५ | " | " | | अपू० | |
| ८°८ × ४°९ | ११ | २८ | " | " | " १७३५ | पू० | |
| १३°८ × ९°७ | १७ | ५४ | " | " | | " | प्रथमपरिच्छेदः । |
| १०°३ × ४ | ११ | ५७ | " | " | | अपू० | |
| ९°१ × ५ | १२ | २९ | " | " | | पू० | |
| ९°७ × ४°३ | १० | ३८ | " | " | | अपू० | |
| ११°१ × ४ | ८ | ३७ | " | " | | " | |
| ११°७ × ९°६ | १४ | ४३ | " | " | सं. १९८(?) | पू० | वेदान्तसार इति नामान्तरम् । |
| ९°९ × ४°२ | ९ | ३० | " | " | | " | |
| १०°४ × ४°४ | १० | ५४ | " | " | | अपू० | |
| ११°८ × ४°८ | १० | ४६ | " | " | | " | |
| १२°२ × ९°२ | ९ | २८ | " | " | १९२२ | पू० | पष्टकिरणान्तम् । |
| ११°९ × ९°९ | १० | ३९ | " | " | | अपू० | |
| ११°२ × ९°३ | १३ | ४४ | " | " | | पू० | सर्वदर्शनशिखामणिः । |
| १२°८ × ९°१ | १४ | ५० | " | " | | " | |
| ९°४ × ९°४ | १० | २६ | " | " | | " | मन्त्रार्थरहस्यटीकेति नामान्तरम् । |
| ९°३ × ४°४ | ८ | ३६ | " | " | १८९१ | अपू० | |
| १३°५ × ९°५ | ३३ | ४२ | " | " | १९५९ | " | टीका विद्यासागरी । |
| ९°८ × ३°९ | ६ | ३१ | " | " | | " | |
| ६°१ × ४ | ७ | ११ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|--|-------------------|
| २७९८९ | पञ्चदशी | विद्यारण्यः | १-१३७ । |
| २७९९० | पञ्चीकरणवार्त्तिकम् | सुरेश्वराचार्यः | ४-१३ । |
| २७९९१ | महावाक्यविवरणम् | शङ्कराचार्यः | २-८ । |
| २७९९२ | पञ्चप्रकरणी | | १-३, ६-२० । |
| २७९९३ | आत्मबोधः सटीकः | | १-९ । |
| २७९९४ | पञ्चदशी सटीका | टी.का. रामकृष्णः | १-९ । |
| २७९९५ | पञ्चप्रकरणी | | १-३० । |
| २७९९६ | ब्रह्मासूत्रवर्षिणी | | २१६ । (गणनया) |
| २७९९७ | ब्रह्मसूत्रभाष्यप्रकाशः | पुरुषोत्तमः | १-५८० । |
| २७९९८ | श्रुतिसारसमुद्धरणं सटीकम् | तोटक्याचार्यः, टी. सच्चिदानन्द- योगीन्द्रः | १-३२ । |
| २७९९९ | वेदान्तसारटीका | नृसिंहसरस्वती | १-४९ । |
| २८००० | सिद्धान्तलेशसारसङ्ग्रहः | अप्पयदीक्षितः | १-३८ । |
| २८००१ | वेदान्तसारः | सदानन्दः | १-१९ । |
| २८००२ | महावाक्यविवरणम् | | १-८ । |
| २८००३ | वेदान्तपरिभाषाटीका | रामकृष्णाध्वरिः धर्मराजाध्वरीन्द्र- पुत्रः | १-६१ । |
| २८००४ | पञ्चदशी सटीका | विद्यारण्यस्वामी, टी.का. रामकृष्णः | ३९० । (गणनया) |
| २८००५ | पञ्चदशीव्याख्या | रामकृष्णः | १-३७ । |
| २८००६ | काथबोधविवेकः सटीकः | सन्तोषानन्दः, टी. का. साजनिः | १-१७ । |
| २८००७ | वेदान्तसारसङ्ग्रहः | | ४१ । (गणनया) |
| २८००८ | वेदान्तसारः सटीकः | सदानन्दः, टी.का. नृसिंहसरस्वती | १-४२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचार्यः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|---------|----------|------------------------|-----------------------------------|
| ८'२ × ४'६ | ९ | २६ | दे.ना. | का. | श. १७०२ | पू० | |
| ४'९ × ३'२ | ७ | १५ | " | " | | अपू० | |
| ६'३ × ३'७ | ८ | १५ | " | " | | " | |
| १२'२ × ६'२ | ९ | ३४ | " | " | १८५७ | " | |
| १२'७ × ४'७ | ११ | ४३ | " | " | | पू० | |
| ९'६ × ४'२ | ११ | ३३ | " | " | | अपू० | |
| ६'४ × ६'१ | ९ | २३ | " | " | | पू० | |
| १३'९ × ६'४ | १० | ३४ | " | " | | अपू० | ब्रह्मसूत्रवृत्तिः १-३ अध्यायाः । |
| १४'६ × ७'८ | १३ | ४९ | " | " | | " | अणुभाष्यप्रकाश इत्यपरं नाम । |
| १२'२ × ६'४ | १५ | ४० | " | " | १९०५ | " | तत्त्वदीपिकाख्या टीका । |
| ८'२ × ६'१ | १४ | ३४ | " | " | | " | |
| १०'६ × ४'७ | १० | ४० | " | " | | " | |
| १३ × ५ | ७ | ३९ | " | " | | " | |
| ९'४ × ४'२ | ९ | ३३ | " | " | | पू० | |
| १२'६ × ४'८ | १६ | ४२ | " | " | | " | |
| १२ × ६'८ | ९ | ३३ | " | " | | " | |
| १०'७ × ४'६ | १४ | ३७ | " | " | | अपू० | |
| ७'४ × ३'७ | १२ | ३३ | " | " | | पू० | |
| ६'५ × ६'५ | १७ | १९ | " | " | | " | |
| १२'४ × ६'२ | १२ | ४० | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------|---|---------------------------------|
| २८००९ | वचनभूषणं सटीकम् | | १-३४६ । |
| २८०१० | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | शङ्कराचार्यः | १५७ । (गणनया) |
| २८०११ | सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहः | अप्पयदीक्षितः | ६० । (गणनया) |
| २८०१२ | द्वादशमहावाक्यानि | | २७-२८ । |
| २८०१३ | शतश्लोकीव्याख्या | | ४७-४९ । |
| २८०१४ | आर्या सटीका | | १-३ । |
| २८०१५ | पञ्चीकरणम् | | ७-९ । |
| २८०१६ | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | | १-१० । |
| २८०१७ | शारीरककारिकाभाष्य- वार्तिकम् | दिव्यसिंहमिश्रः विज्ञानाचार्यशिष्यः | १-३४ । |
| २८०१८ | वेदान्तसारः | | १-६ । |
| २८२१९ | " | | १-३ । |
| २८०२० | पञ्चीकरणं सवार्तिकम् | शङ्कराचार्यः | १-८ । |
| २८०२१ | खण्डनखण्डखाद्यटीका | चित्सुखाचार्यः | १-६९८ । |
| २८०२२ | तत्त्वप्रकाशिकाभावबोधः | रघूत्तमयतिः | १-१८४, १०९-१३७, २७६, २९०-३१० । |
| २८०२३ | ब्रह्मसूत्रं सभाष्यम् | भा. का. महाराजा- धिराजः विश्वनाथ- सिंहः | १-७७, १-२८, ३०-५१, १-५१, १-२६ । |
| २८०२४ | पञ्चदशीव्याख्या | रामकृष्णः | १-५ । |
| २८०२५ | वाक्यसुधा | शङ्कराचार्यः | १-४ । |
| २८०२६ | वेदान्तकल्पतरुपरिमलः | अप्पयदीक्षितः | १-१३२ । |
| २८०२७ | महावाक्यार्थविवरणम् | | १-२० । |
| २८०२८ | पञ्चीकरणविवरणम् | आनन्दज्ञानः | १-१२ । |
| २८०२९ | आत्मबोधप्रकरणं सटीकम् | शङ्कराचार्यः | १-१२ । |
| २८०३० | वेदान्तसारः | सदानन्दः | १-१७ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|-----------------------------------|
| १७ × ८५ | १७ | ५४ | दे.ना. | का. | | पू० | |
| १०८ × ३८ | ७ | ४५ | " | " | | अपू० | |
| ११५ × ४३ | १५ | ४८ | " | " | | " | |
| १०३ × ४६ | १२ | ३० | " | " | | " | |
| १२३ × ५७ | १३ | ३९ | " | " | | " | |
| १२७ × ६५ | १२ | ३३ | " | " | | " | |
| ९७ × ३१ | ६ | ४४ | वङ्ग | " | | " | महावाक्यार्थश्च । |
| १३२ × ३५ | १२ | ७४ | " | " | | " | |
| १११ × २३ | ५ | ४९ | " | " | | " | प्रथमपादः पूर्णः । |
| | | | " | " | | " | |
| १४५ × २७ | ७ | ५५ | " | " | | " | |
| ९८ × ३ | ६ | ३६ | " | " | | " | |
| ८८ × ३१ | ८ | ३५ | " | " | | पू० | |
| ८७ × ६९ | १४ | १९ | " | " | | अपू० | भावदीपिकाख्या । |
| ९१ × ४४ | १२ | ३१ | " | " | | " | ब्रह्मसूत्रभाष्यव्याख्यानात्मकः । |
| १३ × ४९ | १२ | ४० | दे.ना. | " | १९०० | " | राधावल्लभीयम् । |
| | | | " | " | | " | |
| ९७ × ५१ | ११ | २७ | " | " | | " | |
| ९९ × ५२ | ९ | ३१ | " | " | | पू० | |
| ९६ × ३६ | ८ | ४४ | " | " | | अपू० | वेदान्तकल्पतरुटीका । |
| ९५ × ४२ | १४ | ३८ | " | " | श. १७०८ | पू० | |
| १० × ४४ | ८ | ३० | " | " | | " | |
| १०५ × ४७ | १० | ३७ | " | " | | " | |
| १०१ × ४४ | ८ | ३० | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------------|---------------------------|----------------------------|
| २८०३१ | वेदान्तसारः | सदानन्दः | १-३० । |
| २८०३२ | वेदान्तकल्पतरुपरिमलः | अप्पयदीक्षितः | १-१०९, १-८७, १-५१, १-१२६ । |
| २८०३३ | वेदान्तसारटीका | रामतीर्थयतिः | २-३० । |
| २८०३४ | भामती | वाचस्पतिमिश्रः | ९ । (गणनया) |
| २८०३५ | वेदान्तसारटीका | | १-१७ । |
| २८०३६ | आत्मानात्मविवेकः | शङ्कराचार्यः | १-८ । |
| २८०३७ | पञ्चीकरणम् | | १-२ । |
| २८०३८ | अद्वैतमकरन्दटीका | गौडाचार्य- सार्वभौमः | ११ । (गणनया) |
| २८०३९ | पञ्चपादिकाविवरणम् | प्रकाशात्मयतिः | १-११ । |
| २८०४० | पञ्चदशी | | १-२ । |
| २८०४१ | वेदान्तरत्नम् | | १-६ । |
| २८०४२ | पञ्चदशी | | १-३ । |
| २८०४३ | ज्ञानावलिः | रामानन्दतीर्थः | १-५ । |
| २८०४४ | पञ्चदशीटीका | रामकृष्णाध्वरिः | १-६०, १०१-१११ । |
| २८०४५ | „ | | १-२८ । |
| २८०४६ | पञ्चपादिकाविवरणतत्त्व- दीपनम् | | १-२५ । |
| २८०४७ | „ | अखण्डमुनिः | १७-१८० । |
| २८०४८ | प्रबोधसुधाकरः | शङ्कराचार्यः | १-११ । |
| २८०४९ | आत्मबोधप्रकरणं सटीकम् | टी. का. शङ्करा- चार्यः | १-२८ । |
| २८०५० | तत्त्वबोधप्रकरणम् | शङ्कराचार्यः | १-५ |
| २८०५१ | तत्त्वविवेकटीका | नृसिंहाश्रमः | १-१९, =(१९-२०,) २१-१३२ । |
| २८०५२ | अद्वैतरत्नकोशटीका | „ | १-४८, ४८-२८५ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | वाच्यः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|--------|----------|-------------------------|---|
| ९२ × ४५ | १२ | २४ | दे.ना. | का. | | " | |
| १२६ × ५९ | १४ | ४२ | " | " | | " | वेदान्तकल्पतरुटीका । |
| १३१ × ५ | ११ | ६६ | वज्र | " | श. १७२८ | अपू० | विद्वन्मनोरञ्जनी शाङ्करशिवाष्टक- मपि । |
| १३ × ४२ | ७ | ७० | " | " | | " | |
| १२७ × ४ | १० | ४२ | " | " | | " | |
| १४२ × ३६ | ८ | ४८ | " | " | | पू० | |
| ९५ × ३१ | ५ | ३१ | " | " | | " | |
| १३६ × ४८ | १२ | ६० | " | " | श. १६७८ | अपू० | |
| १७१ × ५ | १० | ६८ | " | " | | " | |
| १३४ × ३२ | ७ | ५० | " | " | | " | |
| ९५ × ५३ | १० | २७ | दे.ना. | " | | " | |
| १३५ × ३३ | ११ | ६४ | " | " | | " | |
| ११८ × २९ | ६ | ४३ | " | " | | पू० | |
| १४१ × ३४ | ११ | ६३ | " | " | | अपू० | |
| १४६ × ३५ | ११ | ६६ | " | " | | " | |
| १५२ × ३ | ८ | ७५ | " | " | | " | |
| १५३ × ३ | ७ | ८० | " | " | | " | |
| ९२ × ६ | १६ | ३५ | " | " | | पू० | |
| ८४ × ४७ | ९ | २५ | " | " | | " | |
| ६७ × ४१ | ११ | २० | " | " | | " | |
| ११५ × ४९ | १० | ४० | " | " | | " | |
| ११४ × ५ | १० | ३७ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|---------------------------------------|---|
| २८०६३ | वेदान्तकल्पतरुः | अमलानन्दः | १-७६, १-६४, १-६७, १-६४, - (६४+६६) ६६-१०४, १-२९ = ३१८ । |
| २८०६४ | वेदान्तसारटीका | रामतीर्थः | १-८० । |
| २८०६५ | पञ्चीकरणप्रकाशः | | २ । (गणनया) |
| २८०६६ | दृग्दृश्यविवेकप्रकरणम् | | १-२८ । |
| २८०६७ | सङ्क्षेपशारीरकम् | सर्वज्ञात्मभट्टारक- महामुनिः | १-१०५ । |
| २८०६८ | बालबोधिनी | | १-३६ । |
| २८०६९ | आत्मबोधः | शङ्कराचार्यः | १-७ । |
| २८०७० | विद्वदनुभवः | शङ्करानन्दः | १-४० । |
| २८०७१ | वेदान्तपरिभाषा | धर्मराजदीक्षितः | १-२४ । |
| २८०७२ | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | शङ्कराचार्यः | ३०-३९ । |
| २८०७३ | जीवन्मुक्तिविवेकः | | १-८४ । |
| २८०७४ | बालबोधिनी | | १-५ । |
| २८०७५ | आत्मबोधः सटीकः | टी. का. आनन्द- गिरिः | ३-१८ । |
| २८०७६ | वेदान्तडिण्डिमः | परमशिवेन्द्र- सरस्वती | १-५ । |
| २८०७७ | लघुवाक्यवृत्तिः | | १ । |
| २८०७८ | आत्मबोधः सटीकः | | १-१६ । |
| २८०७९ | अनुभूतिप्रकाशः | विद्यारण्यः | १-११० । |
| २८०८० | प्रबोधसुधाकरः | शङ्कराचार्यः | १-१११ । |
| २८०८१ | तत्त्वबोधः | | १-४ । |
| २८०८२ | अद्वैतदीपिका सटीका | नृसिंहाश्रमः, टी. का. नारायणाश्रमः | १-११०, १-१२९, १-१५४, १-४५ । |
| २८०८३ | स्वात्मानन्दप्रकाशिका | शङ्कराचार्यः | १-४ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आध्याः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|--------|-----------------|------------------------|-------------------------|
| १२७ x ४९ | १२ | ०५ | दे. ना. | का. | | " | |
| ८५ x ४ | ९ | ३७ | " | " | | " | |
| ७७ x ३५ | ८ | २९ | " | " | | "* | |
| १०६ x ४५ | ८ | ३२ | " | " | | " | |
| ९५ x ३७ | ९ | ३६ | " | " | १८१५ श. १६९० | " | |
| ७ x ३२ | ६ | २८ | " | " | | अपू० | |
| ८४ x ३७ | १० | २३ | " | " | | पू० | |
| ७२ x ४४ | ७ | १४ | " | " | | " | |
| १०८ x ४५ | १० | ४५ | " | " | | " | |
| १०९ x ४७ | १२ | ४८ | " | " | | अपू० | |
| १२२ x ५८ | १० | २७ | " | " | | पू० | |
| ९५ x ३८ | १० | ३९ | " | " | | " | |
| ९८ x ४३ | १० | २९ | " | " | | अपू० | |
| ८६ x ५ | १३ | २४ | " | " | | पू० | |
| ८३ x ३८ | ११ | २४ | " | " | | " | |
| ७१ x ४७ | १३ | २० | " | " | १८३१ | " | |
| १०१ x ४३ | १० | ३३ | " | " | १८३५ | " | १-२० अध्यायाः । |
| ८३ x ४७ | १२ | २५ | " | " | | अपू० | |
| ९६ x ४ | ९ | २८ | " | " | | पू० | |
| १३९ x ७३ | १४ | ४४ | " | " | | पू० | दीपिकाविवरणाख्या टीका । |
| ९६ x ४६ | १५ | ५८ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------|------------------------------------|-------------------------|
| २८०७४ | भेदधिकारः सटीकः | नृसिंहाश्रमः, टी. का. रामाश्रमः | १-७८ । |
| २८०७५ | भेदधिकारः | | १-२८ । |
| २८०७६ | ब्रह्मविद्याभरणम् | अद्वैतानन्दः | १६२ । (गणनया) |
| २८०७७ | " | " | २५४ । (गणनया) |
| २८०७८ | इष्टसिद्धिः | विमुक्ताचार्यः | २-११६ (= ११७) ११८-१४५ । |
| २८०७९ | आत्मबोधः | शङ्कराचार्यः | १-७ । |
| २८०८० | तत्त्वबोधः | | १-६ । |
| २८०८१ | ज्ञानसर्वस्वसारः | मुकुन्दः | १-५२ । |
| २८०८२ | वाक्यसुधा सटीक | शङ्कराचार्यः | १-२, १३-१४ । |
| २८०८३ | " | | १-६ । |
| २८०८४ | " | | ५-८ । |
| २८०८५ | वाक्यसुधा | " | १-५ । |
| २८०८६ | पञ्चदशी सन्याख्या | | १ । |
| २८०८७ | पञ्चदशी | | १-९ । |
| २८०८८ | वेदान्तसारः | सदानन्दः | १-१७ । |
| २८०८९ | पञ्चदशीव्याख्या | रामकृष्णः | १-२२ । |
| २८०९० | वेदान्तसारः | सदानन्दः | १२ । (गणनया) |
| २८०९१ | षोडशमहावाक्यविवरणम् | शङ्कराचार्यः | १-५ । |
| २८०९२ | लघुवाक्यवृत्तिः | | १-५ । |
| २८०९३ | उपदेशसाहस्री | | १-२५ । |
| २८०९४ | तत्त्वबोधप्रकरणम् | | १-८ । |
| २८०९५ | षोडशमहावाक्यानि | | १ । |
| २८०९६ | आत्मबोधः | शङ्कराचार्यः | १-५ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|------------------------------------|
| १३'८x९'४ | १२ | ९२ | दे. ना. | का. | | पू० | ब्रह्मसूत्रभाष्यन्याख्यानम् । " |
| १३'x६'४ | २० | ९२ | " | " | | " | |
| १०'८x९ | ११ | ४६ | " | " | | अपू० | |
| १०'८x९ | १० | ३८ | " | " | | " | |
| ९'१x४'१ | १२ | ४० | " | " | | " | |
| ८'९x३'६ | ९ | २८ | " | " | | पू० | |
| ७'२x४'४ | १० | २९ | " | " | | " | |
| ८'७ x ४'८ | ११ | २६ | " | " | | " | |
| ७'९x३ | ६ | २९ | " | " | १७७० | अपू० | |
| ९'९x४'९ | १४ | ४९ | " | " | १६४३ | " | |
| ८'९ x ३'४ | ११ | ३६ | " | " | | " | |
| ६'२x४'२ | १० | १९ | " | " | | पू० | |
| ८'८x४'७ | १३ | २७ | " | " | | अपू० | |
| १०'७x४'७ | ११ | ३८ | " | " | | " | |
| ९x३'८ | ११ | ३० | " | " | | पू० | |
| ९'७x४'१ | ७ | ३४ | " | " | | अपू० | |
| १०'९x४'९ | १० | ३९ | " | " | | " | |
| ६'८x४'१ | ८ | १७ | " | " | | पू० | |
| १०'२x४ | ९ | २४ | " | " | | " | |
| ६'९ x ९'४ | २० | २८ | " | " | | अपू० | |
| ९'६x३'९ | ८ | १४ | " | " | | पू० | |
| ८'६ x ४'९ | ९ | १८ | " | " | | " | |
| ९'२१ x ४'८ | ११ | ३६ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---|--------------------|---|
| २८०९७ | सङ्क्षेपशारीरकं सव्याख्यम् | | १-२३ । |
| २८०९८ | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | शङ्कराचार्यः | २७ । (गणनया) |
| २८०९९ | ब्रह्मसूत्रानुव्याख्यानम् | आनन्दतीर्थः | ६-६६, ६६-७५ । |
| २८१०० | वेदान्तकल्पतरुपरिमलः | | ३-१२४, ७-१६९, १७१-२८२ । |
| २८१०१ | महावाक्यनिर्णयः | | १-२८ । |
| २८१०२ | प्रबोधसुधा | शङ्कराचार्यः | ४ । (गणनया) |
| २८१०३ | अनुभूतिप्रकाशः | विद्यारण्यः | १-३ । |
| २८१०४ | तत्त्वबोधः | क्षीरस्वामी | १-६ । |
| २८१०५ | लघुवार्तिकम् | | १-२ । |
| २८१०६ | अपरोक्षानुभूतिः | शङ्कराचार्यः, | १-९ । |
| २८१०७ | सर्वदर्शनसङ्ग्रहः | सायणाचार्यः | १-३२ । |
| २८१०८ | अद्वैतसिद्धिसिद्धान्तसार- सङ्ग्रहः सटीकः | टी. का. सदानन्दः | १२० । (गणनया) |
| २८१०९ | ब्रह्मसूत्रं सभाष्यम् | भा. विज्ञानभिक्षुः | ४४८ । (गणनया) |
| २८११० | प्रत्यक्तत्त्वचिन्तामणिः सटीकः | टी. का. सदानन्दः | ३१३ । (गणनया) |
| २८१११ | शतदूषणी | गौडपूर्णानन्दः | १-१०, १-८९ । |
| २८११२ | खण्डनखण्डखाद्यटीका | रघुनाथः | १-४, ६-२३१ । |
| २८११३ | वचनभूषणं सटीकम् | | १-३६६, १-६९, ६९-८१, १-४३ । |
| २८११४ | पञ्चदशी सटीका | टी. का. रामकृष्णः | १-३४, १-४७, १-१३, १-२२, १-५, १-२०, १-१४, १-१०, १-१०, १-२, १-२४, १-१३, १-१२, १-३, १-२, = २३१ । (गणनया) |
| २८११५ | ब्रह्मसूत्रं सव्याख्यम् | व्या. का. धनीरामः | १-२५ । |
| २८११६ | तात्पर्यदीपिका | रामचन्द्रसूरिः | १-७१ । |

| आकारः | प्रक्षि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आ- का- | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|-----------|----------|------------------------|-----------------------------------|
| ६'७ × ४'७ | १६ | २८ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ११'८ × ४'२ | ९ | ६२ | " | " | | " | |
| ११ × ४'८ | १० | ४६ | " | " | १७४८ | " | |
| १०'८ × २'३ | ३ | ३० | " | " | | " | |
| १०'३ × ४'४ | ९ | ४२ | " | " | | " | |
| ५'९ × ४'२ | १० | १६ | " | " | | " | |
| ८'७ × ५ | १३ | २७ | " | " | | " | |
| ९ × ५ | ९ | ३५ | " | " | | पू० | मनीपापञ्चकञ्च । |
| ९'१ × ५ | ८ | २७ | " | " | | " | |
| १०'४ × ४'८ | ७ | ३० | " | " | १८८३ | " | |
| ८'३ × ६'८ | १६ | १९ | " | " | | " | शाङ्करदर्शनमात्रम् । |
| ८'२ × ६'९ | २१ | २८ | " | " | | "* | |
| ८'४ × ६'७ | १४ | १९ | " | " | १९५४ | "* | |
| ८'३ × ६'७ | २१ | २६ | " | " | १९५३ | "* | |
| १३ × ८ | ३२ | २५ | " | " | १९०३ | " | श्रीनिवासकृता व्यङ्ग्यदेशकृता च । |
| १३ × ७'८ | १५ | ४१ | " | " | १९५७ | " | |
| १०'९ × ८'९ | १८ | ३० | " | " | | अपू० | |
| ९'९ × ३'६ | १४ | ३६ | " | " | | पू०* | |
| १'४ × ७'३ | १५ | ६४ | " | " | १८८९ | " | |
| १२ × ५'७ | १३ | ५२ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------------------|---|--------------------------|
| २८११७ | वेदार्थसङ्ग्रहः सटीकः | रामानुजाचार्यः टी. का. सुदर्शन- सूरिः | १-१५२ । |
| २८११८ | ब्रह्मसूत्रं सभाष्यम् | भा. का. रामा- नुजाचार्यः | १-७१, १-३२, १-३०, १-१४ । |
| २८११९ | पञ्चदशी सव्याख्या | विद्यारण्यः, व्या. का. रामकृष्णः | १-६ । |
| २८१२० | महावाक्यविवरणम् | शङ्कराचार्यः, | १-४ । |
| २८१२१ | अपरोक्षानुभूतिः | ” | १-१० । |
| २८१२२ | वेदान्तकल्पतरुपरिमलः | अष्टपञ्चदीक्षितः | १-५२, १-३७ । |
| २८१२३ | आगमशास्त्रप्रकरणम् | | १ । |
| २८१२४ | तत्त्वोपदेशः | | २ । (गणनया) |
| २८१२५ | आत्मबोधः | | १-२, ५ । |
| २८१२६ | अद्वैतसिद्धिटीका | | २६१-२६७, २६९-३२६ । |
| २८१२७ | तत्त्वपरिशुद्धिः | | १७ । (गणनया) |
| २८१२८ | पञ्चीकरणविवरणटीका | | २९-३५ . |
| २८१२९ | पञ्चीकरणमहावाक्यार्थ- विवरणम् । | | १ । |
| २८१३० | पञ्चीकरणवार्त्तिकम् | सुरेश्वराचार्यः | १-२ । |
| २८१३१ | ब्रह्मसूत्रटीका | | १-८ । |
| २८१३२ | पञ्चपादिकाविवरणतत्त्व- दीपनम् | अखण्डानन्दः | १-२३१, २४२ २७७ । |
| २८१३३ | पञ्चीकरणवार्त्तिकम् | | १-३ । |
| २८१३४ | वेदान्तकल्पतरुः | | ३६-६३ । |
| २८१३५ | वेदान्तपरिभाषाव्याख्या | धर्मराजाध्वरीन्द्र- सुतः | १-३ । |
| २८१३६ | पञ्चप्रकरणी सटीका | शङ्कराचार्यः | १-२५ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|----------------------------|
| १४ × ७३ | ९ | ४८ | दे. ना. | का. | | पू० | तात्पर्यदीपिकानाम्नीटीका । |
| १५३ × ७३ | १९ | ५३ | " | " | १८७५ | " | श्रीसंज्ञकं भाष्यम् । |
| ७४ × ४२ | १२ | २४ | " | " | | अपू० | महावाक्यविवेकप्रकरणम् । |
| ९८ × ४३ | ८ | ३५ | " | " | | पू० | |
| ९७ × ३५ | ९ | ४५ | " | " | | " | |
| १११ × ४९ | १३ | ४६ | वङ्ग. | " | | अपू० | |
| ९७ × ४२ | १२ | ४२ | " | " | | " | |
| ८४ × ४ | ८ | २० | " | " | | " | |
| १०६ × ३८ | ८ | ३२ | " | " | | " | |
| ११२ × ४८ | १५ | ४८ | दे. ना. | " | | " | |
| ९८ × ३८ | ११ | ४७ | वङ्ग. | " | | " | |
| ११९ × ४७ | १२ | ४८ | " | " | | " | |
| १२७ × ४८ | ७ | ३६ | " | " | | " | |
| १२९ × ४८ | ९ | ३६ | " | " | | " | |
| १२८ × ५ | १० | ३८ | " | " | | " | |
| ११२ × ३७ | ११ | ४० | दे. ना. | " | | " | |
| १२२ × ४८ | ९ | ४० | " | " | | " | |
| १०५ × ४९ | १४ | ४१ | " | " | | " | |
| १२५ × ४८ | ११ | ५२ | " | " | | " | |
| ११ × ५५ | १० | ४१ | " | " | | पू० | वेदार्थसङ्ग्रहटीका । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------------------|---|-----------------------------------|
| २८१३७ | वेदान्तसारः | सदानन्दः | ३, ५-१४ । |
| २८१३८ | वेदान्तसारटीका | | १-७ । |
| २८१३९ | शङ्कराचार्यसुरेश्वराचार्य- वचनानि | | १-२ । |
| २८१४० | शारीरकमीमांसाभाष्य- न्याख्या | | ७१-७८, ७८-८१ । |
| २८१४१ | शास्त्रप्रकाशिका | आनन्दज्ञानः | ३-१४०, (=१४१), १४२-१७८ । |
| २८१४२ | सङ्क्षेपशारीरकं सटीकम् | सर्वज्ञात्ममुनिः टी. का. मधुसूदनः | १-५ । |
| २८१४३ | संस्कारपयोधिमन्थनम् | | १ । |
| २८१४४ | " | | १-६ । |
| २८१४५ | स्वात्मानन्दप्रकाशिका | | ३ । (गणनया) |
| २८१४६ | वेदान्तसारः | सदानन्दः | १-९ । |
| २८१४७ | विद्वन्मनोरञ्जनी | | १-३३ । |
| २८१४८ | भामती | वाचस्पतिमिश्रः | ५० । (गणनया) |
| २८१४९ | ब्रह्मसूत्रभाष्यं सन्याख्यम् | शङ्कराचार्यः | १८४ । (गणनया) |
| २८१५० | वेदान्तकल्पतरुटीका | अप्पयदीक्षितः | ९ । (गणनया) |
| २८१५१ | खण्डनखण्डखाद्यटीका | शङ्करमिश्रः | २-१२, १४, १७, २६, २९, ३२, ४०-४२ । |
| २८१५२ | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | | १- ६, ६८-८२, १४५-१६४, १६६-१९९ । |
| २८१५३ | ब्रह्मज्ञानम् | | १-८ । |
| २८१५४ | स्वात्मसंविदुपदेशः | | ५८ । (गणनया) |
| २८१५५ | महावाक्यविवरणम् | शङ्कराचार्यः | २-५ । |
| २८१५६ | वेदान्तकल्पतरुः | अमलानन्दः | ८२-९७ । |
| २८१५७ | शारीरकभाष्यम् | | १, ६-९, १४-१७ । |

| आधारः | पट्टि- संख्या | अक्षर- संख्या | अभिः | आपाः | विधिकानः | पूर्णापूर्ण- विधयः | विशेषविवरणम् |
|----------|------------------|------------------|---------|------|----------|-----------------------|------------------------------|
| १०१ × ४० | ८ | ३९ | वक्त. | का. | | अपू० | |
| १०० × ३० | १० | ७६ | " | " | | " | |
| १३१ × ४० | १० | ४० | " | " | | " | |
| १३० × ४० | २१ | ७६ | " | " | | " | रत्नप्रभानाम्नी । |
| १०९ × ३० | १४ | ६६ | " | " | | " | सन्ध्याव्याप्तिटीका । |
| ९८ × ३१ | १४ | ६९ | " | " | | " | |
| १३२ × ३१ | ९ | ६१ | " | " | | " | |
| ९६ × ३६ | १३ | ३८ | " | " | | " | |
| ११ × ४० | १६ | ४० | " | " | | " | |
| १४ × ४० | ७ | ४३ | " | " | | पू० | |
| १३९ × ४० | १० | ६६ | " | " | | " | वेदान्तसारटीका । |
| १३९ × ४० | १६ | ६७ | " | " | | अपू० | ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यटीका । |
| १३८ × ४० | १० | ६६ | " | " | | " | व्याख्या रत्नप्रभाख्या । |
| १३९ × ४० | १६ | ६० | " | " | | " | परिमलनाम्नी । |
| १३ × ३९ | ८ | ६६ | दे. ना. | " | | " | |
| १०८ × ४० | १० | ४९ | " | " | | " | |
| ९६ × ९ | १३ | २९ | " | " | १६०१ | पू० | |
| ४ × ३९ | ९ | १५ | " | " | | अपू० | |
| ४० × ४० | ९ | २३ | " | " | | " | |
| १०९ × ४० | १३ | ६१ | " | " | | पू० | तृतीयाध्यायमात्रम् । |
| ९८ × ४० | ९ | ३६ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरण । |
|------------|-----------------------|----------------------------------|-------------------------------------|
| २८१५८ | पञ्चदशी सटीका | भारतीतीर्थः टी. का. रामकृष्णः | २-३४, ३६-४८, ५०, ५३, ५२-५३, ५५-५८ । |
| २८१५९ | चित्तुम्बीव्याख्या | | ४४ । (गणनया) |
| २८१६० | नृसिंहविद्यापना | | १० । (गणनया) |
| २८१६१ | पञ्चीकरणवार्त्तिकम् | शङ्कराचार्यः | ४ । (गणनया) |
| २८१६२ | पञ्चीकरणटीका | | २३ । (गणनया) |
| २८१६३ | पञ्चीकरणवार्त्तिकम् | | ५ (गणनया) । |
| २८१६४ | विवरणप्रमेयसमुद्गः | | ३३-४४ । |
| २८१६५ | जीवन्मुक्तिविवेकः | | १-४३ । |
| २८१६६ | वेदान्तसारटीका | | ३९ । (गणनया) |
| २८१६७ | मुमुक्षुचित्तसमाधानम् | | १-८ । |
| २८१६८ | आनन्दानुभवामृतम् | | १-११ । |
| २८१६९ | नृसिंहविद्यापना | | ८ । (गणनया) |
| २८१७० | अपरोक्षानुभवः | | १० । (गणनया) |
| २८१७१ | वेदान्तसारटीका | | १-१० । |
| २८१७२ | " | रामतीर्थयतिः | १-७३ । |
| २८१७३ | वेदान्तसारः | सदानन्दः | १-१३ । |
| २८१७४ | विवेकचूडामणिः | शङ्कराचार्यः | १-४३ । |
| २८१७५ | निद्ररत्नम् | माधवयोगी | १-१२ । |
| २८१७६ | पञ्चदशी सटीका | विलासरायः | १-४१, १-१४, १-२२, २४-३१ । |
| २८१७७ | ईश्वराद्वैतविचारः | | १-१७ । |
| २८१७८ | आत्मबोधः सटीकः | शङ्कराचार्यः | १-६ । |
| २८१७९ | वेदान्तपरिभाषा | धर्मराजदीक्षितः | १-२० । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | वाक्य- संख्या | विधिः | आपादः | विशेषणः | पूर्णाङ्क- विशेषः | विशेषविवरणम् |
|-------------|--------------------|------------------|---------|-------|---------|----------------------|--|
| ११ ० × ६ १ | १० | ४६ | दे. ना. | का. | | अपू० | चित्रदीपवृत्तिदीपप्रकरणे । |
| १० ३ × ३ ११ | ९ | ६२ | " | " | | " | |
| १० × ३ ६ | ८ | ३८ | " | " | | " | |
| ८ ६ × ३ ६ | ११ | २७ | " | " | | पू०* | |
| ० ९ × ३ ८ | ११ | २७ | " | " | | अपू० | चन्द्रिकानाम्नी । |
| ६ १ × ३ ६ | ८ | १४ | " | " | | " | |
| १० ४ × ४ ३ | १४ | ४५ | " | " | | " | |
| १० ९ × ४ ९ | १० | ३६ | " | " | | " | |
| ९ ८ × ४ ३ | १० | ४३ | " | " | | " | |
| ६ २ × ४ ८ | ११ | १५ | " | " | | " | |
| ० ४ × ३ ८ | ६ | २१ | " | " | | " | |
| १० ३ × ३ ८ | १५ | ४९ | " | " | | " | |
| ६ २ × ३ २ | ७ | २३ | " | " | | " | |
| १३ ३ × ३ ८ | ८ | ४३ | वक्त. | " | | " | |
| १३ ४ × ३ ४ | ७ | ६० | " | " | | पू० | |
| १३ २ × ३ ३ | ८ | ६९ | " | " | | " | |
| १३ ४ × ३ ५ | ६ | ४८ | " | " | | " | |
| १३ ३ × ३ ४ | ६ | ६१ | " | " | | " | पञ्जरलनिर्वाणाष्टकविवेकमकरन्द- सिद्धान्तस्तोत्रप्रयुक्तान्यमृत्ति- सिद्धान्तस्तोत्रज्ञानबोधस्तोत्राद्वैतानु- भूतिसहितम् । |
| ९ १ × ८ १ | १० | २३ | दे. ना. | " | | अपू० | |
| ९ ८ × ६ ८ | २१ | १३ | " | " | | " | |
| १३ ४ × ६ ८ | १९ | ४४ | " | " | | पू० | |
| १३ ६ × ६ १ | १४ | ४७ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|---------------------|-----------------------|
| २८१८० | तत्त्वानुसन्धानम् | महादेवसरस्वती | १-२४ । |
| २८१८१ | ब्रह्मसूत्रम् | | ४ । (गणनया) |
| २८१८२ | जीवनमुक्तिविवेकः | | २८-५९ । |
| २८१८३ | आत्मबोधः सटीकः | शङ्कराचार्यः | १-८, १०-१३ । |
| २८१८४ | तत्त्वानुसन्धानम् | महादेवसरस्वती | २-६, ८-२९, ३१ । |
| २८१८५ | अद्वैतसिद्धिः | | १-१५, ३३-४०, ४४-५५ । |
| २८१८६ | आत्मसामान्यसिद्धिव्याख्या | गङ्गाधरसरस्वती | ५६-१३१ । |
| २८१८७ | वेदान्तसारटीका | | १-५ । |
| २८१८८ | शारीरकभाष्यम् | | ४१ । (गणनया) |
| २८१८९ | आत्मबोधः सटीकः | | ३० । (गणनया) |
| २८१९० | अज्ञानबोधिनी | | १-२४, २६-३८, ३२ । |
| २८१९१ | वेदान्तपरिभाषा | धर्मराजाध्वरीन्द्रः | १-१२, १४, १८-१९, ३४ । |
| २८१९२ | ब्रह्मसूत्रम् | | २-९ । |
| २८१९३ | वेदान्तसारः | सदानन्दः | १७ । (गणनया) |
| २८१९४ | वेदान्तपरिभाषा | धर्मराजदीक्षितः | १-८८ । |
| २८१९५ | महावाक्यविचारः | | ३६ । (गणनया) |
| २८१९६ | भेदधिकारः | नृसिंहाश्रमः | १-३० । |
| २८१९७ | भेदधिकारसत्क्रिया | | १-१३५ । |
| २८१९८ | अद्वैतविवेकपदयोजना | रामकृष्णः | १-१५ । |
| २८१९९ | आत्मानात्मविवेकः | | १-९ । |
| २८२०० | सिद्धान्ततत्त्वम् | अनन्तः | २४ । (गणनया) |
| २८२०१ | महावाक्यादिः | | १-२, १८ । |
| २८२०२ | अपरोक्षानुभूतिः | शङ्कराचार्यः | १-१६ । |
| २८२०३ | आत्मानात्मविवेकः | | १-६ । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------------|------------------------------------|-------------------------|
| २८२०४ | वेदान्तपरिभाषा | धर्मराजाध्वरीन्द्रः | १, ३-४० । |
| २८२०५ | सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहः | अप्पय्यदीक्षितः | १-२०, ३१-५६ । |
| २८२०६ | " | " | १-१३ । |
| २८२०७ | शारीरकभाष्यम् | शङ्कराचार्यः | १-२८ । |
| २८२०८ | पञ्चदशी सटीका | विद्यारण्यः टी.का.रामकृष्णः | ८४ । (गणनया) |
| २८२०९ | पञ्चदशीटीका | रामकृष्णः | ६-११ । |
| २८२१० | वेदान्तसारः सव्याख्यः | सदानन्दः, व्या.का. नृसिंहाश्रमः | १-१२ । |
| २८२११ | ब्रह्मसूत्रव्याख्या | विज्ञानभिक्षुः | १-२०१, २०१-५१९, १-१२० । |
| २८२१२ | अपरोक्षानुभूतिः | शङ्कराचार्यः | १-१४ । |
| २८२१३ | वाक्यविवृतिटीका | | ६ । (गणनया) |
| २८२१४ | पञ्चीकरणम् | " | १-२ । |
| २८२१५ | तत्त्वत्रयम् | | १-३ । |
| २८२१६ | तत्त्वबोधः | | १-६ । |
| २८२१७ | स्वानुभवादर्थः | | ५ । (गणनया) |
| २८२१८ | ज्ञानतिलकम् | | २-३ । |
| २८२१९ | पञ्चीकरणवार्तिकम् | सुरेश्वराचार्यः | ४ । (गणनया) |
| २८२२० | तत्त्वप्रदीपिकाटीका | प्रत्यग्रूपार्यः | २३०-२६३ । |
| २८२२१ | तत्त्वानुसन्धानम् | महादेवसरस्वती | १-१७ । |
| २८२२२ | वेदान्तसिद्धान्तसूक्तिमञ्जरी सटीका | गङ्गाधरसरस्वती | १-४० । |
| २८२२३ | वेदान्तसारटीका | नरसिंहसरस्वती | १-३१, ३३-३५ । |
| २८२२४ | " | " | १-३४ = ३५, ३६ ५४ । |
| २८२२५ | ब्रह्मसूत्रम् | कृष्णद्वैपायनः | १-१२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | क्रमांकः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विधेयः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|----------|----------|------------------------|---------------------------|
| ९०२ × ३९ | ११ | २८ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ८९ × ४९ | १० | ४६ | " | " | | " | |
| १०८ × ३९ | ९ | ४७ | " | " | | " | |
| ९०२ × ४९ | १५ | ४० | " | " | | " | |
| १२७ × ८४ | १६ | ४६ | " | " | | " | |
| ११६ × ५ | १० | ४३ | " | " | | " | |
| १३ × ५ | ११ | ५४ | " | " | | " | |
| १३ × ८२ | १४ | २८ | " | " | १९४४ | पू० | ऋजुभाष्यमिति नामान्तरम् । |
| ६४ × ३८ | ९ | २६ | " | " | | " | |
| ७८ × ३९ | १४ | ४८ | " | " | | अपू० | |
| ९७ × ४२ | ९ | ३१ | " | " | | पू० | |
| १०४ × ३९ | ७ | २६ | " | " | | " | |
| ६३ × ४३ | १२ | २१ | " | " | | " | |
| ८४ × ४५ | १८ | ३४ | " | " | | अपू० | |
| ९६ × ४२ | ७ | ३० | " | " | | " | |
| ७६ × ४५ | ११ | १९ | " | " | | पू०* | |
| ११८ × ४९ | ९ | ४५ | " | " | | अपू० | नयनप्रसादिनी । |
| ९५ × ५ | १७ | ४४ | " | " | १९५५ | पू० | |
| १२९ × ४८ | १० | ४७ | " | " | १८२८ | " | |
| १०२ × ४३ | १२ | ४३ | " | " | | अपू० | सुवोधिनी । |
| ९५ × ४२ | ९ | २९ | " | " | | पू०* | |
| १०९ × ४९ | ९ | ३० | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------|--------------------|--|
| २८२२६ | महावाक्यविवरणम् | शङ्कराचार्यः | १२ । (गणनया) |
| २८२२७ | वाक्यवृत्तिः | | १-४ । |
| २८२२८ | तत्त्वबोधः | | १-६ । |
| २८२२९ | पञ्चदशी | | १-५ । |
| २८२३० | पञ्चदशीव्याख्या | रामकृष्णः | १-४ । |
| २८२३१ | तत्त्वबोधः | | १-३ । |
| २८२३२ | पञ्चदशीव्याख्या | रामकृष्णः | १-१४ । |
| २८२३३ | पञ्चदशी सव्याख्या | व्या.का. रामकृष्णः | १-३० । |
| २८२३४ | अद्वैतसिद्धिः | मधुसूदनः | १ ५ । |
| २८२३५ | पञ्चदशी सटीका | टी. का. रामकृष्णः | १-१२ । |
| २८२३६ | " | " | १-१६ । |
| २८२३७ | ब्रह्मसूत्रम् | | १-६, ९-१० । |
| २८२३८ | वेदान्तकल्पतरुः | | १०-२०, २२, २४-२६, २८-३२, ३४-४१, ५३, ५५-६८, ६०-३१ । |
| २८२३९ | प्रश्नोत्तरमणिरत्नमाला | शुकदेवः | १-२ । |
| २८२४० | श्लोकपञ्चकतात्पर्यदीपनम् | अमृतानन्दः | १-१४ । |
| २८२४१ | अज्ञानबोधिनी | शङ्कराचार्यः | १-२४ । |
| २८२४२ | प्रबोधसुधाकरः | " | ९ । (गणनया) |
| २८२४३ | अपरोक्षानुभूतिः | " | १-१२ । |
| २८२४४ | स्वयम्बोधः | ईश्वरः | २-१० । |
| २८२४५ | अज्ञानबोधिनी | | १-१५ । |
| २८२४६ | खण्डनखण्डखाद्यटीका | | १-११९ । |
| २८२४७ | ज्ञानतिलकम् | | २-५ । |
| २८२४८ | स्वात्मयोगप्रदीपबोधिनी | कुमारजः | १९ । (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-----------|--------------------|------------------|---------|------|----------|------------------------|--------------------------|
| ९३ × ३५ | ७ | २५ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ८६ × ४०१ | ९ | ३३ | " | " | | पू० | |
| १० × ४०७ | ७ | ३५ | " | " | १८९२ | " | |
| १२८ × ४०९ | ११ | ४७ | " | " | | " | तत्त्वविवेकप्रकरणम् । |
| ९७ × ४३ | ९ | ३६ | " | " | | " | महावाक्यविवेकप्रकरणस्य । |
| १०३ × ४०४ | ११ | ४२ | " | " | १८९२ | " | नित्यार्चनविधिरपि । |
| ९८ × ४०४ | ९ | ३८ | " | " | | " | द्वैतविवेकप्रकरणस्य । |
| ९६ × ४३ | ९ | २६ | " | " | | " | तत्त्वविवेकप्रकरणम् । |
| १२७ × ५३ | ११ | ४० | " | " | | अपू० | |
| ८९ × ३२ | ९ | ५२ | " | " | | पू० | पञ्चभूतविवेकप्रकरणम् । |
| ८८ × ३२ | १० | ५२ | " | " | | " | तत्त्वविवेकप्रकरणम् । |
| ९८ × ४३ | १० | ३३ | " | " | | अपू० | |
| ९९ × ५ | १० | ४० | " | " | | " | |
| ९७ × ५ | १३ | ३७ | " | " | | पू० | |
| ९७ × ४२ | ११ | ३४ | " | " | | " | |
| १२ × ५ | ९ | ३६ | " | " | | " | |
| ९५ × ४०९ | ११ | २४ | " | " | | " | |
| ८७ × ४०१ | ८ | ३० | " | " | | " | |
| ८५ × ४६ | ११ | २३ | " | " | १८९१ | अपू० | |
| १०९ × ६१ | ३३ | ३२ | " | " | १८७९ | पू० | |
| १३४ × ५३ | १० | ३६ | " | " | | अपू० | |
| ९३ × ४०४ | ७ | ३५ | " | " | | " | |
| १०३ × ४०७ | १ | ३३ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|---------------------------------|-------------------|
| २८२४९ | शारीरकमीमांसासूत्रम् | | १-१० । |
| २८२५० | वाक्यवृत्तिः | शङ्कराचार्यः | १-३ । |
| २८२५१ | वाक्यसुधा सटीका | | १-११ । |
| २८२५२ | अध्यात्मविद्योपदेशविधिः | शङ्कराचार्यः | १-१५ । |
| २८२५३ | तत्त्वबोधः | | १-४ । |
| २८२५४ | पञ्चदशी सव्याख्या | व्या. का. रामकृष्णः | १-३६, ३६-१७६ । |
| २८२५५ | जीवन्मुक्तिविवेकः | | १-७९ । |
| २८२५६ | उपदेशपञ्चकं सटीकम् | | ३-४ । |
| २८२५७ | पञ्चदशी सटीका | विद्यारण्यः टी.का. रामकृष्णः | १-१९६ । |
| २८२५८ | अपरोक्षानुभूतिः | शङ्कराचार्यः | १-९ । |
| २८२५९ | आत्मबोधः | " | १-१५ । |
| २८२६० | तत्त्वबोधः | | १ । |
| २८२६१ | प्रश्नोत्तरमाला | | १-४ । |
| २८२६२ | द्वादशमहावाक्यं सटीकम् | | १-१६ । |
| २८२६३ | आत्मबोधः सटीकः | शङ्कराचार्यः | १-१२ । |
| २८२६४ | महावाक्यम् | | १-१९ । |
| २८२६५ | ज्ञानाङ्कशप्रकरणम् | | १ । |
| २८२६६ | बालबोधिनी | शङ्कराचार्यः | १-३ । |
| २८२६७ | आत्मानात्मविवेकः | स्वयम्प्रकाशः | १-७ । |
| २८२६८ | ब्रह्मसूत्रं सटीकम् | टी. का. गङ्गाधरः | १-२१८ । |
| २८२६९ | वेदान्तसारः | | १-१० । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|-------|-----------------|------------------------|-------------------------------|
| ९'७ × ९'१ | १२ | ३१ | दे.ना. | का. | | पू० | ब्रह्मसूत्रमितिनामान्तरम् । |
| ९'६ × ९'१ | १२ | ४० | " | " | | " | |
| ९'४ × ९'१ | १६ | ४५ | " | " | श. १७३४ १८५१ | " | |
| ९'५ × ९ | १३ | ३४ | " | " | १८५१ | " | अज्ञानबोधिनीतिनामान्तरम् । |
| ९'८ × ९'१ | १० | ३४ | " | " | १८७७ | " | |
| १० × ४'७ | ११ | ४५ | " | " | १८३७ | " | |
| ८'५ × ९ | ११ | २८ | " | " | | " | |
| ११'३ × ४'६ | १० | ४० | " | " | | अपू० | |
| १३'५ × ६ | १३ | ४७ | " | " | | पू० | |
| १० × ९ | १० | ३० | " | " | | " | |
| ११'५ × ४'९ | ११ | ३२ | " | " | | " | |
| ९'७ × ९'२ | १३ | ३१ | " | " | | अपू० | |
| १०'८ × ४'६ | ९ | ३१ | " | " | | पू० | शुक्लजनकसम्वादरूपा । |
| ७'४ × ४'८ | ९ | २३ | " | " | | अपू० | |
| ९'८ × ९ | १२ | ३७ | " | " | १८५९ | पू० | |
| ९'८ × ९'१ | १४ | ४१ | " | " | १८५१ श. १७३३ | " | |
| ९'८ × ४ | १५ | ५६ | मै. | " | | " | |
| ९'७ × ९'१ | १८ | ४४ | " | " | श. १७३३ १८५१ | " | अन्ते प्रायश्चित्तविचारोऽपि । |
| ९'८ × ९'२ | ११ | ४१ | " | " | | " | |
| ११'९ × ४'८ | ९ | ४६ | " | " | १८४३ | " | सारार्थचन्द्रिकाटीका । |
| १३'१ × ६'५ | १२ | ४३ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|----------------------------------|-------------------|
| २८२७० | बालबोधिनी | शङ्कराचार्यः | १-३, १-१ । |
| २८२७१ | वेदान्तकल्पतरुपरिमलः | अप्पयदीक्षितः | १-५४८ । |
| २८२७२ | भामती सटीका | वाचस्पतिमिश्रः, टी. अमलानन्दः | १-६४६, ६५७-७४७ । |
| २८२७३ | आत्मबोधः सटीकः | शङ्कराचार्यः | १-११ । |
| २८२७४ | पञ्चदशी सटीका | | १-१९, १-१६, १-३ । |
| २८२७५ | पञ्चीकरणविवरणम् | आनन्दगिरिः | १-१३ । |
| २८२७६ | पञ्चीकरणवार्त्तिकम् | सुरेश्वराचार्यः | १-६ । |
| २८२७७ | पञ्चरत्नम् | शङ्कराचार्यः | १ । |
| २८२७८ | द्वैतभूषणम् | रामसखः | १-३ । |
| २८२७९ | बोधसारः | नरहरिः | १-७९ । |
| २८२८० | वेदान्तकल्पतरुसंज्ञरी | वैद्यनाथः | १-१२० । |
| २८२८१ | ब्रह्ममीमांसाभाष्यम् | श्रीकण्ठाचार्यः | १-२२३ । |
| २८२८२ | संक्षेपशारीरकटीका | पुरुषोत्तममिश्रः | १-२०७ । |
| २८२८३ | अद्वैतदीपिका | नृसिंहाश्रमः | १-१५६ । |
| २८२८४ | ब्रह्मसूत्रं सवृत्तिकम् | वृ.का. रामकिङ्करः | १-२६, ६१ । |
| २८२८५ | अद्वैतचन्द्रिका | नृसिंहसूरिः | १-७६ । |
| २८२८६ | प्रमाणमाला | आनन्दबोधाचार्यः | १-२२ । |
| २८२८७ | प्रमाणमालाटीका | | १-४१ । |
| २८२८८ | तत्त्वविवेकविवरणम् | भट्टोजिदीक्षितः | १-२७, १-११ । |
| २८२८९ | वेदान्तसारः | सदानन्दः | १-१३ । |
| २८२९० | वेदान्तपरिभाषा | धर्मराजाध्वरीन्द्रः | १-५० । |
| २८२९१ | षोडशवर्णकम् | | १-१२० । |
| २८२९२ | महावाक्यविवरणम् | | १-२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आ- काः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-----------|----------|-------------------------|--|
| ९०८ × ६१ | ११ | ४९ | दे. ना. | का. | १८७० | पू० | अन्ते स्वरूपप्रकरणम्, त्रिपुरी च । |
| १२४ × ४८ | १० | ४६ | " | " | १८४६ | " | |
| १२६ × ४८ | १४ | ६२ | " | " | १८४० | अपू० | |
| ११६ × ६१ | १२ | ६० | " | " | | पू० | |
| १०२ × ४३ | ९ | ४४ | " | " | | " | |
| ९९ × ४४ | ७ | ३८ | " | " | | " | तत्त्वविवेक पञ्चभूतविवेक महा- वाक्यविवेकप्रकरणानि । |
| १०७ × ४६ | ८ | ३१ | " | " | १९०९ | | |
| १४७ × ४७ | ९ | ३९ | " | " | | " | |
| १२६ × ६३ | ११ | ४६ | " | " | १८८८ | " | |
| १०७ × ४६ | ९ | ४२ | " | " | | " | |
| १२४ × ४८ | ९ | ४० | " | " | | " | |
| ११४ × ६ | १० | ३४ | " | " | | " | |
| १११ × ४६ | ९ | ४६ | " | " | १७४७ | " | |
| १०२ × ४४ | १० | ३४ | " | " | | " | |
| ११८ × ६३ | १९ | ६६ | " | " | | अपू० | |
| ११९ × ४८ | ८ | ३४ | " | " | | पू० | |
| ९१ × ४१ | ९ | ४१ | " | " | १८२६ | " | |
| ९७ × ४८ | १४ | ४७ | " | " | | " | |
| १२९ × ६६ | २४ | ६९ | " | " | १८४४ | " | |
| ११५ × ४९ | १० | २९ | " | " | | " | |
| १०७ × ४६ | ११ | २९ | " | " | | " | |
| १०८ × ६१ | ९ | ३० | " | " | | " | |
| १२४ × ४३ | ७ | ४० | " | " | | अपू० | ब्रह्मामृतवर्षिणीवृत्तिः । भेदधिकारटीका । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------|---------------------------------------|-----------------------------------|
| २८२९३ | पञ्चीकरणवार्तिकम् | सुरेश्वराचार्यः | १-१० । |
| २८२९४ | उपदेशसाहस्री सटीका | शङ्कराचार्यः टी. का. रामतीर्थः | २-४१ । |
| २८२९५ | अनिर्वचनीयनिरूपणम् | | १ । |
| २८२९६ | सिद्धान्ततत्त्वम् | अनन्तदेवः | १-५६ । |
| २८२९७ | संक्षेपशारीरकटीका | रामचन्द्रतीर्थः | १-३०६ । |
| २८२९८ | अद्वैतसिद्धिसिद्धान्तसारः | सदानन्दः | १-१०६ । |
| २८२९९ | पञ्चीकरणवार्तिकम् | सुरेश्वराचार्यः | १-७ । |
| २८३०० | सारचन्द्रिका | सदासुखः | १४६ । (गणनया) |
| २८३०१ | सप्तभङ्गीनयनिरूपणम् | | १ । |
| २८३०२ | अभेदसिद्धिः | | १-१७ । |
| २८३०३ | सारचन्द्रिका | सदासुखः | १७६ । (गणनया) |
| २८३०४ | खण्डनखण्डखाद्यम् | श्रीहर्षः | १-५९, ५९, ५९, ५९-६७, ६७, ६९-१५५ । |
| २८३०५ | विवेकमकरन्दः | वासुदेवयतीन्द्रः | १ । |
| २८३०६ | वेदान्तसारः सटीकः | टी. नृसिंहसरस्वती | १-३७ । |
| २८३०७ | वेदान्तसूत्रम् | | १-११ । |
| २८३०८ | सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहः सटीकः | टी. का. अच्युत- कृष्णानन्दः | १-८४, १-५२, १-३७, १-१८ । |
| २८३०९ | वाक्यवृत्तिः सटीका | शङ्कराचार्यः, टी. रामानन्द सरस्वती | १-५० । |
| २८३१० | तत्त्वविवेकः | नृसिंहाश्रमः | १-११, १-१२ । |
| २८३११ | लक्षणवली | | १-१९ । |
| २८३१२ | प्रत्यग्रहौकत्वविचारः | | ४०-४१ । |
| २८३१३ | तत्त्वबोधः | | १-४ । |
| २८३१४ | ” | | १-५ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | का. पां. | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|-------------|----------|------------------------|------------------------------------|
| ६*२ × ४ | ८ | १८ | दे. ना. | का. | | पू० | |
| १३.८ × ५*३ | १२ | ५९ | " | " | | "* | पूर्वार्द्धम् । |
| १०*३ × ४*६ | १० | ३४ | " | " | | " | |
| ९*२ × ४*३ | ९ | ३२ | " | " | | " | |
| ८*८ × ४*५ | १६ | ४५ | " | " | | " | |
| १२*८ × ४*८ | १० | ४६ | " | " | | " | |
| ६*९ × ३*३ | ८ | २९ | " | " | १८१२ | " | |
| १२*५ × ४*७ | १३ | ४६ | " | " | | अपू० | अद्वैतसिद्धिटीका । |
| ११*६ × ६ | १७ | ७३ | " | " | | पू० | वेदान्तसूत्रम् (२।२।३३) अधिकृत्य । |
| १०*४ × ३*८ | १० | ४७ | " | " | | " | |
| १३ × ४*७ | १० | ६२ | " | " | | अपू० | अद्वैतसिद्धिटीका । |
| १२*७ × ४*८ | ९ | ४६ | " | " | | " | |
| १३*६ × ७ | २२ | ५८ | " | " | | पू० | |
| १२*३ × ५*२ | ११ | ५३ | " | " | १९०५ | " | |
| १०*७ × ४*६ | १० | ३२ | " | " | | अपू० | |
| १३*४ × ५*९ | १५ | ४० | " | " | | पू० | टीका कृष्णालङ्काराख्या । |
| १२*४ × ५*७ | १४ | ३९ | " | " | | " | |
| १२ × ६*१ | २२ | ६३ | " | " | | " | १-२ परिच्छेदौ । |
| ११ × ४*७ | ८ | ३७ | " | " | | " | |
| ११*८ × ४ | १० | ६४ | वज्र. | " | | अपू० | |
| १२*३ × ४*९ | ९ | ४६ | दे. ना. | " | १९०५ | पू० | |
| १०*७ × ४*७ | ९ | ३५ | " | " | १९६४ | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|---------------------------------------|-------------------|
| २८३१५ | वालवोधसंग्रहः | | १-६ । |
| २८३१६ | साधनपञ्चकं सटीकम् | शङ्कराचार्यः | १ । |
| २८३१७ | अद्वैतकौस्तुभः | | २-१० । |
| २८३१८ | संक्षेपशारीरकं सटीकम् | सर्वज्ञात्ममुनिः टी. का. रामतीर्थः | १२८ । (गणनया) |
| २८३१९ | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | भास्कराचार्यः | ९२ । (गणनया) |
| २८३२० | " | शङ्कराचार्यः भा. आनन्दज्ञानमुनिः | ९-५०, ५०-७२ । |
| २८३२१ | संक्षेपशारीरकम् | | १-३२ । |
| २८३२२ | अद्वैतशास्त्रसारोद्धारः | रङ्गोजिभट्टः | १-४३ । |
| २८३२३ | अद्वैतचिन्तामणिः | " | १-५० । |
| २८३२४ | श्रीदर्पणः | शुभङ्करः (लाटी वंश्यः) | १-५१ । |
| २८३२५ | तत्त्वविवेकदीपनम् । | नृसिंहाश्रममुनिः | १, ५-६, १५-१७१ । |
| २८३२६ | पञ्चपादिकाविवरणटीका | नृसिंहाश्रमः | १-८८ । |
| २८३२७ | तत्त्वविवेकः | " | १-६१ । |
| २८३२८ | पञ्चदशी सटीका | विद्यारण्यस्वामी | ६७ । (गणनया) |
| २८३२९ | खण्डनखण्डखाद्यं सटीकम् | श्रीहर्षः, टी. का. शङ्करमिश्रः | ११-२८६ । |
| २८३३० | पञ्चदशी सटीका | टी. का. रामकृष्णः | १-१२ । |
| २८३३१ | " | " | १४९ । (गणनया) |
| २८३३२ | वेदान्तसारटीका | नृसिंहसरस्वती | ३६ । (गणनया) |
| २८३३३ | वेदान्तपरिभाषा | धर्मराजाध्वरीन्द्रः | १-३२ । |
| २८३३४ | अज्ञानबोधिनी | शङ्कराचार्यः | १-११ । |
| २८३३५ | वेदान्तसारटीका | नृसिंहसरस्वती | १-५७ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | भाषाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|--|
| १२३ × ४०९ | ९ | ४० | दे.ना. | का. | १९०९ | पू० | |
| १३ × ६०४ | २४ | ६६ | " | " | | " | |
| १३० × ६०४ | १६ | ६९ | " | " | | अपू० | |
| १३ × ६०३ | १९ | ६४ | " | " | | पू०* | |
| १०० × ३०६ | १४ | ४४ | " | " | | अपू० | |
| १२८ × ६०६ | १८ | ६२ | " | " | | " | |
| १३८ × ६०६ | १० | ६१ | " | " | | " | |
| ८०९ × ४०९ | ११ | ३१ | " | " | | पू० | १ परिच्छेदः । |
| ९०२ × ४०४ | १० | ३९ | " | " | | " | |
| १००६ × ४०९ | १३ | ४९ | " | " | | अपू० | खण्डनखण्डखाद्यटीका । |
| ९०१ × ४ | १० | ३४ | " | " | | " | |
| १००१ × ४०६ | १० | ३९ | " | " | | " | |
| ९०१ × ३०८ | १० | ३२ | " | " | | पू० | १-२ परिच्छेदौ । |
| १२०९ × ६०१ | २२ | ६८ | " | " | | अपू० | |
| १४ × ६०६ | १७ | ६८ | " | " | | पू० | |
| १२०४ × ४०६ | १३ | ६१ | " | " | | " | तत्त्वविवेकप्रकरणम् टीका पददीपिका । |
| १३८ × ६०३ | ६ | ६७ | वङ्ग. | " | | " | |
| १०३ × ३०७ | ७ | ४२ | दे.ना. | " | | अपू० | |
| १०१ × ४०१ | १३ | ४६ | " | " | १८३९ | पू० | |
| ९०६ × ४०८ | १४ | ३९ | " | " | | " | |
| ९ × ३०८ | ९ | ३६ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------|------------------------------------|-------------------------------|
| २८३३६ | ब्रह्मामृतवर्षिणी | रामानन्दसरस्वती | १-२३८ । |
| २८३३७ | वेदान्तसारः सटीकः | सदानन्दः, टी. का. नृसिंहसरस्वती | १-४४ । |
| २८३३८ | जीवन्मुक्तिविवेकः | विद्यारण्यस्वामी | १-१०२ । |
| २८३३९ | तत्त्वानुसन्धानम् | | १-१६ । |
| २८३४० | पञ्चपादिकाविवरणटीका | | १-२२ । |
| २८३४१ | पञ्चपादिका | | ६-३२ । |
| २८३४२ | पञ्चपादिकाविवरणम् | | १-५२ । |
| २८३४३ | संक्षेपशारीरकम् | सर्वज्ञात्ममुनिः | १-५९, ५९-६८ । |
| २८३४४ | ब्रह्मतर्कस्तवविवरणम् | अप्पयदीक्षितः | १-६५ । |
| २८३४५ | मोक्षसाधनोपदेशविधिः | | १-१४ । |
| २८३४६ | वेदान्ततत्त्वसारः | रामानुजाचार्यः | १-२२ । |
| २८३४७ | जीवन्मुक्तिविवेकः | विद्यारण्यस्वामी | १-८४ । |
| २८३४८ | वेदान्तसारः सटीकः | सदानन्दः, टी. का. नृसिंहसरस्वती | १-२०, २२ = २४, २७-३१, ३३-४३ । |
| २८३४९ | पञ्चदशी सटीका | भारतीतीर्थः टी. का. रामकृष्णः | २९९ । (गणनया) |
| २८३५० | पञ्चीकरणम् | | १, ५-१२ । |
| २८३५१ | अर्थपञ्चकम् | | ४ । (गणनया) |
| २८३५२ | आगमशास्त्रविवरणम् | | ४८-६९ । |
| २८३५३ | प्रपञ्चसारः | शङ्कराचार्यः | २-३, ३-९ । |
| २८३५४ | अपरोक्षानुभवः | " | १-१० । |
| २८३५५ | आत्मबोधः सटीकः | " टी. का. वल्लभः | १-९ । |
| २८३५६ | विद्वन्मण्डनं सटीकम् | वल्लभदीक्षितः | १-६४ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | का. क्रमां. | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|----------------|-----------------|------------------------|---|
| १४ × १४ | ९ | १२ | दे. ना. | का. | १९०९ | पू० | ब्रह्मसूत्रवृत्तिः । |
| १३.६ × ११ | १० | ४६ | " | " | | " | |
| ८.३ × ११ | १२ | २८ | " | " | | " | |
| १०.८ × ४.७ | ११ | ४६ | " | " | | " | |
| १०.५ × ३.१ | ८ | ४८ | " | " | | अपू० | तत्त्वदीपनम् । |
| १०.१ × ३.१ | ९ | १२ | " | " | | " | |
| १०.१ × ३.१ | ९ | १२ | " | " | | " | |
| १०.७ × ४.७ | १० | १३ | " | " | | पू० | १-४ अध्यायाः । अन्ते ऐतरेयो- पनिषदपि । |
| १३ × ४.४ | ९ | ३४ | " | " | १७०४ | " | |
| १०.७ × ३.२ | ८ | ३६ | " | " | | अपू० | |
| १०.१ × ४.४ | ९ | ३९ | " | " | | पू० | |
| ९.९ × ४.१ | १० | ३८ | " | " | | " | |
| ९.७ × ४.३ | १२ | ३१ | " | " | १८७० श. १७३७ | अपू० | |
| १२.९ × १ | ११ | ४७ | " | " | | पू०* | |
| ८.८ × ३.८ | १० | २१ | " | " | | अपू० | महावाक्यप्रकारविधिश्च । |
| ९.१ × १.९ | १२ | २९ | " | " | | " | |
| १० × ४.१ | १० | ४१ | " | " | | " | अलातशान्त्याख्यं प्रकरणम् । |
| १२ × ३.६ | १२ | ६० | वङ्ग. | " | | " | |
| ९.४ × ४ | ८ | ३६ | " | " | | पू० | |
| १२ × ६ | ११ | ३४ | " | " | | " | |
| १२.९ × ६.१ | ११ | ३९ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------|---------------------------------------|------------------------|
| २८३५७ | महावाक्यार्थः | | १-९ । |
| २८३५८ | शारीरकमीमांसाभाष्यं सटीकम् | शङ्कराचार्यः, टी. गोविन्दानन्दः | ३२५ । (गणनया) |
| २८३५९ | त्रिपुरीप्रकरणं सटीकम् | भगवदानन्दः | १-७ । |
| २८३६० | वेदान्तकल्पलतिका | मधुसूदनसरस्वती | १-७ । |
| २८३६१ | वेदान्तसारटीका | नृसिंहसरस्वती | २-६५ । |
| २८३६२ | सिद्धान्तदीपः | | १-५५ । |
| २८३६३ | पञ्चदशी सटीका | विद्यारण्यमुनिः, टी. का. रामकृष्णः | १-५, १०-९५ । |
| २८३६४ | वेदान्तसारटीका | नृसिंहसरस्वती | १-३२ । |
| २८३६५ | पञ्चपादिकाविवरणम् | प्रकाशात्मभगवान् | ५१-१६५ । |
| २८३६६ | वेदान्तरहस्यम् | वेदान्तवागीश- भट्टाचार्यः | १-५ । |
| २८३६७ | उपदेशसाहस्री सटीका | | १-४५ । |
| २८३६८ | अपरोक्षानुभवः | शङ्कराचार्यः | १-९ । |
| २८३६९ | अज्ञानबोधिनी | ” | १-१६ । |
| २८३७० | पञ्चदशी सटीका | विद्यारण्यः टी. का. रामकृष्णः | १-३५, ६१-९८ । |
| २८३७१ | तत्त्वप्रदीपिकाटीका | प्रत्यक्स्वरूपः | २८६ । (गणनया) |
| २८३७२ | आर्या सटीका | शङ्कराचार्यः | १-४१ । |
| २८३७३ | पञ्चपादिका | | १-८६ । |
| २८३७४ | प्रभावली | | १-१० । |
| २८३७५ | पञ्चदशी सटीका | भारतीतीर्थः, टी. का. रामकृष्णः | १-१३९, १३९-१६१, १-३७ । |
| २८३७६ | वेदान्तपरिभाषा खटिप्पणा | धर्मराजाध्वरीन्द्रः | १-२६ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्व- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|---|
| ५ × ३.७ | १० | १८ | दे.ना. | का. | | पू० | पञ्चीकरणवार्त्तिकञ्च । |
| १४.८ × ८.६ | १७ | ४१ | " | " | | "* | |
| ९.९ × ४.१ | १२ | ४१ | " | " | | " | |
| १० × ४.४ | १४ | २२ | " | " | | " | |
| ८.७ × ३.९ | ९ | ३४ | " | " | | अपू० | |
| १४.८ × २.८ | १६ | १०५ | " | " | | " | संक्षेपशारीरकव्याख्या । |
| ९.१ × ५ | ८ | २५ | " | " | | " | पददीपिका । |
| १४ × ५.४ | ११ | × | " | " | १९११ | पू० | |
| १२.५ × ३.७ | १० | ६४ | " | " | | अपू० | |
| ११ × ४.१ | ९ | ४८ | " | " | | पू० | |
| १० × ५.४ | १८ | ३२ | " | " | | अपू० | |
| ९.९ × ४.८ | १० | ३२ | " | " | १७५१ | पू० | |
| ८.८ × ४.१ | ९ | २७ | " | " | | " | अध्यात्मविद्योपदेशविधिरिति- नामान्तरम् । |
| १३.५ × ६.३ | २० | ६७ | " | " | | अपू० | |
| १२ × ३.८ | ९ | ५६ | " | " | १५५१ | " | १-४ परिच्छेदः । नयनमोदिनी । |
| ९.२ × ४.२ | २७ | १४ | " | " | श. १७४४ | पू० | |
| ११.२ × ३.६ | ९ | ३९ | " | " | | " | नवमवर्णकान्ता । |
| १०.१ × ५ | १० | ३२ | " | " | | अपू० | |
| ९.६ × ४.९ | १५ | ४० | " | " | | पू० | |
| ९.९ × ४.७ | १२ | ३८ | " | " | | " | अन्ते राजराजेश्वरीस्तोत्रञ्च । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|--------------------------|-----------------------|
| २८३७७ | पञ्चपादिकाविवरणम् | प्रकाशात्मा | १-२८० । |
| २८३७८ | बोधसारः सटीकः | नरहरिः टी.का. दिवाकरः | १-३७० । |
| २८३७९ | वेदान्तसिद्धान्तदीपिका | शङ्कराचार्यः | १-६ । |
| २८३८० | ब्रह्मसूत्रम् | | १-१३ । |
| २८३८१ | " | | १-१६ । |
| २८३८२ | शारीरकमीमांसासूत्रम् | | १-१७ । |
| २८३८३ | आत्मबोधप्रकरणं सटीकम् | शङ्कराचार्यः | १-१६ । |
| २८३८४ | " | " | १-८ । |
| २८३८५ | तत्त्वानुसन्धानम् | | १-२५ । |
| २८३८६ | कोशरत्नप्रकाशः | | ११० । (गणनया) |
| २८३८७ | वेदान्तकौमुदीटीका | रामाद्वयः | १-११६, १२०-१६९ । |
| २८३८८ | वेदान्तकौमुदी | " | १-१५, १७-१८२ । |
| २८३८९ | अपरोक्षानुभूतिः | विद्यारण्यमुनिः | २-४ । |
| २८३९० | वैयासिकन्यायमाला | भारतीतीर्थमुनिः | १-२४ । |
| २८३९१ | वेदान्तसारटीका | नरसिंहयोगी- सरस्वती | ४१-४८ । |
| २८३९२ | नैष्कर्म्यसिद्धिः सटीका | | १-९ । |
| २८३९३ | वेदान्ततत्त्वविवेचनम् | अखण्डानन्दमुनिः | १५६-१६५ । |
| २८३९४ | वेदान्तसारः | सदानन्दः | १-२१ । |
| २८३९५ | महावाक्यविवरणम् | गोविन्दपादशिष्यः | २ । (गणनया) |
| २८३९६ | वेदान्तसारटीका | | १-३१ । |
| २८३९७ | ब्रह्मानुसन्धानम् | शङ्कराचार्यः | १-३ । |
| २८३९८ | पञ्चपादिकाविवरणम् | श्रीप्रकाशस्वामी | ६-१०७, ३४-५६, ७४-८७ । |
| २८३९९ | पञ्चीकरणविवरणम् | आनन्दगिरिः | १-४ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| १२२ × ३७ | ८ | ३३ | दे. ना. | का. | | पू० | बोधसारार्थदीप्तिनाम्नी टीका । |
| १३१ × ६७ | १४ | ६१ | " | " | | " | |
| १२९ × ६६ | १८ | ६३ | " | " | | " | |
| १०१ × ४६ | १० | २९ | " | " | | " | |
| ९१ × ३७ | ६ | २९ | " | " | | " | |
| ११ × ४६ | ८ | २७ | " | " | | " | |
| १० × ४२ | ९ | ४२ | " | " | | " | |
| ८६ × २६ | ७ | ४६ | " | " | | अपू० | |
| १०६ × ३६ | ८ | ३३ | " | " | | " | |
| १०७ × ३८ | १० | ४१ | " | " | | " | |
| १०२ × ४१ | ८ | ४९ | " | " | श. १४३१ | " | वेदान्ततत्त्वविवेकटीकायाष्टीका । भावदीपिकाख्या । |
| १०४ × ४ | ८ | ४८ | " | " | " १६७१ | " | |
| ९८ × ४३ | १७ | ३९ | " | " | | " | |
| १२७ × ४ | ७ | ४३ | " | " | | पू० | |
| १०१ × ४८ | ११ | ३२ | " | " | | अपू० | |
| १०९ × ४३ | ११ | ३६ | " | " | | " | सुबोधिनी । |
| १०३ × ४६ | १० | ४९ | " | " | | " | |
| ९४ × ४२ | ८ | ४० | " | " | | पू० | |
| ८६ × ४३ | १४ | ३० | " | " | | अपू० | |
| ११४ × ४४ | ११ | ६३ | " | " | | " | |
| ६२ × ४२ | ९ | १९ | " | " | | पू० | |
| १० × ४३ | १६ | ४९ | " | " | | " | |
| ८४ × ३६ | १० | ३६ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | प्रत्यकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------------|--------------------------------------|--|
| २८४०० | विवरणप्रमेयसङ्ग्रहः | | ७० । (गणनया) |
| २८४०१ | गौडपादकारिका सभाष्या | गौडपादाचार्यः, भा.का.शङ्कराचार्यः | ६-६७ । |
| २८४०२ | वेदान्तसङ्ज्ञाप्रकरणं सटीकम् | | ५-३२ । |
| २८४०३ | अद्वैतश्रुतिसारः | | १-१५, ६५-१११, १११-११६, ११६-१२८, १३१-१५१, १५१-१५२, १५२-१८१, १८१-१९७, १-४४ । |
| २८४०४ | वेदान्तसङ्ग्रहः | | १-१५ । |
| २८४०५ | ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यं सटीकम् | टी. का. गोविन्दानन्दसरस्वती | १-८१ । |
| २८४०६ | आत्मज्ञानोपदेशः | शङ्कराचार्यः | ६-२५ । |
| २८४०७ | पञ्चीकरणम् | | १-२ । |
| २८४०८ | मिथ्यात्वनिरुक्तिः | | ९ । (गणनया) |
| २८४०९ | वेदान्तसारः सटीकः | सदानन्दः, टी. का. नृसिंहसरस्वती | १-३९ । |
| २८४१० | प्रपञ्चमिथ्यात्वम् | | १-१३ । |
| २८४११ | द्वादशमहावाक्यं सव्याख्यानम् | शङ्कराचार्यः | १-१३ । |
| २८४१२ | उपाधिवादः | | २-१४ । |
| २८४१३ | सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहः | | १, ३-११ । |
| २८४१४ | ” | | २७-३९, ४२-४७ । |
| २८४१५ | तत्त्वानुसन्धानं सटीकम् | | २ । (गणनया) |
| २८४१६ | वेदान्तसूत्रवृत्तिः | | २-१२ । |
| २८४१७ | अद्वैतचिन्ताकौस्तुभः | | १-४ । |
| २८४१८ | हृद्दृश्यविवेकः सटीकः | | २०-४५ । |
| २८४१९ | तात्पर्यचन्द्रिका | व्यासयतिः | १-१२, ४०-१४७, १-९३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--|
| ९°१ × ३ | १० | ५६ | चङ्ग | का. | | अपू० | |
| १० × ४°४ | ११ | ३६ | दे. ना. | " | १८२४ | " | |
| १३ × ६°७ | १८ | ५२ | " | " | | " | |
| १४°५ × ५°४ | १० | ४५ | " | " | | " | |
| ८°५ × ४°१ | १० | २७ | " | " | | " | |
| १२°१ × ६°२ | १२ | ४० | " | " | | " | |
| ९°५ × ४°१ | ८ | ३१ | " | " | | " | त्रिपुरी-स्वरूप-बालबोधिनी-महा- वाक्यार्थश्च । |
| ७°६ × ३°६ | ६ | २७ | " | " | | पू० | |
| ६°८ × ३°८ | १२ | ३५ | " | " | | अपू० | |
| १२°९ × ५ | ९ | ४३ | " | " | | पू० | |
| ६°४ × ३°८ | १० | ४० | " | " | | " | |
| २°९ × ४°४ | १५ | ४७ | " | " | १८५३ | अपू० | |
| ९°५ × ३°८ | ९ | ४१ | " | " | | " | |
| ११°४ × ४°१ | १३ | ५० | " | " | | " | |
| ११°१ × ४°५ | १२ | ५० | " | " | | " | |
| १२°७ × ६°२ | १९ | ४५ | " | " | | " | |
| १०°६ × ४°६ | १४ | ४७ | " | " | | " | |
| १२°५ × ६°३ | १५ | ३२ | " | " | | " | |
| ९°२ × ४°३ | ८ | २८ | " | " | | " | |
| १०°२ × ४°४ | १० | ४८ | " | " | | पू० | १ अ० १ पा०, १ अ० ४ पा०, द्वितीयाध्यायश्च । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|---------------------------|---------------------------|
| २८४२० | विज्ञानव्याख्या | | २ । (गणनया) |
| २८४२१ | वेदान्तरहस्यम् | | १३ । (गणनया) |
| २८४२२ | प्रमाणरत्नमाला | आनन्दबोधयतिः | १-२० । |
| २८४२३ | प्रमाणरत्नमालानिवन्धः | अनुभूतिस्वरूपा- चार्यः | १-३४ । |
| २८४२४ | श्लोकपञ्चकविवरणम् | | १-६ । |
| २८४२५ | संशयखण्डनम् | | १-९ । |
| २८४२६ | सिद्धान्तदीपः | हयग्रीवाश्रमः | १-१३१ । |
| २८४२७ | विद्वन्मण्डनम् | विट्ठलनाथदीक्षितः | १-५६ । |
| २८४२८ | विद्वन्मण्डनटीका | | १-६ । |
| २८४२९ | विद्वन्मण्डनविवरणम् | पुरुषोत्तमः | १-१०१ । |
| २८४३० | विपक्षविक्षेपणम् | वेणीदत्तः | १-६, ६-१५, १५-१६, १६-२४ । |
| २८४३१ | विपक्षविक्षेपणटीका | " | १-२२ । |
| २८४३२ | वेदान्तकल्पतरुः | अमलानन्दः | ६३ । (गणनया) |
| २८४३३ | रत्नप्रभा | गोविन्दानन्दः | १५६, १६२-१८४ । |
| २८४३४ | आत्मबोधः | शङ्कराचार्यः | १-६ । |
| २८४३५ | ब्रह्मसूत्रप्रदीपः | रघूत्तमयतिः | १-४८ । |
| २८४३६ | आर्याऽऽत्मलाभप्रकरणम् | शङ्कराचार्यः | १-१२ । |
| २८४३७ | आर्यापञ्चाशीतिः | शेषनागः | २-१२ । |
| २८४३८ | ज्ञानबोधः | | १-२ । |
| २८४३९ | सुसुक्ष्मसर्वस्वम् | | १-१९ । |
| २८४४० | लघुचन्द्रिका | ब्रह्मानन्दः | ८३-२१३, २१३-२५१ । |
| २८४४१ | पञ्चीकरणवार्त्तिकम् | सुरेश्वराचार्यः | १-८ । |
| २८४४२ | अध्यात्मविद्योपदेशविधिः | शङ्कराचार्यः | १-२३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|------------------------------|
| ८५ × ६ | १२ | १९ | दे. ना. | का. | | अपू० | यत्तिकर्मकाण्डमपि । |
| ८५ × ६ | १५ | २५ | " | " | | " | |
| ११९ × ३५ | ८ | ४८ | वज्र | " | | पू० | |
| ११९ × ३४ | ११ | ५६ | " | " | | " | |
| १२२ × ४८ | ११ | ३९ | दे. ना. | " | | " | |
| १२८ × ४८ | १० | ५३ | " | " | | " | सुवर्णसूत्राख्यम् । |
| ९८ × ४२ | ११ | ४२ | " | " | | " | |
| ९३ × ४१ | १२ | २८ | " | " | | " | |
| ११५ × ४७ | ९ | ३७ | " | " | | अपू० | |
| १२२ × ४९ | ११ | ४१ | " | " | १८५३ | पू० | |
| ८५ × ४ | १० | ३९ | " | " | १७४२ | " | युक्तिवरुथिनीनाम्नी टीका । |
| ८७ × ४ | ९ | ३२ | " | " | | " | |
| १२१ × ४७ | ११ | ५९ | " | " | | अपू० | |
| १० × ४४ | ११ | ३८ | " | " | | " | |
| ८५ × ४२ | ११ | २४ | " | " | | पू० | |
| १०१ × ३७ | ९ | ३६ | " | " | | " | शारीरकमीमांसाभाष्यन्याख्या । |
| ९५ × ४ | ८ | २५ | " | " | श. १६८८? | " | |
| १०५ × ४६ | १० | ३१ | " | " | | अपू० | |
| ६५ × ३३ | ८ | २० | " | " | | " | |
| ८२ × ४५ | ९ | २४ | " | " | | " | |
| १४२ × ५४ | ९ | ४८ | " | " | | " | अद्वैतसिद्धिटीका । |
| ६७ × ३६ | ८ | १९ | " | " | | पू० | |
| ९२ × ४४ | ८ | २८ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|--|------------------------------|
| २८४४३ | अपरोक्षानुभूतिः | शङ्कराचार्यः, | १०-११ । |
| २८४४४ | अपरोक्षानुभूतिः सटीपिका | दी. का. विद्यारण्यः | १-३८ । |
| २८४४५ | अद्वैतसिद्धिः सटीका | मधुसूदनसरस्वती, टी का. ब्रह्मानन्दः | १-४१ । |
| २८४४६ | खण्डनखण्डखाद्यं सटीकम् | श्रीहर्षः, टी.का. शङ्करः | १-८ । |
| २८४४७ | तत्त्वप्रदीपिकाव्याख्या | प्रत्यग्रूपः | १-९३ । |
| २८४४८ | वादिभूषणम् | पुरुषोत्तमाचार्यः | १-१० । |
| २८४४९ | वाक्यार्थ रत्नप्रभा | वेणीदत्ततर्कवागीश | १-५ । |
| २८४५० | ब्रह्मसूत्रवैकुण्ठभाष्यम् | | १-३ । |
| २८४५१ | भेदजयश्रीः | वेणीदत्ततर्कवागीशः | १-७६ । |
| २८४५२ | भेदोज्जीवनम् | व्यासयतिः | १-१५ । |
| २८४५३ | " | " | १-१३ । |
| २८४५४ | मध्वमुखालङ्कारः | वनमाली | १-७० । |
| २८४५५ | मिथ्यात्ववादरहस्यम् | | १-१६ । |
| २८४५६ | मिथ्यात्वावर्तकूटभङ्गः | | १-५ । |
| २८४५७ | मुक्तिविमर्शः | वेणीदत्ततर्कवागीशः | १-९ । |
| २८४५८ | वाक्यार्थसङ्ग्रहः | शठकोपमुनिः | १-३ । |
| २८०५९ | आत्मबोधः सटीकः | शङ्कराचार्यः | १-१५ । |
| २८४६० | शतदूषणीटीका | | १०७-१५७, १५९-२१५ । |
| २८४६१ | पञ्चपादिका | | ५-३३ । |
| २८४६२ | महावाक्यव्याख्या | | १५-३९, ४१-४३, ४५-४६, ५७-६० । |
| २८४६३ | खण्डनखण्डखाद्यं सटीकम् | श्रीहर्षः | १-४८, ४८-१७७ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|-------------------------|---------------------------|
| ६ × ३५ | १० | २५ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| १४ × ५४ | ११ | ४३ | " | " | | पू० | |
| १४*८ × ७*६ | १५ | ५७ | " | " | | अपू० | टीका, लघुचन्द्रिका । |
| १०*८ × ५*५ | ३० | १७ | " | " | | " | |
| ११*४ × ४*६ | १६ | ५४ | " | " | | " | नयनप्रसादिनीसमाख्या । |
| १० × ३*४ | ९ | ५९ | " | " | | पू० | |
| ९*९ × ४*३ | २० | ६४ | " | " | १७४४ | " | ब्रह्मसूत्रव्याख्या । |
| १०*२ × ४*६ | १४ | ४७ | " | " | | अपू० | |
| ९*२ × ४*५ | ८ | ३४ | " | " | | पू० | |
| १०*४ × २*२ | ६ | ४६ | " | " | | " | |
| ९*८ × ५ | १० | ३५ | " | " | १८५९ | " | |
| ९*८ × ४*३ | १० | ३४ | " | " | | " | भास्वतमण्डनं नामान्तरम् । |
| १०*३ × ४*५ | ९ | ३५ | " | " | १८२३ | " | |
| ११*१ × ४*८ | १४ | ४० | " | " | | " | |
| १०*८ × २*४ | ६ | ५० | " | " | १०५० | " | |
| १० × ४*३ | १० | ४५ | " | " | | " | |
| १०*१ × ४*४ | ९ | ४२ | " | " | | " | |
| १०*६ × ४*४ | ९ | ४५ | " | " | | अपू० | |
| ८*१ × ४*७ | १३ | ३४ | " | " | श. १६६६ | " | |
| ६*९ × ४ | ७ | १९ | " | " | | " | |
| १४*२ × ५*४ | ६ | १४ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------|--|-------------------|
| २८४६४ | उपदेशसाहस्री सटीका | शङ्कराचार्यः, टी. का. रामतीर्थः | २० । (गणनया) |
| २८४६५ | शरीरकमोमांसाभाष्यटीका | आनन्दगिरिः | ३५ । (गणनया) |
| २८४६६ | निरोधलक्षणं सटीकम् | टी. का. हरिदासः | १-१४ । |
| २८४६७ | तर्कताण्डवम् | व्यासयतिः | १-३४३ । |
| २८४६८ | तत्त्वविवेकः सविवरणः | आनन्दतीर्थः, वि. का. जयतीर्थः | १-७ । |
| २८४६९ | तत्त्वविवेकटीका | व्यासतीर्थः | १-१२ । |
| २८४७० | तत्त्वप्रकाशिकाविवरणटीका | व्यासयतिः | १-४० । |
| २८४७१ | तत्त्वप्रकाशिकाविवरणम् | जयतीर्थमिश्रः | १-२० । |
| २८४७२ | तत्त्वप्रदीपिकाटीका | | ४-८५ । |
| २८४७३ | „ | सुखप्रकाशमुनिः | १० । (गणनया) |
| २८४७४ | पञ्चीकरणवार्त्तिकम् | सुरेश्वराचार्यः | २-८ । |
| २८४७५ | वेदान्तस्यमन्तकम् | | १-७ । |
| २८४७६ | स्वात्मनिरूपणं सटीकम् | शङ्कराचार्यः, टी. का. सच्चिदा- नन्दसरस्वती | १-३४ । |
| २८४७७ | न्यायरत्नावली | | २-१५९ । |
| २८४७८ | वाक्यवृत्तिः सटीका | शङ्कराचार्यः, टी. का. रामानन्दः | २-९९ । |
| २८४७९ | भेदधिकारटीका | | २-१०६ । |
| २८४८० | भेदधिकारः | नृसिंहाश्रममुनिः | २-१८ । |
| २८४८१ | नैष्कर्म्यसिद्धिः | शङ्कराचार्यः | ३-३८ । |
| २८४८२ | वेदान्तसारटीका | नृसिंहसरस्वती | २-४५ । |
| २८४८३ | वेदान्तसूत्रवृत्तिः | | २-४८ । |
| २८४८४ | स्वाराज्यसिद्धिः सटीका | शङ्कराचार्यः | ६-२२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| १०'३×४'३ | १४ | ४८ | दे. ना. | का. | | अपू० | भावप्रकाशिका । मन्दारमञ्जरीसमाख्या । |
| १०'६×४'१ | १२ | ५५ | " | " | | " | |
| १२'८×१'९ | ११ | ५१ | " | " | १८५४ | पू० | |
| १०'९×४'६ | ९ | ३८ | " | " | | " | |
| १०'२×४'३ | १० | ४६ | " | " | | " | |
| १०'४×४'३ | १० | ५५ | " | " | | " | |
| ९'८×४'३ | १० | ४८ | " | " | १७६८ | " | |
| १०'३ × २'४ | ६ | ५१ | " | " | १७६७ | " | |
| ११'८×३'६ | ७ | ४९ | " | " | | अपू० | |
| १०'५×३'५ | ७ | ५० | " | " | १६५८ | " | |
| ८'४ × ३'६ | ७ | २३ | " | " | | " | |
| १०'८×५'५ | १४ | ३७ | " | " | | पू० | |
| १२'५×४'९ | १० | ५४ | " | " | | " | |
| १०'४×४'५ | १० | ५० | " | " | | " | |
| १०×४'४ | ९ | ३५ | " | " | | अपू० | टीका प्रकाशिका । |
| ९'३×४'२ | ९ | ३३ | " | " | | " | |
| १२'२×४'९ | ९ | ४४ | " | " | | " | |
| ९'९×४'३ | ११ | ३५ | " | " | | " | |
| १३'९×५'५ | ९ | ५१ | वङ्ग. | " | | " | |
| ११×४'५ | ९ | ३७ | दे. ना. | " | | " | |
| ११'९×५ | १३ | ६० | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------|--|--------------------|
| २८४८९ | अध्यात्मचिन्तामणिः सटीकः | सौमिजामातृ- मुनिः, टी. का. सुन्दरजामातृमुनिः | २-४० । |
| २८४८६ | पोडशमहावाक्यानि | | १ । |
| २८४८७ | तत्त्वविवेकः | | ५-२० । |
| २८४८८ | प्रत्यक्तत्त्वविवेकदीपिका | | १-३ । |
| २८४८९ | सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहः | अप्पय्यदीक्षितः | २६-११० । |
| २८४९० | " | " | २-२१ । |
| २८४९१ | " | " | २-३० । |
| २८४९२ | वेदान्तचिन्तामणिः | शुद्धानन्दसरस्वती | १-१६८ । |
| २८४९३ | आत्मबोधप्रकरणं सटीकम् | शङ्कराचार्यः | २-१० । |
| २८४९४ | अद्वैतामृतम् | जगन्नाथसरस्वती | २-२३ । |
| २८४९५ | वेदान्तकल्पतरुः | | १३-१४ । |
| २८४९६ | आत्मबोधप्रकरणं सटीकम् | शङ्कराचार्यः | १-१५ । |
| २८४९७ | वाक्यसुधा सव्याख्या | " व्या.का-ब्रह्मानन्द- भारती | २-३७ । |
| २८४९८ | शारीरकशास्त्रदर्पणम् | | १६७ । (गणनया) |
| २८४९९ | वेदान्ततत्त्वविवेकः | नृसिंहाश्रमः | २-३९ । |
| २८५०० | लघुचन्द्रिका | ब्रह्मानन्दः | १, ३-२४ = २५-१२६ । |
| २८५०१ | " | " | ३५-६१ । |
| २८५०२ | " | " | १-१२१ । |
| २८५०३ | " | " | ७६-३७५ । |
| २८५०४ | अद्वैतदीपिका | | १५८-२२६ । |
| २८५०५ | " | | ६८ । (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | सं- ख्या | लिपिकालः | पूर्णपूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------------|----------|-----------------------|------------------------|
| १२ × ४८ | ११ | ५७ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ८५ × ४२ | १० | २५ | " | " | | पू० | |
| ९८ × ४२ | ७ | २५ | " | " | | अपू० | |
| ८७ × ३७ | ११ | ३३ | " | " | | " | |
| ९५ × ४५ | १० | ३८ | " | " | १८१९ | " | |
| ९३ × ५५ | १२ | ३२ | " | " | | " | प्रथमपरिच्छेदः । |
| ९३ × ४ | ११ | ३३ | " | " | | " | २-४ परिच्छेदाः । |
| १० × ४५ | ११ | ५३ | वङ्ग. | " | | पू० | |
| १०६ × ४९ | १० | ४५ | दे. ना. | " | | अपू० | |
| ९३ × ४५ | १३ | ४५ | " | " | | " | |
| १२८ × ४८ | १० | ५५ | " | " | | " | |
| १०९ × ४२ | १० | ३७ | " | " | | पू० | |
| ७५ × ४ | १० | ३० | " | " | | अपू० | |
| १० × ३७ | ९ | ४० | वङ्ग. | " | | " | १-४ अध्यायाः । |
| १० × ४३ | ११ | ४३ | दे. ना. | " | | " | |
| ११२ × ४८ | १३ | ४३ | " | " | | " | अद्वैतसिद्धिव्याख्या । |
| १०३ × ४८ | १४ | ३७ | " | " | | " | " |
| १०७ × ४७ | १३ | ३७ | " | " | | " | " |
| ११२ × ४८ | १२ | ५७ | " | " | | " | " |
| १०३ × ४५ | ११ | ४३ | " | " | | " | ३ परिच्छेदः । |
| १२८ × ५ | १३ | ४६ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------|--|---|
| २८५०६ | वेदान्तकतकः | नीलकण्ठः | १-६२ । |
| २८५०७ | अद्वैतदीपिकाटीका | सुन्दरराजः | १-६०, १०१-१७० । |
| २८५०८ | अद्वैतदीपिका | | ५-७८, ७८-१४१ । |
| २८५०९ | उपदेशसाहस्री | | १-२२, २५-३८ । |
| २८५१० | स्वात्मनिरूपणं सव्याख्यम् | शङ्कराचार्यः, व्या. का. सच्चिदानन्द- सरस्वती | २-५१ । |
| २८५११ | पञ्चपादिकाविवरणम् | प्रकाशात्मयतिः | २, ४-१४६ । |
| २८५१२ | पञ्चपादिका | | २-१३ । |
| २८५१३ | " | | २-१५ । |
| २८५१४ | " | | १९ । (गणनया) |
| २८५१५ | पञ्चपादिकाटीका | | २-१२८ । |
| २८५१६ | पञ्चदशीटीका | रामकृष्णः | ९, १२-१३, २४, २६, ३५, ३९-४०, ५८ । |
| २८५१७ | पञ्चदशी सटीका | विद्यारण्यमुनिः, टी.का.रामकृष्णः | ३६-२१४ । |
| २८५१८ | पञ्चदशीटीका | रामकृष्णः | २-१८, २०-३८, ४०-४३, ५७-६३, ६५-८१, १-१४ । |
| २८५१९ | " | " | १२५-१५७, १५९-१८२ । |
| २८५२० | ब्रह्मतर्कस्तवविवरणम् | | ३-३४ । |
| २८५२१ | अद्वैतमकरन्दः | | २-२१ । |
| २८५२२ | शारीरकमीमांसाभाष्य- व्याख्या | | ८२ । (गणनया) |
| २८५२३ | पञ्चपादिकाविवरणम् | नृसिंहाश्रममुनिः | ५३ । (गणनया) |
| २८५२४ | पञ्चपादिका | | २-६३ । |
| २८५२५ | " | | २-३० । |
| २८५२६ | वेदान्ततत्त्वविवेकटीका | नृसिंहाश्रममुनिः | ८० । (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आघारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|-------------------------|-----------------------|
| ९°७ × ३°९ | ९ | ४३ | दे.ना. | का. | | पू० | प्रथमपरिच्छेदः । |
| ९°७ × ४°६ | १२ | ३३ | " | " | | अपू० | |
| ११°१ × ४°६ | १० | ४४ | " | " | | " | |
| १० × ४°२ | १० | ३३ | " | " | | " | |
| ९°४ × ४°२ | ८ | ३१ | " | " | १८४० | " | |
| १०°६ × ४°३ | १० | ३९ | " | " | १६२६ | " | |
| ९°९ × ४°४ | १० | ४१ | " | " | | " | |
| १०°६ × ४°३ | १० | ४१ | " | " | | " | |
| १०°६ × ४°३ | १० | ४१ | " | " | | " | |
| ११ × ३°३ | ६ | ४६ | " | " | | " | |
| ११°८ × ६ | १३ | ६२ | " | " | | " | |
| १२ × ४°४ | १२ | ६६ | " | " | | " | |
| १०°७ × ४°९ | १६ | ४८ | " | " | | " | |
| ११°९ × ३°६ | ६ | ४१ | " | " | | " | |
| ९°१ × ३°९ | ७ | ३४ | " | " | | " | |
| ९°१ × ४°४ | ११ | ३६ | " | " | | " | |
| ११°१ × ६°१ | १४ | ३९ | " | " | | " | आमती । |
| १० × ३°६ | ११ | ३६ | " | " | | " | |
| १०°८ × ३°६ | ९ | ४० | " | " | | " | |
| १०°४ × ४°४ | १६ | ४८ | " | " | | " | |
| ८°८ × ६ | १३ | ३३ | " | " | | " | तत्त्वविवेकदीपनं वा । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------|------------------------------|-------------------|
| २८५२७ | माध्वशास्त्रमुखावमर्दनम् | अप्पय्यदीक्षितः | २-८३ । |
| २८५२८ | वेदान्तनयभूषणम् | | २-४९ । |
| २८५२९ | भेदधिकारः | नृसिंहाश्रममुनिः | १-१६ । |
| २८५३० | वेदान्तस्यमन्तकः | | १ । |
| २८५३१ | विद्वन्मण्डनविवरणम् | पुरुषोत्तमः | २-१९, २१-११, ९९ । |
| २८५३२ | प्रत्यक्तत्त्वचिन्तामणिः | | १-२४, २४-८८ । |
| २८५३३ | महावाक्यार्थबोधः | | १-१६१ । |
| २८५३४ | वेदान्तसारदीपिका | आपदेवः | १-४८ । |
| २८५३५ | भामती | वाचस्पतिमिश्रः | ८९ । (गणनया) |
| २८५३६ | तत्त्वविन्दुः | ,, | १-५३ । |
| २८५३७ | ब्रह्मसूत्रभाष्यटीका | जयतीर्थमुनिः | १-१५४ । |
| २८५३८ | वेदान्तस्यमन्तकः | | १-६ । |
| २८५३९ | विवरणप्रमेयसङ्ग्रहः | विद्यारण्यमुनिः | २१७ । (गणनया) |
| २८५४० | तत्त्वप्रकाशिकाटीका | | १-८७ । |
| २८५४१ | वेदान्तपरिभाषा | | २-३७ । |
| २८५४२ | जीवन्मुक्तलक्षणम् | दत्तात्रेयः | १ । |
| २८५४३ | वैयासिकन्यायमाला | भारतीतीर्थः | १-९३ । |
| २८५४४ | अनुभवपञ्चकम् | | ३-११ । |
| २८५४५ | उपदेशसाहस्रीटीका | आनन्दज्ञानयतिः | १-१७३ । |
| २८५४६ | महावाक्यविवरणम् | शङ्कराचार्यः | १-९ । |
| २८५४७ | वेदान्तहस्त्यम् | वेदान्तवागीश- भट्टाचार्यः | १-७ । |
| २८५४८ | आत्मबोधः | शङ्कराचार्यः | १-२३ । |
| २८५४९ | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | ,, | ८३ । (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आक्षरः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|--------|----------|-------------------------|----------------------------------|
| ९ × ४'४ | १६ | ३३ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| १०'८ × ६ | १३ | ४६ | " | " | | " | |
| ११'६ × ४'७ | ११ | ४१ | " | " | | पू० | |
| १०'७ × ६ | १४ | ३४ | " | " | | " | कर्मतत्त्वनिरूपणमात्रम् । |
| १२'६ × ४'८ | १० | ४८ | " | " | | अपू० | |
| १२'६ × ६'६ | १२ | ४७ | " | " | | " | |
| ९'७ × ४'३ | ७ | ३० | " | " | | पू० | |
| ९ × ४'२ | ९ | ४१ | " | " | | " | |
| १०'७ × ४ | ७ | ४४ | " | " | | अपू० | ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यव्याख्या । |
| ११ × ७ | २० | २१ | " | " | | पू० | |
| ११ × ४'४ | १६ | ४६ | " | " | | " | |
| ७ × ३'७ | ८ | १९ | " | " | | " | प्रमाणनिर्णयाख्यः प्रथमकिरणः । |
| ११ × ४ | ९ | ६१ | " | " | | अपू० | |
| १०'९ × ३'४ | ७ | ४९ | " | " | | " | |
| ११'७ × ४'९ | ११ | ४१ | " | " | | " | |
| १०'२ × ४'३ | १० | ४२ | " | " | | पू० | |
| १२'४ × ६'८ | ११ | ६७ | " | " | | " | |
| ८'४ × ४'६ | ११ | २४ | " | " | | अपू० | |
| ९'९ × ४'६ | ७ | ३१ | " | " | | पू० | |
| ९'६ × ४ | ८ | २८ | " | " | १७२७ | " | |
| १०'१ × ४'४ | १० | ३१ | " | " | | " | |
| ७'२ × ४'८ | १३ | २० | " | " | | " | |
| ११'७ × ४'२ | १३ | ६४ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|-------------------------------------|--------------------------------------|
| २८५५० | आत्मबोधः | शङ्कराचार्यः | १-७ । |
| २८५५१ | आगमशास्त्रविवरणम् | " | ९ । (गणनया) |
| २८५५२ | आत्मज्ञानोपदेशः | | १-६ । |
| २८५५३ | वैयासिकन्यायमाला | भारतीतीर्थः | २-७५ । |
| २८५५४ | न्यायसुधा | | १, ४-१६, २१-७९ । |
| २८५५५ | पञ्चप्रकरणौ | | ३-१२ । |
| २८५५६ | सच्चिदानन्दानुभवप्रदीपिका | | १-२३ २५-३९, ४१ । |
| २८५५७ | अद्वैतमकरन्दः सव्याख्यः | लक्ष्मीधरकविः | १३-१८ । |
| २८५५८ | " | " व्या. का -स्वयं- प्रकाशयतिः | १-१६ । |
| २८५५९ | नैष्कर्म्यसिद्धिः | | १-२३ । |
| २८५६० | वेदान्तसारः | सदानन्दः | २-१२ । |
| २८५६१ | वेदान्तसारटीका | | १-१०, १३-१७ । |
| २८५६२ | अनुभूतिप्रकाशः | विद्यारण्यः | १-३७, १-९ । |
| २८५६३ | " | " | १-२२४ । |
| २८५६४ | शारीरकभाष्यन्यायनिर्णयः | भगवदानन्दज्ञानः | २-८०, १-२१, १-१९, १-८०, १-२३, १-२२ । |
| २८५६५ | वेदान्तसारः | | १-२४ । |
| २८५६६ | तत्त्वानुसन्धानम् | महादेवसरस्वती | १४ । (गणनया) |
| २८५६७ | अपरोक्षानुभूतिः | शङ्कराचार्यः | ५ । " |
| २८५६८ | वेदान्तपरिभाषा | धर्मराजाध्वरीन्द्रः | २७-३९ । |
| २८५६९ | वेदान्तार्थविवेकभाष्यम् | मुकुन्दमुनिः | १-३६ । |
| २८५७० | वेदान्तसारः | सदानन्दः | १ । |
| २८५७१ | वाक्यसुधा | शङ्कराचार्यः | २-३ । |
| २८५७२ | तत्त्वानुसन्धानव्याख्यानम् | महादेवसरस्वती | ४२-५१, ५३-५५ । |

| वाकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--------------------|
| ६० × ४२ | ३६ | १७ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| १०३ × ३९ | ११ | ३७ | " | " | | " | |
| ८३ × ३४ | १५ | ४६ | " | " | | पू० | |
| ११ × ४९ | १५ | ४८ | " | " | | अपू० | |
| ११५ × ४९ | १३ | ५९ | " | " | | " | |
| ९६ × ४४ | १३ | ३५ | " | " | | " | |
| ५९ × ७९ | १४ | २१ | " | " | | " | |
| ९६ × ४६ | १० | ४५ | " | " | | " | |
| १०५ × ४ | १३ | ४७ | " | " | | पू० | |
| १० × ४२ | १३ | ४६ | " | " | | अपू० | |
| १३९ × ५५ | ९ | ४८ | वङ्ग. | " | | " | |
| १३ × ५ | १० | ५२ | " | " | | " | विद्वन्मनोरञ्जनी । |
| १०८ × ४६ | ९ | ३४ | दे. ना. | " | | " | |
| ९५ × ४२ | ७ | ३२ | " | " | श. १५३८ | पू० | |
| १२७ × ४७ | १० | ५९ | " | " | | अपू० | |
| ९७ × ४५ | ८ | २३ | " | " | | पू० | |
| १२१ × ४९ | ८ | ४० | " | " | | अपू० | |
| ९३ × ४२ | १० | ८० | " | " | १८९६ | " | |
| ८७ × ५२ | १३ | ३४ | " | " | श. १६०५ | " | |
| ९९ × ४४ | ११ | ३९ | " | " | १७९६ | " | |
| ९९ × ४७ | १५ | २२ | " | " | १८१९ | " | |
| ७९ × ४५ | १० | २२ | " | " | | " | |
| ९ × ४ | ९ | ३६ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------------|---|-------------------|
| २८५७३ | सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहः | | १-१६ । |
| २८५७४ | महावाक्यविवरणम् | | १-२, ४८-५६ । |
| २८५७५ | आर्यापञ्चाशीतिः | शेपनागः | २-५ । |
| २८५७६ | सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहः | अप्पय्यदीक्षितः | ५३-६८, ७०-८९ । |
| २८५७७ | आत्मबोधः | | १ । |
| २८५७८ | प्रश्नोत्तररत्नावली | शङ्कराचार्यः | १-१६ । |
| २८५७९ | तत्त्वानुसन्धानम् | महादेवसरस्वती | ३-४३ । |
| २८५८० | पञ्चीकरणविवरणम् | आनन्दज्ञानः | ३-१६ । |
| २८५८१ | ब्रह्मसूत्रव्याख्यानम् | | १-३४ । |
| २८५८२ | वेदान्तसिद्धान्तचन्द्रिका सटीका | रामानन्दसरस्वती टी. का. गङ्गाधर- सरस्वती | १-२९ । |
| २८५८३ | वेदान्तसंज्ञानिरूपणम् | | १-१२ । |
| २८५८४ | " | | १-१३ । |
| २८५८५ | शिखामणिः | रामकृष्णाध्वरिः | १-११४ । |
| २८५८६ | वेदान्तपरिभाषासटीका | धर्मराजाध्वरीन्द्रः टी. का. शिवदत्तः | १-७५ । |
| २८५८७ | श्रुत्यर्थदीपिका सटीका | वनमाली टी. का. " | १-३४ । |
| २८५८८ | सिद्धान्तलेशसङ्ग्रह- व्याख्या | अच्युतकृष्णा- नन्दतीर्थः | २-२३४ । |
| २८५८९ | ब्रह्मसूत्रशारीरकभाष्य- व्याख्या | अद्वैतानन्दः | १-५०६ । |
| २८५९० | सृष्टिसंहारप्रकरणम् | | १-४ । |
| २८५९१ | स्वात्मनिरूपणं सव्याख्यम् | शङ्कराचार्यः व्या. का. सच्चिदानन्द- सरस्वती | ६-२७ । |
| २८५९२ | स्वरूपनिर्णयः | सदानन्दः | १-५३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | श्लोक- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णे- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|----------------------------------|
| १°७ × ४°३ | ९ | ४० | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ६°९ × ४ | ७ | २२ | " | " | | " | |
| १० × ४°३ | १० | ४२ | " | " | | " | |
| १०°७ × ४°६ | १० | ४६ | " | " | | " | |
| १°४ × ४°४ | ११ | ३६ | " | " | | पू० | |
| ८°१ × ३°६ | ७ | २२ | " | " | | " | |
| १ × ४ | ७ | ४० | " | " | | अपू० | |
| ६°६ × ४°१ | ८ | १९ | " | " | | " | |
| १३°८ × ६°४ | १० | ६६ | " | " | | " | |
| १०°७ × ६ | २० | ४६ | " | " | | पू० | |
| १२°९ × ६ | १३ | ४८ | " | " | १८७१ | " | |
| १३°२ × ६°२ | ११ | ४४ | " | " | १९०४ | " | |
| १२°७ × ४°८ | १० | ४३ | " | " | १८६३ | " | वेदान्तपरिभाषाव्याख्या । |
| १३°९ × ६°६ | १० | ६७ | " | " | | " | टीकापरिभाषार्थदीपिका । |
| १२°६ × ४°९ | ११ | ६६ | " | " | | " | वेदान्तदीपिकेतिनामान्तरम् । |
| १२°६ × ६°३ | १२ | ४६ | " | " | १८६७ | अपू० | कृष्णालङ्काराख्या । |
| १°६ × ४°६ | १० | ३१ | " | " | | पू० | ब्रह्मविद्याभरणाभिधा १ अध्यायः । |
| १°० × ४ | १० | ३६ | " | " | | अपू० | वेदान्तसिद्धान्ते । |
| १२°९ × ६°६ | १६ | ४१ | " | " | | " | व्याख्या-आर्या । |
| १२ × ४°६ | १२ | ६४ | " | " | | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|--|--------------------|
| २८९९: | सिद्धान्तलेशसङ्ग्रह-कारिका | कृष्णभट्टः अपरनाम-भैरव्याभट्टः | १-१६ । |
| २८९९४ | तत्त्वपरिशुद्धिः | | ३९ । (गणनया) |
| २८९९५ | शुद्धसुसंवेदः | | १ । |
| २८९९६ | बालबोधिनी | शङ्कराचार्यः | १-७ । |
| २८९९७ | अधिकरणमञ्जरी | चित्सुखमुनिः | १-६ । |
| २८९९८ | तत्त्वदीपिकासटीका | तोडकाचार्यः टी. का. सच्चिदानन्दयोगी | १-३९ । |
| २८९९९ | स्वात्मानन्दप्रकाशिका | | १-७ । |
| २८६०० | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | शङ्कराचार्यः | १-८०, १-६२, १-२७ । |
| २८६०१ | संक्षेपशारीरकव्याख्या | विश्ववेदः | १-१२३ । |
| २८६०२ | " | " | १-२९ । |
| २८६०३ | सिद्धान्ततरत्नमाला | श्रीवत्सलाञ्छन-भट्टाचार्यः | १-६८ । |
| २८६०४ | प्रमाणपद्धतिः | आनन्दतीर्थः | १-३१ । |
| २८६०५ | जीवनमुक्तिविवेकः | | १-४२ । |
| २८६०६ | भामती | वाचस्पतिमिश्रः | ६७७ । (गणनया) |
| २८६०७ | सूत्रवैभवमञ्जरी | त्रिमल्लः | १-५८ । |
| २८६०८ | विशिष्टाद्वैतसिद्धान्तः | श्रीनिवासदासः | १-१३ । |
| २८६०९ | पञ्चीकरणविवरणटीका | आनन्दगिरिः | १-१४ । |
| २८६१० | ब्रह्मसूत्रवृत्तिः | रामकिङ्करवर्मा | १९३ । (गणनया) |
| २८६११ | अपरोक्षानुभूतिः | शङ्कराचार्यः | १-१० । |
| २८६१२ | पञ्चदशी | | ७-८ । |
| २८६१३ | स्वबोधः | | १-१३ । |
| २८६१४ | अध्यात्मविद्योपदेशविधिः | शङ्कराचार्यः | १-४१ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|---------------------|
| ८°५ × ३°५ | ८ | ३६ | दे.ना. | का. | १७०३ | पू० | |
| ९°६ × ४°१ | १६ | ४७ | " | " | | अपू० | |
| ९ × ४°६ | १६ | ४४ | " | " | १७५४ | " | |
| ९°८ × ३°१ | ७ | ३९ | " | " | | पू० | |
| १०°४ × ३°९ | ७ | ३८ | " | " | | " | |
| १३°९ × ७°५ | १५ | ४९ | " | " | | " | |
| १०°५ × ४°४ | १३ | ५४ | " | " | | " | |
| ११°३ × ५ | १३ | ४७ | " | " | १८०८ | " | २-३ अध्यायाः । |
| ९°५ × ४°४ | ११ | ४६ | " | " | | अपू० | सिद्धान्तदीपः । |
| ९°८ × ४°१ | ९ | ४२ | " | " | | " | " |
| १०°८ × ३°९ | ११ | ४२ | " | " | १७१४ | पू० | |
| ८°३ × ४ | १० | ३१ | " | " | | " | |
| ८°८ × ३°८ | ११ | ४१ | " | " | १७४७ | " | |
| ११°२ × ३°१ | ५ | ३७ | " | " | १६६३ | अपू० | |
| ९°८ × ४ | ९ | ४० | " | " | | पू० | |
| १२°६ × ४°८ | १० | ४१ | " | " | | " | |
| ९°७ × ५ | १३ | ४१ | " | " | | " | |
| ९°९ × ४°१ | १३ | ३६ | " | " | | "* | |
| ९°६ × ४°४ | ९ | ३३ | " | " | १९०३ | " | |
| ९°५ × ४°७ | १९ | ४६ | " | " | | अपू० | वृत्तिदीपप्रकरणम् । |
| १० × ४°५ | ९ | ३६ | " | " | | पू० | |
| ८ × ४°३ | ७ | २० | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--|--|--------------------------|
| २८६१६ | वेदान्तपरिभाषा | धर्मराजाध्वरीन्द्रः | १-४०, ४२-४८ । |
| २८६१६ | ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्य- सारसङ्ग्रहः | | १-२८ । |
| २८६१७ | सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहः सटीकः | अप्पयदीक्षितः टी. अच्युतकृष्णा- नन्दतीर्थः | १-६३, १-३५, १-२३, १-१३ । |
| २८६१८ | अनुभूतिप्रकाशः | विद्यारण्यः | १-९८ । |
| २८६१९ | शारीरकमीमांसाध्याय- सङ्ग्रहः | | ५६ । (गणनया) |
| २८६२० | नैष्कर्म्यसिद्धिः | | १-२५ । |
| २८६२१ | न्यायदीपावली | आनन्ददीपः | १-१६ । |
| २८६२२ | पञ्चदशी | | ५-६ । |
| २८६२३ | वेदान्तपरिभाषा | धर्मराजदीक्षितः | १-३७ । |
| २८६२४ | प्रणवार्थप्रकाशः | | १-९ । |
| २८६२५ | वेदान्तपरिभाषा | धर्मराजदीक्षितः | १-२९ । |
| २८६२६ | पञ्चदशी सटीका | | १-२ । |
| २८६२७ | वेदान्तसारः | | २ । (गणनया) |
| २८६२८ | खण्डनखण्डखाद्यटीका | पद्मानाभमिश्रः | २-९६ । |
| २८६२९ | जीवन्मुक्तिविवेकः | | ३३ । (गणनया) |
| २८६३० | " | विद्यारण्यः | १-१०९ । |
| २८६३१ | उपदेशसाहस्रीटीका | प्रवरदासः (ब्रह्मवित्) | ७-१८, २१-२६१, २६३-२७१ । |
| २८६३२ | पञ्चदशी सव्याख्या | विद्यारण्यमुनिः ठ्या. का. रामकृष्णः | १ । |
| २८६३३ | " | " | १-१५४ । |
| २८६३४ | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | | २८ । (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | का. वा. | लिपिकालः | पूर्णपूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|------------|----------|------------------------|-------------------------|
| ९'x ४'६ | ८ | ३९ | दे. ना. | का. | १८६९ | पू० | टीकाकृष्णालङ्काराख्या । |
| १०'७ x ४'८ | ११ | ४४ | " | " | | " | |
| १२'७ x ६'६ | १४ | ६९ | " | " | १८४६ | " | |
| १३'३ x ६'२ | १२ | ४४ | " | " | १८६१ | " | |
| ९'४ x ४'२ | ११ | ३७ | " | " | १९१८ | " | |
| १०'८ x ४'९ | १९ | ६७ | " | " | | " | |
| ९'६ x ४ | १० | २७ | " | " | | " | |
| ९'६ x ४'४ | १९ | ६३ | " | " | | अपू० | |
| ९'८ x ४'३ | ९ | ४० | " | " | | पू० | |
| ९ x ४'१ | ७ | २९ | " | " | | अपू० | |
| ११'७ x ६'१ | १९ | ४० | " | " | | पू० | महावाक्यविवेकप्रकरणम् । |
| ११'१ x ४'८ | १६ | ४४ | " | " | | अपू० | |
| ९'८ x ६'८ | २४ | ४७ | " | " | | " | |
| १२'३ x ६ | ९ | ४० | " | " | १८७७ | " | |
| १३'७ x ४ | १४ | ६७ | वङ्ग. | " | | " | |
| ९'४ x ६'१ | १० | ३३ | दे. ना. | " | | पू० | |
| ११ x ४ | १२ | ४० | " | " | | अपू० | |
| १२'४ x ६'६ | १६ | ६२ | " | " | | " | |
| १२'८ x ६'७ | ११ | ६२ | " | " | | पू० | |
| १२'३ x ४'८ | १४ | ६७ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|---------------------------------------|-------------------|
| २८६३५ | वाक्यवृत्तिः सटिप्पणा | शङ्कराचार्यः टि. का. आनन्दगिरिः | १-६ । |
| २८६३६ | वेदान्तकल्पतरुपरिमलः | अप्पयदीक्षितः | १८ । (गणनया) |
| २८६३७ | सारसङ्ग्रहः | दामोदरः | १-११ । |
| २८६३८ | आत्मबोधः सटीकः | शङ्कराचार्यः | २-४, १४-१८ । |
| २८६३९ | ब्रह्मचिन्तनिका | " | १-५ । |
| २८६४० | स्वात्मानन्दप्रकाशः | " | १-१२ । |
| २८६४१ | लघुवाक्यवृत्तिः | | १-२ । |
| २८६४२ | वार्त्तिकप्रकरणम् | विश्वरूपाचार्यः | १-५ । |
| २८६४३ | आगमशास्त्रविवरणम् | " | १-४० । |
| २८६४४ | विवरणतत्त्वदीपनम् | अखण्डानन्दमुनिः | १-२१९ । |
| २८६४५ | वेदान्तसारः | सदानन्दः | २-१६ । |
| २८६४६ | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | शङ्कराचार्यः | १-२५ २९-९५ । |
| २८६४७ | " | " | ८४-११५, ११५ १२९ । |
| २८६४८ | " | " | २८४-३०६ । |
| २८६४९ | " | " | १-११२ । |
| २८६५० | मन्त्रशारीरकम् | नीलकण्ठः | १-४१ । |
| २८६५१ | सङ्क्षेपशारीरकम् | सर्वज्ञात्मा | ६३-८१ । |
| २८६५२ | वेदान्तसारः सटीकः | टी. का. नृसिंह सरस्वती | १-२१ । |
| २८६५३ | अनुभूतिप्रकाशः | | १-१२१ । |
| २८६५४ | भामती | वाचस्पतिमिश्रः | १-८३ । |
| २८६५५ | अखण्डार्थनिरूपणम् | रामानन्दसरस्वती | १-४५ । |
| २८६५६ | तत्त्वविवेकटीकाविवरणम् | " | १-११३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--------------------------------|
| १२°५ × ६°३ | १५ | ४५ | दे. ना. | का. | | पू० | |
| १३ × ५°४ | १३ | ५६ | " | " | | अपू० | वेदान्तकल्पतरुव्याख्यारूपः |
| १०°७ × ४°७ | १३ | ४४ | " | " | | पू० | सर्वमतसारसङ्ग्रह इतिनामान्तरम् |
| १०°१ × ४°५ | ७ | २८ | " | " | | अपू० | |
| ८°६ × ४°४ | १० | २८ | " | " | १९३६ | पू० | |
| ८°२ × ३°९ | ११ | ३१ | " | " | श. १७२५ | " | |
| ९°५ × ४°२ | १३ | ४१ | " | " | | " | पञ्चीकरणम् महावाक्यार्थश्च । |
| ८°७ × ४°३ | ९ | २६ | " | " | १९३६ | " | |
| १०°९ × ४°८ | १० | ४३ | " | " | | " | गौडपादीयभाष्यं वा । |
| १०°७ × ४°५ | १३ | ४२ | " | " | श. १५३३ | " | प्रथमवर्णकमात्रम् । |
| ८°९ × ४°६ | ११ | ३० | " | " | | अपू० | |
| १०°२ × ३°८ | ९ | ४० | " | " | | " | |
| ११°५ × ४°५ | १० | ३३ | " | " | | " | |
| ११°२ × ४°५ | १० | ३० | " | " | | " | |
| १० × ४°३ | ९ | ३४ | " | " | | " | |
| ९°७ × ४°२ | ९ | ३७ | " | " | | " | प्रथमाध्यायस्यप्रथमपादः । |
| ९°३ × ४°३ | ११ | ४५ | " | " | | " | |
| ८°८ × ४°८ | १३ | ३७ | " | " | | पू० | टीका सुबोधिनी । |
| ९°७ × ४°२ | ९ | ३१ | " | " | | " | |
| १३°३ × ६°४ | १८ | ६० | " | " | | " | प्रथमाध्यायः । |
| ११ × ५ | १२ | ३८ | " | " | | " | |
| १० × ४°४ | १० | ३४ | " | " | | " | प्रथमपरिच्छेदः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|------------------------------|--|
| २८६५७ | प्रबोधसुधाकरः | दैवज्ञसूर्याभिधः | २, १२-५१, ५३ । |
| २८६५८ | तत्त्वविवेकः | नृसिंहाश्रमः | १-७२ । |
| २८६५९ | ब्रह्माद्वैतप्रकाशिका | काशीनाथभट्टभट्टः | १-८ । |
| २८६६० | पञ्चपादिकाविवरणम् | प्रकाशात्मयतिः | ७९ । (गणनया) |
| २८६६१ | अनुभूतिप्रकाशः | | १-५ । |
| २८६६२ | पञ्चपादिकाविवरणम् | प्रकाशात्मयतिः | १-१०० । |
| २८६६३ | अज्ञानबोधिनी | | १-२८ । |
| २८६६४ | भामती | वाचस्पतिमिश्रः | १-७१, १-४५, १-३९, १-१६, १-५, ५, ७-१२, १२-७५, १-१०१, १-२५ । |
| २८६६५ | वेदान्तसारः सटीकः | सदानन्दः टी नृसिंहसरस्वती | १-५७ । |
| २८६६६ | अध्यात्मविद्योपदेशविधिः | | १-५ । |
| २८६६७ | सङ्क्षेपशारीरकटीका | मधुसूदनः | १५५ । (गणनया) |
| २८६६८ | भेदधिकारः | नृसिंहाश्रममुनिः | १-१७ । |
| २८६६९ | भेदधिकारसत्क्रिया | नारायणाश्रमः | १-५९ । |
| २८६७० | अद्वैतमकरन्दव्याख्या | स्वयम्प्रकाशः | १-२२ । |
| २८६७१ | अपरोक्षानुभूतिः | शङ्कराचार्यः | १-६, ५३ । |
| २८६७२ | पञ्चप्रकरणी | ” | १-२५ । |
| २८६७३ | वेदान्तसारः | सदानन्दः | १-१५ । |
| २८६७४ | ” | ” | १-९ । |
| २८६७५ | बोधसारानुक्रमणिका | | १-६ । |
| २८६७६ | ब्रह्मसूत्रवृत्तिः | रङ्गनाथः | १-४४ । |
| २८६७७ | ” | | १-५ । |
| २८६७८ | आनन्दमयाधिकरणविचारः | नीलकण्ठभट्टः | १-११ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | वाच्यः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|--------|----------|------------------------|---|
| ६'६ × ४'१ | ६ | २० | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| ९'६ × ४'४ | ८ | ३९ | " | " | १६०७ | पू० | |
| ९'८ × ४'४ | १४ | ४० | " | " | | " | |
| ९'९ × ३'५ | ७ | ४० | " | " | | अपू० | |
| ९'५ × ४'३ | १२ | ३० | " | " | | " | तलवकारविद्यानामैकोनविं- शोऽध्यायः । |
| ९'५ × ४'५ | १४ | ४० | " | " | | " | |
| १२ × ३ | ६ | ३६ | " | " | | पू० | अध्यात्मविद्योपदेशविधि- रितिनामान्तरम् । |
| १२'५ × ४'९ | ११ | ४४ | " | " | | " | |
| ९'६ × ४'३ | ९ | ३७ | " | " | १९०३ | " | |
| ८'७ × ४'५ | ९ | २५ | " | " | | अपू० | |
| १०'९ × ४'२ | १२ | ५० | " | " | | पू० | प्रथमाध्यायः । |
| ९'४ × ४'१ | ११ | ४० | " | " | | " | |
| ९'४ × ४'३ | १३ | ४३ | " | " | | " | भेदधिकारटीका । |
| ९'९ × ४'५ | १० | ४३ | " | " | | " | |
| ९ × ४'१ | १३ | ३० | " | " | | " | |
| ८'८ × ४'२ | ९ | २७ | " | " | १९०५ | " | |
| १०'३ × ४ | ९ | ४१ | " | " | | " | |
| ९'७ × ३'८ | १५ | ४९ | " | " | | " | |
| १०'१ × ६'८ | ९ | १६ | " | " | | अपू० | |
| ९'८ × ४'३ | १० | ३१ | " | " | | " | |
| ११ × ३'५ | ९ | ३८ | " | " | | " | |
| ९'९ × ४'८ | ९ | ३९ | " | " | १८५५ | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------------------|--|--|
| २८६७९ | महावाक्यार्थप्रबोधप्रकारः | | २ । (गणनया) |
| २८६८० | अपरोक्षानुभूतिः | | १-१२ । |
| २८६८१ | वेदान्तसारः | सदानन्दः | १-२० । |
| २८६८२ | अद्वैतचिन्ताकौस्तुभः | महादेवानन्द- सरस्वती | १-१७ । |
| २८६८३ | तत्त्वबोधः | शङ्कराचार्यः | १-३ । |
| २८६८४ | ब्रह्मसूत्रवृत्तिः | रामकिङ्करधर्मः | १-१७९ । |
| २८६८५ | उपदेशसाहस्री | शङ्कराचार्यः | १-२३ । |
| २८६८६ | " | " | १-१२ । |
| २८६८७ | स्वात्मसंविदुपदेशः | | ४० । (गणनया) |
| २८६८८ | अद्वैतमकरन्दः सटीकः | लक्ष्मीधरकविः टी. का. स्वयम्प्र- काशयतिः | १, १-४ । |
| २८६८९ | शारीरकर्म, मांस, भाष्यं- सटीकम् | | १ । |
| २८६९० | अद्वैतसिद्धिः | मधुसूदनसरस्वती | १-१५३, १५३-१९४, १-१२७, १-१५, १-११ । |
| २८६९१ | ब्रह्मसूत्रं सभाष्यम् | व्यासः भा. का. शङ्कराचार्यः | १-३३, ३३-१५०, १-३९, १-४२, १-५४, १-१२८, १-५० । |
| २८६९२ | पञ्चदशीसटीका | विद्यारण्यमुनिः टी. का. रामकृष्णः | १-४०, ४०-२१० । |
| २८६९३ | तत्त्वानुसन्धानम् | महादेवसरस्वती मुनिः | १-४२ । |
| २८६९४ | वैयासिकन्यायमाला | भारतीतीर्थमुनिः | १-१५ । |
| २८६९५ | ब्रह्मसूत्रम् | | १-८ । |
| २८६९६ | ब्रह्मसूत्रवृत्तिः | रामकिङ्करधर्मः | २६५ । (गणनया) |
| २८६९७ | जीवन्मुक्तिप्रकरणम् | | १-५६ । |
| २८६९८ | उपदेशसाहस्रीटीका | आनन्दज्ञानः | १-१०१ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | मात्राः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|---------|----------|------------------------|------------------------------|
| ७'७ × ४'५ | ९ | २२ | दे. ना | का. | | पू० | |
| ८'२ × ३'२ | ८ | २९ | " | " | | " | |
| ११'१ × ४ | ७ | २८ | " | " | १८०० | " | |
| १०'९ × ४'९ | १४ | ४२ | " | " | १७१६ | " | |
| ८'३ × ४ | १० | ३४ | " | " | श. १६०६ | " | |
| १०'९ × ४'७ | १२ | ४३ | " | " | | " | ब्रह्मासृतवर्षिणी । |
| १०'९ × ४'९ | १२ | ४६ | " | " | | " | |
| ११ × ४'८ | १३ | ३८ | " | " | | " | |
| ९'४ × ३'३ | ७ | १६ | " | " | | अपू० | दत्तात्रेय-गोरक्षसंवादरूपः । |
| ७ × ४'३ | १३ | ३६ | " | " | | पू० | |
| १४ × ६'४ | १३ | ४५ | " | " | | अपू० | |
| ९'८ × ४'५ | १० | ४९ | " | " | १८२९ | पू० | १-४ परिच्छेदाः । |
| ९'३ × ४'१ | १० | ३३ | " | " | | " | |
| १०'३ × ४'४ | ११ | ४० | " | " | | " | |
| ९'६ × ४'२ | ९ | ३१ | " | " | | " | |
| ११ × ४'९ | १४ | ४४ | " | " | | " | |
| ९'३ × ४'३ | १३ | ४० | " | " | | " | |
| ९'५ × ४'२ | ९ | ४० | " | " | | " | |
| १३'१ × ६'२ | १२ | ४९ | " | " | १८६७ | " | |
| ९'५ × ४'२ | ११ | ४६ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|--|-------------------|
| २८६९९ | विशिष्टाद्वैतसिद्धान्तः | श्रीनिवासदासः | १-२८ । |
| २८७०० | तत्त्वचन्द्रिका | आनन्दगिरिः | १-२२ । |
| २८७०१ | ब्रह्मविचारः | | ७ । (गणनया) |
| २८७०२ | वेदान्ततत्त्वसारः | | १-२३ । |
| २८७०३ | वेदान्तकल्पतरुः | अमलानन्दः | ३-८, १०-३० । |
| २८७०४ | महावाक्यार्थसंग्रहः | पुरुषोत्तमानन्द- तीर्थः शिवरामा- नन्दतीर्थशिष्यः | १-११ । |
| २८७०५ | महावाक्यरत्नावली | रामचन्द्रेन्द्रः वासुदेवशिष्यः | १-५७ । |
| २८७०६ | " | " | १-१०० । |
| २८७०७ | वेदार्थसङ्ग्रहः | रामानुजाचार्यः | १-८० । |
| २८७०८ | शतदूषणी | " | १-१०१, १-९६ । |
| २८७०९ | रामानुजसिद्धान्तसारप्रकाशः | वरदाचार्यः | १-३२ । |
| २८७१० | अधिकारसङ्ग्रहः सटीकः | वेङ्कटनाथः | १-३२ । |
| २८७११ | ब्रह्मसूत्रार्थसङ्ग्रहः | | ५९-८२ । |
| २८७१२ | ब्रह्मसूत्रव्याख्या | | १ । |
| २८७१३ | परमार्थसारः | | ९ । (गणनया) |
| २८७१४ | वेदान्तसारः | | १-३, ५-१० । |
| २८७१५ | त्रिपुरीप्रकरणम् | शङ्कराचार्यः | १८-२१ । |
| २८७१६ | तत्त्वविवेक दीपनम् | | ३-३८ । |
| २८७१७ | " | नृसिंहाश्रमः टी. नारायणाश्रमः | १-५०, १-१९ । |
| २८७१८ | ब्रह्मज्ञानम् | | १ । |
| २८७१९ | आत्मबोधः | | ७ । (गणनया) |

| वाकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| ११*१ × ४*६ | ७ | २७ | दे. ना. | का. | | पू० | पञ्चीकरणविवरणटीका । |
| १३ × ३*६ | १० | ६८ | वङ्ग. | " | शक. १७२८ | " | |
| ९*६ × ९*८ | १७ | ४३ | दे. ना. | " | | अपू० | |
| १०*९ × ९*२ | १० | ३९ | " | " | | पू० | |
| ११ × ४*७ | १२ | ४७ | " | " | | अपू० | भामतीटीका । चतुर्थाध्यायांशः |
| १०*४ × ४*४ | ११ | ३४ | " | " | | पू० | |
| ९*२ × ४*१ | ७ | २९ | " | " | | अपू० | |
| १२*६ × ७*९ | ७ | २१ | " | " | १९२० | पू० | |
| १२*४ × ४*८ | ८ | ३३ | " | " | १८६० | " | प्रसिद्धवेदान्तसारान्द्रिचोऽयं वेदान्त- सारः । |
| १२*२ × ९*१ | १० | ३८ | " | " | | " | |
| १०*२ × ९ | १८ | ९४ | " | " | १८६० | " | |
| १० × ४*६ | ११ | ४४ | " | " | | " | |
| ६ × ४*९ | ११ | २० | " | " | | अपू० | |
| १२*८ × ४ | ४ | ४९ | वङ्ग. | " | | " | |
| ८*३ × ३*६ | ७ | २९ | दे. ना. | " | | " | |
| ६*८ × ४ २ | १० | २१ | " | " | | " | |
| ६*९ × ४*२ | १० | १९ | " | " | | " | |
| ११*९ × ३*९ | ८ | ४८ | " | " | | " | |
| १९*९ × ६ | १९ | ७४ | " | " | १६०४ | पू० | |
| १२*९ × ४*७ | ८ | ४२ | वङ्ग. | " | | " | |
| ९*१ × ९ | १० | १० | दे. ना. | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|--|-------------------|
| २८७२० | वेदान्तसारः | सदानन्दः | १-१२ । |
| २८७२१ | " | " | १-१२ । |
| २८७२२ | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | | १-९ । |
| २८७२३ | वेदान्तकल्पतरुः | अमलानन्दः | ५३ । (गणनया) |
| २८७२४ | आत्मबोधप्रकरणम् | शङ्कराचार्यः | १-९ । |
| २८७२५ | " | " | १-१० । |
| २८७२६ | वेदान्तकल्पतरुः | अमलानन्दः | १-५३, १-८, १-२२ । |
| २८७२७ | वेदान्तसारः | सदानन्दः | २-८, १०-१४ । |
| २८७२८ | आत्मानात्मविवेकः | शङ्कराचार्यः | १६ । |
| २८७२९ | पञ्चीकरणवार्त्तिकम् | सुरेश्वराचार्यः | २-४ । |
| २८७३० | तत्त्वदीपनम् | | १-३७ । |
| २८७३१ | वेदान्तपरिभाषा | | १० । (गणनया) |
| २८७३२ | ब्रह्मसूत्रम् | व्यासः | १-१३ । |
| २८७३३ | सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहटीका | कृष्णानन्दतीर्थः | १-२० । |
| २८७३४ | वाक्यसुधा | शङ्कराचार्यः | १-२ । |
| २८७३५ | संक्षेपशारीरकं सटीकम् | सर्वज्ञात्मनिःटी.का. मधुसूदनसरस्वती | ४८ । (गणनया) |
| २८७३६ | श्रुतप्रदीपिका | | १२० । " |
| २८७३७ | पञ्चीकरणम् | | १ । |
| २८७३८ | शतदूषणी | वेङ्कटनाथः | ७२ । (गणनया) |
| २८७३९ | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | शङ्कराचार्यः | १-१२० । |
| २८७४० | " | " | २०० । (गणनया) |
| २८७४१ | मननाख्यप्रकरणम् | | १-७२ । |
| २८७४२ | रत्नप्रभा | | १-१२३ । |

| वाकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आंशः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|------|----------|-------------------------|--|
| ८६ × ३६ | १२ | ३६ | दे. ना. | का. | १८८२ | पू० | प्रथमाध्यायस्य १-३ पादाः । |
| ८६ × ३४ | ११ | ३६ | " | " | | " | |
| १३७ × ४८ | १५ | ५८ | वङ्ग. | " | | अपू० | |
| १३९ × ४६ | १५ | ६१ | " | " | | " | |
| ५४ × ३७ | ८ | १७ | दे. ना. | " | | पू० | |
| ५८ × ३३ | ९ | २० | " | " | | " | |
| १३३ × ६४ | १४ | ५० | " | " | | " | |
| १३ × ४७ | ७ | ४३ | वङ्ग. | " | | अपू० | |
| १३७ × ४५ | ८ | ४७ | " | " | | पू० | |
| १२९ × ४७ | ७ | ४० | " | " | | अपू० | |
| १३५ × ४९ | १२ | ४५ | दे. ना. | " | | पू० | द्वितीयपरिच्छेदः । टीकाकृष्णालङ्काराख्या । |
| १३४ × ५१ | १० | ४० | " | " | | अपू० | |
| ७८ × ३९ | १० | ३० | तेलुगु | " | | पू० | |
| ११८ × ४९ | १३ | ५४ | " | " | | अपू० | |
| ७८ × ४४ | १३ | ३७ | आन्ध्र | " | | पू० | |
| १३२ × ५७ | १४ | ४१ | " | " | | अपू० | |
| १८७ × २ | ६ | ५५ | " | ताल. | | " | |
| ८७ × ४३ | १० | ३१ | दे. ना. | का. | १९३६ | पू० | |
| १७६ × १२ | ७ | ४५ | आन्ध्र | ताल. | | अपू० | |
| १८ × २७ | ९ | ५० | " | " | | पू० | शारीरकमीमांसा भाष्यटीका । |
| १७८ × ४४ | ७ | ७५ | " | " | | अपू० | |
| १२४ × १४ | ९ | ४४ | " | " | | पू० | |
| १८८ × ३४ | ७ | ६० | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------------|---|-------------------|
| २८७४३ | वचनभूषणम् | लक्ष्मीदत्ताचार्यः | १-२०० । |
| २८७४४ | शारीरकमीमांसाभाष्य- व्याख्या | | १-३१३ । |
| २८७४५ | महावाक्यरत्नावलिः | रामचन्द्रतीर्थः वासुदेवेन्द्र सर- स्वतीशिष्यः | १-१९ । |
| २८७४६ | श्रीभाष्यम् | रामानुजाचार्यः | ४०८ । (गणनया) |
| २८७४७ | गौडपादीयमाण्डूक्य- कारिकाभाष्यटीका | आनन्दगिरिः | ४५ । " |
| २८७४८ | षोडशमहावाक्यम् | | १ । |
| २८७४९ | लघुवार्तिकम् | | १-३ । |
| २८७५० | वाक्यसुधाटीका | निरञ्जनमाधवः | १-२८ । |
| २८७५१ | पञ्चीकरणवार्तिकम् | सुरेश्वराचार्यः | १-७ । |
| २८७५२ | तत्त्वप्रकाशः | | २ । (गणनया) |
| २८७५३ | वेदान्तसारटीका | | १-४ । |
| २८७५४ | वेदान्तसारः | | १-११ । |
| २८७५५ | वेदान्तपरिभाषा | धर्मराजाध्वरीन्द्रः | १०-२७ । |
| २८७५६ | शारीरकमीमांसाभाष्य- व्याख्या | गोविन्दानन्दः गोपालानन्द- सरस्वतीशिष्यः | १-२७० । |
| २८७५७ | वेदान्तकल्पतरुपरिमलः | | १-१७० । |
| २८७५८ | पञ्चीकरणविवरणम् | आनन्दगिरिः | १-४ । |
| २८७५९ | पञ्चीकरणविवरणटीका | | १-११ । |
| २८७६० | पञ्चपादिकाविवरणम् | | १-२४ । |
| २८७६१ | वैयासिकन्यायमाला | | १ । |
| २८७६२ | पञ्चदशीसंख्या | व्या.का. रामकृष्णः | १-२ । |

| आकारः | पक्षि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|------------------|------------------|--------|-------|--------------|------------------------|--|
| १८ × ४°५ | ७ | ८४ | तेलुगु | ता. | | पू० | रत्नप्रभा । |
| १३°४ × ७°१ | ७ | ४७ | " | " | | अपू० | |
| १२°९ × ४ | १२ | ५३ | " | का. | | पू० | |
| १°९ × ४°६ | ११ | ३५ | दे.ना. | " | १८९१ १८९२ | ॥ | |
| १२ × ४°७ | १८ | ५९ | " | " | | अपू० | शारीरकमीमांसाभाष्यम् । टीका बोधप्रदीपिका । मराठी- भाषायाम् । |
| १२°६ × ४°६ | १० | ५३ | वङ्ग. | " | | " | |
| ८°३ × ३°३ | १५ | ४२ | दे.ना. | " | | पू० | |
| ८°२ × ३°९ | ७ | २६ | " | " | | " | |
| ८°२ × ३°७ | ८ | २५ | वङ्ग. | " | | " | |
| १०°५ × ४°५ | ८ | ३४ | " | " | | अपू० | |
| १३ × ४°८ | १० | ४५ | " | " | | " | |
| १३ × ५ | ९ | ४० | " | " | | " | |
| १२°९ × ४ | १० | ६० | " | " | | " | |
| १३°९ × ३°३ | ८ | ५८ | " | " | श. १६६७ | पू० | |
| १३°८ × ५ | ११ | ४७ | " | " | | अपू० | रत्नप्रभा । |
| १३°३ × ५ | १३ | ६९ | " | " | | पू० | |
| १३°३ × ५ | १४ | ६० | " | " | | " | |
| १४ × ३°१० | १० | ६३ | " | " | | " | |
| ८°५ × ४°५ | १४ | ३१ | दे.ना. | " | | अपू० | |
| ८°८ × ४°७ | १० | ५० | " | " | | पू० | महावाक्यविवेकप्रकरणम् । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------|-----------------|------------------------------------|
| २८७६३ | वेदान्तसारः | सदानन्दः | १-११ । |
| २८७६४ | आत्मानुभवः | | १-४ । |
| २८७६५ | पञ्चपादिकाविवरणम् | | १७-२२, २६-२७ । |
| २८७६६ | ज्ञानसंन्यासः | शङ्कराचार्यः | १३-१६ । |
| २८७६७ | आत्मबोधप्रकरणं सटीकम् | ,, | १-१० । |
| २८७६८ | वेदान्तसारः | सदानन्दः | १-१३ । |
| २८७६९ | पञ्चपादिकाविवरणम् | प्रकाशात्मयतिः | १-१०८ । |
| २८७७० | ,, | ,, | १-१९२ । |
| २८७७१ | विवरणतत्त्वदीपनम् | अखण्डानन्दमुनिः | २७५ । (गणनया) |
| २८७७२ | ,, | ,, | १-४५, ४५-१३४ = (१३५-१४०) १४१-२६१ । |
| २८७७३ | तत्त्वप्रदीपिकाटीका | प्रत्यक्स्वरूपः | ९५-१२६, १२८ । |
| २८७७४ | लघुवार्तिकटीका | | १-१४, १६-१७, १-६, ८-२५, २५ । |
| २८७७५ | ,, | | १-५९ । |
| २८७७६ | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | | १-४८ । |
| २८७७७ | वाक्यसुधासटीका | | १-१४ । |
| २८७७८ | अद्वैतमकरन्दः | | १-१८, २१-२२, २५-३१, ३४-३७ । |
| २८७७९ | अपरोक्षानुभूतिः | | १-२, ७-११ । |
| २८७८० | आत्मबोधः सटीकः | शङ्कराचार्यः | १-७, ९-२२ । |
| २८७८१ | ब्रह्मविद्योपदेशः | | १-१० । |
| २८७८२ | अपरोक्षानुभवः | शङ्कराचार्यः | १-५ । |
| २८७८३ | अद्वैतबोधः | | १-४ । |
| २८७८४ | प्रणववालयोधिनी | | १-१५ । |
| २८७८५ | महावाक्यव्याख्या | | २३ । (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-------------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| ९ × ४ | १३ | ३७ | दे. ना. | का. | | पू० | |
| ९ × ३.५ | १४ | ५० | " | " | | " | वेदान्तपञ्चरत्नम् श्रुतिसमुच्चयश्च । |
| ९.४ × ४.३ | १३ | ४० | " | " | | अपू० | शाब्दबोधोपयोगिशब्दार्थसम्बन्ध- निरूपणप्रकरणतः प्रारभ्यते । |
| ६.९ × ४.२ | ९ | १८ | " | " | | " | |
| ६.९ × ४.२ | १६ | ३६ | " | " | | पू० | |
| १० × ४.४ | १० | ३८ | " | " | | " | |
| १०.९ × ३.७ | ८ | ५३ | " | " | | " | प्रथमवर्णकम् । |
| १०.८ × ३.७ | ८ | ४१ | " | " | १६४० | " | |
| १०.६ × ३.६ | ८ | ४४ | " | " | | १६४० | प्रथमवर्णकम् । |
| ११ × ४ | ९ | ४४ | " | " | १६१४ | १६१४ | |
| ११.७ × ३.९ | ९ | ४६ | " | " | | अपू० | टीका नयनप्रसादिनी । |
| १०.८ × ४.१ | १० | ४१ | " | " | | " | |
| ११.२ × ४.२. | १२ | ५७ | " | " | | पू० | |
| ११.३ × ३.५ | ९ | ४५ | " | " | | अपू० | |
| ७.३ × ४.७ | ९ | २१ | " | " | | " | |
| ७.९ × ४.८ | ९ | २२ | " | " | | " | |
| ९.३ × ३.१ | ५ | ३३ | " | " | | " | |
| ८.२ × ३.९ | ११ | ३३ | " | " | श० १७३६ | " | |
| ९.४ × ४ | ८ | ३१ | " | " | | " | |
| ६.५ × ४.३ | १४ | ३१ | " | " | | पू० | |
| ६.६ × ४.२ | ८ | २२ | " | " | | अपू० | |
| ७.५ × ३.५ | ६ | १७ | " | " | | पू० | |
| ९.७ × ४.८ | ९ | ३२ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | प्रतिसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------|---------------------|--------------------|
| २८७८६ | विवेकचूडामणिः | शङ्कराचार्यः | १-२३ । |
| २८७८७ | पञ्चीकरणवार्तिकम् | सुरेश्वराचार्यः | २-१६, १८-२४, २६ । |
| २८७८८ | वेदान्तसारः | प्रकाशानन्दः | १-१७ । |
| २८७८९ | संक्षेपशारीरकन्याख्यानम् | विश्ववेदः | ४८-६९, ६८-७८ । |
| २८७९० | वाक्यसुधा | शङ्कराचार्यः | १-६ । |
| २८७९१ | प्रस्थानभेदः | मधुसूदनसरस्वती | १-७ । |
| २८७९२ | स्वात्मानुभवादर्थः | माधवभिक्षुः | १६-१९ । |
| २८७९३ | अध्यात्मविद्योपदेशविधिः | शङ्कराचार्यः | १-२५ । |
| २८७९४ | " | " | १-२६ । |
| २८७९५ | वेदान्तपरिभाषा | धर्मराजाध्वरीन्द्रः | १-३, ८-१४ । |
| २८७९६ | तत्त्वबोधः | | १-५ । |
| २८७९७ | महावाक्यविवरणम् | | १-१२ । |
| २८७९८ | सर्ववेदान्तसारः | | ५१ । (गणनया) |
| २८७९९ | चित्सुखीटीका | | ७-४२ । |
| २८८०० | वेदान्तसारटीका | नरसिंहसरस्वती | २३-२६, ४०-६५ । |
| २८८०१ | वेदान्तसारः | | १-२८ । |
| २८८०२ | वेदान्तसारटीका | | १-२५ । |
| २८८०३ | वेदान्तनयभूषणम् | | ३६ । (गणनया) |
| २८८०४ | वेदान्तसारः | | १० । " |
| २८८०५ | उपदेशशाहस्री | शङ्कराचार्यः | ५४ । " |
| २८८०६ | स्वात्मसंविच्युपदेशः | | १-६ । |
| २८८०७ | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | शङ्कराचार्यः | १९-१२६ । |
| २८८०८ | वेदान्तरहस्यसङ्ग्रहः | | १९ । (गणनया) |
| २८८०९ | तत्त्वबोधः | | ११ । " |

| आकारः | परि- मिता | अक्षर- संख्या | लिपिः | सं- ख्या | लिपिकारः | प्रमाण- विषयः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------|------------------|--------|-------------|----------|------------------|----------------|
| ८'९ x ४'६ | १३ | २९ | दे.ना. | का. | | पू० | |
| ९'८ x ४'१ | ८ | ३५ | " | " | | अपू० | |
| ८'५ x ४'३ | १० | ३५ | " | " | | पू० | |
| ९'९ x ३'० | १४ | ४६ | " | " | | अपू० | |
| ४'७ x ४'३ | १६ | ३५ | " | " | | पू० | |
| ९'२ x ४'४ | १० | ३३ | " | " | | " | |
| ८'३ x ४'७ | १० | ३३ | " | " | | अपू० | |
| ६'४ x ३'४ | १० | ३१ | " | " | | " | |
| ८'९ x ६ | ११ | २८ | " | " | | पू० | |
| १० x ४'२ | १० | २८ | " | " | | अपू० | |
| ४'१ x ५ | ११ | २५ | " | " | | " | |
| ८'१ x ४'१ | १५ | ३५ | " | " | | " | |
| ८'० x ५'७ | १५ | २२ | " | " | | " | |
| ८'८ x ३'८ | ११ | ३७ | " | " | | " | नयनप्रसादिनी । |
| ४'९ x ४'७ | १० | २७ | " | " | | " | |
| ६'३ x ३'४ | ९ | १८ | " | " | | " | |
| ११ x ३'९ | ८ | ३७ | " | " | | " | |
| १०'२ x ४'६ | १० | ४६ | " | " | | " | |
| ८'५ x ३'६ | १३ | ३५ | " | " | | " | |
| १० x ४'३ | १० | ४३ | " | " | | पू० | |
| ९'५ x ४'७ | ८ | २७ | " | " | | " | |
| ९'८ x ४'२ | १० | ३९ | " | " | | अपू० | |
| १०' x ४'३ | ११ | २७ | " | " | | " | |
| १'८ x ५ | ७ | १९ | " | " | | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|---------------------|-------------------|
| २८८१० | अद्वैतकौस्तुभः सटीकः | | १-१४ । |
| २८८११ | अपरोक्षानुभूतिः सटीका | | १-१९ । |
| २८८१२ | वेदान्तसारटीका | | ७ । (गणनया) |
| २८८१३ | तत्त्वविवेकटीका | | ७८-१०९ । |
| २८८१४ | पञ्चख्यातिलक्षणम् | | २ । (गणनया) |
| २८८१५ | पञ्चीकरणवार्तिकम् | सुरेश्वराचार्यः | ३ । " |
| २८८१६ | पञ्चीकरणमहावाक्यार्थः | | ९ । " |
| २८८१७ | अध्यात्मविद्योपदेशविधिः | | २४ । " |
| २८८१८ | आत्मबोधः | | ११ । " |
| २८८१९ | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | शङ्कराचार्यः | १-१७ । |
| २८८२० | तत्त्वबोधः | " | १-५ । |
| २८८२१ | महावाक्यविवरणम् | | ३७ । (गणनया) |
| २८८२२ | पञ्चीकरणवार्तिकम् | सुरेश्वराचार्यः | १-४ । |
| २८८२३ | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | शङ्कराचार्यः | २० । (गणनया) |
| २८८२४ | " | " | ४ । " |
| २८८२५ | तत्त्वमसीतिठ्याख्यानम् | | २६ । " |
| २८८२६ | स्वात्मसंविद्युपदेशः | | ४ । " |
| २८८२७ | पञ्चीकरणम् | | १-२ । |
| २८८२८ | तत्त्वबोधः | वासुदेवेन्द्रशिष्यः | १-९ । |
| २८८२९ | आत्मविवेकः | | ६-६ । |
| २८८३० | लघुवाक्यवृत्तिः | | १ । |
| २८८३१ | चित्सुखी | | १-३६ । |
| २८८३२ | वेदान्तकल्पतरुपरिमलः | | १-३६ । |
| २८८३३ | न्यायमकरन्दः | आनन्दबोधभट्टारकः | १-१० । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--------------|
| १३'८ × ९'३ | १२ | ९१ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ९'६ × ३'६ | ९ | २८ | " | " | | पू० | |
| १३'५ × ९'२ | १५ | ६० | " | " | | "* | |
| ८'६ × ४'२ | ११ | ३८ | " | " | | अपू० | |
| ८'१ × ४'९ | २० | १४ | " | " | | " | |
| ७'१ × ४'३ | ११ | २५ | " | " | | " | |
| ७'६ × ४'१ | ८ | २६ | " | " | | " | |
| ९'९ × ४'१ | ९ | १८ | " | " | | " | |
| ६'८ × ३'२ | ९ | १७ | " | " | | " | |
| ९'९ × ४'२ | ११ | २६ | " | " | | पू० | |
| ९'६ × ४'३ | ८ | ३२ | " | " | | " | |
| ७'१ × ४'१ | ८ | ३० | " | " | | अपू० | |
| ६'८ × ३'९ | ११ | २४ | " | " | | पू० | |
| ९'१ × ३'८ | ९ | ३६ | " | " | | अपू० | |
| ८'९ × ३'९ | १० | ३० | " | " | | " | |
| ८'३ × ३'८ | ८ | २३ | " | " | | " | |
| ७'९ × ४'६ | ११ | २५ | " | " | | " | |
| ८'४ × ४'२ | ९ | २८ | " | " | | पू० | |
| ८'९ × ४'३ | ८ | १५ | " | " | | " | |
| ९'७ × ४'२ | ८ | २५ | " | " | | " | |
| ९'६ × ४'२ | ११ | ३० | " | " | | " | |
| १०'७ × ४'३ | १० | २१ | " | " | | अपू० | |
| १२'३ × ४'८ | १० | ४३ | " | " | | पू० | |
| १०'६ × ४'२ | ९ | ४६ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------------|---------------------------------|--------------------------|
| २८८३४ | पञ्चपादिकाविवरणम् | | १-३, ३-५७ । |
| २८८३५ | आत्मज्ञानोपदेशविधिः | शङ्कराचार्यः | १-१३ । |
| २८८३६ | वेदान्तसारः | | १-१३ । |
| २८८३७ | शारीरकमीमांसाभाष्यटीका | गोविन्दानन्दः | ३९-५८ । |
| २८८३८ | सम्बन्धवार्त्तिकटीका | | १-७ । |
| २८८३९ | आत्मोपदेशः | | ९ । (गणनया) |
| २८८४० | तत्त्वबोधः सटीकः | | १-२२ । |
| २८८४१ | पञ्चीकरणम् | | १ । |
| २८८४२ | अद्वैतानुभूतिः | | ३-६ । |
| २८८४३ | तत्त्वबोधः | | १-४ । |
| २८८४४ | पञ्चपादिकाविवरणतत्त्व- दीपनम् | | १-१४९ । |
| २८८४५ | खण्डनखण्डखाद्यटीका | शङ्करमिश्रः | १-११८ । |
| २८८४६ | श्रीकण्ठभाष्यव्याख्या | अप्पय्यदीक्षितः | १-८० । |
| २८८४७ | पञ्चदशी सटीका | भारतीतीर्थः टी का. रामकृष्ण. | २१० । (गणनया) |
| २८८४८ | ” | ” | १-११ । |
| २८८४९ | तत्त्वबोधः | शङ्कराचार्यः | १-३ । |
| २८८५० | वाक्यसुधा सटीका | | १-६, १८-१२ । |
| २८८५१ | वैयासिकन्यायमाला | | १०-१६ । |
| २८८५२ | दृग्दृश्यविवेकः सव्याख्यः | | १-१९ । |
| २८८५३ | शारीरकभाष्यन्यायसङ्गति- सङ्ग्रहः | | ३३-८० । |
| २८८५४ | ब्रह्मविद्या | | १, ७-३६ । |
| २८८५५ | रत्नप्रभा | | १-७२, १४०-१५५, १५७-१६१ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णपूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|----------------------------------|
| १२'१ x ४'८ | १४ | ५० | दे. ना. | का. | | पू० | प्रकाशिका । |
| १०'६ x ५'८ | १२ | ३५ | " | " | | " | |
| ९'३ x ४'५ | ११ | ३३ | " | " | | अपू० | |
| ९'५ x ४'२ | १० | २८ | " | " | | " | |
| ११'२ x ४'८ | १० | ४३ | " | " | | " | |
| ८'८ x ४'२ | ९ | २३ | " | " | | " | |
| ९'३ x ५'२ | ८ | २३ | " | " | | " | |
| ८'६ x ४'१ | १० | ३३ | " | " | | " | |
| ६'३ x ४'१ | ११ | २० | " | " | | " | |
| १०'६ x ५'१ | १० | ३५ | " | " | | पू० | |
| १२'१ x ४'८ | १५ | ४२ | " | " | | " | |
| १४'६ x २ | ६ | ९५ | वङ्ग. | ता. | | " | व्याख्या शिवार्कमणिदीपिका । |
| १०'९ x ४'९ | १४ | ४१ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| १३'८ x ५'५ | १३ | ४४ | " | " | १९५१ | " | |
| १३'८ x ६ | ११ | ४३ | " | " | | " | |
| ११ x ६'२ | १२ | ३९ | " | " | | पू० | |
| ११'५ x ५'२ | ११ | ५९ | " | " | | अपू० | |
| १४ x ५'५ | ९ | ४९ | " | " | | " | |
| ९'१ x ४'३ | ९ | ३९ | " | " | | " | |
| ८ x ४ | १० | २८ | " | " | | " | |
| १०'७ x ३'१ | ९ | ३९ | " | " | | " | |
| १०'३ x ४'३ | १० | ३६ | " | " | | " | शारीरकसीमांसाभाव्यटीकान्याल्या । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------|--|----------------------|
| २८८५६ | प्रमेयरत्नावली | | ११-१३ । |
| २८८५७ | तत्त्वबोधः | वासुदेवेन्द्रः | १-९ । |
| २८८५८ | " | | १-४, ६-८ । |
| २८८५९ | वाक्यसुधा | शङ्कराचार्यः | १, ६-७ । |
| २८८६० | लघुवाक्यवृत्तिः | " | १ । |
| २८८६१ | महावाक्यविचारः | | १-२१ । |
| २८८६२ | आत्मबोधः सटीकः | | १-१७ । |
| २८८६३ | परमार्थसारः | | १-५ । |
| २८८६४ | पञ्चदशी सटीका | भारतीतीर्थः टी. का. रामकृष्णः | १-३४ । |
| २८८६५ | " | " | १-३७, ४४-१५० । |
| २८८६६ | विवेकचूडामणिः | शङ्कराचार्यः | १-९ । |
| २८८६७ | आत्मबोधः सटीकः | " | २-२९ । |
| २८८६८ | वेदान्तसारः | | १-१२ । |
| २८८६९ | आत्मबोधः सटीकः | शङ्कराचार्यः | १-१२ । |
| २८८७० | ब्रह्मसूत्रम् | | ३-२० । |
| २८८७१ | महावाक्यविवरणम् | | १-२, ५, ७-९, ९-३१ । |
| २८८७२ | वाक्यसुधा सटीका | शङ्कराचार्यः टी. का. रामचन्द्र- तीर्थः | १-१९ । |
| २८८७३ | उपदेशपट्टकम् | शङ्कराचार्यः | १ । |
| २८८७४ | पञ्चीकरणवार्त्तिकम् | सुरेश्वराचार्यः | १-६ । |
| २८८७५ | बालबोधिनी | शङ्कराचार्यः | ३ । (गणनया) |
| २८८७६ | अज्ञानबोधिनी | | ४-१२, १४-१८, ३२-३३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आ- कारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|------------|-----------------|------------------------|---|
| १२५ × ६३ | १४ | ४३ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ९५ × ४२ | ८ | २९ | " | " | | पू० | |
| ८३ × ४१ | ५ | ३० | " | " | | "क्ष | |
| १०१ × ४४ | ८ | ३३ | " | " | | अपू० | |
| ९३ × ४२ | १२ | ३९ | " | " | | पू० | |
| ९१ × ४४ | १२ | ३१ | " | " | | अपू० | |
| ९२ × ४३ | ८ | ३५ | " | " | | " | |
| ८७ × ३८ | ११ | ३६ | " | " | | " | |
| १२५ × ४८ | ११ | ५३ | " | " | १७७९ श० १६४४ | पू० | ब्रह्मानन्दे, योगानन्द-आत्मानन्द- अद्वैतानन्द-विद्यानन्द-विषयानन्द- प्रकरणानि । |
| १३३ × ६८ | १३ | ३६ | " | " | | "क्ष | |
| ८३ × ५२ | २५ | ४७ | " | " | | " | |
| ७३ × ४६ | ८ | २४ | " | " | | अपू० | |
| ९६ × ४१ | ११ | ४० | " | " | १८८५ | पू० | |
| १०३ × ४८ | १३ | ३८ | " | " | | " | |
| ६७ × ३७ | ९ | १९ | " | " | | अपू० | |
| ९९ × ३६ | १० | ३३ | " | " | | " | |
| ९८ × ४६ | १० | ३८ | " | " | | पू० | |
| ८६ × ४१ | १२ | २२ | " | " | | " | |
| ७७ × ३९ | ११ | १४ | " | " | | " | |
| ९५ × ४२ | १५ | ३४ | " | " | | "क्ष | |
| ८ × ४२ | ८ | २२ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------------------|----------------|-------------------|
| २८८७७ | वाक्यवृत्तिप्रकाशिका | विश्वेश्वरः | ६-४० । |
| २८८७८ | श्रुतिसारार्थसङ्ग्रह- प्रदीपिका | | १-१७ । |
| २८८७९ | अर्थपञ्चकविवेकः | शटकोपदासः | ४ । (गणनया) |
| २८८८० | वेदान्तविभावना सटीका | | १-३२ । |
| २८८८१ | तत्त्वानुसन्धानम् | | १-८ । |
| २८८८२ | अपरोक्षानुभूतिः सटीका | | १६ । (गणनया) |
| २८८८३ | आत्मबोधटीका | | १-१५ । |
| २८८८४ | पञ्चदशी सटीका | विद्यारण्यः | ४३ । (गणनया) |
| २८८८५ | अद्वैतरत्नम् | | ३१-४७ । |
| २८८८६ | वेदान्तसंज्ञाप्रकरणम् | | १-२३ । |
| २८८८७ | भेदधिकारः | | १-२ । |
| २८८८८ | आगमशास्त्रविवरणटीका | आनन्दगिरिः | ५३ । (गणनया) |
| २८८८९ | पञ्चदशी | विद्यारण्यः | १-१४१ । |
| २८८९० | वेदान्तसारः | सदानन्दः | ९ । (गणनया) |
| २८८९१ | पञ्चदशी | | ३० । ,, |
| २८८९२ | अद्वैतसिद्धिः | मधुसूदनसरस्वती | १०२ । ,, |
| २८८९३ | आत्मबोधः सटीकः | शङ्कराचार्यः | ६ । ,, |
| २८८९४ | पञ्चीकरणविवरणम् | | १-९ । |
| २८८९५ | हशिप्रकरणम् | | २ गणनया । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- दिवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|--------------|
| १६ × ४६ | १० | ४६ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| १४ × ५४ | १३ | ५९ | " | " | | " | |
| १३३ × ६२ | २१ | ६० | " | " | | " | |
| १३४ × ५२ | १४ | ५५ | " | " | | " | |
| १२५ × ५३ | ११ | ४२ | " | " | | " | |
| १२३ × ६४ | १७ | ४८ | " | " | | " | |
| १११ × ४९ | ९ | २९ | " | " | | " | |
| १२ × ५७ | ६ | ३८ | " | " | | " | |
| ११८ × ५४ | ९ | ४३ | " | " | | " | |
| १०७ × ५६ | १२ | ३२ | " | " | १८०२ | पू० | |
| १०९ × ३८ | ९ | ४९ | " | " | | अपू० | |
| १२६ × ९३ | १६ | ५० | " | " | | " | |
| १२१ × ६१ | ८ | २५ | " | " | | पू० | |
| १०२ × ४६ | १६ | ४४ | " | " | | अपू० | |
| १०१ × ४८ | १५ | ३४ | " | " | | " | |
| १४ × ५५ | ९ | ५२ | " | " | | " | |
| ९७ × ५८ | १६ | ४४ | " | " | | पू० | |
| १०५ × ४१ | ७ | ४० | " | " | | अपू० | |
| ९६ × ४२ | १० | ३३ | " | " | | पू० | |

हस्तलिखितग्रन्थविवरणपञ्जिकायाः

मीमांसाग्रन्थसङ्ग्रहात्मको भागः ।

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------------|--------------|---------------------|
| २८८९६ | अधिकरणमाला | | १-२० । |
| २८८९७ | पिष्टपशुमीमांसा | नारायणः | ७-१२ । |
| २८८९८ | पिष्टपशुमण्डनम् | टीकाकारशर्मा | १-८ । |
| २८८९९ | पिष्टपशुमीमांसाखण्डन- खण्डनम् | | १-२७, २७-७३ । |
| २८९०० | पिष्टपश्चिज्यानिराकृतिवादः | | १-१० । |
| २८९०१ | पिष्टपशुतिरस्करिणी | रामेश्वरः | १-४७ । |
| २८९०२ | पिष्टपशुविचारः | | १-२, ४-९ । |
| २८९०३ | ” | | १-२ । |
| २८९०४ | पिष्टपशुयागखण्डनम् | | १-२५ । |
| २८९०५ | मीमांसान्यायप्रकाशः | आपोदेवः | १ । (१३ संख्यकम्) |
| २८९०६ | मीमांसाकौस्तुभः | | ३८ । (गणनया) |
| २८९०७ | तन्त्रवार्त्तिकम् | | १० । ” |
| २८९०८ | मीमांसानुक्रमणी | | १-१४ । |
| २८९०९ | अपत्नीकाधानविचारः | | १-२, ५-६ । |
| २८९१० | तन्त्रवार्त्तिकम् | कुमारिलभट्टः | १-१६ । |
| २८९११ | लघुवार्त्तिकम् | ” | १-७१ । |
| २८९१२ | मीमांसाकौस्तुभः | खण्डदेवः | १-१२, १४-६४ । |
| २८९१३ | तन्त्रवार्त्तिकम् | कुमारिलभट्टः | ११-१२, २३-३० । |
| २८९१४ | तन्त्रवार्त्तिकटीका | | १-१२८ । |
| २८९१५ | भावनाविवेकटीका | | ६-८४, ८६-१०२ । |
| २८९१६ | विधेरपूर्वबोधकताविचारः | | १-५ । |
| २८९१७ | विधिनिषेधवाक्यशास्त्र- त्वविचारः | | १ । |
| २८९१८ | काशिकाटिप्पणी | | १-७ । |

| वाक्यारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आ- नामः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|------------|----------|-------------------------|--------------|
| १०*५४*८ | १४ | ४५ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| १४*४*५ | ११ | ३२ | " | " | | " | |
| १०*२४*३ | ८ | ३७ | " | " | | पू० | |
| १०*३४*४ | ९ | ४० | " | " | | अपू० | |
| १३*४*७ | ९ | ३४ | " | " | | " | |
| १०*४*४ | ७ | ३५ | " | " | | पू० | |
| ७*२*३*५ | ८ | ३५ | " | " | | अपू० | |
| १०*५*४*४ | ११ | ३० | " | " | | " | |
| ३*८*३*७ | ७ | ३६ | " | " | श. १७६७ | पू० | |
| १४*४*२ | १० | ३८ | " | " | | अपू० | |
| १०*१*४*८ | ३ | ३५ | " | " | | " | |
| ११*४*७ | ९ | ४६ | " | " | | " | |
| १६*४*१*१ | १२ | ३८ | " | " | | पू० | |
| १३*४*३*६ | १२ | २७ | " | " | | अपू० | |
| ८*३*४*४ | १२ | २२ | " | " | | पू० | २ अ० ४ पादः। |
| ८*४*५ | १३ | १६ | " | " | १९२३ | " | |
| १२*४*४*८ | १३ | ४० | " | " | | अपू० | |
| ११*३*४*८ | ८ | ०९ | " | " | | " | |
| १३*३*४*८ | २९ | १९ | " | " | | " | |
| १०*१*४*१ | ८ | ५२ | " | " | | " | |
| १०*१*४*२ | १६ | ०५ | " | " | | " | |
| १४*४*४*७ | १४ | ३५ | " | " | | " | |
| ११*४*४*८ | १२ | ६२ | " | " | | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------------|------------------|---------------------------------|
| २८९१९ | जैमिनिसूत्रव्याख्या | | १ । |
| २८९२० | अर्थसङ्ग्रहः | लौगाक्षिभास्करः | १-२३ । |
| २८९२१ | मीमांसान्यायप्रकाशः | | १-९ । |
| २८९२२ | राणकम् | | १-४२ । |
| २८९२३ | न्यायसुधा | | १-७, १०-१२३ । |
| २८९२४ | त्रिकाण्डमण्डनम् | भास्करमिश्रः | १-१३, १३-१६ । |
| २८९२५ | भट्टभास्करः | जीवदेवः | १-११८ । |
| २८९२६ | मीमांसान्यायसङ्ग्रहः | महादेवभट्टः | १-१२८ । |
| २८९२७ | राणकश्लोकव्याख्या | | १-२३ । |
| २८९२८ | अधिकरणमाला | | १-४८ । |
| २८९२९ | अर्थसङ्ग्रहः | लौगाक्षिभास्करः | १-१० । |
| २८९३० | तन्त्रवार्त्तिकम् | कुमारिलभट्टः | २-६९ । |
| २८९३१ | शावरभाष्यम् | | १-१७ । |
| २८९३२ | भाट्टदीपिका | | १-८१ । |
| २८९३३ | शास्त्रदीपिका | पार्थसारथिमिश्रः | १-३२, ३४-१४, ६४-९१, ९१-९६, ९६ । |
| २८९३४ | मीमांससूत्रटीका | | १-१६ । |
| २८९३५ | जैमिनीयन्यायमाला- विस्तरः | माधवभट्टः | १-१६ । |
| २८९३६ | " | " | २-१७ । |
| २८९३७ | " | " | १-३२ । |
| २८९३८ | " | " | २१ (गणनया), १-१४, १-१६ । |
| २८९३९ | " | " | १-३७ । |
| २८९४० | शास्त्रदीपिका | पार्थसारथिः | १-४०, १६-४४, १-७७ । |
| २८९४१ | मीमांसाभाष्यम् | शवरस्वामी | २-२३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | का. क्र. | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-----------|--------------------|------------------|---------|-------------|----------|------------------------|--------------------------------------|
| १०८ × ३४ | ११ | ५२ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ८६ × ४२ | ९ | ३७ | " | " | १९०२ | पू० | |
| ८६ × ४२ | ९ | १९ | " | " | | अपू० | |
| ९०९ × ४४ | ९ | ३० | " | " | | " | |
| ९०८ × ४४ | ११ | ३१ | " | " | | " | |
| ८६ × ४२ | ७ | २९ | " | " | | पू०* | |
| ९०८ × ४५ | १० | ३६ | " | " | १८१७ | " | |
| १००९ × ४६ | १० | ४५ | " | " | | " | |
| ९४ × ४६ | ८ | २९ | " | " | | " | |
| ८३ × ४२ | ९ | २७ | " | " | | अपू० | |
| १२४ × ४४ | १४ | ४५ | " | " | | पू० | |
| १०८ × ३९ | ७ | ४० | " | " | | अपू० | सीमांसाभाष्यव्याख्यानं १ अ. ३ पादः । |
| ९६ × ३९ | ९ | ३६ | " | " | | पू० | १ अ. २ पादः । |
| १०५ × ४४ | ११ | ४६ | " | " | | अपू० | |
| १०८ × ३८ | ८ | ४२ | " | " | | " | १० अध्यायः । |
| १२४ × ३९ | ११ | ५६ | " | " | | " | |
| ११५ × ४१ | १० | ४७ | " | " | | पू० | १२ अध्यायः । |
| १११ × ४५ | १२ | ६४ | " | " | | अपू० | ७-८ अध्यायौ । |
| ११४ × ४१ | १० | ५१ | " | " | | " | ७-९ अध्यायाः । |
| ९२ × ४२ | ९ | २४ | " | " | १७०१ | " | ६-८ अध्यायाः । |
| ९३ × ४३ | १२ | ३९ | " | " | १६९९ | पू० | २ अध्यायस्य १-४ पादाः । |
| ११८ × ४९ | ११ | ३५ | " | " | | अपू० | १-३ अध्यायाः । |
| ११३ × ४९ | १२ | ४० | " | " | | " | ८ अध्यायः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|---------------------|--|
| २८९४२ | मीमांसाभाष्यम् | शबरस्वामी | १-४, ६-१२, १२-१६ । |
| २८९४३ | शास्त्रदीपिका | पार्थसारथिः | १५ । (गणनया) |
| २८९४४ | जैमिनीयन्यायमालाविस्तरः | माधवभट्टः | १-३०, १-२४, १-२९, ३१-३३, ३६-४३, १-७२, १-२० । |
| २८९४५ | मीमांसाभाष्यम् | शबरस्वामी | ३ । (गणनया) |
| २८९४६ | तन्त्रवार्तिकम् | | २-३८ । |
| २८९४७ | मीमांसाभाष्यम् | शबरस्वामी | १-२८ । |
| २८९४८ | शास्त्रदीपिका | पार्थसारथिमिश्रः | १-२२ । |
| २८९४९ | " | " | १-१०५ । |
| २८९५० | मीमांसान्यायप्रकाशः | आपदेवः | १-२४ । |
| २८९५१ | " | " | १४-२०, २२-३६, ४१-१२५ |
| २८९५२ | " | " | १३-५३ । |
| २८९५३ | तन्त्रवार्तिकटीका | | १५ । (गणनया) |
| २८९५४ | " | भट्टसोमेश्वरः | ५० । " |
| २८९५५ | " | " | ६९ । " |
| २८९५६ | विधिरसायनम् | अप्पयदीक्षितः | ४ । " |
| २८९५७ | मीमांसाकुतूहलम् | कमलाकरभट्टः | १५८ । " |
| २८९५८ | मीमांसासूत्रं सव्याख्यानम् | | १७ । " |
| २८९५९ | मीमांसासूत्रम् | | १८ । " |
| २८९६० | मीमांसासूत्रदीधितिः | राघवेन्द्रसरस्वती | १-५५ । |
| २८९६१ | विधिभूषणम् | गोपालः | ७९ । (गणनया) |
| २८९६२ | अधिकरणकौमुदी | रामकृष्णभट्टाचार्यः | १-४४ । |
| २८९६३ | राणकम् | | २-१५, १७-२२ । |
| २८९६४ | " | | ४८-५०, ५२-७१ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|-------------------------|------------------------------------|
| ११ × ४'५ | १० | ३२ | दे.ना. | का. | | अपू० | १२ अ. १ पादः । |
| ११'४ × ४'९ | १२ | ४३ | " | " | | " | २ अ. १ पादः । |
| ११'३ × ४'१ | ९ | ४० | " | " | | " | ४-६, ११-१२ अध्यायाः । |
| १०'५ × ३'५ | ८ | ४७ | " | " | | " | |
| १०'८ × ३'८ | १२ | ५६ | वंग | " | | अपू० | |
| ११'१ × ४'१ | ८ | ४७ | दे.ना. | " | | पू० | १ अ. १ पादः । |
| ९'५ × ३'५ | १० | ४७ | " | " | | अपू० | |
| १०'६ × ३'४ | ८ | ३९ | " | " | | पू० | |
| १२'६ × ६'४ | १७ | ४३ | " | " | | " | |
| ८'२ × ३'८ | ७ | २१ | " | " | | अपू० | |
| १०'९ × ५ | १० | ४३ | " | " | | " | |
| ११'९ × ४ | १५ | ८२ | " | " | | पू० | |
| ११'५ × ३'४ | ७ | ६१ | " | " | | " | ३ अध्यायः न्यायसुधेति नामान्तरम् । |
| १०' × ४'२ | १४ | ५१ | " | " | | " | २ अ. १ पादः । |
| १३'८ × ८'४ | २४ | १९ | " | " | | अपू० | |
| ९'१ × ४ | १० | ३५ | " | " | | " | तत्त्वकमलाकर इति नामान्तरम् । |
| १०'८ × ४ | ८ | ४५ | " | " | | " | |
| ९'४ × ४'२ | ११ | ३७ | " | " | | " | |
| ९'७ × ४'२ | ११ | ३७ | " | " | | " | |
| ९'९ × ४'२ | १५ | ५१ | " | " | | " | |
| १०'१ × ३ | ६ | ७७ | वज्र. | " | १६८९ | पू० | |
| ११'५ × ३'४ | ६ | ४८ | दे.ना. | " | | अपू० | तन्त्रवार्तिकटीका न्यायसुधाख्या । |
| ११'८ × ५'४ | १३ | ४२ | " | " | | " | " |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|---------------------|--|
| २८९६६ | न्यायसुधा | सोमेश्वरभट्टः | १-३९, ४३-६६, ७०-७१, ७४ । |
| २८९६६ | अर्थसङ्ग्रहः | लौगाक्षिभास्करः | १-२ । |
| २८९६७ | राणकम् | | ५५ । (गणनया) |
| २८९६८ | न्यायरत्नाकरः | पार्थसारथिः | १-४० । |
| २८९६९ | उपक्रमपराक्रमः | अप्पयदीक्षितः | १-३५ । |
| २८९७० | अधिकरणकौमुदी | रामकृष्णभट्टाचार्यः | २३ । (गणनया) |
| २८९७१ | " | " | १-३ । |
| २८९७२ | लघुचिन्तनम् | राघवदेवः | १५-३१ । |
| २८९७३ | श्लोकवार्त्तिकटीका | सुचरितमिश्रः | ३-३९ । |
| २८९७४ | मीमांसाभाष्यम् | शबरस्वामी | १-११ । |
| २८९७५ | मीमांसासूत्रदीधितिः | | २-११ १४-२९, २९-५२, ५४-८०, ९१-१४८, १५०-, १८७, १८९-१९० । |
| २८९७६ | शास्त्रदीपिका | पार्थसारथिमिश्रः | ४३-१०२ । |
| २८९७७ | महार्णवप्रभाकरः | श्रीनारायणः | १-६, २९-७८ । |
| २८९७८ | भावनाविवेकटीका | ओम्बेकः | १-५२ । |
| २८९७९ | तन्त्रवार्त्तिकटीका | | २५ । (गणनया) |
| २८९८० | जैमिनिस्त्रवृत्तिः | शाम्बभट्टः | ४ । " |
| २८९८१ | " | " | १४, २५-३० । |
| २८९८२ | शास्त्रदीपिका | | ५० ७७ । |
| २८९८३ | मीमांसासूत्रव्याख्या | | २८, ३२-३५, ३७-४१, ४३-५० । |
| २८९८४ | मीमांसाभाष्यम् | शबरस्वामी | १-१२ । |
| २८९८५ | " | " | १-२१ । |
| २८९८६ | मीमांसाभाष्यवार्त्तिकम् | भट्टकुमारिलः | ८३-८४, ८६-८९ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आवाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|------|----------|------------------------|--|
| ११'४ × ३'६ | ८ | ५९ | दे. ना. | का. | | अपू० | तन्त्रवार्त्तिकटीका, राणकमितिना- मान्तरम् । |
| १०'१ × ३'४ | ६ | २८ | " | " | | " | |
| ११'१ × ४'५ | ११ | ४१ | " | " | | " | तन्त्रवार्त्तिकटीका । |
| ११'७ × ५'२ | १४ | ३६ | " | " | | " | श्लोकवार्त्तिकटीका । |
| ९'२ × ४ | १५ | ४५ | " | " | | पू० | |
| १६'२ × ३'४ | ६ | ६३ | वङ्ग. | " | | अपू० | |
| १३ × ३ | ८ | ६५ | " | " | | पू० | लिंगसमवायन्यायमात्रविचारः । |
| ९'१ × ३'६ | १५ | ४५ | दे. ना. | " | | अपू० | |
| १०'९ × ३'२ | १० | ५९ | " | " | | " | काशिकाख्या । |
| ११'१ × ४'३ | ११ | ५० | " | " | १६८६ | पू० | १ अध्यायः । |
| १०'२ × ४'२ | ८ | ३७ | " | " | | अपू० | |
| १०'८ × ४'६ | १० | ४१ | " | " | १६६६ | " | |
| १२ × ४'५ | ८ | ४७ | " | " | | " | |
| ९'६ × ३'२ | ९ | ४५ | " | " | | पू० | |
| ११'२ × ४'७ | १४ | ४४ | " | " | | अपू० | |
| ९'२ × ३'५ | ८ | ४० | " | " | | " | १ अ० ३ पादः । |
| ८'८ × ३'५ | ९ | ३९ | " | " | | " | |
| ९'९ × ४'१ | १० | ५१ | " | " | | " | |
| ९'२ × ४'२ | १० | ४२ | " | " | | " | |
| १०'३ × ३'८ | ८ | ३३ | " | " | | " | ६ अ० १ पादः । |
| ९'८ × ४'३ | १० | ३९ | " | " | | पू० | ३ अ० २ पादः । |
| १०'३ × ३'९ | १४ | ५५ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|------------------|--------------------------------|
| २८९८७ | मीमांसाभाष्यवार्त्तिकम् | भट्टकुमारिलः | १-५, ९, १२-३२ । |
| २८९८८ | " | " | १३-१९, १९-३०, ३०-४०, ४२-४६, ४८ |
| २८९८९ | भाट्टदीपिका | खण्डदेवः | १-२८ । |
| २८९९० | विधिनिर्णयः | | २७-३८, ६०-६१, ६४-६५, ६७-६८ । |
| २८९९१ | अर्थसङ्ग्रहः | लौगाक्षिभास्करः | १-३, ५ । |
| २८९९२ | विधिरसायनम् | अप्पयदीक्षितः | १-९ । |
| २८९९३ | शास्त्रदीपिका | पार्थसारथिः | १०-१४, ३९-४८ । |
| २८९९४ | " | " | १-४६ । |
| २८९९५ | " | " | १-८५ । |
| २८९९६ | " | " | १-३२ । |
| २८९९७ | " | " | १-२६ । |
| २८९९८ | मीमांसाभाष्यम् | शबरस्वामी | १-१२ । |
| २८९९९ | " | " | १-११ । |
| २९००० | अर्थसङ्ग्रहः | लौगाक्षिभास्करः | १-२८ । |
| २९००१ | शबरभाष्यम् | शबरस्वामी | १-१२ । |
| २९००२ | शबरभाष्यवार्त्तिकम् | कुमारिलस्वामी | १-७९ । |
| २९००३ | मीमांसान्यायप्रकाशः | आपोदेवः | १-४८ । |
| २९००४ | " | " | १-७ (= ८) ९-४७ । |
| २९००५ | शास्त्रदीपिकाव्याख्या | सोमनाथः | १-२७ । |
| २९००६ | " | " | १-११, ११-५३ । |
| २९००७ | तन्त्ररत्नम् | पार्थसारथिमिश्रः | ५३७ । (गणनया) |
| २९००८ | जैमिनिन्यायमालाविस्तरः | माधवः | २६-४७ । |
| २९००९ | भावनाविवेकः सव्याख्यः | मण्डनमिश्रः | १-३१ । |
| २९०१० | भाट्टदीपिका | खण्डदेवः | १-२२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आयः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-----|----------|------------------------|--------------------|
| १०३ × ३८ | १६ | ४१ | दे. ना. | का. | | अपू० | २ अध्यायं १ पादः । |
| १०५ × ४७ | १४ | ४७ | " | " | १६३८ | " | |
| १०४ × ३९ | १० | ५९ | " | " | | पू० | ५ अध्यायः । |
| १०२ × ३३ | ८ | ६० | " | " | | अपू० | |
| १०२ × ४४ | ९ | ३४ | " | " | | " | |
| १०१ × ९४ | २० | २० | " | " | | पू० | |
| १११ × ४१ | ८ | ५१ | " | " | | अपू० | |
| १११ × ४१ | ८ | ४८ | " | " | | पू० | |
| ११२ × ४१ | ८ | ५१ | " | " | १७०५ | " | |
| १११ × ४२ | ८ | ४७ | " | " | १७०५ | " | |
| १०७ × ४ | ८ | ४५ | " | " | | अपू० | |
| ११६ × ४२ | १० | ४१ | " | " | १६८८ | पू० | |
| ११५ × ४१ | १० | ४८ | " | " | | " | |
| ९४ × ४२ | ७ | ३१ | " | " | | " | |
| ९३ × ४२ | १० | ४० | " | " | | अपू० | |
| ११४ × ४३ | ९ | ४१ | " | " | | पू० | |
| १०३ × ४५ | १० | ४१ | " | " | | " | |
| ९४ × ४२ | १२ | ३९ | " | " | | " | |
| १०७ × ४६ | १२ | ४६ | " | " | | " | |
| १०२ × ४६ | १० | ३५ | " | " | | " | |
| ११५ × ५३ | ९ | ३२ | " | " | १८१६ | " | |
| ११४ × ४४ | ११ | ५६ | " | " | | अपू० | |
| १३३ × ८२ | २२ | २२ | " | " | | पू० | |
| १०२ × ४१ | ९ | ३७ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|-----------------|----------------------|
| २९०११ | शास्त्रदीपिका | पार्थसारथिः | १-२४ । |
| २९०१२ | " | " | १-३१ । |
| २९०१३ | अर्थसङ्ग्रहः | लौगाक्षिभास्करः | १-१९ । |
| २९०१४ | " | " | १-३१ । |
| २९०१५ | मीमांसाभाष्यम् | शबरस्वामी | १-१६ । |
| २९०१६ | शास्त्रदीपिकाव्याख्या | | ६२-६७ । |
| २९०१७ | शास्त्रदीपिका | पार्थसारथिः | १-३८ । |
| २९०१८ | " | " | १-२, ४-१८, २०-२३ । |
| २९०१९ | " | " | ३-१७, १९-२७ । |
| २९०२० | " | " | १-१६, १८-२५, ३०-३१ । |
| २९०२१ | " | " | १७, २०-३४ । |
| २९०२२ | न्यायरत्नमालाव्याख्या | रामानुजाचार्यः | १-५२ । |
| २९०२३ | शास्त्रदीपिका | पार्थसारथिः | १-५० । |
| २९०२४ | मीमांसान्यायप्रकाशः | आपोदेवः | १-२० । |
| २९०२५ | " | " | १-४२ । |
| २९०२६ | अर्थसङ्ग्रहः | लौगाक्षिभास्करः | १-२५ । |
| २९०२७ | शास्त्रदीपिका | | ५७ । (गणनया) |
| २९०२८ | मीमांसासूत्रवृत्तिः | | २, ४-१२ । |
| २९०२९ | ब्रीहिप्रोक्षणादिविचारः | | ११ । (गणनया) |
| २९०३० | अध्ययनविधिविचारः | | १-२२ । |
| २९०३१ | जैमिनिन्यायमालाविस्तरः | माधवः | १८१ । (गणनया) |
| २९०३२ | श्लोकवार्तिकटीका- | सुचरितमिश्रः | १-६३२ । |
| २९०३३ | जैमिनिन्यायमालाविस्तरः | माधवः | ४०८ । (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|-------------------------|--------------|
| १०°४ × ४°२ | १० | ४१ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| ८°९ × ४°९ | १२ | ४० | " | " | १७१३ | पू० | |
| ९°७ × ४°२ | १० | ३५ | " | " | | " | |
| ८°३ × ४°५ | ७ | ३४ | " | " | | " | |
| ११°५ × ४°७ | ११ | ५२ | " | " | | अपू० | |
| १०°८ × ३°४ | ५ | ३० | " | " | | " | नारायणीया । |
| ११°४ × ३°७ | ८ | ६१ | " | " | | पू० | |
| १०°१ × ४°२ | १२ | ४३ | " | " | | अपू० | |
| १०°७ × ४°७ | ९ | ४५ | " | " | | " | |
| १०°८ × ४°३ | ९ | ४४ | " | " | | " | |
| १०°२ × ४°२ | ६ | ३७ | " | " | | " | |
| १३°३ × ५°१ | १२ | ६७ | " | " | १८९३ | पू० | |
| १०°७ × ३°६ | ११ | ४० | " | " | | " | |
| १२ × ५°१ | १८ | ५८ | " | " | | " | |
| ९°२ × ४°२ | १३ | ४२ | " | " | | " | |
| ९°५ × ४°३ | ९ | २७ | " | " | | " | |
| १४ × ५°४ | ९ | ५१ | " | " | | अपू० | |
| ९ × ३°६ | ८ | ४१ | " | " | | " | |
| ११°७ × ४°२ | ११ | ४७ | " | " | | " | |
| ९°८ × ४°२ | ११ | ४९ | " | " | | " | |
| ९°१ × ३°९ | १० | ४० | " | " | | पू० | |
| १०°३ × ३°३ | ११ | ४५ | " | " | १६३० | " | काशिकाख्या । |
| १० × ४°३ | १० | ३४ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--|----------------------|---------------------------------------|
| २९०३४ | शास्त्रदीपिकाव्याख्या | सोमनाथः | १-९८ । |
| २९०३५ | पूर्वमीमांसामतसङ्ग्रहः | | ३ । (गणनया) |
| २९०३६ | टुप्टीका | कुमारिलभट्टः | १-१३, १६-५१, ५५-६४, ६४-८१ । |
| २९०३७ | तन्त्रवार्त्तिकम् | ,, | ३-४८ । |
| २९०३८ | टुप्टीका | ,, | १-३, १६-१७ । |
| २९०३९ | जैमिनिस्मृत्युक्तिः | शाम्बभट्टः | २३-३९, ४१-५८, ७३-८२ । |
| २९०४० | ,, | ,, | १, ३-६, ८-१० । |
| २९०४१ | टुप्टीका | कुमारिलभट्टः | ३-३६, ३८-४१, ४३, ४५-४८, ५१-५२ । |
| २९०४२ | ,, | ,, | ५६-११४ । |
| २९०४३ | इष्टिकालनिर्णयः | मुरारिः | १-२०, २०-२१ । |
| २९०४४ | प्रमेयविचारः | | १-८, १३-३० । |
| २९०४५ | भाट्टतन्त्ररहस्यम् | खण्डदेवः | १-११ । |
| २९०४६ | शास्त्रदीपिकाव्याख्या | वैद्यनाथः | १-४८, ४६-७३ । |
| २९०४७ | ,, | सोमनाथयज्वा | १-२२, १-३२ । |
| २९०४८ | तन्त्रदर्पणम् | अग्निचित्पुरुषोत्तमः | १-१११ । |
| २९०४९ | ,, | ,, | ३-१५, १७-२५ (=२८) २९-३९, ४१ । |
| २९०५० | मीमांसादर्शनम् तन्त्रवाक्त्तिक- साहित्यम् | | १-१९, २१-५६, १-४०, १-२६, १-१२, १-५३ । |
| २९०५१ | वाक्यार्थव्याख्यानम् | | १-११ । |
| २९०५२ | वाक्यार्थबोधः | | १-१२ । |
| २९०५३ | मीमांसाग्रन्थविशेषः | | २२-२३, ३१-३२, ३४ । |
| २९०५४ | शास्त्रदीपिकाव्याख्या | | १-३१ । |
| २९०५५ | पाषण्डखण्डनम् | | १-२४ । |
| २९०५६ | तन्त्रवार्त्तिकतात्पर्यम् | कमलाकरः | १६ । (गणनया) |

| आकारः | पक्षि- संख्या | वक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|------------------|
| १२°८ × ४°८ | १० | ६० | दे. ना. | का. | १८४८ | अपू० | |
| ८°६ × ४°६ | १७ | ४४ | " | " | | " | |
| ११ × ५ | १५ | ४७ | " | " | १६३४ | " | |
| ११ × ३°५ | १० | ५२ | " | " | | " | |
| १°९ × ३°८ | १० | ५१ | " | " | | " | |
| ८°८ × ३°४ | ९ | ३८ | " | " | | " | |
| ९°२ × ३°५ | ८ | ३९ | " | " | | " | |
| १०°२ × ३°७ | १० | ५७ | " | " | | " | |
| १०°९ × ४°७ | १४ | ४१ | " | " | | " | |
| ९°२ × ४°२ | १३ | ४१ | " | " | | पू० | |
| १०°३ × ३°३ | ९ | ३४ | " | " | | अपू० | |
| ४°७ × ३°४ | १२ | २० | " | " | | " | |
| १०°९ × ४°९ | ११ | ४३ | " | " | | " | प्रभास्या । |
| ११°९ × ४ | १० | ४३ | " | " | | " | सयूखमालिकाख्या । |
| ११°८ × ४°४ | ९ | ३९ | " | " | | पू० | |
| १०°१ × ४°० | १३ | ४६ | " | " | | अपू० | |
| १०°८ × ४°२ | १० | ५१ | " | " | | " | |
| ९°८ × ४°४ | १६ | ४८ | " | " | | " | |
| १०°४ × ४°३ | ११ | ४५ | " | " | | " | |
| ९°३ × ४°२ | ११ | ४२ | " | " | | " | |
| १०°७ × ३°४ | ४ | २७ | " | " | | " | |
| १३°१ × ४°२ | ९ | ४८ | " | " | | " | |
| ११°४ × ४°८ | १२ | ४३ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|--------------------------|--------------------------|
| २९०५७ | तन्त्रवार्त्तिकटीका | कमलाकरभट्टः | २४ । (गणनया) |
| २९०५८ | " | " | १-८, २०-४३, ४३-४५ । |
| २९०५९ | दुर्गमग्रन्थयोजना | रामकृष्णः | १-७८ । |
| २९०६० | जैमिनिस्मृतम् | जैमिनिः | २-७ । |
| २९०६१ | मीमांसाधिकरणानुक्रमणिका | भट्टशङ्करः | १-३ । |
| २९०६२ | मीमांसाभाष्यम् | शबरस्वामी | २, ४-१५, १-१४, १-१४ । |
| २९०६३ | मीमांसावार्त्तिकम् | कुमारिलभट्टः | २-६ । |
| २९०६४ | " | " | १-२१, २३-५६ । |
| २९०६५ | मीमांसादीधितिः | राघवानन्दसरस्वती | १-१२७ । |
| २९०६६ | मीमांसावार्त्तिकम् | कुमारिलभट्टः | १-७, १०-२७ । |
| २९०६७ | मीमांसाभाष्यम् | शबरस्वामी | १-२१, २४-३०, ५९-७८, ८१ । |
| २९०६८ | विधिरसायनदूषणम् | | १-३० । |
| २९०६९ | वाक्यभेदः | | २-९ । |
| २९०७० | मीमांसासूत्रं सभाष्यम् | जैमिनिः भा. शबरस्वामी | २५ । (गणनया) |
| २९०७१ | मीमांसाभाष्यम् | शबरस्वामी | १-३, ५-१५ । |
| २९०७२ | मीमांसासूत्रं सभाष्यम् | जैमिनिः भा. शबरस्वामी | १-६६ । |
| २९०७३ | शास्त्रदीपिका | पार्थसारथिमिश्रः | १, ४-५५ । |
| २९०७४ | " | " | १-८४ । |
| २९०७५ | मीमांसासारः | विश्वकर्मा | १-१९, ४-१२ । |
| २९०७६ | विधिरसायनं सटीकम् | | १-१३, १६-२७ । |
| २९०७७ | विधिविवेकटीका | वाचस्पतिमिश्रः | १-१८४ । |
| २९०७८ | मीमांसाभाष्यम् | शबरस्वामी | १-२५ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---------------|
| ११'१ × ४'६ | १४ | ४३ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ११ × ४'९ | ११ | ३६ | " | " | | " | |
| ११'९ × ४'२ | ९ | ४२ | " | " | | " | |
| ८'७ × ४'४ | ७ | २७ | " | " | | " | |
| १२'५ × ४'५ | १४ | ५९ | " | " | | " | |
| १०'८ × ५'२ | १२ | ४७ | " | " | | " | |
| १०'९ × ४'२ | ११ | ४६ | " | " | | " | |
| १०'७ × ४ | ११ | ३९ | " | " | १६८० | " | |
| १०'७ × ४'८ | ११ | ३८ | " | " | | " | |
| १०'१ × ३'६ | ८ | ३९ | " | " | | " | १ अ. ४ पादः । |
| १०'८ × ५'१ | १२ | ४२ | " | " | | " | |
| १०'८ × ४'२ | ९ | ३२ | " | " | | " | |
| १०'५ × २'९ | ७ | ४८ | " | " | | " | |
| १०'४ × ३'६ | ९ | ४६ | " | " | | " | |
| १०'७ × ३'७ | ८ | ४८ | " | " | १५९८ | " | |
| ६'७ × ३'५ | १० | २५ | " | " | | पू० | |
| ९'१ × ३'६ | ९ | ३६ | " | " | १६९४ | अपू० | |
| ११ × ४'९ | १० | ४५ | " | " | १६४१ | पू० | |
| ९'८ × ४'३ | १० | २७ | " | " | | अपू० | |
| ८'६ × ३'८ | १४ | ४४ | " | " | | " | |
| १०'३ × ३'९ | ११ | ५१ | " | " | | " | |
| १०'८ × ३'७ | ९ | ४२ | " | " | | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|--------------------------|--------------------|
| २९०७९ | मीमांसासूत्रं सभाष्यम् | जैमिनिः भा. शबरस्वामी | १-४७ । |
| २९०८० | " | " | १-३० । |
| २९०८१ | " | " | १-७० । |
| २९०८२ | " | " | १-३८, ५८-११४ । |
| २९०८३ | मीमांसाभाष्यम् | शबरस्वामी | १-७, ९-२८, २८-६३ । |
| २९०८४ | भाष्यनासारसङ्ग्रहः | महामुद्रलभट्टः | १-२९ । |
| २९०८५ | मीमांसाकौस्तुभः | खण्डदेवः | १-४६, १-४५, १-३४ । |
| २९०८६ | तन्त्रवार्तिकम् | | ६८ । (गणनया) |
| २९०८७ | शास्त्रदीपिकाटीका | | २-२० । |
| २९०८८ | मीमांसाकौस्तुभः | खण्डदेवः | १-५१, १-१८ । |
| २९०८९ | तन्त्रवार्तिकम् | | ३-१८ । |
| २९०९० | जैमिनिसूत्रम् | जैमिनिः | १-१५ । |
| २९०९१ | मीमांसाकौस्तुभः | खण्डदेवः | १-८७ । |
| २९०९२ | मीमांसाकुतूहलम् | कमलाकरभट्टः | १-४२, ४२-८७ । |
| २९०९३ | शास्त्रदीपिका | पार्थसारथिमिश्रः | १-७३ । |
| २९०९४ | " | " | १-७१ । |
| २९०९५ | " | " | १-६ । |
| २९०९६ | " | " | १-२४३ । |
| २९०९७ | भाट्टरहस्यम् | खण्डदेवः | ४ । (गणनया) |
| २९०९८ | मीमांसान्यायप्रकाशः | आपोदेवः | २२-६० । |
| २९०९९ | भाट्टरहस्यम् | खण्डदेवः | १-९३ । |
| २९१०० | मीमांसान्यायप्रकाशः | आपोदेवः | १-५२ । |
| २९१०१ | मीमांसाभाष्यम् | शबरस्वामी | १-१४ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|----------------------|
| १०°९ × ३°८ | ९ | ४४ | दे. ना. | का. | १४४१ | पू० | |
| १०°८ × ३°८ | ९ | ४३ | " | " | १६४३ | अपू० | |
| १०°९ × ४°३ | १९ | ४६ | " | " | | पू० | |
| १०°८ × ४ | ९ | ४३ | " | " | | अपू० | |
| ९°९ × ४ | ९ | ३० | " | " | | " | |
| ९°१ × ४°१ | ११ | ३४ | " | " | १६३९ | पू० | |
| ११°८ × ३°७ | ९ | ४७ | " | " | | " | |
| ११°८ × ३°६ | १० | ५४ | " | " | | अपू० | |
| १०°८ × ३°४ | ५ | ३५ | " | " | | " | |
| ११°७ × ३°७ | ९ | ४६ | " | " | | " | २ अध्याये ३-४ पादौ । |
| १०°८ × ३°९ | १२ | ६० | " | " | | " | |
| ८°६ × ४°४ | ७ | २६ | " | " | | पू० | |
| ११°७ × ४°२ | १० | ४२ | " | " | | " | |
| १०°७ × ४°६ | १२ | ३९ | " | " | १७०३ | " | |
| १०°६ × ४°६ | १५ | ३६ | " | " | | " | |
| ८°२ × ३°९ | १० | ४४ | " | " | | अपू० | |
| १२°६ × ४°७ | १२ | ५३ | आन्ध्र | " | | " | |
| १०°७ × ४°५ | १० | ४४ | दे. ना. | " | | " | |
| १४ × ३°४ | १० | ८१ | आन्ध्र | " | | " | |
| ९°६ × ४°६ | १२ | ३९ | दे. ना. | " | | " | |
| ९ × ४°१ | १२ | ४० | " | " | | पू० | |
| १०°४ × ४°४ | १० | ५० | " | " | | " | |
| ९°९ × ३°६ | ८ | ३९ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|-----------------------------|-------------------------|
| २९१०२ | मीमांसाभाष्यम् | शबरस्वामी | १-१३ । |
| २९१०३ | " | " | १-१३ । |
| २९१०४ | " | " | ४-२१३ । |
| २९१०५ | " | " | १-४७ । |
| २९१०६ | " | " | १-३८ । |
| २९१०७ | " | " | १-३८ । |
| २९१०८ | मीमांसासूत्रं सभाष्यम् | जैमिनिः भा.का. शबरस्वामी | ६-७ । |
| २९१०९ | " | " | १-५३ । |
| २९११० | " | " | १-२६ । |
| २९१११ | " | " | १-२८, ३०-४५ । |
| २९११२ | " | " | १-९९ । |
| २९११३ | " | " | १-४९ । |
| २९११४ | " | " | १-१९ । |
| २९११५ | " | " | १-७० । |
| २९११६ | " | " | १-२९ । |
| २९११७ | " | " | १-२५ । |
| २९११८ | " | " | १-११५ । |
| २९११९ | विधिविवेकः | रामेश्वरः | १-१२ । |
| २९१२० | विधिरत्नसमुच्चयः | रामकृष्णभट्टः | १-१४, २१-४६ । |
| २९१२१ | मीमांसासूत्रदीधितिः | राघवानन्दसरस्वती | १-५१, ५१-५७, ५९-८२ । |
| २९१२२ | मीमांसासूत्रम् | | १-३० । |
| २९१२३ | मीमांसासूत्रं सभाष्यम् | जैमिनिः भा.का. शबरस्वामी | १-७, ११६-१३७, १४५-१५० । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|------|-----------------|------------------------|--------------|
| १०°४ × ४°७ | १० | ३९ | दे.ना. | का. | | पू० | |
| १०°८ × ४°७ | १० | ३३ | " | " | | " | |
| १०°९ × ३°७ | ८ | ९३ | " | " | १६९१ | अपू० | |
| १०°९ × ३°९ | ८ | ४३ | " | " | | पू० | |
| १०°४ × ४ | १३ | ४९ | " | " | | अपू० | |
| १०°८ × ३°८ | ८ | ४९ | " | " | | पू० | |
| १०°९ × ४°१ | १० | ९६ | " | " | | अपू० | |
| ११ × ४°९ | १० | ४९ | " | " | | पू० | |
| १०°८ × ४°७ | ११ | ४८ | " | " | | " | |
| ११°१ × ४°९ | १० | ४३ | " | " | | अपू० | |
| ११°२ × ४°६ | १० | ४७ | " | " | | पू० | |
| ११°३ × ४°७ | ९ | ४९ | " | " | १६९० | " | |
| ११ × ४°७ | १२ | ४९ | " | " | | " | |
| ११°२ × ४°९ | ११ | ४७ | " | " | | " | |
| १०°८ × ४°७ | १० | ४९ | " | " | | " | |
| १०°८ × ४°८ | १० | ९२ | " | " | | " | |
| १०°७ × ४°८ | १३ | ३१ | " | " | | अपू० | |
| १३°३ × ९°१ | ११ | ९० | " | " | श. १७९० | पू० | |
| ११°३ × ४°२ | ११ | ४९ | " | " | १६०६ | अपू० | |
| १२°९ × ६°४ | १९ | ४८ | " | " | १८८० | " | |
| १३ × ९°४ | १३ | ३९ | " | " | १८८९ श. १७९० | पू० | |
| १०°८ × ४°७ | १२ | ९२ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|-----------------------------------|---------------------|
| २९१२४ | मीमांसासूत्रं सभाष्यम् | जैमिनिः भा.का. शबरस्वामी | १-२१। |
| २९१२५ | " | " | १-३१। |
| २९१२६ | " | " | १-१४। |
| २९१२७ | " | " | १-१०। |
| २९१२८ | तन्त्रवार्त्तिकटीका | सोमेश्वरभट्टः | २। (गणनया) |
| २९१२९ | " | " | १-८७। |
| २९१३० | " | " | ३-४, ६-१२४। |
| २९१३१ | " | " | १-९१। |
| २९१३२ | " | " | १-४७। |
| २९१३३ | " | " | ४-९६। |
| २९१३४ | " | " | १-९४। |
| २९१३५ | " | " | १-१३०। |
| २९१३६ | " | " | १-२५, २५-६७, ६७-७२। |
| २९१३७ | " | " | १-८८। |
| २९१३८ | न्यायरत्नमाला | पार्थसारथिमिश्रः | १-१०७। |
| २९१३९ | न्यायरत्नाकरः | पिमानन्दः | १-६२। |
| २९१४० | " | " | ६। (गणनया) |
| २९१४१ | फलसाङ्ख्यखण्डनम् | अनन्तदेवः | १-१२। |
| २९१४२ | भावनाविवेकः सटीकः | मण्डनमिश्रः टी.का.-उम्बेकभट्टः | १-४६। |
| २९१४३ | भाट्टभास्करः | जीवदेवः | ८७-१२८। |
| २९१४४ | " | " | १-५१। |
| २९१४५ | भाट्टभाषाप्रकाशिका | नारायणतीर्थ- गुनिवरः | १-२३। |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आ- धारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|------------|----------|-------------------------|-----------------|
| १० × ४४ | ७ | ३६ | दे. ना. | का. | | पू० | न्यायसुधाख्या । |
| १० × ४५ | ९ | ३८ | " | " | | " | |
| १०२ × ३३ | ८ | ४६ | " | " | | " | |
| १०३ × ३३ | १० | ५० | " | " | | " | |
| ११४ × ४९ | १० | ४६ | " | " | १६४७ | अपू० | |
| ११२ × ४७ | ८ | ३८ | " | " | १६४७ | पू० | |
| ११६ × ५२ | १२ | ४४ | " | " | | अपू० | |
| १०६ × ४९ | १२ | ४८ | " | " | | पू० | |
| १०९ × ४९ | ८ | ३६ | " | " | १६४५ | " | |
| १०३ × ४४ | १० | ३७ | " | " | | अपू० | |
| ११५ × ४२ | १० | ४० | " | " | | पू० | |
| ११४ × ४६ | ८ | ३५ | " | " | | अपू० | |
| १०१ × ४४ | १० | ४७ | " | " | | पू० | |
| १११ × ४८ | ८ | ४२ | " | " | | अपू० | |
| १०२ × ४१ | १२ | ४२ | " | " | | पू० | |
| ८८ × ३५ | १० | ४३ | " | " | | " | |
| ९१ × ३६ | १६ | ४६ | " | " | | अपू० | |
| १०४ × ४६ | १२ | ४४ | " | " | | पू० | |
| ११३ × ३४ | ११ | ५२ | " | " | १६४७ | " | |
| ८१ × ३९ | ९ | ३४ | " | " | | अपू० | |
| १२४ × ५४ | ११ | ५१ | " | " | १८५६ | पू० | |
| १२६ × ४७ | ११ | ६४ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------|------------------|---------------------------|
| २९१४६ | भाट्टदिनकरः | दिनकरभट्टः | ५, ५-२०, २-३३ । |
| २९१४७ | " | " | १-७ (= ७-८,) ९-१३, १६-२० |
| २९१४८ | " | दिनकरभट्टः | १-४६ । |
| २९१४९ | " | " | १-५, २१-४३ । |
| २९१५० | " | " | १-११ । |
| २९१५१ | " | " | १-११ । |
| २९१५२ | " | " | १-५२ । |
| २९१५३ | " | " | १-२४ । |
| २९१५४ | " | " | १-२४, २६-५४ । |
| २९१५५ | " | " | १-३, ३-९० । |
| २९१५६ | " | " | १-५३ । |
| २९१५७ | " | " | १-२१, २१-२८, ३०-७५ । |
| २९१५८ | तन्त्रवार्त्तिकटीका | सोमेश्वरभट्टः | १-१४५ । |
| २९१५९ | तन्त्ररत्नम् | पार्थसारथिमिश्रः | ३५-५६ । |
| २९१६० | " | " | १-८१ । |
| २९१६१ | " | " | १-८४ । |
| २९१६२ | " | " | १-२२ । |
| २९१६३ | " | " | १-११८ । |
| २९१६४ | " | " | १ ७६ । |
| २९१६५ | " | " | १-५३ । |
| २९१६६ | " | " | १-४० । |
| २९१६७ | दुष्टीका | कुमारिलभट्टः | १-३६ । |
| २९१६८ | " | " | १-२१ । |
| २९१६९ | " | " | १-३१ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|--------------|
| ११'१ × ४'७ | १३ | ४५ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| १०'९ × ४'९ | १४ | ४३ | " | " | | " | |
| १०'९ × ४'७ | १४ | ४७ | " | " | | " | |
| ११'१ × ४'८ | १३ | ४३ | " | " | | " | |
| ११'२ × ४'९ | १४ | ४४ | " | " | | पू० | |
| ११'१ × ४'८ | १४ | ४५ | " | " | | " | |
| १०'९ × ४'८ | ११ | ४१ | " | " | | " | |
| १०'९ × ४'८ | ९ | ४४ | " | " | | " | |
| १०'८ × ४'८ | १० | ४१ | " | " | | " | |
| १०'९ × ४'९ | १४ | ४० | " | " | | " | |
| १०'९ × ४'९ | १० | ४२ | " | " | | " | |
| १०'८ × ४'९ | १० | ३५ | " | " | | " | |
| ११'४ × ४'१ | ८ | ३७ | " | " | १६८९ | " | |
| १०'२ × ४'१ | १२ | ४५ | " | " | १६७० | अपू० | |
| ९'९ × ४'४ | १३ | ४५ | " | " | | पू० | |
| १०'१ × ४'४ | १२ | ४४ | " | " | | " | |
| १०'१ × ४'२ | १० | ३७ | " | " | | " | |
| १०'२ × ४'३ | १२ | ४७ | " | " | | " | |
| ९'२ × ४'२ | ११ | ४५ | " | " | | " | |
| ९'९ × १०'३ | १२ | ४२ | " | " | | " | |
| ११'३ × ३'९ | ९ | ४६ | " | " | | " | |
| १०'४ × ४'४ | १४ | ४३ | " | " | | " | |
| १०'१ × ४'३ | १३ | ५१ | " | " | | अपू० | |
| ९'९ × ४'२ | १४ | ५१ | " | " | १६७० | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------|---------------|----------------------|
| २९१७० | दुष्टटीका | कुमारिलभट्टः | १-१८ । |
| २९१७१ | " | " | १-८ । |
| २९१७२ | ज्ञप्तिप्रामाण्यम् | | १-३५ । |
| २९१७३ | चिन्त्यसङ्ग्रहः | | १-६ । |
| २९१७४ | चित्रपटी | | १-२४, २४-२५ । |
| २९१७५ | अमृतविन्दुटीका | | १-१०४ । |
| २९१७६ | अध्ययनविधिचर्चा | | १-२८ । |
| २९१७७ | अधिकरणकौमुदी | देवनाथः | १-३७ । |
| २९१७८ | अङ्गत्वनिरुक्तिः | मुरारिः | १-३८ । |
| २९१७९ | शास्त्रमालावृत्तिः | अनन्तभट्टः | १-१६ । |
| २९१८० | राणकम् | सोमेश्वरः | ५८ । (गणनया) |
| २९१८१ | शास्त्रदीपिकाटीका | नारायणभट्टः | १-२४ । |
| २९१८२ | राणकम् | | २-४८, ४८-६९, ७१ । |
| २९१८३ | मीमांसावार्त्तिकव्याख्या | | १-५३ । |
| २९१८४ | मीमांसाश्लोकवार्त्तिकम् | | १-१३ । |
| २९१८५ | शास्त्रदीपिका | | ५१ । (गणनया) |
| २९१८६ | मीमांसासूत्रवृत्तिः | | १-१४ । |
| २९१८७ | भट्टनयद्योतः | | १-२, ७-३४ । |
| २९१८८ | अधिकरणादिनिरूपणम् | | १-२५ । |
| २९१८९ | चित्रपटी | | २-१७ । |
| २९१९० | शास्त्रदीपिकाव्याख्या | सोमनाथः | १-६ । |
| २९१९१ | " | " | १०२-१०३ । |
| २९१९२ | " | " | १-३४, १-२१, १-१५ । |
| २९१९३ | न्यायसुधा | सोमेश्वरभट्टः | ३-११, ३०-६०, ६३-७६ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|------------------|
| १०*४ × ४*४ | ११ | ४५ | दे. ना. | का. | | पू० | |
| १०*४ × ४*४ | १२ | ४८ | " | " | | अपू० | |
| ८.८ × ३*९ | १० | ४६ | " | " | | " | |
| १२*२ × ३*८ | ९ | ६४ | " | " | | पू० | |
| १०*२ × ४*२ | ७ | ३२ | " | " | | " | |
| ११*१ × ४*१ | १० | ४९ | " | " | | " | |
| ११*२ × ४*८ | १० | ४६ | " | " | | " | |
| १३*८ × ५*२ | १० | ६० | " | " | | " | |
| ११*९ × ४*९ | १२ | ४९ | " | " | | " | |
| १०*९ × ४*६ | ९ | ४३ | " | " | | " | |
| १०*४ × ४*७ | १६ | ४० | " | " | | अपू० | |
| १०*८ × ३*९ | ९ | ४८ | " | " | | " | |
| १० × ४*३ | १३ | ४१ | " | " | | " | |
| १०*७ × ४*५ | ११ | ४८ | " | " | | " | |
| ११*१ × ३*२ | ९ | ५१ | " | " | | " | |
| ११*२ × ३*३ | ८ | ५३ | " | " | | " | |
| ९*३ × ४*४ | १० | ३८ | " | " | | " | |
| १२*५ × ४*३ | ९ | ३९ | " | " | | " | |
| १४*२ × २*५ | ७ | ८५ | वङ्ग. | " | | " | |
| १०*९ × ३*४ | ४ | २३ | " | " | | " | |
| १३*२ × ६ | १३ | ४६ | दे. ना. | " | | " | मयूखमालिकाख्या । |
| १३*६ × ६*२ | १३ | ५७ | " | " | | " | " |
| १३*५ × ६*३ | १६ | ५२ | " | " | | पू० | " ६-८ अध्यायाः । |
| १०*६ × ४*७ | १० | ४३ | " | " | श० १५११ | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------|------------------|---|
| २९१९४ | शास्त्रदीपिका | पार्थसारथिमिश्रः | १-२४, १-१४, १-२९, १-१९ । |
| २९१९५ | " | " | १-३१ । |
| २९१९६ | " | " | १-४८ । |
| २९१९७ | तन्त्रवार्त्तिकम् | कुमारिलभट्टः | ४-२९ । |
| २९१९८ | तन्त्रसारः | सोमेश्वरभट्टः | १-७७ । |
| २९१९९ | मीमांसावार्त्तिकम् | कुमारिलभट्टः | १-९ । |
| २९२०० | " | " | १-६० । |
| २९२०१ | तन्त्रवार्त्तिकटीका | सोमेश्वरभट्टः | १-१८६ । |
| २९२०२ | विधिरसायनदूषणम् | भट्टशङ्करः | ४-६६ । |
| २९२०३ | शास्त्रमालावृत्तिः | अनन्तभट्टः | ४-१८, १-६, १-५५, २-१०, १२-४०, ४-७, १-२ । |
| २९२०४ | देवतावादार्थः | अनन्तदेवः | १-४२ । |
| २९२०५ | शास्त्रमालावृत्तिः | अनन्तभट्टः | ४१-६२ । |
| २९२०६ | विष्णुजैमिनिसाम्यनिर्णयः | भट्टशङ्करः | १-१९ । |
| २९२०७ | अङ्गत्वनिश्चितः | | ४ । (गणनया) |
| २९२०८ | जैमिनिसूत्रं सव्याख्यम् | | १-१२ । |
| २९२०९ | इष्टिकालनिर्णयः | | १-१२ । |
| २९२१० | तन्त्रवार्त्तिकम् | कुमारिलभट्टः | २७ । (गणनया) |
| २९२११ | तन्त्रवार्त्तिकटीका | सोमेश्वरभट्टः | १-३०, ३२-३६, १-३५ । |
| २९२१२ | " | " | १-९३ । |
| २९२१३ | " | " | १-६४ । |
| २९२१४ | " | " | १३ । (गणनया) |
| २९२१५ | " | " | ५३ । " |
| २९२१६ | " | " | ५८ । " |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | सं- का | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|-----------|----------|------------------------|--------------|
| १३'९ × ५ | १२ | ४५ | दे. ना. | का. | | पू० | |
| ९'५ × ४'१ | १० | ३७ | " | " | | " | |
| १२'१ × ४'९ | ९ | ३६ | चङ्ग. | " | १८०४ | " | |
| ११ × ४ | ११ | ५१ | " | " | | अपू० | |
| ११'६ × ४'९ | ९ | ३६ | " | " | | " | |
| १०'३ × ४'६ | १५ | ५० | " | " | | पू० | २'अ० ४ पा० । |
| १० × ४'५ | १२ | ४१ | " | " | | " | ३ अ० । |
| १० × ४'२ | १२ | ५२ | " | " | | " | |
| ११'१ × ३'९ | ८ | ४४ | " | " | १७०४ | अपू० | |
| ११'२ × ४'७ | १६ | ५६ | दे. ना. | " | | " | |
| ९'४ × ४'१ | ७ | ३३ | " | " | १८५३ | पू० | |
| १०'८ × ४'९ | १२ | ४२ | " | " | | अपू० | |
| १० × ४'९ | १० | ३७ | " | " | | पू० | |
| १०'५ × ३'८ | ११ | ४३ | " | " | | अपू० | |
| १२'३ × ५'६ | १२ | ६१ | " | " | | " | |
| १०'४ × ४'६ | १३ | ३४ | " | " | | " | |
| ३'९ × २'२ | ३ | २२ | " | " | १९०८ | " | |
| ९'८ × ४'३ | १० | ४१ | " | " | १६८३ | पू०* | |
| ११'५ × ४'३ | ११ | ६५ | " | " | | " | |
| १०'७ × ४'५ | १२ | ४९ | " | " | | " | |
| १०'१ × ४'६ | १५ | ४९ | " | " | १४४४ | अपू० | |
| १०'५ × ४'५ | १७ | ४४ | " | " | | " | |
| ११'८ × ३'७ | ९ | ५५ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------|--------------|---|
| २९२१७ | मीमांसावार्त्तिकम् | कुमारिलभट्टः | १-२७ । |
| २९२१८ | " | " | १-२२ । |
| २९२१९ | " | " | १-२३, २८-४६ । |
| २९२२० | " | " | १-१७, २७-३३ । |
| २९२२१ | " | " | ३, ५-१७ । |
| २९२२२ | " | " | १-५०, १-७२ । |
| २९२२३ | " | " | १-६२, ६३, ६४-१०४, १-५४, १-३७, १-१२, १-५१, १-२८ । |
| २९२२४ | मीमांसाभाष्यम् | शबरस्वामी | १६ । (गणनया) |
| २९२२५ | " | " | १-७, ९-२५, २७-२९ । |
| २९२२६ | " | " | १-२०, ३६-३८ । |
| २९२२७ | " | " | १-४८ । |
| २९२२८ | शास्त्रदीपिकाटीका | नारायणभट्टः | १-७ । |
| २९२२९ | अधिकरणन्यायमाला- सिद्धान्ताः | | १-२, ५-१३ । |
| २९२३० | भाट्टसिद्धान्तमञ्जरी | बालचन्द्रः | १-१३९ । |
| २९२३१ | वादोद्योतः | | १-२३ । |
| २९२३२ | न्यायरत्नमाला | पार्थसारथिः | १-३, ५-४८ । |
| २९२३३ | न्यायचन्द्रिका | रघुनाथः | १६ । (गणनया) |
| २९२३४ | भाट्टभाषाप्रकाशिका | नारायणतीर्थः | १-३६ । |
| २९२३५ | जैमिनिस्मृत्यन्याख्या | | १-४७ । |
| २९२३६ | तन्त्ररत्नम् | पार्थसारथिः | १-४८ । |
| २९२३७ | विकृतिबोधककाण्डविचारः | | १ । |
| २९२३८ | यागाधिकारनिर्णयः | | १-३ । |
| २९२३९ | यागवर्णनम् | | १ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--------------|
| ९२ × ३६ | ११ | ३४ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ११०१ × ३८ | ९ | ४९ | " | " | | पू० | |
| ८६ × ४१ | ९ | ३८ | " | " | | अपू० | |
| १०८ × ४२ | १४ | ४७ | " | " | | " | |
| १०८ × ४ | १४ | ४६ | " | " | | " | |
| १०९ × ४६ | १२ | ४१ | " | " | | पू०* | |
| १११ × ४६ | ११ | ४७ | " | " | | " | |
| ११६ × ३४ | ९ | ४९ | " | " | | " | |
| १०६ × ४ | १२ | ४६ | " | " | | अपू० | |
| १०३ × ४४ | १२ | ४० | " | " | | " | |
| १०३ × ४६ | ११ | ४१ | " | " | १६६३ | " | |
| १०८ × ४ | ९ | ६३ | " | " | | " | |
| ९२ × ४ | १० | ३७ | " | " | | " | |
| ९८ × ४ | ११ | ३६ | " | " | | पू० | |
| १०८ × ४ | ७ | ४४ | " | " | | अपू० | |
| १०६ × ४६ | १४ | ४७ | " | " | १७३४ | " | |
| ९३ × ३७ | १० | | चङ्ग. | " | | " | |
| १२ × ४२ | ८ | ४६ | दे. ना. | " | | पू० | |
| १०२ × ४ | १९ | ४८ | " | " | १७७९ | " | |
| ९४ × ४३ | ११ | ४६ | " | " | | अपू० | |
| १०७ × ४६ | १९ | ४६ | " | " | | " | |
| ८६ × ६२ | १४ | ३६ | " | " | | " | |
| १०९ × ४६ | २० | ४८ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------|--------------|-------------------|
| २९२४० | शिवरभाष्यम् | शिवरस्वामी | २ । |
| २९२४१ | " | " | १-१४ । |
| २९२४२ | " | " | १ । |
| २९२४३ | " | " | १-१७ । |
| २९२४४ | " | " | २-३६, ३८-४३ । |
| २९२४५ | " | " | १-१५ । |
| २९२४६ | " | " | १-२६ । |
| २९२४७ | " | " | १-६० । |
| २९२४८ | " | " | १-३१, ३१-३२ । |
| २९२४९ | " | " | १८-३४ । |
| २९२५० | " | " | १-१० । |
| २९२५१ | " | " | १ । |
| २९२५२ | " | " | १ । |
| २९२५३ | " | " | ३-११ । |
| २९२५४ | " | " | २-२५ । |
| २९२५५ | " | " | २-२५ । |
| २९२५६ | " | " | २-११ । |
| २९२५७ | " | " | ३२-४४ । |
| २९२५८ | " | " | ३९-४९ । |
| २९२५९ | " | " | ८-४९ । |
| २९२६० | जैमिनिसूत्रम् | जैमिनिः | २-६ । |
| २९२६१ | " | " | २-४, ६-१४ । |
| २९२६२ | शिवरभाष्यम् | शिवरस्वामी | ३१-५५ । |
| २९२६३ | " | " | १-३८, ४०-१०६ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | कायः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|------|----------|------------------------|--------------|
| १२ × ६२ | २० | ६० | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| १२३ × ६९ | १७ | ६६ | " | " | १६४१ | पू० | |
| ११७ × ६८ | १६ | ६१ | " | " | | अपू० | |
| १२४ × ६८ | २१ | ६९ | " | " | | पू० | |
| १२६ × ६९ | २१ | ६३ | " | " | | अपू० | |
| १२४ × ६९ | १६ | ४७ | " | " | | " | |
| १२६ × ६८ | १३ | ६१ | " | " | १६४३ | पू० | |
| ९४ × ४१ | ८ | ३४ | " | " | | अपू० | |
| १२४ × ६८ | १४ | ६२ | " | " | | " | |
| ९९ × ४६ | १९ | ४४ | " | " | | " | |
| ११ × ४८ | १२ | ६४ | " | " | | पू० | |
| ११६ × ६२ | १३ | ४३ | " | " | | अपू० | |
| ९४ × ४४ | १० | २८ | " | " | | " | |
| ९२ × ३८ | १३ | ४३ | " | " | | " | |
| १०६ × ४६ | १० | ४६ | " | " | | " | |
| ६९ × ३६ | ४ | १९ | " | " | | " | |
| ११४ × ३६ | ९ | ४६ | " | " | | " | |
| १०६ × ४७ | १० | ३८ | " | " | | " | |
| १०१ × ४४ | १० | ४२ | " | " | | " | |
| १०६ × ४४ | १२ | ४३ | " | " | | " | |
| ७ × ३७ | ६ | १६ | " | " | | पू०* | |
| ७ × ३७ | ६ | १४ | " | " | | अपू० | |
| १०३ × ४६ | १६ | ६३ | " | " | | " | |
| ११६ × ६४ | १३ | ४६ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|------------------|--|
| २९२६४ | शिवरभाष्यम् | शिवरस्वामी | १-३७ । |
| २९२६५ | जैमिनिसूत्रम् | जैमिनिः | ६१-६५ । |
| २९२६६ | " | " | ७०-७३ । |
| २९२६७ | " | " | १-४ । |
| २९२६८ | " | " | २-९ । |
| २९२६९ | " | " | १-८, १-५, १-१० । |
| २९२७० | शास्त्रदीपिका | | ११-२० । |
| २९२७१ | जैमिनीयन्यायमालाविस्तरः | | १५६ । (गणनया) |
| २९२७२ | जैमिनिसूत्रम् | जैमिनिः | ४-६, ९-१०, १२-१४, १७-२०, २२-२५, २७-३१, ३१-३२, ३४-४१ । |
| २९२७३ | " | " | १-३९ । |
| २९२७४ | शास्त्रदीपिका सटीका | पार्थसारथिमिश्रः | १-३१, ३७-६४, १-५, १०, १२-१८, १-२९, ४२-१०६, १-२०, २२-४४, १-२४, १-४७, १-१८, १-११, १-४८, १-८९, १-२९, १-२५ । |
| २९२७५ | शास्त्रदीपिकाटीका | सोमनाथः | १-९२, १-८४ । |
| २९२७६ | " | | ३५-४५ । |
| २९२७७ | " | | १-१९ । |
| २९२७८ | " | सोमनाथः | १-११, ११-२९ । |
| २९२७९ | " | " | १-४६, ४६-९८ । |
| २९२८० | शास्त्रदीपिका | | १-८८ । |
| २९२८१ | " | पार्थसारथिमिश्रः | १-२४ । |
| २९२८२ | " | " | १-३० । |
| २९२८३ | " | " | १-१२४ । |
| २९२८४ | " | " | १-६५ । |
| २९२८५ | " | " | १-३२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | भाषाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-------------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|-----------------------|
| १२'४ × ५'८ | १७ | ४७ | दे. ना. | का. | | पू० | १ अ० |
| ५'५ × ३'५ | ४ | ११ | " | " | | अपू० | |
| ५'५ × ३'५ | ४ | ११ | " | " | | " | |
| १०'९ × ३'५ | ४ | २८ | " | " | | " | |
| ११ × ३'७ | ४ | ३२ | " | " | | " | |
| ८'७ × ४'४ | ७ | २५ | " | " | | पू० | ४-६ अध्यायाः |
| ९ × ३'९ | ७ | २८ | " | " | | अपू० | |
| १२'७ × ४'८ | ९ | ४३ | वज्र. | " | | " | |
| ९'२ × २'८ | ८ | ४५ | दे. ना. | " | | " | |
| १३'८ × ५'५ | ९ | ५४ | " | " | | पू० | |
| १५'८ × ७'१ | १७ | ६८ | " | " | | अपू० | |
| १२'६ × ४'९ | १३ | ५२ | आन्ध्र | " | | " | |
| ११'३ × ४'९ | ११ | ४३ | दे. ना. | " | | " | |
| ११'७ × ४'११ | १० | ४४ | " | " | | " | |
| ११'३ × ४'९ | ११ | ३८ | " | " | | पू० | मयूखमालिका २ अ० १ पा० |
| ११'२ × ४'२ | १० | ४७ | " | " | १७३९ | " | १ अ० |
| ८'४ × ४'१ | ८ | २६ | " | " | | " | १ अ० |
| ९'५ × ४'१ | १० | ३७ | " | " | १६७६ | " | ५ अ० |
| ११'६ × ३'५ | ८ | ४० | " | " | | " | ४ अ० ४ पा० |
| ९'७ × ३'९ | १० | ३४ | " | " | | " | ३ अ० ८ पा० |
| ९'७ × ४'४ | ९ | ३१ | " | " | १९३८ | " | २ अ० ४ पा० |
| ९'६ × ४'१ | ९ | ३५ | " | " | १६९९ | " | १२ अ० |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|-------------------|------------------------------|
| २९२८६ | शास्त्रदीपिका | पार्थसारथिमिश्रः | २९५ । (गणनया) |
| २९२८७ | कर्मप्रकाशः | सत्यनाथः | १-६० । |
| २९२८८ | शास्त्रदीपिका | पार्थसारथिमिश्रः | ५७ । (गणनया) |
| २९२८९ | अर्थसङ्ग्रहः | लौगाक्षिभास्करः | १-८ । |
| २९२९० | अधिकरणनिरूपणम् | | १-२ । |
| २९२९१ | शास्त्रदीपिका | पार्थसारथिमिश्रः | १ । |
| २९२९२ | " | " | १-१९ । |
| २९२९३ | " | " | १-३२ । |
| २९२९४ | शास्त्रदीपिकाटीका | | १४-३१ । |
| २९२९५ | " | | ४२९ । (गणनया) |
| २९२९६ | " | चम्पकनाथः | २ । " |
| २९२९७ | " | " | १-२४ । |
| २९२९८ | " | " | १७-८२ । |
| २९२९९ | " | कमलाकरः | १-४६ । |
| २९३०० | शास्त्रदीपिका | पार्थसारथिमिश्रः | १-१३ । |
| २९३०१ | " | " | १-४७ । |
| २९३०२ | " | " | १-११, १४-२६, ३६-९२, ९२-१०१ । |
| २९३०३ | मीमांसासूत्रं सभाष्यम् | भा. का. शबरस्वामी | १-८० । |
| २९३०४ | शबरभाष्यम् | " | १-७१ । |
| २९३०५ | " | " | १-१९४ । |
| २९३०६ | " | " | १२० । (गणनया) |
| २९३०७ | " | " | ४४४ । " |
| २९३०८ | " | " | १-२४ । |
| २९३०९ | " | " | १-१२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--------------------|
| ९६×४२ | ९ | ३३ | दे. ना. | का. | १६९१ | पू० | ६-११ अध्यायाः |
| १०×४४ | १० | ३६ | " | " | | " | |
| १६१×१३ | ७ | १०० | आन्ध्र | ता. | | " | २ अध्यायः |
| १२४×६१ | २१ | ४९ | दे. ना. | का. | | " | |
| ९×३६ | १० | ३१ | " | " | | अपू० | |
| ९०×४ | ४ | ४२ | " | " | १६४८ | " | |
| ११०×६२ | १० | ४८ | " | " | | " | |
| ९९×४३ | १२ | ६४ | " | " | | " | |
| १०१×४४ | १० | ४६ | " | " | | " | |
| ११×४६ | ११ | ३४ | " | " | | " | |
| ११२×४८ | १६ | ६० | " | " | | " | |
| ११२×४८ | १६ | ४६ | " | " | | पू० | प्रकाशाख्या ४-६ अ० |
| ११२×४८ | १८ | ६१ | " | " | | अपू० | |
| १०३×४३ | १० | ४६ | " | " | | " | |
| १०४×४२ | १० | ४६ | " | " | | " | |
| १०३×४३ | १० | ३८ | " | " | | पू० | २ अ० |
| ११×४६ | १२ | ४१ | " | " | | अपू० | |
| १०६×४७ | १२ | ४१ | " | " | | पू० | १ अ० |
| ११४×३३ | ८ | ३८ | " | " | | अपू० | |
| १०४×४४ | १० | ३६ | " | " | | " | |
| १०९×४ | १२ | ६६ | " | " | | " | |
| १०७×४ | १२ | ६१ | वज्र. | " | | " | |
| ८८×३९ | ११ | ३९ | दे. ना. | " | | पू० | १ अ० १ पा० |
| ६७×४६ | १७ | २९ | " | " | | " | १ अ० २ पा० |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------------|------------------|---------------------------|
| २९३१० | शाररभाष्यम् | शाररस्वामी | १-१६ । |
| २९३११ | " | " | १-१५ । |
| २९३१२ | तन्त्रवार्त्तिकटीका | सोमेश्वरः | १-८७, ९० । |
| २९३१३ | शाररभाष्यम् | शाररस्वामी | १-२२ । |
| २९३१४ | " | " | २-१० । |
| २९३१५ | " | " | १-२, ५-७, ५०-५८ । |
| २९३१६ | " | " | २-२५ । |
| २९३१७ | " | " | २-२३ । |
| २९३१८ | तौतातितमततिलकम् | भवदेवभट्टः | १-२७, १-३८ । |
| २९३१९ | ग्रामाण्यस्वतस्त्वपरतस्त्व- विचारः | | ८ । (गणनया) |
| २९३२० | शास्त्रदीपिका | | २७-३८ । |
| २९३२१ | पापण्डखण्डनम् | वैद्यनाथः | १-१६६ । |
| २९३२२ | तौतातितमततिलकम् | | १-४७, १-५७, ५९-६५, १-९१ । |
| २९३२३ | तात्पर्यटीका | उम्बकभट्टः | २-१०२, १०४-२०६ । |
| २९३२४ | जैमिनीयन्यायमालावृत्तिः | सायणाचार्यः | १-२९, ३१ । |
| २९३२५ | न्यायरत्नाकरः | पार्थसारथिमिश्रः | १-२८० । |
| २९३२६ | पर्वनियमाः | | १-११ । |
| २९३२७ | प्रमाणपारायणम् | शालिकनाथः | १-१९, २१-९१ । |
| २९३२८ | भावनकारिकाव्याख्या | | १-१३ । |
| २९३२९ | मीमांसासूत्रभाष्यव्याख्या | | १-१४ । |
| २९३३० | वाक्यभेदवादः | आपदेवसूनुः | १-८ । |
| २९३३१ | विधिरसायनम् | अप्पय्यदीक्षितः | १-१५४ । |
| २९३३२ | विधिरसायनदूषणम् | शङ्करभट्टः | १-२१ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|--------------------|
| ८ × ९१ | १९ | २६ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| १०*४ × ४*४ | ९ | ३७ | " | " | | " | |
| ११ × ४*२ | ८ | ४८ | " | " | | " | |
| ११*२ × ४ | ९ | ४९ | " | " | | पू० | ९ अ० ४ पा० |
| ९*३ × ४*३ | ११ | ३६ | " | " | | अपू० | |
| १०*३ × ४*४ | ११ | ३७ | " | " | | " | |
| ११ × ४*७ | १४ | ४९ | " | " | | " | |
| ११ × ४*७ | १९ | ९० | " | " | | " | |
| ८*४ × ३*३ | ११ | ४४ | " | " | | पू० | १ अ० २-३ चरणौ |
| ११ × ४*७ | १४ | ४९ | " | " | | अपू० | |
| ९*४ × ३*८ | ११ | ९० | " | " | | " | ४ अ० ३-४ पा० |
| १०*२ × ४*४ | ९ | ३९ | " | " | | पू० | |
| १३*८ × ३*८ | १० | ७९ | " | " | १४८८ | अपू० | १-३ अ० |
| ११ × ४*९ | १२ | ४१ | " | " | १९८४ | " | |
| १०*६ × ४*४ | ९ | ४९ | " | " | | " | |
| ११*९ × ४*६ | १२ | ४३ | " | " | | पू० | श्लोकवार्त्तिकटीका |
| १०*४ × ४*६ | ११ | ४२ | " | " | | " | |
| १०*८ × ३*६ | १० | ४४ | " | " | १६४८ | अपू० | |
| १०*८ × ४*१ | १३ | ९१ | " | " | | " | |
| ९*९ × ४*७ | ९ | ३७ | " | " | | " | |
| ११*२ × ४*९ | ११ | ३२ | " | " | | पू० | |
| १०*८ × ४*१ | ७ | ३९ | " | " | १६९२ | " | |
| ११*१ × ४ | ९ | ३९ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|-----------------|-------------------|
| २९३३३ | विधिवादः | | १-११८ । |
| २९३३४ | शास्त्रमालावृत्तिः | अनन्तभट्टः | १-१० । |
| २९३३५ | मीमांसावार्त्तिकम् | कुमारिलभट्टः | ५-१५, १७-२० । |
| २९३३६ | " | " | १-२७ । |
| २९३३७ | तन्त्रवार्त्तिकम् | " | १-३७ । |
| २९३३८ | " | " | १-२६ । |
| २९३३९ | " | " | ३७२ । (गणनया) |
| २९३४० | मीमांसाग्रन्थविशेषः | | १८-२७ । |
| २९३४१ | " | | १ । |
| २९३४२ | मीमांसान्यायप्रकाशः | | २-४ । |
| २९३४३ | अधिकरणमाला | | ७१-८०, १०१-१११ । |
| २९३४४ | भाट्टभाषाप्रकाशिका | | १५१-२५४ । |
| २९३४५ | जैमिनीयन्यायमालाविस्तरः | माधवाचार्यः | २६४ । (गणनया) |
| २९३४६ | मीमांसाग्रन्थविशेषः | | १६ । " |
| २९३४७ | मीमांसापरिभाषा | | ३ । " |
| २९३४८ | मीमांसाग्रन्थविशेषः | | ३ । " |
| २९३४९ | शास्त्रदीपिका | | १६-१७ । |
| २९३५० | तन्त्रवार्त्तिकटीका | सोमेश्वरः | ८१-१६२ । |
| २९३५१ | तन्त्रवार्त्तिकम् | कुमारिलभट्टः | १-४७ । |
| २९३५२ | " | " | १-५९ । |
| २९३५३ | तन्त्रवार्त्तिकटीका | सोमेश्वरः | १-२५ । |
| २९३५४ | फलसाङ्कर्यखण्डनम् | अनन्तदेवः | १-१० । |
| २९३५५ | मीमांसारत्नम् | रघुनाथः | ७५ । (गणनया) |
| २९३५६ | विधिरसायनम् | अप्पय्यदीक्षितः | १-५४ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आवाजः | लिपिकालः | पूर्णापूर्व- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|---------------|
| ११'२ × ४'४ | १० | ५३ | दे.ना. | का. | | पू० | |
| ११'१ × ५ | ९ | ४५ | " | " | | अपू० | |
| ११ × ४'२ | १४ | ५१ | " | " | | " | |
| १०'३ × ३'३ | ८ | ४० | " | " | | पू० | १ अ० ४ पादः |
| ११'९ × ४'९ | १३ | ५० | " | " | | " | १ अ० ३ पादः |
| १०'७ × ४'५ | १० | ५० | " | " | | अपू० | |
| १०'६ × ४'७ | १४ | ४७ | " | " | १६३४ | पू०* | १-३ अध्यायाः |
| ८'७ × ४'१ | १० | ३५ | " | " | | अपू० | |
| १०'५ × ४'७ | ९ | ३५ | " | " | | " | |
| १०'८ × २'७ | ३ | २८ | " | " | | " | |
| १०'७ × २'८ | ४ | २८ | " | " | | " | |
| १०'७ × २'८ | ५ | २८ | " | " | | " | |
| १०'७ × ४'९ | ८ | ४२ | वङ्ग. | " | | " | |
| ९'७ × ४'२ | ८ | ३१ | दे.ना. | " | | " | |
| १०'७ × ४'५ | ६ | २६ | " | " | | " | |
| १०'६ × ४'५ | ९ | ३४ | " | " | | " | |
| १०'६ × ४'४ | ९ | ३४ | " | " | | " | |
| १०'४ × ४'८ | १० | ५३ | " | " | | " | न्यायसुधाख्या |
| १०'६ × ४'७ | १२ | ४९ | " | " | | " | |
| १०'६ × ४'७ | १३ | ४२ | " | " | | पू० | २ अ० २ पा० |
| १०'४ × ४'४ | २० | ५८ | " | " | | अपू० | न्यायसुधाख्या |
| ८'८ × ३'५ | १३ | ४० | " | " | १७२९ | पू० | |
| १०'५ × ३'८ | ८ | ४४ | " | " | | अपू० | |
| ८'७ × ३'५ | १२ | ३६ | " | " | | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|------------------|---------------------------------|
| २९३५७ | वाजपेय्यरहस्यम् | शिरोमणिः | १-२ । |
| २९३५८ | शावरभाष्यम् | शवरस्वामी | २-३१ । |
| २९३५९ | " | " | १-२४ । |
| २९३६० | " | " | १-२२ । |
| २९३६१ | " | " | १-१०, १०-२४ । |
| २९३६२ | " | " | १-१९ । |
| २९३६३ | " | " | ७१-१०१ । |
| २९३६४ | " | " | १-२३, १-३७, १-११, १-४४ । |
| २९३६५ | " | " | २-३९, ४३-५२, ६८-७७ । |
| २९३६६ | " | " | ३-४९, ५२, ५४-५८, ६०-६१, ६१-६३ । |
| २९३६७ | शास्त्रदीपिका | पार्थसारथिमिश्रः | ३८२ । (गणनया) |
| २९३६८ | मीमांसाग्रन्थविशेषः | | × |
| २९३६९ | शास्त्रदीपिका | | १-२ । |
| २९३७० | न्यायरत्नमाला | पार्थसारथिमिश्रः | २-४१ । |
| २९३७१ | मीमांसान्यायसङ्ग्रहः | | ७ । (गणनया) |
| २९३७२ | प्रकरणपञ्चिका | शालिकरनाथमिश्रः | १-२३ । |
| २९३७३ | पिष्टपशुनिर्णयः | वैद्यनाथः | १-८२ । |
| २९३७४ | मीमांसाग्रन्थविशेषः | | ४१-६८ । |
| २९३७५ | मीमांसास्तवकम् | | ९२ । (गणनया) |
| २९३७६ | जैमिनीयन्यायमाला सटीका | | १३ । " |
| २९३७७ | " | | ४९-९४ । |
| २९३७८ | " | | १-४४ । |
| २९३७९ | शावरभाष्यम् | शवरस्वामी | ३-१२ । |
| २९३८० | " | " | १-३, ३-२०, २२-३३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | भाषाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्व- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|-------------------|
| ७३ × २७ | १० | ३९ | दे. ना. | वा. | | अपू० | |
| १४१ × ५५ | १० | ५६ | " | " | | " | |
| १०१ × ४ | १० | ४२ | " | " | | पू० | ३ अ० १ पादः |
| १०४ × ४ | ९ | ४० | " | " | | " | ३ अ० २ पा० |
| १०८ × ४२ | ८ | ४६ | " | " | | " | ३ अ० ३ पा० |
| ९८ × ४५ | १० | ४० | " | " | | " | ३ अ० ४ पा० |
| १०९ × ३६ | ७ | ४५ | " | " | | " | ३ अ० ८ पादमात्रम् |
| ८७ × ४५ | १० | ३९ | " | " | | " | १-२ अध्यायौ |
| १०९ × ४१ | ११ | ४३ | " | " | | अपू० | |
| १४२ × ५५ | ९ | ६८ | " | " | | " | |
| १३९ × ५५ | ९ | ४१ | वज्र. | " | | " | |
| X | X | X | " | ता. | | " | जीर्णतमः |
| ८८ × ३६ | ११ | ३७ | दे. ना. | का. | | " | |
| १११ × ३७ | ९ | ५१ | " | " | | " | |
| ८८ × ३९ | १५ | ४५ | " | " | | " | १ अ० |
| ९९ × ३७ | ९ | ४८ | " | " | | पू० | १-४ तथा ६ प्र० |
| ९६ × ४२ | १० | ३७ | " | " | | " | |
| १०२ × ३२ | ८ | ५१ | " | " | | अपू० | |
| १२ × ३३ | ९ | ४९ | वज्र. | " | | " | |
| १०४ × ४ | १४ | ५९ | " | " | | " | |
| १०५ × ३६ | ९ | ४६ | दे. ना. | " | | " | |
| १२ × ४ | १० | ५९ | वज्र. | " | | पू० | १ अ० १ पा० |
| १०३ × ४३ | १४ | ४८ | दे. ना. | " | | अपू० | |
| १०७ × ४७ | १२ | ४२ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|----------------|---|
| २९३८१ | शिवरभाष्यम् | शिवरस्वामी | १-२१, २१-२४, २७-३९, ४१-८८ । |
| २९३८२ | " | " | १-२, ४-३७ । |
| २९३८३ | " | " | १-२६, ११-२६ । |
| २९३८४ | " | " | १ १७ । |
| २९३८५ | " | " | १-८५ । |
| २९३८६ | " | " | १-११०, ११०-१५४ । |
| २९३८७ | " | " | २-५, ७-३६, ३८-४८ । |
| २९३८८ | यज्ञपशुमीमांसा | वासुदेवभट्टः | ३-८७ । |
| २९३८९ | मीमांसासिद्धान्तसर्वस्वम् | | २१ । (गणनया) |
| २९३९० | मीमांसाविधिभूषणम् | गोपालः | १-२, ५-१२६ । |
| २९३९१ | न्यायरत्नमालाव्याख्यानम् | रामानुजाचार्यः | ४-७५ । |
| २९३९२ | मीमांसावार्त्तिकाभरणम् | | ११३ । (गणनया) |
| २९३९३ | चित्रपटी | | १-९ । |
| २९३९४ | मीमांसाधिकरणम् | | १-२ । |
| २९३९५ | मीमांसासूत्रं सभाष्यम् | | २-७, ९-२७ । |
| २९३९६ | गुणगुण्येकशक्तिवादः | | २-६ । |
| २९३९७ | न्यायमालाविस्तरः | माधवाचार्यः | १०५-१११ । |
| २९३९८ | न्यायमाला | " | ३२, ४१-४५ । |
| २९३९९ | न्यायमालाविस्तरः | " | ३-२८, ३०-३८, ४१-४२ । |
| २९४०० | " | " | १-४, ९-२७, १-२६, २८-३६, १-४४, १-१८, १-३७, १-१४, १-६९, २-१७, १९-२४ । |
| २९४०१ | " | " | १-६ । |
| २९४०२ | " | " | २-२५, २७-४० । |
| २९४०३ | " | " | २-४८ २-२० । |

| आकारः | पक्षि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|----------------|
| ११°६ × ६ | ११ | ६१ | दे. ना. | का. | | अपूर्० | |
| १० × ४°४ | ९ | ३७ | " | " | | " | |
| ११ × ४°८ | १२ | ४८ | " | " | | पू० | ८ अ० |
| ११ × ४ | ८ | ६१ | " | " | १६४३ | " | २ अ० १ पा० |
| १०°७ × ४°६ | १० | ३९ | " | " | १६६९ | " | १ अ० |
| १०°१ × ४°३ | १० | ४६ | " | " | | अपूर्० | |
| १२ × ६ | ११ | ६० | " | " | | " | |
| १० × ८°४ | ११ | ३७ | " | " | | " | |
| ९°७ × ३°९ | १३ | ३९ | " | " | | " | २ अ० ३ पा० |
| १०°१ × ४°६ | १२ | ३७ | " | " | | " | |
| १°९ × ४°३ | १० | ३७ | " | " | | " | नायकरत्नाख्यम् |
| ११°९ × ६ | १३ | ६० | " | " | | " | |
| १२°४ × ६ | १७ | ४६ | " | " | | पू० | |
| १०°६ × ४°७ | १८ | ४६ | " | " | | अपूर्० | |
| १°६ × ४ | १० | ४३ | " | " | | " | ४ अ० १-२ पा० |
| १२°२ × ४°३ | ११ | ३६ | " | " | | " | |
| ११°२ × ३°४ | ६ | ६२ | " | " | | " | |
| ११ × ३°६ | ६ | ४७ | " | " | | " | |
| १० × ४°६ | ११ | ३६ | " | " | | " | |
| १०°६ × ६°२ | १२ | ४६ | " | " | | " | |
| ८°४ × ५°१ | ६ | १८ | " | " | | " | |
| ६°९ × ४°३ | ६ | १४ | " | " | | " | |
| १३°६ × ६°८ | ११ | ४८ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|------------------|--|
| २९४०४ | गुणगुण्येकशक्तिवादः | | २-१० । |
| २९४०५ | न्यायमालाविस्तरः | माधवाचार्यः | २-५० । |
| २९४०६ | " | " | २-४४ । |
| २९४०७ | " | " | १६-३५, ५३-७६, ७८-१४३, १४३-१४४, १४४-१५२, १५४-१५८ । |
| २९४०८ | शास्त्रदीपिका | | १३ । (गणनया) |
| २९४०९ | " | | १४ । " |
| २९४१० | " | | ११ । " |
| २९४११ | " | | ९ । " |
| २९४१२ | " | | २६ । " |
| २९४१३ | " | | २५ । " |
| २९४१४ | " | पार्थसारथिमिश्रः | १-१४, १८-१३५ । |
| २९४१५ | " | | २० । (गणनया) |
| २९४१६ | यज्ञपशुमीमांसा | वासुदेवः | १-६३ । |
| २९४१७ | मीमांसावार्त्तिकाभरणम् | वेङ्कटेश्वरः | ७१ । (गणनया) |
| २९४१८ | न्यायमालाविस्तरः | माधवाचार्यः | ६२-६५ । |
| २९४१९ | " | | २-११, १३-१७, २०-२८, २-५, ८-४१, ४४-४७ । |
| २९४२० | पिष्टपशुमीमांसा | नारायणः | १२३-१२९ । |
| २९४२१ | न्यायमालाविस्तरः | माधवाचार्यः | १-१५, १-२९ । |
| २९४२२ | " | " | १-५८ । |
| २९४२३ | " | " | ३५-९४, ९६-१६६, १८५-२०२, २५१-२५३, २८७-२८८ । |
| २९४२४ | " | " | १-१५ । |
| २९४२५ | " | " | ४-६ । |
| २९४२६ | मीमांसारत्नम् | रघुनाथः | १-२०४ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|---------------------------------------|
| ९ × ४*१ | ९ | २० | दे.ना. | का. | | अपू० | ३-४ अध्यायांशः । |
| ११ × ३*४ | ४ | ३० | " | " | | " | |
| ९*४ × ४*४ | ८ | ३७ | " | " | | " | |
| १०*५ × ५ | १० | ४३ | " | " | | " | |
| ११*३ × ५*५ | १० | ४६ | वङ्ग. | " | | " | |
| ११*९ × ४*८ | १० | ३९ | " | " | | " | |
| ११*३ × ४*६ | १२ | ४९ | " | " | | " | |
| ११*३ × ४*६ | १५ | ५३ | " | " | | " | |
| ११*३ × ४*६ | १५ | ४९ | " | " | | " | |
| ११*८ × ४*६ | १० | ४५ | " | " | | " | |
| १०*८ × ४*७ | ९ | ३९ | दे.ना. | " | १९१९ | " | |
| ११*१ × ४*७ | ११ | ५८ | वङ्ग. | " | | " | |
| ९*८ × ४*६ | ८ | ३४ | दे.ना. | " | | पू० | |
| ११*९ × ५ | १२ | ५० | " | " | | अपू० | दुष्टीकाव्याख्यानम्, अ. १० पा. ४, ७ । |
| १०*९ × ३*५ | ४० | ३० | " | " | | " | |
| ११ × ३*९ | ११ | ५४ | " | " | | " | |
| ९*३ × ४*२ | ११ | ४६ | " | " | | " | |
| ९*३ × ४*१ | १४ | ४४ | " | " | | " | |
| ८*८ × ४*५ | ११ | ४४ | " | " | | " | |
| १३*३ × ४*९ | ११ | ४९ | " | " | | " | |
| १३ × ४*७ | १३ | ४५ | वङ्ग. | " | | " | |
| ९*३ × ३*५ | ११ | ४२ | दे.ना. | " | | " | |
| ८ × ६*२ | १६ | १५ | " | " | १९५२ | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------|------------------|---|
| २९४२७ | मीमांसाविधिभूषणम् | | १-४७१ । |
| २९४२८ | शास्त्रदीपिका | पार्थसारथिः | १-२५, २५-१४१ । |
| २९४२९ | न्यायमालाविस्तरः | माधवाचार्यः | १-७ (८) ९-२० । |
| २९४३० | " | " | ९१-९६, २०१-२०५ । |
| २९४३१ | " | " | १-५, २-६ । |
| २९४३२ | द्वैतनिबन्धः | " | १-८ । |
| २९४३३ | नयविवेकः | भवनाथमिश्रः | १-३६० । |
| २९४३४ | " | " | ३६१-३६९, १-३२१ । |
| २९४३५ | शास्त्रदीपिका | | १-२७, २९-३१, ३३-३७, २-१८, २०-५७, ५९-१०७, ११३-२२८, १, १-३, ७-४५, ४७-५८, ६०-७८ । |
| २९४३६ | " | | ८-१३ । |
| २९४३७ | " | | ३-३२ । |
| २९४३८ | " | | १-८ । |
| २९४३९ | " | | २-१२, १२-१८ । |
| २९४४० | " | पार्थसारथिमिश्रः | २-८५ । |
| २९४४१ | " | | १-९ । |
| २९४४२ | मीमांसान्यायसङ्ग्रहः | नीलकण्ठभट्टः | १-१०, १२-२४ । |
| २९४४३ | शास्त्रदीपिका | | १३५ । (गणनया) |
| २९४४४ | " | पार्थसारथिमिश्रः | १-४६, १-३९, १-७३, १-२५, १-३५, १-३५, १-१०, १-७, १-३१, १-२०, २७-३१, १-३२, १-२२, १-१८ । |
| २९४४५ | " | " | १-८१, ८३-८८, १-१७, २०-६०, १-३८, २८-९६, १-२२, १-२५, २७-२९, १-२०, २०-४४, १-१५, १-९, १-४३, १-८१, २६-३०, १-२३ । |
| २९४४६ | " | | १-२१ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|--------------------|
| ८'१ × ६'४ | १५ | १७ | दे.ना. | का. | १९५२ | पू० | |
| ९'८ × ४'१ | ८ | २५ | " | " | | अपू० | |
| ९'५ × ४'३ | १० | ४० | " | " | | " | |
| ७ × ३'७ | ६३ | १६ | " | " | | " | |
| ११'१ × ३'५ | ४ | २६ | " | " | | " | १, ३ अध्यायांशः |
| ८'८ × ३'९ | १७ | ४८ | " | " | | " | |
| १३'२ × ८'१ | २२ | २७ | " | " | | पू० | अ. २-४, ३ पादान्तः |
| १३'२ × ८'१ | २२ | ५१ | " | " | | " | अ. ४ पा. ४-८ अ. |
| ११'१ × ४'१ | १० | ३६ | " | " | | अपू० | |
| १३'९ × ३'६ | ६ | ५२ | " | " | | " | |
| ११'६ × ४ | ७ | ४७ | " | " | | " | |
| ११ × २'९ | ३ | २६ | " | " | | " | |
| ११ × ४'७ | ९ | ३७ | " | " | | " | |
| ९ × ४ | ११ | ३५ | " | " | | " | |
| ९'५ × ४'१ | ९ | ३३ | " | " | | " | |
| ११'८ × ५'४ | १२ | ४१ | " | " | | " | |
| १०'६ × ४'९ | १२ | ४५ | वङ्ग. | " | | " | |
| १०'५ × ३'७ | ९ | ४५ | दे.ना. | " | | " | |
| ८'९ × ४'१ | ८ | २५ | " | " | | " | |
| १०'८ × ४'४ | १० | ४८ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------|------------------|----------------------------------|
| २९४४७ | शास्त्रदीपिका | पार्थसारथिमिश्रः | १-१६, १८-२७ । |
| २९४४८ | " | " | १-२६, १-२९, १-४८ । |
| २९४४९ | मीमांसारसपत्न्यलम् | | १-१७३ । |
| २९४५० | न्यायरत्नमालाटीका | रामानुजाचार्यः | १-२९० । |
| २९४५१ | शास्त्रदीपिका | पार्थसारथिः | १-४१ । |
| २९४५२ | " | " | १-६९ । |
| २९४५३ | " | " | १-११ । |
| २९४५४ | " | " | १-५ । |
| २९४५५ | " | " | ४९-५३ । |
| २९४५६ | " | " | १६ । (गणनया) |
| २९४५७ | " | " | ६६ । " |
| २९४५८ | भाट्टदिनकरः | दिनकरः | २-५, ७-११, १३-२६, २६-२८, ३०-३४ । |
| २९४५९ | " | " | २-७ । |
| २९४६० | " | " | २२-२३ । |
| २९४६१ | " | " | २-४३ ४५-६७ । |
| २९४६२ | " | " | २-२६ । |
| २९४६३ | " | " | २-१९ । |
| २९४६४ | " | " | २-१३ । |
| २९४६५ | " | " | २-४, ६-५७ । |
| २९४६६ | " | " | २-४४, ४४-५६, ५८-७३, ७५-८३ । |
| २९४६७ | उपक्रमपराक्रमः | अप्पय्यदीक्षितः | २ । (गणनया) |
| २९४६८ | जैमिन्यायमालाविस्तरः | माधवभट्टः | २-५४, ६९-१०१, १५५-२८७ । |
| २९४६९ | जैमिनीयसूत्रवृत्तिः | | १-१७ । |
| २९४७० | तन्त्रवार्तिकम् | कुमारिलभट्टः | १-३७, १-४८ । |

| आकारः | पट्टि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-------------|------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|-----------------------------|
| ९'९ × ४'४ | ९ | ४२ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| १०'९ × ४'८ | १३ | ५० | " | " | १६४३ | पू० | अ. १ पा. २ अ. ३ पा. ८ यावत् |
| ८'९ × ६'३ | १४ | १९ | " | " | | " | |
| ८'३ × ६'६ | १४ | १९ | " | " | १९५५ | " | |
| १०'६ × ३'४ | ८ | ५२ | " | " | | " | अ० ६ पा० १-८ |
| १२'७ × ६'५ | १४ | ४८ | " | " | | " | अ० १ पा० १ |
| १२'४ × ५'६ | ९ | ५६ | " | " | | अपू० | |
| ११'२ × ४'९ | ११ | ३८ | " | " | | पू० | अ १ पा० २ |
| १०'९ × ४'५ | १० | ३८ | " | " | | अपू० | |
| १०'६ × ४'९ | २१ | ४९ | " | " | | " | |
| ८'९ × ३'३ | ७ | ३३ | " | " | | " | |
| ११'१ × ४'११ | १४ | ४१ | " | " | | " | |
| १२'८ × ४'९ | १२ | ६३ | " | " | | " | |
| ११'१ × ४'८ | ११ | ४७ | " | " | | " | |
| १२'८ × ४'९ | ११ | ५२ | " | " | | " | |
| १२'८ × ४'९ | १२ | ६१ | " | " | | " | |
| ११'१ × ५ | १२ | ४५ | " | " | | " | |
| ११ × ५ | १० | ३३ | " | " | | " | |
| १०'९ × ५ | १० | ३९ | " | " | | " | |
| ११'१ × ३'५ | ४ | २७ | " | " | | " | |
| ११'१ × ५ | १८ | ६८ | " | " | | " | |
| १० × ४'५ | ११ | ५७ | " | " | | " | |
| १३'२ × ४'२ | १० | ६१ | आन्ध्र | " | | पू० | |
| ९'८ × ४'२ | ११ | ४५ | दे.ना. | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|------------------|--------------------|
| २९४७१ | तन्त्रवार्त्तिकटीका | | २-८१ । |
| २९४७२ | " | सोमेश्वरः | १-११८ । |
| २९४७३ | " | " | १-१६, १८-१९ । |
| २९४७४ | न्यायरत्नमाला | पार्थसारथिमिश्रः | १-८९ । |
| २९४७५ | " | " | १-२६, १-८ । |
| २९४७६ | न्यायरत्नमालापादावली | " | १-८१ । |
| २९४७७ | न्यायविन्दुः | वैद्यनाथः | १५१ । (गणनया) |
| २९४७८ | " | | १-१७ । |
| २९४७९ | भाट्टदीपिका | खण्डदेवः | १-१३, १-६६, १-६९ । |
| २९४८० | मीमांसापरार्थनिर्णयः | | १-१६ । |
| २९४८१ | एकशक्तिपक्षश्रेयस्त्ववादः | | ३-१० । |
| २९४८२ | भाट्टदीपिका | | १-६० । |
| २९४८३ | " | | १-६२ । |
| २९४८४ | न्यायमालाविस्तरः | माधवाचार्यः | १-३२, १-७२ । |
| २९४८५ | न्यायसुधा | सोमेश्वरः | ३९६ । (गणनया) |
| २९४८६ | न्यायमालाविस्तरः | माधवाचार्यः | १-१९ । |
| २९४८७ | " | " | १-३१ । |
| २९४८८ | " | " | ५-१७ । |
| २९४८९ | " | " | ८७-१०२ । |
| २९४९० | भाट्टदीपिका | खण्डदेवः | १-३२ । |
| २९४९१ | न्यायमालाविस्तरः | माधवाचार्यः | २-२५ । |
| २९४९२ | " | " | १७-४५, २-१६ । |
| २९४९३ | तन्त्रवार्त्तिकटीका | अन्नम्भट्टः | १-६८८ । |
| २९४९४ | न्यायमालाविस्तरः | माधवाचार्यः | २-३४ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|-------------------------|-------------------------|
| ११३ × १३ | ११ | ३७ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| १११ × ४१ | १० | २८ | " | " | | " | |
| ११ × ४१ | ११ | १७ | " | " | | " | |
| ९४ × ४१ | १० | ४४ | " | " | | पू० | १-१ परिच्छेदाः |
| १२७ × ४६ | १२ | ४६ | " | " | | अपू० | |
| ९९ × ४२ | ११ | ३८ | " | " | १६८२ | पू० | |
| १०४ × ४३ | ८ | ३९ | " | " | १८६९ | अपू० | |
| ९४ × ४१ | १० | ३६ | आन्ध्र | " | | " | |
| ९२ × ४ | १० | २१ | दे.ना. | " | १६९७ | पू० | १-३ अध्यायाः |
| १० × ४३ | ११ | ४० | " | " | | अपू० | |
| ९४ × ४२ | ११ | ३९ | " | " | | " | |
| १०६ × १७ | १४ | ३७ | " | " | | पू० | अ. १३-१६ सङ्कर्षकाण्डम् |
| १०६ × ४४ | १३ | १७ | " | " | १९३९ | " | अ. १३-१६ " |
| १०८ × ४७ | १३ | ४६ | " | " | | " | अ. १-३ |
| १०७ × ४६ | ८ | ४२ | " | " | | अपू० | |
| १०८ × ४१ | ९ | ३६ | " | " | | " | |
| ११४ × ४८ | १२ | ४६ | " | " | | पू० | अ. ९ |
| १०८ × ३९ | ८ | ४८ | " | " | | अपू० | |
| १२१ × ४८ | १० | ४० | " | " | | " | |
| ९२ × ४ | ९ | ३१ | " | " | | " | |
| ९९ × ४१ | १२ | ४८ | " | " | | " | |
| १० × ४४ | १२ | ३४ | " | " | | " | १, ७-८ अध्यायांशः |
| १३१ × ८३ | २३ | १९ | " | " | | पू० | अ. ३ पां. १-३ |
| १०४ × ४४ | १२ | ३१ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------|-----------------------|--------------------------------------|
| २९४९५ | न्यायमालाविस्तरः | माधवाचार्यः | १-२९ । |
| २९४९६ | तन्त्रवार्तिकविवरणम् | गङ्गाधरमिश्रः | १-११ । |
| २९४९७ | न्यायरहस्यम् | अनन्तभट्टः | १-१८ । |
| २९४९८ | भाट्टदीपिका | खण्डदेवः | १-४, १-६ । |
| २९४९९ | देवतास्वरूपविचारः | | २-३१ । |
| २९५०० | भाट्टदीपिका | खण्डदेवः | १-१४, १४-२५ । |
| २९५०१ | भाट्टचिन्तामणिः | | १६९ । (गणनया) |
| २९५०२ | भाट्टदिनकरः | दिनकरः | २-८, ८-४८ । |
| २९५०३ | " | " | ७०-९७ । |
| २९५०४ | " | " | १-३१, १-१४, १-९ । |
| २९५०५ | अधिकरणचन्द्रिका | | ६० । (गणनया) |
| २९५०६ | नायकरत्नम् | | ३२ । " |
| २९५०७ | भाट्टदिनकरः | दिनकरः | ४-१७, २१-२७, २९-७३, ७५-८४ । |
| २९५०८ | " | " | २-२४ । |
| २९५०९ | तन्त्रसारसङ्ग्रहः | सोमेश्वरभट्टः | १-२३ । |
| २९५१० | न्यायरहस्यम् | अनन्तभट्टः | ४३४ । (गणनया) |
| २९५११ | भाट्टदीपिका | खण्डदेवः | १-२४ । |
| २९५१२ | मीमांसासूत्रदीधितिः | राघवानन्द- सरस्वती | २०८ । (गणनया) |
| २९५१३ | " | " | २-२९, २-४१, २-२३, २-२५, २-२१ । |
| २९५१४ | लघुवार्तिकटीका | उत्तमश्लोकीर्थः | १-२८७ । |
| २९५१५ | न्यायरत्नमाला | पार्थसारथिः | १-२१४ । |
| २९५१६ | लघुवार्तिकटीका | | १-३१५ । |
| २९५१७ | मीमांसासूत्रदीधितिः | राघवानन्दसरस्वती | १०१-१०७, १०९-१११, ११३-१२४, १२६-१३० । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | वर्णः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|-----------------------|
| १० × ३.७ | ९ | ३३ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| १०.९ × ३.४ | १२ | ५९ | " | " | | पू० | अ० ३ पा० ८ |
| १०.८ × ४.८ | ११ | ३३ | " | " | | अपू० | |
| ११ × ३.६ | ६ | ३० | " | " | | " | |
| १० × ४.३ | १० | ३८ | " | " | | " | |
| ११.४ × ४.७ | ११ | ५९ | " | " | | " | |
| १८ × ४.५ | ९ | ३९ | " | " | | " | |
| १२.९ × ४.८ | ११ | ६४ | " | " | | " | |
| १२.८ × ५ | ११ | ५० | " | " | | " | |
| १२.९ × ५ | १२ | ५६ | " | " | | " | |
| ९.१ × ४.२ | १० | ३४ | " | " | | " | |
| १० × ४.२ | १३ | ४४ | " | " | | " | |
| ११.९ × ४.३ | ८ | ४२ | " | " | | " | |
| १०.९ × ४.७ | ९ | ५१ | " | " | | " | |
| ७.८ × २.४ | १० | ४६ | " | " | | पू० | |
| १०.८ × ४.३ | ७ | ३४ | " | " | | अपू० | |
| ९.२ × ४ | ९ | २३ | " | " | | पू० | अ० ५ |
| ९.८ × ४.२ | ८ | ३७ | " | " | | अपू० | |
| ८.७ × ४ | ८ | ३६ | " | " | | " | ५-८ अध्यायांशः |
| ८ × ६.५ | १६ | १९ | " | " | १९५३ | पू० | लघुन्यायसुधा, अ० ७-१२ |
| ८.३ × ६.७ | १४ | १९ | " | " | | " | |
| ८ × ६.५ | १६ | १७ | " | " | | " | लघुन्यायसुधा अ० १-६ |
| ९.२ × ४.२ | १४ | ३८ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------|---------------|----------------------------------|
| २९११८ | मीमांसासूत्रदीधितिः | राघवानन्दः | ८६ । (गणनया) |
| २९११९ | न्यायचिन्तुः | वैद्यनाथभट्टः | १-२०० । |
| २९१२० | " | " | १-१९१ । |
| २९१२१ | मीमांसासारः | विश्वकर्मा | २-१३, १५-४६, ४६-४९ । |
| २९१२२ | न्यायचिन्तुः | वैद्यनाथभट्टः | १-६ (७-८) ९-१९, १९-७९, ११९-१२४ । |
| २९१२३ | " | " | १-७९, ७९-११० । |
| २९१२४ | मीमांसाकौस्तुभः | खण्डदेवः | २ ८९ । |
| २९१२५ | " | " | १-३० । |
| २९१२६ | " | " | २-३८ । |
| २९१२७ | " | " | ३-३१ । |
| २९१२८ | " | " | १-५८, ३-१७, १३-२७ २-२६, २८-४७ । |
| २९१२९ | न्यायरत्नमाला | पार्थसारथिः | १-२५० । |
| २९१३० | मीमांसान्यायसङ्ग्रहः | महादेवभट्टः | १-२७६ । |
| २९१३१ | मीमांसाकौस्तुभः | खण्डदेवः | १-२४, २६-२७ ५-८४ । |
| २९१३२ | मीमांसासारसङ्ग्रहः | शङ्करभट्टः | १-९४ । |
| २९१३३ | मीमांसाकौस्तुभः | खण्डदेवः | ३-८१, ८३-८४ । |
| २९१३४ | " | " | २-७८ । |
| २९१३५ | " | " | २-३०, ३३-५२ । |
| २९१३६ | " | " | २-६८ । |
| २९१३७ | शास्त्रदीपिकालोकः | कमलाकरभट्टः | १-२८ (२९) ३०-९९ । |
| २९१३८ | " | " | १-५१ । |
| २९१३९ | शास्त्रदीपिकाटीका | कमलाकरभट्टः | १-४३ । |
| २९१४० | " | " | १-३४ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|-------------|-------|----------|------------------------|---|
| ९६ × ३५ | ८ | ३७ | दे. ना. का. | | | अपू० | |
| ८ × ६५ | १२ | १८ | " " | | | पू० | |
| ८ × ६५ | १६ | २१ | " " | | | अपू० | |
| ११'४ × ४'६ | १० | ४६ | " " | | | " | |
| १२'२ × ५ | १२ | ५१ | " " | | | " | |
| १३'८ × ५'४ | १२ | ४३ | " " | १९२३ | | पू० | |
| ११'१ × ५'१ | १२ | ४५ | " " | | | अपू० | |
| १०'८ × ४'७ | १२ | ४० | " " | | | " | |
| ९'९ × ४'३ | १० | ४४ | " " | | | " | |
| ११'७ × ४'३ | १२ | ६३ | " " | | | " | |
| ९'९ × ४'३ | १० | ४५ | " " | | | " | अ. १ पा. २ अ. २ पा. ४ अ. ३ पा. १-२ । |
| ८'३ × ६'७ | १४ | १९ | " " | १९५५ | | पू० | नित्यकाम्यविवेकान्ता |
| ८'३ × ६'५ | १६ | १५ | " " | १९५२ | | " | |
| ११'२ × ४'९ | १३ | ३४ | " " | | | अपू० | |
| ८'३ × ६'६ | १२ | ८ | " " | १९५४ | | पू० | |
| ९'२ × ३'९ | १२ | ४५ | " " | | | अपू० | |
| १० × ४'३ | १० | ४१ | " " | | | " | |
| १० × ४'३ | ११ | ४९ | " " | | | " | |
| ११'१ × ५'१ | ११ | ५८ | " " | | | " | |
| ११ × ४ | ८ | ४४ | " " | | | पू० | |
| ११'१ × ४'७ | ११ | ४८ | " " | | | अपू० | |
| १०'९ × ४'७ | ११ | ४६ | " " | | | पू० | आलोकाख्या अ० ३ पा० १-२ |
| ११'२ × ४'९ | १० | ४७ | " " | | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------|------------------|--|
| २९५४१ | शास्त्रदीपिकाटीका | चम्पकनाथः | ३९-४८, २-११, १३-३८। |
| २९५४२ | अर्थसङ्ग्रहः | लौगाक्षिभास्करः | १-१८। |
| २९५४३ | शास्त्रदीपिकाप्रकाशः | चम्पकनाथः | २-३३। |
| २९५४४ | " | " | १-३९, १-६९। |
| २९५४५ | " | " | ५६-६६। |
| २९५४६ | अर्थसङ्ग्रहः | लौगाक्षिभास्करः | ४-१४। |
| २९५४७ | शास्त्रदीपिकाप्रकाशः | चम्पकनाथः | १-३६। |
| २९५४८ | टुप्टीका | कुमारिलभट्टः | १-३३। |
| २९५४९ | शास्त्रदीपिकाव्याख्या | नारायणभट्टः | १-६। |
| २९५५० | " | | २-६०। |
| २९५५१ | " | | १-२१। |
| २९५५२ | " | शङ्करभट्टः | १-३१। |
| २९५५३ | टुप्टीका | कुमारिलभट्टः | १-२०, (२१-२२) २३-५७, ४-७, ९-८२। |
| २९५५४ | " | " | १-२७, १-५४। |
| २९५५५ | भाट्टभास्करः | जीवदेवः | १-६। |
| २९५५६ | शावरभाष्यव्याख्या | | १-३०५। |
| २९५५७ | तन्त्ररत्नम् | पार्थसारथिमिश्रः | १-१२५, १२५-१४६, २-४२, १-१८, २-७८, १-१०१, ३-४४, ३-२५। |
| २९५५८ | पिष्टपशुतिरस्करिणी | रामेश्वरः | १-४०। |
| २९५५९ | चिन्त्यसङ्ग्रहः | शङ्करचिन्दुभट्टः | १-४। |
| २९५६० | राणकफक्किाव्याख्या | | १-९। |
| २९५६१ | न्यायरत्नमाला | पार्थसारथिः | १-१२। |
| २९५६२ | नायकरत्नम् | रामानुजाचार्यः | १-१२, ७७-८७। |
| २९५६३ | अर्थसङ्ग्रहटिप्पणम् | | १-६। |

| आकारः | पक्षि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आक्षरः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|------------------|------------------|---------|--------|----------|------------------------|-----------------------------|
| ११२ × ४'५ | ८ | ३३ | दे. ना. | का. | | अपू० | प्रकाशाख्या ५, ७ अध्यायांशः |
| १८'३ × ४'२ | ७ | ५५ | वङ्ग. | " | | पू० | |
| ११ × ४'५ | २ | ३३ | दे. ना. | " | | अपू० | |
| ११'१ × ४'८ | ११ | ४८ | " | " | १७५२ | पू० | अ. २ पा. १-२, अ. ३ |
| ११'२ × ४'५ | ८ | ४० | " | " | | अपू० | |
| १०'९ × ३'८ | ८ | ५२ | " | " | १८५८ | " | |
| ११'१ × ४'९ | ११ | ४१ | " | " | | " | |
| १०'८ × ४'४ | ९ | ३६ | " | " | | पू० | अ० ४ |
| ११'१ × ५'१ | २० | ४९ | " | " | | " | |
| १०'७ × ५'३ | १४ | ४७ | " | " | १६९० | अपू० | |
| १०'९ × ४'४ | १३ | ४८ | " | " | | " | प्रकाशाख्या |
| १०'९ × ४'९ | १९ | ५३ | " | " | | पू० | अ० ११ पा० १-४ |
| १०'९ × ३'९ | ११ | ४६ | " | " | | अपू० | |
| १३'१ × ३'७ | १० | ७२ | " | " | | पू० | अ. ४ ५, ७-१२ |
| ९'८ × ३'८ | १५ | ६० | " | " | | अपू० | |
| १३'२ × ८'३ | २२ | १६ | " | " | | " | |
| १०'८ × ४'५ | ११ | ४७ | " | " | | " | ६-१२ अध्यायाः |
| १० × ४'५ | ८ | २६ | " | " | | " | |
| १३'४ × ३'६ | १० | ५८ | " | " | | " | |
| ९'६ × ४'२ | १३ | ४६ | " | " | | " | |
| १०'३ × ३'५ | ९ | ४१ | " | " | | " | |
| ११'८ × ३'४ | ८ | ५८ | " | " | | " | न्यायरत्नमालान्याख्या |
| ९'९ × ४'६ | १२ | ३५ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------|---------------|--------------------------|
| २९५६४ | पिटृपशुसरणिः | गणेशः | १-१८ । |
| २९५६५ | तन्त्ररत्नम् | पार्थसारथिः | २-३६ । |
| २९५६६ | " | " | २-४७ । |
| २९५६७ | शास्त्रदीपिकाटीका | वैद्यनाथभट्टः | १४८ । (गणनया) |
| २९५६८ | मासाभिहोत्रादिवादः | | २-१४ । |
| २९५६९ | वार्त्तिकयोजना | | २-६४ । |
| २९५७० | श्लोकवार्त्तिकटीका | सुचरितमिश्रः | ३-१५९ । |
| २९५७१ | भाट्टदीपिका | खण्डदेवः | १-६३, १-१४२ |
| २९५७२ | " | " | १-२० । |
| २९५७३ | भाट्टभास्करः | जीवदेवः | ५१-८८ । |
| २९५७४ | तन्त्रवार्त्तिकम् | कुमारिलभट्टः | १-५६, १-७४ । |
| २९५७५ | द्वादशलक्षण्या अर्थसंक्षेपः | | १-२८ । |
| २९५७६ | तन्त्रवार्त्तिकम् | कुमारिलभट्टः | १-१०, २२, ३१-७७, ७९-९० । |
| २९५७७ | " | | १-७ । |
| २९५७८ | " | | १-८५ । |
| २९५७९ | " | | ३३-५४ । |
| २९५८० | " | | ४-२६ । |
| २९५८१ | " | | २-२८ । |
| २९५८२ | " | | १-२२ । |
| २९५८३ | " | | ४-२४, २८-३४ । |
| २९५८४ | भाट्टदीपिका | खण्डदेवः | २-१०, १२-३० । |
| २९५८५ | तन्त्रवार्त्तिकम् | | १-१५ । |
| २९५८६ | भाट्टदीपिका | खण्डदेवः | १-१३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | अङ्काः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|--------|-----------------|------------------------|-----------------|
| १०३ × ४४ | १२ | ३८ | दे. ना. | का. | | पू० | |
| ११३ × ४९ | ११ | ४४ | " | " | | अपू० | |
| १०३ × ४४ | १३ | ४४ | " | " | | " | |
| १३ × ४९ | १४ | ६६ | " | " | | " | अ. १-६ |
| ९४ × ३९ | ११ | ४० | " | " | | " | |
| १०६ × ४३ | १२ | ३७ | " | " | | " | |
| १० × ४२ | ९ | ३१ | " | " | | " | काशिका |
| १२८ × ४ | १० | ४६ | " | " | १९१४ श. १७७९ | पू० | अ. ९-१० |
| १२९ × ४१ | ११ | ५८ | " | " | | " | अ. २ |
| ९४ × ४३ | १२ | ३४ | " | " | | अपू० | |
| ११४ × ६२ | १० | ३९ | " | " | | पू० | अ. ३ पा. ३, ६-८ |
| ८१ × ६६ | १६ | १६ | " | " | | " | |
| ११३ × ३६ | ८ | ४२ | " | " | | अपू० | अ. ३ पा. २ |
| ११६ × ४८ | ११ | ४० | " | " | | " | |
| ११४ × ३३ | ८ | ६१ | " | " | | " | |
| १२३ × ४३ | ११ | ६६ | " | " | | " | |
| ११४ × २६ | ९ | २६ | " | " | | " | |
| ११८ × ६४ | १२ | ६७ | " | " | | " | |
| ११४ × ६ | ११ | २७ | " | " | श. १७०६ | पू० | अ. १ पा. ४ |
| ११३ × ४७ | १८ | ६३ | " | " | | अपू० | |
| ९८ × २४ | ४ | २९ | " | " | | " | |
| ११४ × ६१ | १३ | ४८ | " | " | | " | |
| ११७ × ६२ | १४ | ६६ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------|-----------------|---------------------------------|
| २९५८७ | शास्त्रदीपिकाटीका | वैद्यनाथभट्टः | २-२४, १-९, ११, २-१४ । |
| २९५८८ | " | " | २०२ । (गणनया) |
| २९५८९ | भाट्टालङ्कारः | अनन्तदेवः | ३९-८१ । |
| २९५९० | न्यायसुधा | सोमेश्वरभट्टः | १-३४० । |
| २९५९१ | " | " | १-६५, १-४१ । |
| २९५९२ | हिसार्थवादः | | १-१७ । |
| २९५९३ | न्यायसुधाव्याख्या | | १-२५ । |
| २९५९४ | श्रवणविधिविचारः | | २-५५ । |
| २९५९५ | फलसाङ्कर्षखण्डनम् | अनन्तदेवः | १-१८ । |
| २९५९६ | अर्थसङ्ग्रहः | लौगाक्षिभास्करः | १-५ । |
| २९५९७ | तन्त्रवार्त्तिकम् | | १-२, २-२८, ३८-५५, ५७ । |
| २९५९८ | " | | ५१०, १-४, ३०-४१७-३५, १-६, १-२ । |
| २९५९९ | न्यायसुधा | सोमेश्वरभट्टः | १-११४ । |
| २९६०० | " | " | १-८३, १-३१ । |
| २९६०१ | लघुवार्त्तिकटीका | | २-३१ । |
| २९६०२ | तन्त्रवार्त्तिकटीका | गङ्गाधरमिश्रः | १-१८, १-३० । |
| २९६०३ | तन्त्रवार्त्तिकम् | कुमारिलभट्टः | ३१-३७ । |
| २९६०४ | " | | १-८ । |
| २९६०५ | तन्त्रवार्त्तिकटीका | कमलाकरभट्टः | २-१०८, ११०-११२ । |
| २९६०६ | तन्त्रवार्त्तिकम् | | १-३८ । |
| २९६०७ | " | | ३-२७ । |
| २९६०८ | " | " | २-६८ । |
| २९६०९ | " | " | २-३४ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | संज्ञा- क | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|--------------|----------|------------------------|---|
| १२'९ × ४'९ | ११ | ६१ | दे. ना. | का. | १७७३ | अपू० | |
| ११'२ × ९ | १३ | ३८ | " | " | | पू०* | अ. ३-६, ८-१०, १२ |
| ११'९ × ९'३ | ११ | ४८ | " | " | | अपू० | न्यायप्रकाशटीका |
| ६'६ × ८'१ | १६ | १३ | " | " | १९९६ | पू० | अ. १ पा. २ |
| ६'६ × ८'१ | १६ | १९ | " | " | | अपू० | अ. ३ पा. ७-८ |
| ९'३ × ३'९ | ११ | ३९ | " | " | | " | |
| ११'२ × ३'७ | १४ | ९१ | " | " | १९९१ | पू० | |
| ९'४ × ४'२ | १० | ४१ | " | " | | अपू० | |
| १०'५ × २'३ | ७ | ६० | " | " | | पू० | |
| ३'३ × ९'१ | ११ | ४५ | " | " | | अपू० | |
| १०'८ × ४'७ | १६ | ३८ | " | " | १६३४ | " | अ. १ पा. ३ |
| १०'२ × ४'७ | १८ | ४० | " | " | | " | अ. १ पा. ४, अ. २ पा. २, अ. ३ पा. १, ३, ५ |
| ६'६ × ८'१ | १४ | १९ | " | " | | पू० | अ. १ पा. ३ |
| ११'२ × ४'९ | १२ | ४४ | " | " | | " | अ. १ पा. ४, अ. २ पा. १ |
| १०'१ × ३'६ | ९ | ३६ | " | " | | अपू० | अ. १ पा. १ |
| १०'३ × ४'५ | १७ | ३९ | " | " | | पू० | अ. ३ पा. ५-६ |
| ११'४ × ९'२ | १० | ५० | " | " | | अपू० | |
| ७'२ × ५'८ | १६ | ३३ | " | " | | " | |
| ११'३ × ४'८ | ९ | ४२ | " | " | | " | अ. २ पा. २ |
| १०'१ × ३'९ | १० | ४२ | " | " | | " | |
| ११'७ × ३'४ | ८ | ३५ | " | " | | " | |
| ९'८ × ३'२ | ७ | ४६ | " | " | | " | |
| १०'८ × ३'२ | ७ | ४८ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|-----------------|--|
| २९६१० | तन्त्रवार्त्तिकम् | कुमारिलभट्टः | २-२१ । |
| २९६११ | " | " | १-३० । |
| २९६१२ | " | " | १० । (गणनया) |
| २९६१३ | " | " | १-५७ । |
| २९६१४ | " | " | ३२ । (गणनया) |
| २९६१५ | " | " | ६५ । " |
| २९६१६ | " | " | १-१८ । |
| २९६१७ | " | " | १-३० । |
| २९६१८ | भाट्टार्कः | नीलकण्ठभट्टः | १-२२ । |
| २९६१९ | जैमिनिसूत्रवृत्तिः | रामेश्वरः | १-९७४, ९७७-१४८५ । |
| २९६२० | भाट्टदीपिका | | ७५ । (गणनया) |
| २९६२१ | शांखदीपिका टीका | | १-२, ५३ = ५४-३७५ = ३७६-३८५, ३८७-४६४ । |
| २९६२२ | तन्त्रवार्त्तिकम् | | २-२८ । |
| २९६२३ | धर्ममीमांसातरणिः | दिवाकरदीक्षितः | १-५२ । |
| २९६२४ | अध्वरमीमांसाकुतूहलवृत्तिः | वासुदेवदीक्षितः | १-२४, २६-६१ । |
| २९६२५ | " | " | २ १०, १२-३०, ८६-७८ । |
| २९६२६ | " | " | २-७०, ७२-१४२ । |
| २९६२७ | " | " | २-७८, ८०-१११, ११३, ११३-१३५, १३६-१४६ । |
| २९६२८ | " | " | २२-४४ । |
| २९६२९ | " | " | २-८१ । |
| २९६३० | तन्त्रवार्त्तिकम् | कुमारिलभट्टः | १७-४३ । |
| २९६३१ | श्लोकवार्त्तिकम् | " | १-६०, ६३-१५४ । |
| २९६३२ | शांखदीपिकाटीका | वैद्यनाथभट्टः | १-२४ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| ११'३ x ४'८ | ११ | ५९ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ११'८ x ३'४ | ८ | ४९ | " | " | | पू० | अ. ३ पा. २ |
| ९'८ x ४'३ | १४ | ४२ | " | " | | अपू० | |
| ११'२ x ३'२ | ८ | ४७ | " | " | | पू० | अ. ३ पा. ३ |
| १०'७ x ३'५ | ११ | ४८ | " | " | | अपू० | |
| १०'८ x ३'३ | ८ | ४७ | " | " | | " | |
| १०'१ x ४'४ | १५ | ४७ | " | " | | पू० | अ. २ पा. ३ |
| १०'१ x ४'४ | १६ | ३९ | " | " | | अपू० | |
| ११'९ x ५'१ | १२ | ४५ | " | " | | " | |
| ६'४ x ८'१ | १६ | १५ | " | " | | पू० | अ. १-१२ |
| १०'९ x ४'४ | १३ | ४६ | " | " | | अपू० | |
| १३'१ x ८'६ | १७ | ५० | " | " | | पू० | मयूरवमालिकाख्या, दशमाध्यायस्य चतुर्थपादान्ता |
| १०'३ x ४'७ | १८ | ४८ | " | " | | अपू० | |
| ८'१ x ६'५ | १८ | १४ | " | " | १९५२ | पू० | |
| १३'७ x ७'२ | १६ | ५७ | " | " | | अपू० | |
| ११'९ x ४'३ | १२ | ५९ | " | " | | " | |
| ९'७ x ४'३ | १० | ४३ | " | " | | " | |
| ९'७ x ४'२ | ९ | ३७ | " | " | | " | |
| ७ x ३'७ | ५ | १८ | " | " | | " | |
| १२'१ x ४'२ | १२ | ६१ | " | " | | " | |
| १०'९ x ३'३ | ८ | ६० | " | " | | " | |
| १३'८ x ५'१ | ९ | ३४ | " | " | | " | |
| १२'५ x ४'८ | ९ | ४६ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------|---------------|---|
| २९६३३ | शास्त्रदीपिकाटीका | वैद्यनाथभट्टः | २-२४ । |
| २९६३४ | धर्ममीमांसा | | ११-१३, १६-१८, २३-२६, ३०-३२, ३४-४०, ४१ । |
| २९६३५ | श्लोकवार्त्तिकम् | कुमारिलभट्टः | २-२४ । |
| २९६३६ | " | " | १२-१३, १६, १९-२३ । |
| २९६३७ | तन्त्रवार्त्तिकम् | " | ३३-५४ । |
| २९६३८ | " | " | १-४, ४-३७ । |
| २९६३९ | " | " | १-२१ । |
| २९६४० | " | " | १-६० । |
| २९६४१ | " | " | १-३०, ३०-६९ = ७०, ७१-७२ । |
| २९६४२ | " | " | १-७३ । |
| २९६४३ | " | " | १-२३ । |
| २९६४४ | " | " | १-२, २-५, ७-२४, २६, ३२-३४, ३९-१४८ । |
| २९६४५ | " | " | १-४६ । |
| २९६४६ | " | " | १-२५ । |
| २९६४७ | " | " | २६-५९ । |
| २९६४८ | " | " | ६५-८० । |
| २९६४९ | " | " | १-२८, १-१४ । |
| २९६५० | मीमांसापरिभाषा | | १-३३ । |
| २९६५१ | नयविवेकदीपिका | वरदराजः | २-८३, १२१-१४९ । |
| २९६५२ | भाट्टभाषाप्रकाशिका | नारायणतीर्थः | १-२६ । |
| २९६५३ | नयविवेकटीका | शङ्करः | ५१-७३, १-८४ । |
| २९६५४ | भाट्टमतप्रदीपः | कोण्डदेवः | १-४१ । |
| २९६५५ | नयविवेकटीका | दामोदरः | २-४०, ७४-९२, ९६-१०१, १०३-१०७, ८५-११९, २४-४१ । |

| આચાર: | પક્ષિ- સંદર્ભ | શર- સંદર્ભ | કિમિ: | કિમિ- સંદર્ભ | કિમિ-સંદર્ભ: | પૂર્ણપૂર્ણ- નિર્ધાર | નિર્ધારનિર્ધાર |
|-------------|------------------|---------------|---------|-----------------|--------------|------------------------|---------------------------|
| ૧૦°૧ × ૪°૧ | ૧૧ | ૬૧ | દે. ના. | વા. | | અપૂં | |
| ૧૧°૧ × ૪ | ૧૧ | ૬૦ | " | " | | " | |
| ૭ × ૩°૬ | ૪ | ૬૩ | " | " | | " | |
| ૮°૫ × ૩°૬ | ૦ | ૬૬ | " | " | | " | |
| ૧૧°૧ × ૪°૧ | ૧૨ | ૬૬ | " | " | | " | |
| ૧૧°૩ × ૪°૧૦ | ૧૩ | ૬૦ | " | " | | પૂં | અં ૩ પાં ૧ । |
| ૧૧°૩ × ૪°૧ | ૧૩ | ૬૩ | " | " | | " | અં ૩ પાં ૨ । |
| ૧૧°૩ × ૪°૧ | ૧ | ૬૩ | " | " | | " | અં ૩ પાં ૩ । |
| ૧૧°૩ × ૩°૬ | ૮ | ૬૪ | " | " | | " | અં ૩ પાં ૪ । |
| ૧૧°૩ × ૩°૬ | ૯ | ૬૦ | " | " | | " | અં ૩ પાં ૫-૮ । |
| ૧°૩ × ૩°૬ | ૧૪ | ૫૦ | " | " | | " | અં ૩ પાં ૫ । |
| ૧૦°૬ × ૪°૨ | ૧૧ | ૩૧ | " | " | | અપૂં | અં ૧ પાં ૩ । |
| ૧૧°૧ × ૪°૦ | ૧૧ | ૬૬ | " | " | | પૂં | અં ૩ પાં ૧ । |
| ૧૧° × ૪°૪ | ૧૩ | ૬૧ | " | " | | અપૂં | |
| ૧૧°૬ × ૬°૩ | ૯ | ૩૬ | " | " | | " | |
| ૧૧°૬ × ૬°૩ | ૯ | ૪૬ | " | " | | " | |
| ૧૧°૬ × ૬°૩ | ૧૦ | ૪૬ | " | " | | પૂં | અં ૩ પાં ૩-૪ । |
| ૧°૬ × ૪°૬ | ૮ | ૩૮ | " | " | | " | |
| ૧૦°૮ × ૪°૩ | ૧૩ | ૪૪ | " | " | | અપૂં | અં ૩ પાં ૧, ૬-૮ । |
| ૧૧°૪ × ૪°૧ | ૧૧ | ૪૧ | " | " | | પૂં | |
| ૧૦°૮ × ૪°૮ | ૧૩ | ૪૪ | " | " | | અપૂં | અં ૩ પાં ૬-૮ અં ૪ પાં ૧ । |
| ૧૦ × ૪°૬ | ૯ | ૪૮ | " | " | | પૂં | |
| ૧૦°૮ × ૪°૮ | ૧૩ | ૪૪ | " | " | | અપૂં | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------|------------------------------------|----------------------------|
| २९६५६ | अर्थसङ्ग्रहः | लौगाक्षिभास्करः | १-८ । |
| २९६५७ | ” | ” | १-५, १-१९ । |
| २९६५८ | ” | ” | १-२१ । |
| २९६५९ | शास्त्रदीपिकाव्याख्या | सोमनाथभट्टः | १-४८ । |
| २९६६० | ” | ” | २-३८ । |
| २९६६१ | ” | ” | ३१-४९ । |
| २९६६२ | अर्थसङ्ग्रहः | लौगाक्षिभास्करः | १-२१ । |
| २९६६३ | भाट्टभास्करः | जीवदेवः | १-१३९ । |
| २९६६४ | शास्त्रदीपिकाव्याख्या | सोमनाथभट्टः | २-३३, २-१५, १७-१९, २-५१ । |
| २९६६५ | ” | ” | २-१३१, ३३-३४ । |
| २९६६६ | ” | ” | २-४६ । |
| २९६६७ | ” | ” | २-१९ । |
| २९६६८ | धर्ममीमांसावृत्तिः | | ४६ । |
| २९६६९ | शास्त्रदीपिका | पार्थसारथिः | १-४, ८-४१ । |
| २९६७० | ” | ” | १-१४ । |
| २९६७१ | ” | ” | १-२१ । |
| २९६७२ | ” | ” | ३-२६ । |
| २९६७३ | अधिकरणमाला | | ३-९ । |
| २९६७४ | भाट्टदीपिका | खण्डदेवः | ९-२० । |
| २९६७५ | ” | ” | १-२६, १-३५, १-२६८, १-३८४ । |
| २९६७६ | शास्त्रदीपिका सटीका | पार्थसारथिमिश्रः टी.का. सोमनाथः | १-६४ । |
| २९६७७ | ” | ” | १-२६ । |
| २९६७८ | शास्त्रदीपिकाटीका | रामकृष्णभट्टः | १-९४ । |

| આકાર: | પક્ષિ- સંખ્યા | અક્ષર- સંખ્યા | લિપિ: | અંશ: | લિપિકાલ: | પૂર્ણાપૂર્ણ- વિવેક: | વિશેષવિવરણમ |
|------------|------------------|------------------|--------|------|----------|------------------------|----------------|
| ૧૦ x ૪.૪ | ૧૪ | ૪૮ | દે.ના. | કા. | | અપૂં | |
| ૧૦.૭ x ૪.૬ | ૭ | ૩૦ | " | " | | પૂં | |
| ૯.૯ x ૪.૬ | ૧૦ | ૩૬ | " | " | ૧૯૧૦ | " | |
| ૧૪.૬ x ૬.૬ | ૧૨ | ૬૬ | " | " | | અપૂં | |
| ૧૩.૮ x ૭ | ૧૦ | ૩૭ | " | " | | " | |
| ૧૦.૯ x ૪.૮ | ૧૨ | ૬૬ | " | " | | " | |
| ૯.૬ x ૪.૪ | ૭ | ૩૨ | " | " | | પૂં | |
| ૧૦.૮ x ૪.૪ | ૮ | ૩૭ | " | " | | " | |
| ૧૨.૪ x ૪.૭ | ૯ | ૬૪ | " | " | | અપૂં | |
| ૧૦.૩ x ૪.૪ | ૯ | ૪૧ | " | " | | " | |
| ૯.૮ x ૪.૩ | ૧૨ | ૬૩ | " | " | | " | |
| ૭.૧ x ૩.૬ | ૪ | ૧૬ | " | " | | " | |
| ૧૧.૧ x ૪ | ૧૦. | ૬૪ | વજ્ઞ. | " | | " | અં ૩ પાં ૪ । |
| ૯.૪ x ૩.૭ | ૧૦ | ૩૯ | દે.ના. | " | | " | |
| ૮.૮ x ૩.૩ | ૯ | ૩૭ | " | " | | પૂં | અં ૭ પાં ૧-૪ । |
| ૮.૬ x ૩.૭ | ૯ | ૩૭ | " | " | | " | અં ૬ પાં ૧-૪ । |
| ૮.૮ x ૩.૮ | ૧૧ | ૪૬ | " | " | | અપૂં | |
| ૯.૬ x ૩.૬ | ૯ | ૬૦ | " | " | | " | |
| ૯.૮ x ૪.૭ | ૧૧ | ૬૧ | " | " | | " | |
| ૧૦ x ૭.૧૦ | ૨૧ | ૩૪ | " | " | ૧૯૬૦ | પૂં | અં ૧-૧૨ । |
| ૧૩.૯ x ૭.૨ | ૨૧ | ૬૬ | " | " | | " | અં ૧ । |
| ૧૪.૬ x ૭.૭ | ૧૮ | ૬૬ | " | " | | અપૂં | |
| ૧૨.૮ x ૬.૬ | ૧૪ | ૬૮ | " | " | | પૂં | અં ૧ પાં ૧ । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------|------------------------------------|-----------------------------|
| २९६७९ | शास्त्रदीपिकाटीका | | १-३० । |
| २९६८० | " | | १-२४ । |
| २९६८१ | " | रामकृष्णभट्टः | २-१६ । |
| २९६८२ | " | " | १-८२, ८४-२३७, २०४ । |
| २९६८३ | शास्त्रदीपिका सटीका | पार्थसारथिमिश्रः टी.का. सोमनाथः | १-७७, १-२, ६-५० । |
| २९६८४ | " | " | १-१५१, १५१-२१४ । |
| २९६८५ | मीमांसासूत्रव्याख्या | | ३५-४५ । |
| २९६८६ | " | | २-१०, १०-१८ १८-२३, २२-३३ । |
| २९६८७ | जैमिनिसूत्रवृत्तिः | | १-५ । |
| २९६८८ | मीमांसासूत्रवृत्तिः | | २-७६, ७८-१४१ । |
| २९६८९ | श्लोकवार्त्तिकम् | | १-९७ । |
| २९६९० | तन्त्रवार्त्तिकम् | | १-५२ । |
| २९६९१ | " | | १२-१३, २८-५४ । |
| २९६९२ | मीमांसान्यायप्रकाशः | आपदेवः | २-८२ । |
| २९६९३ | नयविवेकदीपिका | वरदराजः | ३१९-५५४ । |
| २९६९४ | " | " | १-३१८ । |
| २९६९५ | " | " | १-३४०, १-१२५, १-१२९ । |
| २९६९६ | शास्त्रदीपिकान्याख्या | सोमनाथभट्टः | २-१७, २०-७०, ७०-८६ । |
| २९६९७ | " | " | २-२९, २९-४७, ५०-६१, ६३-६४ । |
| २९६९८ | " | " | १-२९ । |
| २९६९९ | अधिकरणमालानवीनटीका | | १-१५ । |
| २९७०० | प्रभावली | शम्भुभट्टः | ५१-५६, १-२१ । |
| २९७०१ | " | " | २-६० । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|-----------------------------------|
| ११ × ४'८ | १२ | ५० | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| ११ × ४'५ | १३ | ४६ | " | " | | " | |
| १०'९ × ४'९ | १३ | ६१ | " | " | | " | |
| १०'८ × ४'६ | ७ | ३९ | " | " | | " | |
| १४'६ × ५'४ | ११ | ७० | " | " | | " | |
| १४'२ × ९'३ | १० | ५५ | " | " | | पू० | अ० ३ पा० १-८ । |
| ९'९ × ४'५ | १३ | ३४ | " | " | | अपू० | |
| ९'९ × ४'४ | १४ | ३७ | " | " | | " | अ० २ पा० १ । |
| ९ × ३'९ | १३ | ४५ | " | " | | " | अ० ४ पा० १ । |
| १०'८ × ५'१ | १४ | १८ | " | " | | " | |
| ११ × ४'७ | १४ | ४९ | " | " | | पू० | अ० १ पा० १ । |
| १३'७ × ४'५ | ९ | ४० | " | " | | " | अ० १ पा० २ । |
| १४'७ × ७'७ | १० | ३३ | " | " | | अपू० | |
| १२'९ × ५ | ८ | ३५ | वङ्ग. | " | | " | |
| १३'२ × ८'१ | २२ | २३ | दे.ना. | " | | पू० | अ० २ पा० १-२ भागः २ । |
| १३'२ × ८'१ | २२ | २३ | " | " | | " | अ० १ पा० २-४ भागः १ । |
| १३'२ × ८'१ | २२ | २३ | " | " | | " | अ. २ पा, १ अ. ४ पा. १ (३-४ भागौ)। |
| १३'६ × ५ | १८ | ६६ | वङ्ग. | " | | अपू० | |
| १३'२ × ५ | १४ | ५६ | " | " | | " | |
| १४'४ × ५'४ | १२ | ४९ | दे.ना. | " | | " | |
| १३'८ × ४'९ | १३ | ४० | " | " | | " | |
| १२'५ × ४'८ | १२ | ६१ | " | " | | " | भाट्टदीपिकाटीका । |
| १२'४ × ४'५ | १० | ५३ | " | " | | " | " |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------|---------------|--|
| २९७०२ | प्रभावली | शम्भुभट्टः | १-३१, = (३२), ३३-४९, ४९-५९ । |
| २९७०३ | " | " | ५३ । (गणनया) |
| २९७०४ | काशिका | सुचरितमिश्रः | १-४७, ४९-११२, ११२-१३५, १४०-२४९, ३९६-४१० । |
| २९७०५ | शास्त्रमालावृत्तिः | अनन्तभट्टः | २-१७ । |
| २९७०६ | " | " | २२-९९ । |
| २९७०७ | " | " | ६-४४, ४६-५० । |
| २९७०८ | " | " | ८-१६३ । |
| २९७०९ | " | " | २-८९, ८९-१३३, १३२-२०१, २०१-२१८, २१८-२२७, २२६-२४९ । |
| २९७१० | श्लोकवात्तिकटीका | सुचरितमिश्रः | १६८ । (गणनया) |
| २९७११ | न्यायसुधा | सोमेश्वरः | १-१४७ । |
| २९७१२ | " | " | १-११४ । |
| २९७१३ | " | " | १-२३, २३-२२९, १-२४० । |
| २९७१४ | " | " | १-४१९ । |
| २९७१५ | भाट्टभास्करः | शङ्करभट्टः | १-२७ । |
| २९७१६ | भाट्टार्कः | नीलकण्ठभट्टः | १-३३ । |
| २९७१७ | भाट्टभास्करः | शङ्करभट्टः | १-२१ । |
| २९७१८ | विधिवादः | | ९९-१०७ । |
| २९७१९ | शास्त्रदीपिकाटीका | | ८ । (गणनया) |
| २९७२० | अधिकरणन्यायमाला | | २-४९ । |
| २९७२१ | भाट्टभास्करः | शङ्करभट्टः | १-५, १०-३२ । |
| २९७२२ | विधिरसायनम् | अप्पयदीक्षितः | १-७२, ७४ । |
| २९७२३ | " | " | १-३८१ । |
| २९७२४ | भाट्टदीपिका | " | २-८, १२, १५-४७, ४७-६१, ६३, ६३-७१, ७४-८३, २, ४-१६, १८-३०, १-२७, ३०-३५ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आश्रयः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|----------------|--------------|--------|--------|----------|---------------------|---|
| १२'६ × ४'६ | १० | ५८ | दे.ना. | का. | | अपू० | भाट्टदीपिकाटीका । |
| १२'१ × ५'१ | ११ | ३७ | " | " | | " | " |
| १३'२ × ३'६ | १० | ६१ | " | " | | " | तन्त्रवार्त्तिकटीका । |
| ११ × २'७ | ३ | ३२ | " | " | | " | |
| ११'३ × ४'३ | ९ | ५० | " | " | | " | |
| १२ × ५'५ | १० | ३५ | " | " | | " | |
| ११'८ × ५'१ | १० | ३५ | " | " | | " | |
| ११'७ × ५'४ | ११ | ४० | " | " | | " | |
| ७'५ × ६ | १५ | २१ | " | " | | " | |
| १०'४ × ४'५ | ११ | ४६ | " | " | | पू० | अ० २ पा० १ । |
| ११'७ × ५'३ | ११ | ३८ | " | " | १६६५ | " | अ० १ पा० २ । |
| ८'६ × ६'७ | १६ | १६ | " | " | | " | तन्त्रवार्त्तिकटीका । अ० ३ पा० ३-४ । |
| ८'१ × ६'८ | १६ | १७ | " | " | १६५१ | " | " अ० १ पा० ३ । |
| ११'१ × ५ | १२ | २९ | " | " | | " | |
| १२ × ५'२ | १२ | ४६ | " | " | | " | |
| ११ × ५ | ८ | ३७ | " | " | | " | |
| ११'१ × ३'८ | ९ | ३२ | वज्र. | " | | अपू० | |
| १०'९ × ३'९ | ११ | ५७ | " | " | | " | |
| १७'१ × ३'५ | ७ | ५७ | दे.ना. | " | | " | |
| ११'१ × ४'८ | १० | ४१ | " | " | | " | |
| १'७ × ४'५ | १६ | ४४ | वज्र. | " | | " | |
| ७'९ × ६'४ | १६ | १७ | दे.ना. | " | | पू० | |
| १२'५ × ४'९ | १४ | ४९ | " | " | | अपू० | अ० १० पा० १-८ अ० ११ पा० १-४ अ० १२ पा० १-४ । प्रभावली । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------|--------------|---|
| २९७२५ | भाट्टदीपिका | शम्भुभट्टः | २-४१ । |
| २९७२६ | मीमांसाबालप्रकाशः | शङ्करभट्टः | १-२६, २६-१३८ । |
| २९७२७ | " | " | १-३८० । |
| २९७२८ | मीमांसान्यायप्रकाशः | आपदेवः | ३-४, ४-७, १२-२९, ३१-४२ । |
| २९७२९ | " | " | ८-१८, २२-२३, २३-३९ । |
| २९७३० | " | " | १-४६ । |
| २९७३१ | " | " | १-१८ । |
| २९७३२ | " | " | १-१७ । |
| २९७३३ | " | " | १० । (गणनया) |
| २९७३४ | न्यायसुधा | सोमेश्वरः | १-१२ । |
| २९७३५ | " | " | २-३३ । |
| २९७३६ | " | " | १-३८०, १-४३६, १-४९५, १-५९७, १-२६१, १-३८, ३८-११७ । |
| २९७३७ | " | " | १-४२=(४३)४४-५१, ५१-५३=५४, ५५-११६ । |
| २९७३८ | भाट्टालङ्कारः | अनन्तदेवः | १-७१ । |
| २९७३९ | न्यायसुधा | सोमेश्वरः | १-७२, ४४-८५ । |
| २९७४० | " | " | १-६५ । |
| २९७४१ | " | " | १-३७ । |
| २९७४२ | " | " | १-६० । |
| २९७४३ | " | " | ३०, ३७-३८=(३९) ४३-४७ । |
| २९७४४ | " | " | १-३ । |
| २९७४५ | " | " | ६-४५ । |
| २९७४६ | " | " | १-८ । |
| २९७४७ | " | " | १-५८, ५८-१२३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | दिनांकः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|---------|----------|-------------------------|---|
| १२°५×४°९ | ११ | ५७ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ११°५×४°८ | १० | ४९ | " | " | १९५३ | पू० | |
| १°८×७°३ | १७ | २३ | " | " | | " | |
| ८°६×३°८ | १५ | ३७ | " | " | | अपू० | |
| १०°४×३°७ | १० | ३४ | " | " | | " | |
| १०°९×४°९ | ११ | ५२ | " | " | | पू० | |
| १२°८×४°८ | ९ | ३४ | " | " | | अपू० | |
| १°९×५°९ | ११ | ३२ | " | " | | " | |
| १°८×५°७ | ११ | ३२ | " | " | | " | |
| १०°८×४°६ | ९ | ३६ | " | " | | " | |
| १२°४×५°१ | १२ | ४७ | " | " | | " | |
| ८°३×६°७ | १४ | १८ | " | " | १९५७ | पू० | तन्त्रवार्त्तिकटीका अ० १ पा० ३-४ अ० २ पा० १-३, अ० ३ पा० ७-८। |
| ११°९×५ | १० | ५० | " | " | | अपू० | |
| १३°९×५°४ | ११ | ५५ | " | " | | पू० | पूर्वार्द्धम् । न्यायप्रकाशटीका । |
| १२°७×४°३ | १० | ५० | " | " | | अपू० | अ० ३ पा० २-३ । |
| १२°८×४°४ | ९ | ४६ | " | " | | पू० | अ० ३ पा० १ । |
| ११°३×४°७ | ९ | ४५ | " | " | | " | अ० २ पा० ४ । |
| ११°१×४°८ | १३ | ३९ | " | " | | अपू० | |
| १२°७×४°३ | ११ | ६० | " | " | | " | |
| १२°४×३°७ | ११ | ६१ | " | " | | " | |
| १२°७×३°६ | १२ | १७ | " | " | | " | |
| १२°६×४°३ | ११ | ५५ | " | " | | " | |
| ९°१×४°३ | १५ | ४८ | " | " | | पू० | अ० २ पा० २ । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|------------------|---|
| २९७४८ | मीमांसान्यायप्रकाशः | | १-८ । |
| २९७४९ | " | | १-२ । |
| २९७५० | अर्थसङ्ग्रहः | लौगाक्षिभास्करः | १-१६ । |
| २९७५१ | " | " | १-४६९ । |
| २९७५२ | भाट्टालङ्कारः | अनन्तदेवः | १-९२, ९२-११३, १-६८ । |
| २९७५३ | " | " | १, ३-३८, ४०-६७ । |
| २९७५४ | " | " | ५०-७२ । |
| २९७५५ | " | " | १ । |
| २९७५६ | मीमांसार्थसङ्ग्रहकौमुदी | रामेश्वरयोगिभिः | १-७०, ७०-७४, (= ७५) ७६-१३४, १३४-१३५ । |
| २९७५७ | न्यायसुधा | सोमेश्वरः | १-२, ४-६, २९-३०, ३२-३८, ४३ । |
| २९७५८ | तन्त्ररत्नम् | पार्थसारथिमिश्रः | १-११२ । |
| २९७५९ | न्यायसुधा | सोमेश्वरः | ९ । (गणनया) |
| २९७६० | भाट्टरहस्यम् | खण्डदेवः | १-२७, २९-६६, ६६-७३, ७६ । |
| २९७६१ | " | " | २-२०, २३-१२१ । |
| २९७६२ | " | " | १-१११ । |
| २९७६३ | मीमांसापरिभाषा | कृष्णयज्वा | १-१०१ । |
| २९७६४ | " | " | १-२७ । |
| २९७६५ | मीमांसाधिकरणकौमुदी | रामकृष्णः | १-६८ । |
| २९७६६ | " | देवनाथः | १-४६ । |
| २९७६७ | उपक्रमपराक्रमः | अप्पय्यदीक्षितः | १-२२७ । |
| २९७६८ | विधिरसायनम् | " | १-११३ । |
| २९७६९ | " | " | २९-६९ । |
| २९७७० | मीमांसावार्त्तिकाभरणम् | " | १-२९८, १-१८१, १-१३८, १-७२, १-६५, १-६९, १-८१, १-८९ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आवाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|------|----------|------------------------|---|
| १२'८ X ४'९ | ४९ | १२ | वज्र. | का. | | अपू० | |
| १३'१ X ५ | ४६ | १२ | दे.ना. | " | | " | |
| १२'६ X ६'३ | ११ | ३७ | " | " | १८८६ | पू० | |
| ८'३ X ६'७ | १६ | १७ | " | " | १९५३ | " | १-२ भागौ । |
| ११ X ४'६ | १२ | २४ | " | " | १७४५ | " | न्यायप्रकाशटीका । |
| १०'२ X ४'३ | १३ | ५२ | " | " | | अपू० | |
| १०'२ X ४'५ | ११ | ३३ | " | " | | " | " |
| १०'४ X ३'९ | १३ | ५० | " | " | १७४५ | " | " |
| ११'९ X ४'७ | ८ | ३७ | " | " | १९२० | पू० | " २ परिच्छेदः । |
| ११ X ३'५ | ११ | ६८ | " | " | | अपू० | |
| ११'५ X ५'३ | ९ | ३२ | " | " | | पू० | अ० ४ । |
| १३'२ X ४'२ | ११ | ८० | " | " | | अपू० | |
| ११'४ X ४'५ | १२ | ५० | " | " | | " | |
| १०'१ X ४'५ | ३२ | १० | " | " | | " | |
| ९ X ३'९ | १० | ३८ | " | " | १७३२ | पू० | प्रथमपरिच्छेदः । |
| ८'४ X ६'५ | १६ | १३ | " | " | | " | |
| १२'६ X ४'७ | ९ | ४१ | " | " | | " | |
| १२'४ X ८ | १३ | ४१ | " | " | | " | |
| ८'५ X ६'७ | २० | २६ | " | " | | अपू० | |
| ७'८ X ६'२ | १७ | १५ | " | " | १९५१ | पू० | |
| ११'१ X ३'६ | ९ | ६८ | " | " | १७३६ | " | |
| १०'३ X ४ | ७ | ४१ | " | " | | अपू० | |
| ८'६ X ६'९ | १४ | १७ | " | " | १९५७ | " | अ० ८ पा० १-४, अ० ९ पा० १-४ अ० १० पा० १-८ । |

हस्तलिखितग्रन्थविवरणपत्रिकायाः

सांख्ययोगग्रन्थसङ्ग्रहात्मको भागः

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|---|-----------------------|
| २९७७१ | साङ्ख्यतत्त्वकौमुदी | वाचस्पतिमिश्रः | १-३८ । |
| २९७७२ | तत्त्वयाथार्थ्यदीपनम् | गणेशः | ३-१४ । |
| २९७७३ | साङ्ख्यतत्त्वकौमुदी सटीका | वाचस्पतिमिश्रः टी. का. वंशीधर- मिश्रः | १-२६२ । |
| २९७७४ | साङ्ख्यकारिका सटीका | ईश्वरकृष्णः टी. का. नारायण- तीर्थः | १-१८ । |
| २९७७५ | हठप्रदीपिका | स्वात्मारामयोगीन्द्रः | ९-४५ । |
| २९७७६ | साङ्ख्यतत्त्वकौमुदीटीका | | १-२९, (२९=३०) ३१-४० । |
| २९७७७ | साङ्ख्यप्रवचनभाष्यम् | विज्ञानभिक्षुः | १-२२, ११-१६ । |
| २९७७८ | " | | १-२ । |
| २९७७९ | तत्त्वयाथार्थ्यदीपनम् | गणेशः | १-११-१० । |
| २९७८० | साङ्ख्यसारः | " | १-२४ । |
| २९७८१ | लघुसाङ्ख्यसूत्रवृत्तिः | नागोजीभट्टः | १-९७ । |
| २९७८२ | " | | १-८० । |
| २९७८३ | तत्त्वसमासः | | २-११ । |
| २९७८४ | साङ्ख्यप्रवचनभाष्यम् | विज्ञानभिक्षुः | १-१०५ । |
| २९७८५ | " | " | १-४९, ११२-१६१ । |
| २९७८६ | साङ्ख्यप्रवचनवृत्तिसारः | महादेवः | ८३ । (गणनया) |
| २९७८७ | " | " | १-५५ । |
| २९७८८ | तत्त्वसमासः | | १-४ । |
| २९७८९ | " | | १-४ । |
| २९७९० | " | | १-८ । |
| २९७९१ | हठप्रदीपिका | आत्माराम- योगीन्द्रः | १-२१ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|-----------------|
| ९'१ × ३'८ | ११ | ४३ | दे. ना. | का. | | पू० | टीका चन्द्रिका। |
| ८'६ × ३'६ | १४ | ४५ | " | " | १७०९ | अपू० | |
| १२'६ × ४'९ | ९ | ५२ | " | " | १८९९ | पू० | |
| १२'७ × ६'९ | १४ | ५२ | " | " | | " | |
| ८ × ४'५ | ८ | ३२ | " | " | १९३९ | अपू० | |
| १३'६ × ७ | १३ | ४३ | " | " | | पू० | |
| १०'७ × ४'६ | ९ | ३८ | " | " | | अपू० | |
| १०'६ × ४'६ | ११ | ३७ | " | " | | " | |
| १२'७ × ४'६ | १३ | ४९ | " | " | १७६७ | पू० | |
| ९'९ × ४'२ | १० | २९ | " | " | | " | |
| ९'७ × ४'३ | १० | ३८ | " | " | | " | |
| १०'९ × ४'७ | १३ | ४९ | " | " | १८८१ | " | |
| १०'३ × ३'९ | ८ | ३० | " | " | | अपू० | |
| १३'६ × ५'३ | ९ | ६५ | " | " | | पू० | |
| १३'१ × ४'९ | ९ | ४३ | " | " | | अपू० | |
| १०'४ × ५'३ | ९ | ३२ | " | " | | पू०* | |
| १३'८ × ५'४ | ११ | ४४ | " | " | | " | |
| १०'८ × ४'१ | ९ | ४६ | " | " | | अपू० | |
| १०'९ × ४'६ | ९ | ४२ | " | " | | " | |
| ९'९ × ४'३ | ९ | ३४ | " | " | | " | |
| १०'९ × ४'५ | ९ | ३६ | " | " | १७९२ | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|---------------------------------|-------------------------------|
| २९७९२ | योगसूत्रवृत्तिः | भोजदेवः | १-३० । |
| २९७९३ | साङ्ख्यकारिका सभाष्या | ईश्वरकृष्णः भा.का.गौडपादः | १-३७ । |
| २९७९४ | योगसूत्रवृत्तिः | भोजदेवः | १-१५, २३-३० । |
| २९७९५ | " | " | २, ४-८, १०-३४, ४२-४५, ५४-५६ । |
| २९७९६ | हठप्रदीपिका | आत्मारामः | १-८ । |
| २९७९७ | स्वरोदयः | | १-४ । |
| २९७९८ | अष्टाङ्गयोगनिरूपणम् | | १-३ । |
| २९७९९ | योगसूत्रवृत्तिः | भोजराजः | १३-२६, २८ । |
| २९८०० | योगसूत्रं सवृत्तिकम् | वृ. का. नारायणतीर्थः | १-३२४ । |
| २९८०१ | " | " | १-९९ । |
| २९८०२ | अमनस्कयोगशास्त्रम् | | १-६ । |
| २९८०३ | पातञ्जलरहस्यम् | राघवानन्दः | १-३२, (३२ = ३३) ३४-६४ । |
| २९८०४ | पवनविजयः | | १-१२ । |
| २९८०५ | स्वरोदयः | | १-१८ । |
| २९८०६ | पवनविजयः | | १-१६ । |
| २९८०७ | योगसूत्रं सभाष्यम् | पतञ्जलिः | १-१८ । |
| २९८०८ | " | " | १-५२ । |
| २९८०९ | साङ्ख्यसूत्रं सभाष्यम् | कपिलः भा. का. विज्ञानभिक्षुः | ११-५९, ६१-१२८ । |
| २९८१० | " | " | १-१४७ । |
| २९८११ | गोरक्षशतकम् | | १-१५ । |
| २९८१२ | " | | १-१६ । |
| २९८१३ | साङ्ख्यसारः | | २-३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | संज्ञाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|---------|----------|-------------------------|------------------------|
| ११ × ५ | ११ | ३९ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| १२'५ × ४'७ | ८ | ३१ | " | " | १९०४ | पू० | |
| ११ × ४'५ | १० | ५५ | " | " | | अपू० | |
| १०'६ × ४'५ | ९ | ५० | " | " | | " | |
| ७'८ × ३'७ | ९ | २५ | " | " | | " | |
| ११ × ३'६ | ७ | ४४ | वङ्ग. | " | | " | |
| ९'५ × ५'१ | १७ | ५३ | दे.ना. | " | | " | |
| ८'५ × ४ | १६ | ४८ | " | " | | " | |
| ८'२ × ६'६ | १४ | १७ | " | " | | पू० | |
| ८ × ६'२ | १३ | १५ | " | " | | " | पा. १-४ । |
| १३ × ५'३ | १३ | ५५ | " | " | | " | |
| १०'९ × ४'७ | १३ | ३३ | " | " | १७७८ | " | |
| १३'५ × ४'९ | १० | ४७ | वङ्ग. | " | | " | |
| १२'१ × ५'४ | ९ | ३१ | दे.ना. | " | १८८५ | " | |
| १३ × ५ | ९ | ४४ | " | " | १८८२ | " | |
| १० × ४'३ | ८ | ३३ | " | " | | अपू० | |
| ९'६ × ४'१ | ८ | ३८ | " | " | | पू० | |
| १०'५ × ४'५ | १० | ३८ | " | " | | अपू० | साङ्ख्यप्रवचनभाष्यम् । |
| १०'५ × ४'२ | ११ | ४० | " | " | | पू० | " |
| ८'७ × ३'५ | ८ | ३२ | " | " | १७१२ | " | |
| १०'८ × ४'६ | ९ | २४ | " | " | १७६० | " | |
| ९ × ४'२ | ११ | ३३ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|-------------------------------------|-----------------------|
| २९८१४ | योगसूत्रं सभाष्यम् | पतञ्जलिः | २-६४ । |
| २९८१५ | " | | २३ । (गणनया) |
| २९८१६ | योगसूत्रभाष्यम् | | १-३२, ३५-३८ । |
| २९८१७ | गोरक्षशतकम् | | १-१३ । |
| २९८१८ | " | | १-१९ । |
| २९८१९ | योगसूत्रं सभाष्यम् | पतञ्जलिः | २३ । (गणनया) |
| २९८२० | साङ्ख्यतत्त्वप्रदीपः | | १-२० । |
| २९८२१ | " | | १-२९ । |
| २९८२२ | तत्त्वमीमांसा | कृष्णमिश्रः | १-३ । |
| २९८२३ | " | " | १-१२ । |
| २९८२४ | साङ्ख्यकारिका सटीका | ईश्वरकृष्णः टी. का. नारायणतीर्थः | १-२५ । |
| २९८२५ | साङ्ख्यतत्त्वप्रदीपिका | | १-७ । |
| २९८२६ | योगसूत्रम् | पतञ्जलिः | १-४ । |
| २९८२७ | योगसूत्रं सटीकम् | पतञ्जलिः टी.का. रामानन्दसरस्वती | १-४८ । |
| २९८२८ | साङ्ख्यकारिका | ईश्वरकृष्णः | १-६ । |
| २९८२९ | " | " | १-५ । |
| २९८३० | साङ्ख्यसूत्रविवरणम् | | १-३ । |
| २९८३१ | साङ्ख्यकारिका | | १-४ । |
| २९८३२ | साङ्ख्यकारिका सटीका | | २, ८, ११, १३-१४, २० । |
| २९८३३ | साङ्ख्यकारिका | | १-४ । |
| २९८३४ | " | | १ । |
| २९८३५ | योगसूत्रं सवृत्तिकम् | वृ. का. पिमानन्दः | १८-४९ । |
| २९८३६ | योगसूत्रवृत्तिः | भोजदेवः | १-१० । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|-----------------------------|-------------------|
| २९८३७ | योगसूत्रवृत्तिः | भोजदेवः | १-४४ । |
| २९८३८ | " | " | १-३१ । |
| २९८३९ | योगसूत्रं सव्याख्यम् | पतञ्जलिः व्या.का. भवदेवः | १-५० । |
| २९८४० | योगसूत्रवृत्तिः | भोजदेवः | १-५५ । |
| २९८४१ | " | " | १-२८ । |
| २९८४२ | " | " | १-४६ । |
| २९८४३ | साङ्ख्यतत्त्वविवेचनम् | पिमानन्दः | १-१४ । |
| २९८४४ | साङ्ख्यसूत्रविवरणम् | | १-१७ । |
| २९८४५ | कपिलसूत्रवृत्तिः | | १-१७ । |
| २९८४६ | साङ्ख्यतत्त्वविवेचनम् | पिमानन्ददीक्षितः | १-३३, ३३-३६ । |
| २९८४७ | साङ्ख्यसारः | गणेशः | १-५९ । |
| २९८४८ | योगसारसमुच्चयः | | १-१६ । |
| २९८४९ | योगसाधना | | १-११ । |
| २९८५० | योगसारः | | १-४१ । |
| २९८५१ | हठसङ्केतचन्द्रिका | सुन्दरदेवः | १८३ । (गणनया) |
| २९८५२ | " | | १ । |
| २९८५३ | हठतत्त्वकौमुदी | सुन्दरदेवः | १-१२९ । |
| २९८५४ | योगमहिमा | | १-६ । |
| २९८५५ | योगसारसङ्ग्रहः | विज्ञानभिक्षुः | १-६७ । |
| २९८५६ | योगशिखा | | १-४ । |
| २९८५७ | योगासनबन्धविधिः | | १-२ । |
| २९८५८ | प्रधानकर्तृत्वनिरूपणम् | | १ । |
| २९८५९ | पातञ्जलभाष्यवार्त्तिकम् | | १२-९०, ९०-९७ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|-------------------------------|
| १२'५ × ४'८ | ९ | ३५ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| १३ × ४'८ | १० | ४४ | " | " | | " | |
| १२'५ × ५ | ९ | ४० | " | " | १८१४ | पू० | |
| १२'३ × ४'५ | १० | ४८ | " | " | | " | |
| १२'३ × ४'८ | १३ | ४५ | " | " | | " | |
| ११'७ × ४ | १३ | ४३ | वज्र. | " | | " | |
| १०'८ × ४'५ | १४ | ३८ | दे. ना. | " | | अपू० | |
| ८'३ × ४'५ | ६ | १७ | " | " | | पू० | |
| ८'१ × ४'५ | ६ | २२ | " | " | | " | |
| १० × ५'८ | ११ | २९ | " | " | | " | |
| ८ × ६'५ | १४ | १७ | " | " | १९५४ | " | |
| ९'५ × ४ | ९ | २९ | " | " | | अपू० | |
| ९'५ × ४'२ | ९ | ३० | " | " | | पू० | कालज्ञानं विदेहमृत्युकथनञ्च । |
| ९'६ × ४'२ | ९ | ३३ | " | " | | अपू० | |
| ९'८ × ४'५ | ८ | ३५ | " | " | | " | |
| ९'८ × ४'५ | १० | ४० | " | " | | " | |
| १०'१ × ४'५ | ९ | ४४ | " | " | | पू० | |
| १०'८ × ४'५ | ११ | ४१ | " | " | | " | |
| ८'३ × ४'४ | ७ | २८ | " | " | | " | |
| ९'४ × ३'७ | ८ | २८ | " | " | | " | |
| ८'८ × ४'७ | १३ | २९ | " | " | | अपू० | |
| १०'७ × ४'७ | १४ | ४१ | " | " | | पू० | |
| ११'६ × ४'६ | ९ | ३० | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---|---|-------------------------|
| २९८६० | हठरत्नावली | | १-१६ + १ । |
| २९८६१ | हरिहरसंवादः | | १-११ । |
| २९८६२ | अष्टाङ्गयोगः सटीकः | टी. का. वालगोपालः | ४-३४, (= ३४+३५) ३६-७२ । |
| २९८६३ | ब्रह्मविद्भूमिकाभेदः | | १-२ । |
| २९८६४ | अष्टाङ्गयोगः सटीकः | टी. का. वालगोपालः | १-१६ । |
| २९८६५ | आध्यात्मिकयोगः | | १-७ । |
| २९८६६ | योगतारावली | शङ्कराचार्यः | २ । (गणनया) |
| २९८६७ | कलातरङ्गः | | १-७, १-६ । |
| २९८६८ | पातञ्जलयोगसूत्रं सभाष्यव्याख्यारहस्यम् | पतञ्जलिः भा० का० व्यासः व्या० का० वाच- स्पतिः रहस्य का० राघवानन्दयतिः | १-८९ । |
| २९८६९ | हठप्रदीपिका | स्वात्माराममुनीन्द्रः | १-४ । |
| २९८७० | घेरण्डसंहिता | | १-१० । |
| २९८७१ | पातञ्जलभाष्यवार्त्तिकम् | | ५५ १२७ । |
| २९८७२ | योगसूत्रम् | | १ । |
| २९८७३ | हठयोगविचारः | | १-२ । |
| २९८७४ | हठदीपिका | | १ । |
| २९८७५ | पातञ्जलयोगसूत्रं सभाष्यम् | | २-७ । |
| २९८७६ | प्राणायामप्रशंसा | | १ । |
| २९८७७ | छायापुरुषलक्षणम् | | १-३, ५-६ । |
| २९८७८ | पिण्डब्रह्माण्डज्ञानम् | | १ । |
| २९८७९ | नाडीचक्रम् | | १-३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| १०°४×६°८ | १३ | ३७ | " | " | | पू० | अत्रमनुष्यशरीरे ७२ कोष्ठेषु सुख- दुःखयोगभोगज्ञानाज्ञानादिस्थानानि वर्णितानि । यत्र तत्र तन्त्रशास्त्रसम- न्वयोऽप्याराधनार्थं दृश्यते । |
| ९°९×४°२ | ८ | ३० | " | का. | १९४० | " | आत्मबोधप्रकाशरूपः । |
| ९°९×४°३ | १० | ४२ | " | " | १८३९ | अपू० | टीका विज्ञानविनोदिनी । |
| ८°१×४°७ | १० | २७ | " | " | | " | |
| ९°८×४°३ | १२ | ३८ | " | " | १८७२ | पू० | टीका विज्ञानविनोदिनी निदिध्यासन- प्रकरणमात्रम् । |
| ८×४°६ | १२ | २७ | " | " | | " | |
| १३°६×९ | ८ | ९० | वज्र. | " | | "* | |
| १२×७°३ | १८ | १६ | दे. ना. | " | | " | अन्त उपपत्तिरङ्गश्चा । |
| १४×७°१ | १८ | ९३ | " | " | | " | |
| १२°५×६°५ | २२ | ५१ | " | " | | " | |
| १३×५°१ | १२ | ५५ | " | " | | " | |
| ११°१०×४°४ | ९ | ३९ | " | " | | अपू० | |
| १०°७×४°६ | १७ | ४४ | " | " | | " | |
| १०°८×४°५ | २१ | ५१ | " | " | | " | |
| १०°७×४°५ | २० | ४८ | " | " | | " | |
| १०°७×४°६ | २२ | ४७ | " | " | | " | |
| ६°८×३°९ | १६ | ३३ | " | " | | पू० | |
| ८°५×४°१ | ८ | २२ | वज्र. | " | | " | गुरुशतनामस्तोत्रञ्च । |
| ७°२×३°८ | १५ | ३६ | दे. ना. | " | | " | योगिनीहृदयस्थम् । |
| ८°२×३°८ | १३ | ३२ | " | " | | " | महादेवस्तोत्रञ्च । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------|---------------------------------------|-------------------|
| २९८८० | पञ्चत्रह्यविवरणम् | | १-६ । |
| २९८८१ | योगानुशासनम् | | १-२९ । |
| २९८८२ | प्रश्नोत्तरम् | | १०, १२ । |
| २९८८३ | तारावली | | १-२ । |
| २९८८४ | ज्ञानशङ्करी | | १-९ । |
| २९८८५ | अध्यात्मविद्या | | १-९ । |
| २९८८६ | ज्ञानसङ्कली | | १-११ । |
| २९८८७ | प्राणादिकृत्यम् | | १-३ । |
| २९८८८ | सप्तभूमिका | | १-५ । |
| २९८८९ | सप्तभूमिकाविचारः | | १ । |
| २९८९० | सप्तज्ञानभूमिकाकथनम् | | १-२ । |
| २९८९१ | सप्तभूमिकानिरूपणम् | | १-३ । |
| २९८९२ | योगसिद्धिः | | १-१२, १४ । |
| २९८९३ | आसनानि | | १-९ । |
| २९८९४ | पातञ्जलसूत्रविवरणम् | गोपालः | २-८२ । |
| २९८९५ | शिवसंहिता | | २-३५ । |
| २९८९६ | योगसूत्रं सवृत्तिकम् | पतञ्जलिः वृ. का. भोजदेवः | १-२६ । |
| २९८९७ | अमनस्कयोगशास्त्रम् | | १-११ । |
| २९८९८ | साङ्ख्यकारिका सटीका | ईश्वरकृष्णः टी. का. वाचस्पतिमिश्रः | १-५४ । |
| २९८९९ | हठप्रदीपिका | स्वात्मारामयोगीन्द्रः | १-२० । |
| २९९०० | योगसूत्रम् | पतञ्जलिः | २-३, १०-१३ । |
| २९९०१ | सिद्धसिद्धान्तपद्धतिः | नित्यनाथः | १-११ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आयतः | लिपिकालः | पूर्णपूर्व- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|------|-----------------|-----------------------|--------------------------|
| ९'२ × ४'६ | ११ | ४२ | दे. ना. | का. | १८११ | पू० | तारकब्रह्मराममन्त्रे । |
| १३'५ × ५ | ९ | ४४ | " | " | | अपू० | |
| १०'८ × ४'९ | १० | ३१ | " | " | | " | |
| ९'५ × ३'६ | १२ | ४७ | " | " | | पू० | |
| १०'८ × ३'५ | ८ | ४२ | वङ्ग. | " | | " | तान्त्रिकयोगग्रन्थः । |
| १२'३ × ३'८ | ७ | ४९ | " | " | | " | " |
| १३'१ × ५ | ६ | ३८ | " | " | | " | " |
| ६'७ × ३'५ | ६ | १७ | " | " | | " | |
| ९'५ × ४'१ | ९ | ३० | " | " | | अपू० | |
| ४'९ × ३'७ | ११ | १२ | " | " | | " | |
| ८'९ × ४'९ | १३ | ३० | " | " | | " | |
| ८'२ × ४ | ८ | २३ | " | " | | पू० | स्वानुभूतिग्रन्थश्च । |
| ६'१ × ३'९ | ७ | १७ | " | " | | अपू० | |
| १०'६ × ४ | ९ | ४० | दे. ना. | " | १९२४ श. १७८९ | पू० | हठयोगश्च । |
| ९'६ × ४'२ | ९ | ५३ | " | " | | अपू० | |
| ११'९ × ४'९ | ९ | ४८ | " | " | श. १८०३ | " | |
| ११'१ × ४'६ | १६ | ४७ | " | " | १७३३ | पू० | |
| १०'८ × ४'३ | ८ | ४९ | " | " | | " | शिवरहस्ये, १-२ अध्यायी । |
| १०'५ × ४'४ | ९ | ३६ | " | " | १६६७ | " | |
| ८'८ × ४'१ | ८ | २८ | " | " | | " | |
| ७ × २'९ | ७ | २६ | " | " | | अपू० | |
| ९'२ × ४'४ | १० | ३४ | " | " | १८४७ | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------------------|---|----------------------|
| २९९०२ | अमनस्कयोगशास्त्रम् | ईश्वरः | १-१२ । |
| २९९०३ | साङ्ख्यकारिका | ईश्वरकृष्णः | १-३ । |
| २९९०४ | योगसूत्रं सटीकम् | पतञ्जलिः टी.का. रामानन्दसरस्वती | १-४७ । |
| २९९०५ | योगसूत्रं सवृत्तिकम् | पतञ्जलिः | १-८७, ८९-१२१ । |
| २९९०६ | योगसूत्रं सभाष्यं भाष्य- टीका च | पतञ्जलिः भा.का. व्यासः टी. का. वाचस्पतिमिश्रः | १-११२ । |
| २९९०७ | योगसूत्रम् | पतञ्जलिः | १-३, ५ । |
| २९९०८ | योगसूत्रं सवृत्तिकम् | " वृ.का. भोजदेवः | १-६० । |
| २९९०९ | पातञ्जलभाष्यवार्त्तिकम् | विज्ञानभिक्षुः | १-२२५ । |
| २९९१० | तत्त्वसमासः | गोपालमिश्रः | ५८ । (गणनया) |
| २९९११ | साङ्ख्यकारिका सव्याख्या | ईश्वरकृष्णः | १-११ । |
| २९९१२ | स्वरोदयविवरणम् | | १-६ । |
| २९९१३ | साङ्ख्यसूत्रक्रमदीपिका | | १-९ । |
| २९९१४ | वाचस्पतिसंहिता | | ५-६ । |
| २९९१५ | पातञ्जलभाष्यव्याख्या | वाचस्पतिमिश्रः | १-८९ । |
| २९९१६ | योगसूत्रं सटीकम् | | १-३४, ३९-८१ ॥ |
| २९९१७ | वाक्यवृत्तिः | | १-७, ७-१२ । |
| २९९१८ | प्राकृतिकप्राजापत्यसूत्रम् | | १-६, १-९ । |
| २९९१९ | योगतारावलिः | | १-४ । |
| २९९२० | योगविधिः | | १-६ । |
| २९९२१ | शिवसंहिता | | १-२९, ३१-४३, ४७-५३ । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|-----------------------------|-------------------|
| २९९२२ | योगसूत्रम् | पतञ्जलिः | १-८ । |
| २९९२३ | संक्षिप्तकपिलसूत्रवृत्तिः | | १-१० । |
| २९९२४ | साङ्ख्यसूत्रम् | कपिलः | १-१४ । |
| २९९२५ | साङ्ख्यसूत्रवृत्तिः | अनिरुद्धः | ३२ । (गणनया) |
| २९९२६ | " | " | १७ । " |
| २९९२७ | योगसूत्रं सभाष्यम् | | १९ । " |
| २९९२८ | योगसूत्रं सन्याख्यम् | | १-७८ । |
| २९९२९ | योगसूत्रभाष्यम् | | १-१३ । |
| २९९३० | " | | १-६, ९ । |
| २९९३१ | योगसूत्रं सवृत्तिकम् | पतञ्जलिः वृ.का.भावागणेशः | १-३८ । |
| २९९३२ | योगसूत्रन्याख्या | | १-१४ । |
| २९९३३ | योगसूत्रं सन्याख्यानम् | पतञ्जलिः | १-२६ । |
| २९९३४ | साङ्ख्यसूत्रम् | कपिलः | १ । |
| २९९३५ | योगसूत्रम् | पतञ्जलिः | १-९ । |
| २९९३६ | गोरक्षशतकम् | | १-१० । |
| २९९३७ | हठप्रदीपिका | आत्मारामः | १-६, १०-२७ । |
| २९९३८ | " | | १-१४ । |
| २९९३९ | वसिष्ठसंहिता | | १-२१ । |
| २९९४० | योगसूत्रं सटीकम् | | १-२९ । |
| २९९४१ | योगसूत्रवृत्तिः | कपिलः | १-६ । |
| २९९४२ | योगक्रमदीपिका | | १-८ । |
| २९९४३ | योगसूत्रं सवृत्तिकम् | वृ.का. भोजदेवः | १-३४ । |
| २९९४४ | घेरण्डसंहिता | | १-१३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्व- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---------------|
| १०°५ × ४°३ | ९ | २७ | दे. ना. | का. | १८५८ | पू० | समाधिपादः |
| ९°६ × ४°२ | ७ | २० | " | " | " | " | |
| १०°७ × ४°३ | ८ | २७ | " | " | " | " | |
| १०°८ × ३°७ | १३ | ५६ | वङ्ग. | " | | "* | |
| १३ × ९ | ९ | ३८ | दे. ना. | " | १९२८ | अपू० | |
| ९°३ × ३°५ | १० | ४१ | " | " | | " | |
| ९°५ × ४°२ | ९ | ३२ | " | " | १६७६ | पू० | |
| १०°८ × ४°६ | १२ | ४२ | " | " | | अपू० | |
| १०°८ × ४°७ | ११ | ३४ | " | " | | " | |
| १० × ४°३ | १३ | ४० | " | " | १८३६ | पू० | |
| १० × ४°४ | १२ | ४० | " | " | | " | |
| १२°९ × ४°९ | ८ | ३८ | " | " | | " | |
| ८°६ × २°४ | ८ | ४९ | " | " | | अपू० | |
| ८°३ × ४°१ | ८ | २८ | " | " | | पू० | |
| ८°३ × ४°१ | १२ | ३९ | " | " | १८९९ | " | |
| ९°२ × ४ | ८ | २७ | " | " | | अपू० | टीका मणिप्रभा |
| ७ × ४°५ | ९ | २२ | " | " | | " | |
| १२°५ × ५ | ९ | ३६ | " | " | | पू० | |
| ९°६ × ४°२ | ९ | ३३ | " | " | | अपू० | |
| ९°४ × ४°३ | १२ | ३८ | " | " | | पू० | |
| ९°२ × ५°३ | १३ | ३३ | " | " | | " | |
| १२°४ × ४°८ | ११ | ५० | " | " | | " | |
| १२°१ × ४°३ | ८ | ३८ | वङ्ग. | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------|------------------------------------|-------------------|
| २९९४५ | नाडीचक्रम् | | १-२ । |
| २९९४६ | साङ्ख्यसूत्रक्रमदीपिका | | १-८ । |
| २९९४७ | योगसूत्रम् | पतञ्जलिः | १-४५ । |
| २९९४८ | हठसङ्केतचन्द्रिका | सुन्दरदेवः | १-१९४ । |
| २९९४९ | पञ्चविंशतितत्त्वज्ञानम् | पिमानन्दः | १-३३ । |
| २९९५० | गोरक्षशतकम् | | १-११ । |
| २९९५१ | अमनस्कयोगशास्त्रं सटीकम् | | १-४२ । |
| २९९५२ | मुक्तिसोपानम् | | १-४, ६-८ । |
| २९९५३ | साङ्ख्यकारिका सटीका | | ८-४९ । |
| २९९५४ | " | | १-२, ४-१४ । |
| २९९५५ | " | | ३-६, ११-१४ । |
| २९९५६ | " | | २२, २४-२६ । |
| २९९५७ | " | | १-३, ५ । |
| २९९५८ | " | | १-४, १० । |
| २९९५९ | " | | १-६, १०-१५ । |
| २९९६० | " | | १-७, ११-२९ । |
| २९९६१ | " | | २ । (गणनया) |
| २९९६२ | " | ईश्वरकृष्णः टी.का. नारायणतीर्थः | १-२१ । |
| २९९६३ | " | " टी. का. वाचस्पतिमिश्रः | १-५० । |
| २९९६४ | " | " | १-३१ । |
| २९९६५ | " | " | १-६५ । |
| २९९६६ | " | " | १-१९ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आद्याः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विभेदः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|--------|-----------------|------------------------|---------------------|
| ८ × ४२ | ९ | २९ | वज्र. | का. | | अपू० | |
| ९°१ × ४२ | १४ | ३३ | दे. ना. | " | | पू० | |
| १०°१ × ४°६ | ११ | ३९ | " | " | | अपू० | |
| १२°३ × ९°१ | १० | ४० | " | " | श. १७७६ | पू० | |
| १०°८ × ४°९ | ११ | ३३ | " | " | | अपू० | |
| १० × ४°९ | ९ | ३३ | " | " | १८८१ | पू० | |
| ११°१ × ९°९ | ९ | ३८ | " | " | | " | |
| १२°४ × १°२ | ४ | ६६ | वज्र. | ता. | | " | |
| ९°८ × ३°७ | ९ | ४२ | दे. ना. | का. | | अपू० | टीका तत्त्वकौमुदी । |
| ९°७ × ४ | १० | ३३ | " | " | | " | " |
| ९°७ × ४°३ | १० | ३९ | " | " | | " | " |
| १०°२ × ४°७ | १२ | ३१ | " | " | | " | " |
| ९°७ × ४°३ | ८ | ३६ | " | " | | " | " |
| ९°९ × ४°६ | ११ | ३४ | " | " | | " | " |
| १०°८ × ४°३ | ८ | ४० | " | " | | " | " |
| १०°१ × ४°९ | ८ | ३६ | " | " | | " | " |
| १२°६ × ९°४ | १७ | ६१ | " | " | | " | टीका चन्द्रिका । |
| १२°८ × ९ | ११ | ४९ | " | " | १८८० श. १७४९ | पू० | " |
| १३°८ × ४°९ | ८ | ३७ | " | " | | " | टीका तत्त्वकौमुदी । |
| | | | | | | " | " |
| १२°८ × ४°८ | १३ | ४३ | " | " | १८८९ | " | |
| ११°२ × ४°८ | ७ | ३९ | " | " | | " | |
| ११°९ × ४°८ | १० | ४९ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|
| २९९६७ | साङ्ख्यकारिका सटीका | ईश्वरकृष्णः टी.का. नारायणतीर्थः | १-२३ । |
| २९९६८ | " | | १-५ । |
| २९९६९ | साङ्ख्यसूत्रवृत्तिः | अनिरुद्धः | १-४६ । |
| २९९७० | साङ्ख्यकारिका सटीका | टी. का. नारायण- तीर्थः | १-१० । |
| २९९७१ | साङ्ख्यतत्त्वकौमुदीव्याख्या | राघवानन्दसरस्वती | १-३७ । |
| २९९७२ | साङ्ख्यकारिका सटीका | ईश्वरकृष्णः टी.का. वाचस्पतिमिश्रः | १-२४ । |
| २९९७३ | " | " | १-४१ । |
| २९९७४ | " | " | १-४३ । |
| २९९७५ | " | " | १-१३, १५-२०, २२-५४ । |
| २९९७६ | " | " | २३-८३ । |
| २९९७७ | " | " | १, ५-११, १३-२२, २४, २६-४६ । |
| २९९७८ | " | " | १-३३ । |
| २९९७९ | पवनविजयः | | १-१२ । |
| २९९८० | गोरक्षशतकम् | | १-३५ । |
| २९९८१ | अद्वैतानुभूतिः | | १-३९ । |
| २९९८२ | गोरक्षशतकम् | | १-१३ । |
| २९९८३ | " | | ४१-५१, ५४-६१ । |
| २९९८४ | " | | १-१४ । |
| २९९८५ | ज्ञानप्रकाशशतकम् | गोरक्षनाथः | १-८ । |
| २९९८६ | गोरक्षशतकं सटीकम् | | १-१७ । |
| २९९८७ | घेरण्डसंहिता | | १-३९ । |
| २९९८८ | साङ्ख्यकारिका सटीका | ईश्वरकृष्णः टी.का. वाचस्पतिमिश्रः | ११-१८, २४-४४ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|-------|-----------------|------------------------|--------------------------|
| ९°४ × ४°३ | १४ | ४० | दे. ना. | का. | १८७७ श. १७४१ | पू० | टीका चन्द्रिका । |
| ९°८ × ४°३ | ६ | ३१ | " | " | | अपू० | |
| १२°८ × ४°९ | ११ | ४७ | " | " | १८४३ | पू० | |
| १०°८ × ४ | ८ | ४७ | " | " | | अपू० | |
| १० × ४°४ | ११ | ४० | " | " | १८२६ | पू० | तत्त्वार्णवप्रकाशाख्या । |
| १३°४ × ६°३ | १४ | ४६ | " | " | | " | टीका तत्त्वकौमुदी । |
| ९°७ × ४°१ | १० | २३ | " | " | १६८७ | " | " |
| ११ × ४°७ | १० | ३३ | " | " | १८८३ | " | " |
| १०°६ × ४°६ | १३ | ४१ | " | " | | अपू० | " |
| ९°८ × ४°४ | ८ | ३१ | " | " | १८८८ | " | " |
| १०°९ × ६°६ | १० | ३४ | " | " | | " | " |
| १०°४ × ६°४ | १४ | ३८ | " | " | १८८२ | पू० | " |
| ७°२ × ४°७ | ९ | १८ | " | " | | अपू० | |
| ६°७ × ३°७ | ९ | २१ | " | " | | पू० | |
| १३°३ × ६ | १४ | ४१ | वज्र. | " | | " | |
| ६°८ × ४°१ | १० | २० | दे. ना. | " | | " | |
| ६°६ × ४ | ९ | १८ | " | " | १८०० | अपू० | |
| ९°३ × ४°६ | ९ | ३१ | " | " | १८१० | पू० | |
| १०°३ × ३°८ | १० | ६६ | " | " | १६९६ | " | |
| १३°१ × ६ | १० | ६४ | " | " | | " | |
| ६°३ × ३°३ | ७ | २१ | " | " | १८६१ | " | |
| १०°६ × ३°३ | ९ | ३८ | " | " | १७२२ | अपू० | टीका तत्त्वकौमुदी । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|---|-------------------|
| २९९८९ | साङ्ख्यकारिका सटीका | ईश्वरकृष्णः टी.का. वाचस्पतिमिश्रः | १-९७ । |
| २९९९० | योगसूत्रं सवृत्तिकम् | पतञ्जलिः वृ.का. नागोजीभट्टः | १-२३४ । |
| २९९९१ | मुक्तिसोपानम् | गोरक्षनाथः | १-२४, १-६७ । |
| २९९९२ | योगसूत्रं सवृत्तिकम् | वृ.का. भोजराजः | १-१७ । |
| २९९९३ | योगसूत्रं सटीकम् | टी.का. सुरेन्द्रतीर्थः | १-३९ । |
| २९९९४ | मुक्तिसोपानम् | गोरक्षनाथः | १-१९ । |
| २९९९५ | साङ्ख्यकारिका | ईश्वरकृष्णः | १-५ । |
| २९९९६ | ” | ” | १-५ । |
| २९९९७ | साङ्ख्यकारिका सटीका | | १-२ । |
| २९९९८ | ” | | १-८ । |
| २९९९९ | ध्यानशतकम् | शेषः | १-७ । |
| ३०००० | योगसूत्रं सवृत्तिकम् | वृ. का. भोजदेवः | १५-४१ । |
| ३०००१ | हठप्रदीपिका सटीका | स्वात्मारामयोगीन्द्रः टी. का. ब्रह्मानन्दः | १-७९ । |
| ३०००२ | योगसूत्रं सवृत्तिकम् | पतञ्जलिः वृ. का. नागेशभट्टः | १-१९५ । |
| ३०००३ | योगपदार्थसङ्ग्रहः | | १-५ । |
| ३०००४ | साङ्ख्यकारिका सटीका | ईश्वरकृष्णः टी.का. वाचस्पतिमिश्रः | १-२९ । |
| ३०००५ | सिद्धसिद्धान्तसङ्ग्रहः | | १-९ । |
| ३०००६ | पवनविजयः | | १-२२ । |
| ३०००७ | सिद्धसिद्धान्तपद्धतिः | नित्यनाथः | १-८ । |
| ३०००८ | योगसूत्रं सवृत्तिकम् | पतञ्जलिः वृ.का. भोजराजः | १-४८ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|----------|-------|-----------------|-------------------------|---|
| ११°५ × ३°५ | ७ | ४६ | दे. नां. | का. | | पू० | टीका तत्त्वकौमुदी |
| ९°८ × ६°३ | १५ | १६ | " | " | | " | |
| ६°८ × ३°६ | ७ | २२ | " | " | १८८४ | " | स्वात्मारामकृतहठप्रदीपिका च । |
| १० × ४°६ | १० | ३६ | " | " | १८१६ | अपू० | |
| ८°५ × ४ | ८ | २५ | " | " | १६६५ १५३० | " | टीका कारिकामयी । समाधिपादः साधनपादः विभूतिपादः कैवल्य- पादश्च । |
| ९°३ × ४°९ | १९ | १५ | " | " | | पू० | योगविवरणम् । |
| ९°६ × ४°४ | १० | ३८ | " | " | १९०५ | " | |
| १०°९ × ४ | ९ | ३३ | " | " | | " | |
| ९°८ × ५°१ | ८ | २१ | " | " | | अपू० | टीका तत्त्वकौमुदी । |
| ९°८ × ४°६ | १० | ३० | " | " | | " | " |
| ९°९ × ३°८ | ९ | ४१ | " | " | १६५५ | पू० | |
| १० × ४°५ | १० | ३६ | " | " | | अपू० | साधनपादः विभूतिपादश्च । |
| १३°८ × ५°४ | १२ | ५३ | " | " | | " | टीका-ज्योत्स्ना । |
| १३°३ × ४°८ | ९ | ४९ | " | " | १८४७ श. १७१२ | पू० | |
| १३°८ × ७ | २५ | ७३ | " | " | | " | घेरण्डसंहिता अजपाविधिश्च । |
| १४ × ५°५ | १२ | ४० | " | " | १९१६ | " | टीकातत्त्वकौमुदी । |
| ९°४ × ४°५ | १५ | ४४ | " | " | | " | सप्तमोपदेशान्तः । |
| ९°४ × ४°२ | १० | ३१ | " | " | | अपू० | स्वरोदयो वा । |
| १० × ४°३ | १० | ४७ | " | " | | " | |
| १० × ४°३ | १० | ४० | " | " | | " | वृत्तीराजमार्तण्डाख्या । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------|--|---------------------|
| ३०००९ | योगसारसङ्ग्रहः | पुरुषोत्तमतीर्थः | १-१६ । |
| ३००१० | योगसूत्रं सवृत्तिकम् | पतञ्जलिः वृ.का. भोजदेवः | १-४१, ४३-५० । |
| ३००११ | साङ्ख्यकारिका | ईश्वरकृष्णः | १-६ । |
| ३००१२ | घेरण्डसंहिता | | १-१५ । |
| ३००१३ | साङ्ख्यकारिकासटीका | ईश्वरकृष्णः टी.का. वाचस्पतिमिश्रः | ५-१४, १८-३६ । |
| ३००१४ | हठप्रदीपिका | स्वात्मारामः | १-२९ । |
| ३००१५ | " | " | १५ । (गणनया) |
| ३००१६ | स्वरोदयः | | १-१४ । |
| ३००१७ | सम्यग्दर्शनयोगः | | १-८ । |
| ३००१८ | साङ्ख्यकारिकासटीका | ईश्वरकृष्णः टी.का. वाचस्पतिमिश्रः | १-५९ । |
| ३००१९ | तत्त्वयोगविन्दुः | रामचन्द्रः | १-१४, १७-१८, २० । |
| ३००२० | योगसङ्ग्रहः | | ३-८ । |
| ३००२१ | लघुवाशिष्ठम् | | ३-१७ । |
| ३००२२ | योगसूत्रं सवृत्तिकम् | पतञ्जलिः वृ.का. भोजदेवः | १-५० । |
| ३००२३ | साङ्ख्यसूत्रं सवृत्तिकम् | कपिलः वृ.का. अतिरुद्धः | १-१०३ । |
| ३००२४ | साङ्ख्यकारिकासटीका । | ईश्वरकृष्णः टी.का. वाचस्पतिमिश्रः | १-६९ । |
| ३००२५ | हठप्रदीपिका सटीका | स्वात्मारामयोगीन्द्रः टी.का. ब्रह्मानन्दः | १-३७, ४०-७४ । |
| ३००२६ | साङ्ख्यसूत्रं सभाष्यम् | कपिलः भा.का. विज्ञानभिक्षुः | १-५२ = (५३) ५४-९२ । |
| ३००२७ | पवनविजयः | | १५ । (गणनया) (१-२०) |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | श्लोक- संख्या | लिपिः | भाषाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|-------|-----------------|-------------------------|-------------------------------|
| ९'९ × ४'३ | ११ | २९ | दे.ना. | का. | | पू० | |
| १२'३ × ४'८ | १० | ४२ | " | " | | अपू० | वृत्तीराजमार्तण्डाख्या । |
| ९'८ × ४'३ | ११ | ३१ | " | " | १६४८ | पू० | |
| १३'२ × ३'७ | ८ | ५९ | वङ्ग. | " | | " | समाधियोगनामकसप्तमोपदेशान्ता । |
| ९'८ × ४'५ | १० | ४५ | दे.ना. | " | | अपू० | टीकातत्त्वकौमुदी । |
| ७'५ × ४ | ८ | १६ | " | " | | पू० | वृत्तीयोपदेशं यावत् । |
| ८'५ × ४'५ | १० | ३० | " | " | | अपू० | |
| ९'५ × ४'१ | ९ | ३९ | " | " | | पू० | पवनविजयो वा । |
| ८ × ३'८ | १० | २७ | " | " | | " | |
| ११'२ × ५'३ | ९ | ३३ | " | " | १८९५ श. १७६१ | " | |
| ८'७ × ४'२ | ८ | ४१ | " | " | १८४१ | अपू० | |
| ९ × ४'१ | ११ | ३२ | " | " | | " | |
| ८ × ३'८ | ९ | २७ | " | " | | " | |
| ९'३ × ४'१ | ८ | २६ | " | " | | पू० | वृत्तीराजमार्तण्डाख्या । |
| ८'२ × ४'५ | ७ | २५ | " | " | १९१३ | " | |
| ९'३ × ४'९ | ८ | २६ | " | " | १८९० | " | टीका तत्त्वकौमुदी । |
| १३ × ५'७ | १० | ४० | " | " | | अपू० | टीका ज्योत्स्ना । |
| १२'६ × ५ | ९ | ४३ | " | " | | पू० | भाष्यं साङ्ख्यप्रवचनाख्यम् । |
| ७'१ × ४'१ | ११ | ३२ | " | " | १८१५ | " | १-२० । पृष्ठ सं० पत्र सं० च । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------------|--|---|
| ३००२८ | पवनविजयः | | १-७, ९, १२-१४, १६, १६-१७, १९-२१, २३-२७, ३१-३२ । |
| ३००२९ | हठप्रदीपिका | स्वात्मारामः | १-३९ । |
| ३००३० | " | आत्मारामः | १-२७, २७-२८ । |
| ३००३१ | " | स्वात्मारामः | १-२३ । |
| ३००३२ | साङ्ख्यसूत्रक्रमदीपिका | | १-२१ । |
| ३००३३ | पवनविजयः | | १-४६ । |
| ३००३४ | " | | १-१४ । |
| ३००३५ | स्वरोदयः | | १-३१ । |
| ३००३६ | " | | १-१९ । |
| ३००३७ | " | | १-१४ । |
| ३००३८ | स्वरोदयः सटीकः | | १-४० । |
| ३००३९ | स्वरोदयः | | १-१० । |
| ३००४० | " | | १-२६ । |
| ३००४१ | योगसूत्रभाष्यव्याख्या | वाचस्पतिमिश्रः | २-१०० । |
| ३००४२ | योगसूत्रं सभाष्यम् भाष्यटीका च | पतञ्जलिः भा. का. व्यासः टी. का. वाचस्पतिमिश्रः | १-११२ । |
| ३००४३ | योगसूत्रम् | पतञ्जलिः | १-५ । |
| ३००४४ | " | " | १-६ । |
| ३००४५ | " | " | १-४ । |
| ३००४६ | साङ्ख्यपरिभाषा | | १-१० । |
| ३००४७ | योगसूत्रम् | पतञ्जलिः | १-६ । |
| ३००४८ | साङ्ख्यार्थतत्त्वप्रदीपिका | | ६८-७५ । |
| ३००४९ | प्राकृतिकप्राजापत्यसूत्रम् | | १-६, १-११ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|-------------------------|
| ८८ × ४ | ८ | ३२ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ७४ × ४४ | ११ | २३ | " | " | श. १६७२ | पू० | |
| ८१ × ३७ | ८ | २३ | " | " | | पू० | |
| ४९ × ३३ | ११ | १९ | वङ्ग | " | | " | |
| ९६ × ४२ | ९ | २७ | दे. ना. | " | | अपू० | पञ्चविंशतितत्त्वसमासे । |
| ७४ × ३३ | ७ | २१ | " | " | | पू० | |
| ९ × ६४ | १५ | २९ | " | " | | " | |
| ९६ × ४३ | ९ | ३६ | " | " | | अपू० | |
| ९६ × ४९ | ८ | २५ | " | " | | " | |
| ९२ × ५ | १३ | ३८ | " | " | | पू० | |
| १०६ × ४५ | ६ | २७ | " | " | | अपू० | |
| ५८ × ३१ | १२ | २९ | " | " | | पू० | कालज्ञानान्तः । |
| ६६ × ४२ | ८ | १८ | " | " | श. १७३५ | " | |
| १०८ × ५१ | १२ | ३२ | " | " | १६३७ | अपू० | |
| १३७ × ५४ | ११ | ५८ | " | " | १९२३ | पू० | |
| | | | " | " | | | |
| १०२ × ४४ | १२ | ३७ | " | " | १७५३ | " | |
| १०७ × ४४ | ९ | ३९ | " | " | | " | |
| १०१ × ४४ | १२ | ३८ | " | " | | " | |
| ९१ × ३२ | ९ | ४४ | " | " | | अपू० | |
| ९५ × ३९ | ९ | ३७ | " | " | | पू० | |
| ८३ × ४४ | ८ | ३२ | " | " | | अपू० | |
| ६६ × ८२ | १७ | २४ | " | " | १९४० | पू० | अ० १-२ । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------|-----------------------------------|--|
| ३००५० | हठप्रदीपिका | स्वात्मारामः | १-१७ । |
| ३००५१ | " | " | १-२२ । |
| ३००५२ | " | " | १-१६ । |
| ३००५३ | " | " | १-२८ । |
| ३००५४ | योगनिरूपणम् | | १-४३ । |
| ३००५५ | योगचिन्तामणिः | शिवानन्दसरस्वती | ११७-१२२ । |
| ३००५६ | " | " | ४-७७, १०८-१३१ । |
| ३००५७ | योगविचारः | | १-२ । |
| ३००५८ | योगसिद्धान्तसङ्ग्रहः | | २-१३ । |
| ३००५९ | मुक्तानुभवः | | १-२ । |
| ३००६० | साङ्ख्यकारिका | ईश्वरकृष्णः | १-४ । |
| ३००६१ | गोरक्षशतकम् | गोरक्षः | ३-९ । |
| ३००६२ | योगचिन्तामणिः | ✓ | १-५ । |
| ३००६३ | शिवसंहिता | | १-२९ । |
| ३००६४ | हठप्रदीपिका | स्वात्मारामः | १-२७ । |
| ३००६५ | गोरक्षशतकम् | गोरक्षः | १-१४ । |
| ३००६६ | योगसारसमुच्चयः | याज्ञवल्क्यः | १-३८ । |
| ३००६७ | साङ्ख्यालङ्कारः | | १-१६ । |
| ३००६८ | अमनस्कयोगशास्त्रम् | | १-१६ । |
| ३००६९ | हठप्रदीपिका | स्वात्मारामः | १-३० । |
| ३००७० | योगसूत्रं सभाष्यवार्त्तिकम् | पतञ्जलिः वा.का. विज्ञानभिक्षुः | २-१३१, १३१-१९३, १९३-२५९, २६१-२६४, २६४-२९५ । |
| ३००७१ | अग्रस्त्यसंहिता | | ४०-४७ । |
| ३००७२ | साङ्ख्यसूत्रवृत्तिः | | १-११ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्व- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| ९°८ × ९°१ | १२ | ४० | दे. ना. | का. | | पू० | चतुर्थोपदेशान्ता । |
| १०°७ × ४°७ | ७ | ३४ | " | " | | " | |
| ११°२ × ९°६ | ११ | ३७ | " | " | | " | |
| ११°२ × ४°९ | ८ | ३४ | " | " | | " | |
| १०°३ × ४°३ | १३ | ३६ | " | " | | अपू० | |
| १०°८ × ४°४ | १० | ३४ | " | " | १८१२ | " | |
| ९°६ × ४°१ | १० | ४१ | " | " | | " | |
| ९°१ × ३°८ | ११ | २९ | " | " | | पू०? | |
| ९°६ × ४°१ | १० | ३७ | " | " | | अपू० | |
| ९°२ × ४ | ८ | २८ | " | " | १८७८ | पू० | |
| ११°४ × ३°२ | १० | ४४ | " | " | १८६४ | " | साङ्ख्यसूत्रक्रमदीपिकेति नामान्तरम् । अ० १-२ । |
| १२ × ९°९ | १३ | ३६ | " | " | | अपू० | |
| ९°७ × ९ | १४ | ३४ | " | " | | पू० | |
| १०°२ × ४°९ | ८ | ३९ | " | " | १८९० | " | |
| ९°८ × ४°२ | १० | ३३ | " | " | १८०९ | " | |
| ८ × ३°७ | ८ | ३१ | " | " | १८४४ | " | |
| ९°८ × ३°९ | ८ | ४२ | " | " | १८९२ | अपू० | |
| १२°२ × ४°६ | ९ | २७ | " | " | | पू० | |
| ८°६ × ४°६ | ७ | ३३ | " | " | | " | |
| ७°१ × ४°१ | १० | १७ | " | " | | " | |
| ११°२ × ४°३ | ८ | ३९ | " | " | १७०७ | अपू० | |
| १२°९ × ६°४ | ११ | ४२ | " | " | | " | |
| १०°८ × ९°९ | ११ | ३४ | " | " | | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|
| ३००७३ | साङ्ख्यकारिका सव्याख्या | | १ । |
| ३००७४ | " | व्या. का. नारायणतीर्थः | १-३२, ३२-३४ । |
| ३००७५ | साङ्ख्यतत्त्वकौमुदी | वाचस्पतिमिश्रः | १-३६ । |
| ३००७६ | साङ्ख्यसूत्रं सवृत्तिसारम् | कपिलः वृ.सा.का. वेदान्तिमहादेवः | १-५० । |
| ३००७७ | हठप्रदीपिका | आत्मारामः | २-३१ । |
| ३००७८ | तत्त्वयाथार्थ्यदीपनम् | गणेशदीक्षितः | १-१७ । |
| ३००७९ | योगचिन्तामणिः | शिवानन्दसरस्वती | १-४२, ४-३८, ४५-६८, ६८-१०३ । |
| ३००८० | योगिलक्षणावली (?) | | १२ । (गणनया) |
| ३००८१ | अध्यात्मशास्त्रम् | | १-१३, १५-१६ । |
| ३००८२ | हठप्रदीपिका सटीका | स्वात्मारामः | १-११ । |
| ३००८३ | तत्त्वसमाससाङ्ख्य- सूत्रवृत्तिः | | १-६७ । |
| ३००८४ | स्वरोदयः | | २-२३, २१-३० । |
| ३००८५ | साङ्ख्यकारिका सटीका | ईश्वरकृष्णः टी.का. वाचस्पतिमिश्रः | १-२५ । |
| ३००८६ | योगार्णवः | | १-५ । |
| ३००८७ | " | | १-४ । |
| ३००८८ | ज्ञानशङ्कुली | | १-६ । |
| ३००८९ | " | | १-७ । |
| ३००९० | गोरक्षसंहिता | | १-१० । |
| ३००९१ | योगसूत्रं सवृत्तिकम् | | १-२४ । |
| ३००९२ | गोरक्षचन्द्रिका | | ११-१५ । |
| ३००९३ | ज्ञानशङ्कुली | | १-६ । |
| ३००९४ | हठप्रदीपिका | स्वात्मारामः | १-५ । |

| आकारः | पक्षि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णपूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|------------------|------------------|--------|-------|----------|-----------------------|-------------------------|
| ९°७ × ४°३ | १२ | ३८ | दे.ना. | का. | | अपू० | व्याख्या तत्त्वकौमुदी । |
| १३°९ × ९°३ | ९ | ४० | " | " | | पू० | व्याख्या चन्द्रिका । |
| ८°९ × ३°७ | १४ | ३२ | " | " | | " | |
| १०°८ × ५°६ | १३ | ४५ | " | " | १९१७ (?) | " | |
| ९°८ × ४°६ | १० | २५ | " | " | | अपू० | |
| १०°२ × ३°९ | ११ | ४७ | " | " | | पू० | |
| ९°१ × ३°८ | ७ | ३१ | " | " | १९११ | अपू० | |
| ११°१ × ५°७ | ९ | ३६ | " | " | | " | |
| ९°३ × ३°९ | ७ | ३१ | " | " | | " | |
| १०°६ × ५°१ | १० | २९ | " | " | | " | गुर्जरभाषाटीकोपेता । |
| ८°२ × ३°९ | ९ | २७ | " | " | | पू० | |
| ८°४ × ३°२ | ७ | २८ | " | " | | अपू० | |
| १३ × ५ | १५ | ४६ | " | " | | पू० | टीका तत्त्वकौमुदी । |
| १२°८ × ४°२ | ७ | ३५ | वङ्ग. | " | | " | अ. ९ |
| १४°१ × ३°७ | ७ | ५४ | " | " | | " | " ९ |
| १३°९ × ४°३ | ८ | ४८ | " | " | | " | |
| १२ × ३°३ | ८ | ४८ | " | " | | अपू० | |
| ९ × ४°१ | ७ | २५ | " | " | | " | |
| १०°६ × ४°५ | १० | ३३ | दे.ना. | " | १९०० | पू० | |
| ७°८ × ४°१ | ८ | २४ | वङ्ग. | " | श. १६९० | अपू० | |
| १०°४ × ४ | १३ | ५० | " | " | | पू० | |
| १७°४ × ३°७ | १० | ७९ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------|---------------------------------------|--------------------------|
| ३००९६ | साङ्ख्यकारिका सटीका | ईश्वरकृष्णः टी. का. वाचस्पतिमिश्रः | १-२७ । |
| ३००९६ | योगसूत्रं सभाष्यम् | पतञ्जलिः व्या. का. वाचस्पतिमिश्रः | १६-२१, ६२-६७ । |
| ३००९७ | योगसूत्रं सटीकम् | | १-३४ । |
| ३००९८ | साङ्ख्यकारिका सटीका | ईश्वरकृष्णः टी. का. वाचस्पतिमिश्रः | १-४० । |
| ३००९९ | " | " | १-३८, ४०-४७ । |
| ३०१०० | साङ्ख्यकारिका | ईश्वरकृष्णः | १-३४ । |
| ३०१०१ | योगसूत्रं सवृत्तिकम् | पतञ्जलिः वृ. का. भोजदेवः | १-३३ । |
| ३०१०२ | साङ्ख्यकारिका सटीका | ईश्वरकृष्णः टी. का. वाचस्पतिमिश्रः | १-५१ । |
| ३०१०३ | साङ्ख्यतत्त्वकौमुदीव्याख्या | भारतीयतिः | १-५४ । |
| ३०१०४ | हठप्रदीपिका | स्वात्मारामः | १-३३ । |
| ३०१०५ | अमनस्कयोगशास्त्रम् | | १-१४ । |
| ३०१०६ | योगसूत्रभाष्यव्याख्या | | १-३, ३-८१ । |
| ३०१०७ | " | वाचस्पतिमिश्रः | ४-६०, ६२-९०, ९२, ८३-८५ । |
| ३०१०८ | हठयोगः | | १-३ । |
| ३०१०९ | हठप्रदीपिका | स्वात्मारामः | १-१० । |
| ३०११० | " | " | १-२५ । |
| ३०१११ | अमनस्कयोगशास्त्रम् | | १-१७ । |
| ३०११२ | साङ्ख्यकारिका सटीका | ईश्वरकृष्णः टी. का. वाचस्पतिमिश्रः | १-४८ । |
| ३०११३ | साङ्ख्यसूत्रप्रक्षेपिका | | १-११ । |
| ३०११४ | आसनमुद्रादिनिरूपणम् | | ७-८ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | अंशः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|---------|------|----------|------------------------|--|
| १२'७ × ६'५ | १४ | ४१ | दे. ना. | का. | | पू० | टीका तत्त्वकौमुदी । |
| १२'७ × ५'५ | ७ | ३९ | " | " | | अपू० | तत्त्ववैशारदी नाम्नी भाष्यव्याख्या च । |
| ११'८ × ४'९ | ९ | ५३ | " | " | | " | टीका मणिप्रभा । |
| ११ × ४'५ | ९ | ३७ | " | " | | पू० | टीका तत्त्वकौमुदी । |
| १०'४ × ४'६ | १० | ४८ | " | " | १९०६ | "* | " |
| १०'२ × ४'४ | १४ | ४४ | " | " | १४९२ | " | माठरवृत्तिसहिता । |
| १२'७ × ४'९ | १४ | ४१ | " | " | | " | |
| ९'८ × ४'३ | १० | ३८ | " | " | १८३६ | " | टीका तत्त्वकौमुदी । |
| ९'८ × ४'४ | ९ | ४० | " | " | | " | |
| ८'४ × ४ | ९ | २८ | " | " | | " | |
| ९'३ × ४'२ | १० | ३३ | " | " | १९०६ | " | अ. १-२ । स्वयम्बोध इति नामान्तरम् । |
| १० × ३'३ | ८ | ४६ | वङ्ग. | " | | अपू० | |
| १० × ३'३ | ७ | ३८ | " | " | | " | |
| ८'५ × ४'१ | १० | २३ | दे. ना. | " | | " | आसनलक्षणश्च । |
| १०'१ × ३'६ | १२ | ५० | " | " | १९५३ | पू० | |
| ७'१ × ४'४ | १० | २९ | " | " | श. १७६२ | " | योगाभ्यासक्रमश्च । |
| ९ × ४'४ | ७ | ३९ | " | " | १७७८ | " | स्वयम्बोध इति नामान्तरम् । |
| १०'९ × ४'८ | ९ | ३० | " | " | | " | टीका तत्त्वकौमुदी । |
| १२'३ × ४'९ | १० | ४३ | " | " | १८६१ | " | क्रमदीपिका वा । |
| ९'४ × ४'६ | १० | ३५ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|---|-------------------|
| ३०११५ | साङ्ख्यकारिका सव्याख्या | ईश्वरकृष्णः व्या. का. नारायणतीर्थः | १-१८ । |
| ३०११६ | स्वरोदयः सटीकः | | १-२३ । |
| ३०११७ | पट्कर्मविधिः | | १-७ । |
| ३०११८ | योगक्रिया | | १-६ । |
| ३०११९ | हठप्रदीपिका | | १-२२ । |
| ३०१२० | " | स्वात्मारामः | १-३ । |
| ३०१२१ | घेरण्डसंहिता | | १-१२, २-४ । |
| ३०१२२ | हठप्रदीपिका | स्वात्मारामः | १-१४ । |
| ३०१२३ | " | " | १-३ । |
| ३०१२४ | योगशास्त्रम् | | १-१३ । |
| ३०१२५ | योगविवेचनम् | | १-५, ७-८ । |
| ३०१२६ | साङ्ख्यकारिका | ईश्वरकृष्णः | १-५ । |
| ३०१२७ | साङ्ख्यकारिका सव्याख्या | ईश्वरकृष्णः व्या. का. वाचस्पतिमिश्रः | २-३४ । |
| ३०१२८ | हठप्रदीपिका | | ५ । (गणनया) |
| ३०१२९ | योगशास्त्रम् | | १, ११-१८ । |
| ३०१३० | स्वरोदयः | | १-९ । |
| ३०१३१ | योगसूत्रं सवृत्तिकम् | पतञ्जलिः, वृ. का. रामानन्दसरस्वती | १-३५ । |
| ३०१३२ | " | " | १-६ । |
| ३०१३३ | योगसूत्रम् | पतञ्जलिः | १-२ । |
| ३०१३४ | लघुसाङ्ख्यवृत्तिः | नागोजीभट्टः | ५६-८४ । |
| ३०१३५ | योगसूत्रं सव्याख्यम् | पतञ्जलिः व्या. का. अनन्तः | १-१८ । |
| ३०१३६ | हठप्रदीपिका | आत्मारामः | १-१० । |
| ३०१३७ | साङ्ख्यपरिभाषास्वानुभवः | | १-८ । |

| वाङ्मयः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | वाङ्मयः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|---------|----------|------------------------|--------------------------------|
| १२९ × ४९ | १४ | ९० | दे.ना. | का. | | पू० | व्याख्या चन्द्रिका । |
| १ × ४९ | १० | २५ | " | " | श. १६६१ | " | |
| ९५ × ३९ | ५ | २२ | " | " | | अपू० | |
| १४९ × ३२ | ७ | ४६ | " | " | | " | |
| १२६ × ३२ | ९ | ४६ | वज्र. | " | | पू० | |
| १० × ४२ | ८ | २६ | " | " | | अपू० | |
| १३९ × ३९ | ११ | ५४ | " | " | | पू० | सप्तमोपदेशान्ता, अवधूतगीता च । |
| १२७ × ४९ | ८ | ३७ | " | " | | " | |
| १३ × ३९ | ७ | ४२ | " | " | | अपू० | |
| ९५ × ४२ | ९ | १९ | दे.ना. | " | | पू० | |
| १०६ × ५६ | ९ | ३१ | " | " | | अपू० | |
| १०५ × ४५ | ९ | ३७ | " | " | १९०२ (?) | पू० | |
| १२ × ४५ | १२ | ५३ | " | " | | अपू० | व्याख्यातत्त्वकौमुदी । |
| १०६ × ४७ | ३३ | १७ | " | " | | " | गोरक्षशतकञ्च । |
| ५९ × ३७ | १० | १९ | " | " | | " | |
| ८६ × ४९ | १५ | २८ | " | " | १८६५ | पू० | |
| ९१ × ४ | | | " | " | | " | वृत्तिः मणिप्रभा । |
| १३२ × ४४ | १४ | ७६ | " | " | १७६९ | अपू० | " |
| १३ × ४५ | १३ | ७३ | " | " | | पू० | |
| ९८ × ४३ | ११ | ४० | " | " | १८३९ | अपू० | भिक्षुभाष्यसारसङ्ग्रहरूपा । |
| १०९ × ४७ | ९ | २९ | " | " | | पू० | व्याख्या पदचन्द्रिका । |
| १२३ × ६४ | १४ | ४३ | " | " | | " | |
| ८६ × ४ | १४ | ३६ | " | " | | अपू० | |

सप्तमभागोल्लिखितवेदान्तग्रन्थानामक्षरानुक्रमणिका

अखण्डार्थनिरूपणम् २७६६२, २८६५५ ।

अजपाविधिः २७०३७ ।

अज्ञानबोधिनी २७२५६, २८१९०, २८२४१,
२८२४५, २८२५२, २८३३४,
२८३६९, २८६६३, २८८७६ ।

अणुभाष्यम् २७२१०, २७२११, २७३७२ ।

अणुभाष्यटीका २७२०९ ।

अणुभाष्यप्रकाशः २७९९७ ।

अणुभाष्यप्रदीपः २७२०८ ।

अणुभाष्यव्याख्या (मरीचिका) २७२०७ ।

अथर्वशिरउपनिषत् २६८९५ ।

अद्वैतकौस्तुभः २७१२१, २८३१७ ।

अद्वैतकौस्तुभः सटीकः २८८१० ।

अद्वैतचन्द्रिका २८२८५ ।

अद्वैतचन्द्रिकाटीका २७५८७ ।

अद्वैतचिन्ताकौस्तुभः २७६८५, २७७८०, २७८१०,
२८४१७, २८६८२ ।

अद्वैतचिन्तामणिः २८३२३ ।

अद्वैतदीपिका २७०६४, २७८६७, २८२८३, २८५०४,
२८५०५, २८५०८ ।

अद्वैतदीपिकाटीका २८५०७ ।

अद्वैतदीपिकाविवरणम् २६७४७, २७८१४, २७८६९ ।

अद्वैतदीपिका सटीका २८०७२ ।

अद्वैतबोधः २८७८३ ।

अद्वैतब्रह्मसुधा २७४६० ।

अद्वैतब्रह्मसुधाकारिका सटीका २७५१७ ।

अद्वैतमकरन्दः २६९४१, २७१२८, २७१७९, २७५८६,
२८५२१, २८७७८ ।

अद्वैतमकरन्दटीका २८०३८ ।

अद्वैतमकरन्दपरीक्षा २७१७७ ।

अद्वैतमकरन्दव्याख्या २७५६४, २७५६५, २८६७० ।

अद्वैतमकरन्दः सटीकः २७१३०, २७५८८, २७५९०,
२७५९२, २७८९८, २८६८८ ।

अद्वैतमकरन्दः सव्याख्यः २६७७६, २७०२०, २७५८५,
२७६११, २८५५७, २८५५८ ।

अद्वैतरत्नम् २७५६३, २८८८५ ।

अद्वैतरत्नकोशः २७०५६ ।

अद्वैतरत्नकोशटीका २७६४६, २७६४८, २८०५२ ।

अद्वैतविवेकपदयोजना २८१९८ ।

अद्वैतशास्त्रसारोद्धारः २७८१५, २८३२२ ।

अद्वैतश्रुतिसारः २८४०३ ।

अद्वैतसिद्धान्तविद्योतनम् २७०३८, २७२७४, २७४९३,
२७४९६, २७५८९, २७६०६,
२७९७१ ।

अद्वैतसिद्धिः २६७८३, २७१९१, २७१९८, २७२३७,
२७३४८, २७५९३, २७७५२, २७९२०,
२७९५९, २८१८५, २८२३४, २८६९०,
२८८९२ ।

अद्वैतसिद्धिटीका २६९५९, २७१३२, २७३३२,
२७६४९, २७६५०, २७६५१,
२७६५२, २८१२६, २८३००,
२८३०३, २८४४०, २८५०२ ।

अद्वैतसिद्धिटीकाव्याख्या २७६३५ ।

अद्वैतसिद्धिव्याख्या २८५००, २८५००१, २८५०३ ।

अद्वैतसिद्धिः सटीका २८४४५ ।

अद्वैतसिद्धिसिद्धान्तसारः २८२९८ ।

अद्वैतसिद्धिसिद्धान्तसारसङ्ग्रहः सटीकः २८१०८ ।

अद्वैतसुधा २७५८७, २७६१०, २७९७७ ।

अद्वैतानन्दः २७२४५ ।

अद्वैतानुभूतिः २६८४१, २७०९९, २८१७५, २८८४२ ।

अद्वैतानुभूतम् २६७९०, २७३१५, २७३४६, २७४९४,
२७६९१, २७६९४, २७६९५, २७६९६,
२७६९९, २८४९४ ।

अधिकरणमञ्जरी २८५९७ ।

अधिकारसङ्ग्रहः सटीकः २८७१० ।

अधिकारिपरीक्षा २७०३७ ।

अध्यात्मचिन्तामणिः सटीकः २८४८५ ।

अध्यात्मपूजनम् २६७९९ ।

अध्यात्मविद्याप्रबोधप्रकारः २६८०८ ।

अध्यात्मविद्योपदेशविधिः २७०४१, २७०६०,
२७२५६, २८२५२,
२८३६९, २८४४२,
२८६१४, २८६६३,
२८६६६, २८७९३,
२८७९४, २८८१७ ।

अध्यासप्रकारः २६९५६, २७०६७ ।

अध्यासविचारः २७००१, २७४०३ ।

अध्यासस्वरूपम् २७४०५ ।

अनिर्वचनीयतादिविचारः २७४८८ ।

अनिर्वचनीयनिरूपणम् २८२९५ ।

अनिर्वचनीयादिविचारः २७६२७ ।

अनुभवपञ्चकम् २८५४४ ।

अनुभवानुभूतम् २७८२८ ।

अनुभूतिप्रकाशः २६७२०, २६७२४, २६७३२,
२६९२९, २७०५८, २७६४३,
२७९०५, २७९६३, २७९६४,
२७९६५, २८०६९, २८१०३,
२८५६२, २८५६३, २८६१८,
२८६५३, २८६६१ ।

अनुभूतिप्रकाशिका २६७७८ ।

अन्तःकरणचिच्छायात्वनिरूपणम् २६९४२ ।

अन्वयार्थप्रकाशिका २७२६० ।

अपरोक्षानुभवः २७४९५, २७९८८, २८१७०, २८३५४,
२८३६८, २८७८२ ।

अपरोक्षानुभूतिः २६७७७, २६७८१, २६७९८,
२६८४२, २६९२२, २६९२३,
२६९२४, २६९२५, २६९२६,
२७०४०, २७०४४, २७०७५,
२७०७६, २७१७८, २७२०१,
२७५२१, २७९११, २८१०६,
२८१२१, २८२०२, २८२१२,
२८२४३, २८२५८, २८३८९,
२८४४३, २८५६७, २८६११,
२८६७१, २८६८०, २८७७९, २८७८९, २८८११, २८८८२ ।

अपरोक्षानुभूतिः सटीका २६९२७, २६९२८, २६९८५,
२७०३३, २७६०३, २७६०४,
२७८८९, २८८११, २८८८२ ।

अपरोक्षानुभूतिः सटीपिका २७९१५, २८४४४, २८४४४ ।

अभेदसिद्धिः २८३०२ ।

अर्थपञ्चकम् २७४०४, २८३५१ ।

अर्थपञ्चकविवेकः २८८७९ ।

अर्थप्रकाशिका २७६९० ।

अलातशान्तिः २८३१२ ।

अविद्यादिविचारः २७२१२ ।

असम्भावनामुख्यत्वविचारः २७६३४ ।

आगमशास्त्रप्रकरणम् २८१२३ ।

आगमशास्त्रविवरणम् २७७११, २८३१२, २८१११,
२८६४३ ।

आगमशास्त्रविवरणटीका २८८८८ ।

आचार्यमण्डनसंवादः २७४९९ ।

आत्मज्ञानम् २७९२१,

आत्मज्ञानटीका २७९७२ ।

आत्मज्ञानलाभोपायकारिका २६९३६ ।

आत्मज्ञानोपदेशः २७०१०, २७३९१, २८४०६,
२८११२ ।

आत्मज्ञानोपदेशटीका २६८६१, २७८१९ ।

आत्मज्ञानोपदेशप्रकरणं सटीकम् २७९०७ ।

आत्मज्ञानोपदेशविधिः २७४३६, २८८३१ ।

आत्मज्ञानोपदेशः सटीकः २७०१९, २७०४२ ।

आत्मतत्त्वदर्शनम् २६६९७ ।

आत्मनिरूपणं सटीकम् २६९३१ ।

आत्मप्रतीतिप्रकारः २७२१३ ।

आत्मबोधः २७१२३, २७१२१, २७६०१, २८०१९,
२८०७९, २८०९६, २८१२१, २८२१९,
२८४३४, २८१४८, २८११८, २८१७७,
२८७१९, २८८१८ ।

आत्मबोधटीका २८८८३ ।

आत्मबोधप्रकरणम् २८७२४, २८७२१ ।

आत्मबोधप्रकरणटीका २७८१७ ।

आत्मबोधप्रकरणभाष्यम् २७८२४ ।

आत्मबोधप्रकरणं सटीकम् २७६०८, २७८१८, २८०२९,
२८०४९, २८३८३, २८३८४,
२८४९३, २८४९६, २८७६७ ।

आत्मबोधप्रकाशः २७३६४ ।

आत्मबोधः सटीकः २७२६३, २७६०७, २७८७६,
२७९९३, २८०६१, २८०६८,
२८१७८, २८१८३, २८१८९,
२८२६३, २८२७३, २८३११,
२८४१९, २८६३८, २८७८०,
२८८६२, २८८६७, २८८६९,
२८८९३ ।

आत्मविचारः २७१९७ ।

आत्मविवेकः २७३६२, २८८२९ ।

आत्मविवेचनिका २७७०७ ।

आत्मपटकभाष्यम् २७२३३ ।

आत्मसामान्यसिद्धिव्याख्या २८१८६ ।

आत्मस्वरूपनिरूपणम् २७८९६ ।

आत्मस्वरूपप्रकरणं सटीकम् २७६४१ ।

आत्मानात्मविचारः २७०११ ।

आत्मानात्मविवेकः २६७२९, २६७४९, २६७६०,
२६८२६, २६८३७, २६८४०,
२७००१, २७०७७, २७०७८,
२७१७२, २७१७३, २७१७४,
२७१७५, २८०३६, २८१९९,
२८२०३, २८२६७, २८७२८ ।

आत्मानात्मविवेकामृतम् २७०३२ ।

आत्मानुभवः २८७६४ ।

आत्माश्लोकः २७८०३ ।

आत्मोपदेशः २८८३९ ।

आनन्दतारतम्यसमर्थनम् २६७०६ ।
 आनन्दमयाधिकरणविचारः २७६२३, २८६७८ ।
 आनन्दानुभवामृतम् २८१६८ ।
 आभरणम् २७८००, २७९४४, २७९४९ ।
 आर्या २६८९६, २६८६७, २६९६६, ३६९७४,
 २६९९९, २८९९१ ।
 आर्यात्मलाभप्रकरणम् २८४३६, २८४३७ ।
 आर्यापञ्चशती २७६४२ ।
 आर्यापञ्चाशीतिः २६९९८, ३७००२, २७८२१,
 २८४३७, २८७९९ ।
 आर्या सटीका २८०१४, २८३७२ ।
 आत्वादसुन्दरप्रकरणम् २७४०० ।
 झटसिद्धिः २८०७८ ।
 ईश्वराद्वैतविचारः २८१७७ ।
 ईश्वरेनित्यसुखव्यवस्थापनविचारः २७९२४ ।
 उपदेशपञ्चकं सटीकम् २८२९६ ।
 उपदेशपञ्चकस्तोत्रम् २७१७१ ।
 उपदेशविधिः २७१०९ ।
 उपदेशपदकम् २६८६१, २८८७३ ।
 उपदेशसाहस्री २६९७६, २७६१२, २७७०८,
 २७९३१, २८०९३, २८९०९,
 २८६८९, २८६८६, २८८०९ ।
 उपदेशसाहस्रीटीका २८९४९, २८६३१, २८६९८ ।
 उपदेशसाहस्रीन्याख्या २६९८० ।
 उपदेशसाहस्री सटीका २७६७४, २७६७६, २८२९४,
 २८३६७, २८४६४ ।
 उपदेशसाहस्री सन्याख्या २६९९७ ।

उपाधिवादः २८४१२ ।
 ऋजुभाष्यम् २८२११ ।
 ऋष्यादिन्यासध्यानादिकम् २७२३९ ।
 एकजीवपक्षः २६९६४ ।
 ऐतरेयोपनिषद् २८३४३ ।
 काथबोधविवेकः २६७०६ ।
 काथबोधविवेकः सटीकः २८००६ ।
 कालतत्त्वनिरूपणम् २७३७४ ।
 कृष्णालङ्कारः २७३४०, २७७७०, २८३०८, २८९८८,
 २८६१७, २८७३३ ।
 कैवल्यकल्पद्रुमः २७९८९, २८१८६ ।
 कोशरत्नप्रकाशः २७६४६, २७६४८, २८३८६ ।
 कौपीनपञ्चकम् २६७९९ ।
 क्षौरविधिः २७०९१ ।
 खण्डनखण्डखाद्यम् २७६३७, २७६३८, २७६३९,
 २८३०४ ।
 खण्डनखण्डखाद्यटीका २६६९९, २६७००, २६८६६,
 २७२६९, २७६४२, २७६८३,
 २७६९२, २७६९३, २७६९४,
 २७७१२, २७८०९, २७९८६,
 २८०२१, २८११२, २८१९१,
 २८२४६, २८३२४, २८६२८,
 २८८४९ ।
 खण्डनखण्डखाद्यं सटीकम् २७०१०, २७१७६,
 २८३२९, २८४४६,
 २८४६३ ।
 खण्डनफक्किाविभजनम् २७६४७ ।
 खण्डनोद्धारः २७७०० ।
 गायत्रीशापोद्धारः २७४८९ ।

गायत्र्युत्पत्तिः २७३६४ ।

गोविन्दभाष्यपीठकम् २७५६८ ।

गोविन्दभाष्यं सटीकम् २७५६६ ।

गौडपादकारिकाभाष्यटीका २७०४६ ।

गौडपादकारिका सभाष्या २७०४७ २८४०१ ।

गौडपादीयकारिकाभाष्यटीका २६८३६, २६८३८ ।

गौडपादीयभाष्यम् २८६४३ ।

गौडपादीयमाण्डूक्यकारिका २७८१६ ।

गौडपादीयमाण्डूक्यकारिकाभाष्यटीका २८७४७ ।

चण्डमारुतः २७३९७ ।

चण्डमारुतम् २७९३७ ।

चतुर्विंशतितत्त्वोत्पत्तिप्रकारः २७२२४ ।

चन्द्राद्वैतनिरूपणम् २७६४५ ।

चन्द्रिका २७९०४, २८१६२ ।

चित्सुखी २७२८८, २८८३१ ।

चित्सुखीटीका २७८०७, २८७९९ ।

चित्सुखीव्याख्या २७६५७, २८१५९ ।

चित्सुखी सटीका २७८७९ ।

चिद्रत्नम् २८१७५ ।

जगदुत्पत्तिक्रमः २७४३५ ।

जगन्मिथ्यात्वानुमानप्रकारः २६९३७ ।

जीवन्मुक्तप्रकरणम् २६९६६ ।

जीवन्मुक्तलक्षणम् २८५४२ ।

जीवन्मुक्तविवेकः २६७३९ ।

जीवन्मुक्तिः २७६४४, २७८०८ ।

जीवन्मुक्तिप्रकरणम् २६७३७, २८६९७ ।

जीवन्मुक्तिविवेकः २७२०२, २७३७३, २७५८२,

२८०६३, २८१६५, २८१८२,

२८२५५, २८३३८, २८३४७,

२८६०५, २८६२९, २८६३० ।

जीवन्मुक्तिहेतुनिरूपणम् २७०३५ ।

जीवन्नैकत्वम् २७००१ ।

जीवेश्वरविभागः २७१३७, २७४८६ ।

ज्ञानतिलकम् २८२१८, २८२४७ ।

ज्ञानप्रदीपः २७३६४ ।

ज्ञानप्रबोधमञ्जरी २७३२३ ।

ज्ञानबोधः २७१८९, २८४३८ ।

ज्ञानबोधस्तोत्रम् २८१७५ ।

ज्ञानसंन्यासः २८७६६ ।

ज्ञानसर्वस्वसारः २८०८१ ।

ज्ञानाङ्कुशः २६९३८ ।

ज्ञानाङ्कुशप्रकरणम् २८३६५ ।

ज्ञानावलिः २८०४३ ।

ज्वरौषधिः २७४९९ ।

तत्त्वकौस्तुभः २७६०२ ।

तत्त्वचन्द्रिका २७३३४, २७८११, २८७०० ।

तत्त्वत्रयम् २७५७७, २८२१५ ।

तत्त्वदीपः २७३२६ ।

तत्त्वदीपनम् २६८०९, २७६१४, २७७६३, २७८७२,

२८३४०, २८७३० ।

तत्त्वदीपिका २७३३५, २७५२६, २७६८६, २७९९८ ।

तत्त्वदीपिका सटीका २८५९८ ।

तत्त्वनिरूपणम् २७६९६, २७५४० ।

तत्त्वपरिशुद्धिः २७८३८, २७८३९, २८१, २७,
२८५९४।

तत्त्वप्रकाशः २८७५२।

तत्त्वप्रकाशिका २६९९१, २७२१६, २७२१७,
२७२९०, २७६९६।

तत्त्वप्रकाशिकाटीका २८५४०।

तत्त्वप्रकाशिकाभावबोधः २८०२२।

तत्त्वप्रकाशिकाविवरणम् २७४२४, २७४२५, २७५१८,
२८४७१।

तत्त्वप्रकाशिकाविवरणटीका २८४७०।

तत्त्वप्रदीपः २७०४९।

तत्त्वप्रदीपिका २७२८८, २७५२२, २७८७०।

तत्त्वप्रदीपिकाटीका २७६५९, २७७२३, २८२२०,
२८३७१, २८४७२, २८४७३,
२८७७३।

तत्त्वप्रदीपिकान्याख्या २८४४७।

तत्त्वचिन्दुः २७३१८, २७४९१, २७९४२, २८५३६।

तत्त्वबोधः २६७०७, २६७२३, २६७५३, २६७५४,
२६८०१, २६८३५, २६८६९, २६८८६,
२६८८७, २६८८८, २६८८९, २६८९०,
२७०१६, २७०८८, २७०८९, २७१६९,
२७१७०, २७१७१, २७१७२, २७३०३,
२७४२७, २७५०७, २७९६२, २८०७१,
२८०८०, २८१०४, २८२१६, २८२२८,
२८२३१, २८२५३, २८२६०, २८३१३,
२८३१४, २८६८३, २८७९६, २८८०९,
२८८२०, २८८२८, २८८४३, २८८४९,
२८८५७, २८८५८।

तत्त्वबोधप्रकरणम् २६८२१, २७०१७, २७१३५,
२७१३६, २७२०५, २८०५०,
२८०९४।

तत्त्वबोधः सटीकः २८८४०।

तत्त्वबोधिनी २७४६२, २७६८७।

तत्त्वमसितत्त्वनिरूपणम् २७९६१।

तत्त्वमसिनिरूपणम् २६८८२।

तत्त्वमसिवोधः २६७१७।

तत्त्वमसीतिमहावाक्यन्याख्या २७९१०।

तत्त्वमसीतिमहावाक्यन्याख्यानम् २७२३९।

तत्त्वमसीतिवाक्यार्थविचारः २७१४९।

तत्त्वमसीतिन्याख्यानम् २८८२५।

तत्त्वमस्युपदेशविधिः २७९०१।

तत्त्वमुक्तावली २७५७३, २७७३१, २७८०९।

तत्त्वयाथार्थ्यदीपनम् २७७४१।

तत्त्वविवेकः २७०३४, २७२००, २७२५८, २७२५९,
२७३२७, २७३२९, २७६१६, २७६१७,
२७७४०, २७८६४, २८३१०, २८३२७,
२८४८७, २८६५८।

तत्त्वविवेकटिप्पणम् २६७०८।

तत्त्वविवेकटीका २७२५५, २७३२८, २७३३१,
२७३५३, २७३५४, २७३७८,
२७६१५, २७८६५, २७८६६,
२८०५१, २८४६९, २८८१३।

तत्त्वविवेकटीकाटीका २७६४६, २७६४८।

तत्त्वविवेकटीकाविवरणम् २७६६०, २७६६१, २७७७२,
२८२८८, २८६५६।

तत्त्वविवेकदीपनम् २७६१८, २७६७१, २७६७२,
२७७३८, २७८६६, २८३२५,
२८५२६, २८७१६, २८७१७

तत्त्वविवेकदीपिका २६८५३।

तत्त्वविवेकविवरणम् २७४२६।

तत्त्वविवेकन्याख्यानविवरणम् २७७३७।

तत्त्वविवेकः सविवरणः २८४६८।

तत्त्वशुद्धिः २७९६९।

तत्त्वसंख्यानविवरणम् २७४२८।

तत्त्वसंख्यानव्याख्यानम् २७९८७।

तत्त्वसारः २७०८२।

| | | | |
|-------------------|--------|--------|-------|
| तत्त्वानुसन्धानम् | २६८१९, | २७०५३, | २७०८५ |
| | २७३२२, | २७३३०, | २७४५७ |
| | २७६६२, | २७६६३, | २७६७३ |
| | २७६७६, | २७६८८, | २७९७० |
| | २८१८०, | २८१८४, | २८२२१ |
| | २८३३९, | २८३८५, | २८५६६ |
| | २८५७९, | २८६९३, | २८८८१ |

तत्त्वानुसन्धानव्याख्या २७०१८।

| | | |
|----------------------------|--------|-------|
| तत्त्वानुसन्धानव्याख्यानम् | २७१२१, | २७८१० |
| | २८५७२। | |

तत्त्वानुसन्धानं सटीकम् २८४१५।

तत्त्वानुसन्धानं सव्याख्यानम् २७६८५।

तत्त्वार्थदीपप्रकाशावरणभङ्गः २६८०४।

तत्त्वालोकः २७२८७।

तत्त्वोद्योतः सविवरणः २७५१६।

तत्त्वोपदेशः २८१२४।

तर्कताण्डवम् २८४६७।

तात्पर्यदीपिका २८११६, २८११७, २८४१९।

तात्पर्यबोधिनी २७६५८।

त्रिपुटीप्रकरणम् २७१०५, २७१८६।

त्रिपुरी २७४५५, २८२७०।

त्रिपुरीप्रकरणम् २७५८४, २८७१५।

त्रिपुरीप्रकरणं सटीकम् २८३५९।

त्रिपुरीविवरणम् २७५८३,

त्रिपुरीस्वरूपवात्तबोधिनी २८४०६।

दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम् २७११६, २७९३२।

दीपिका २७६०३, २७८७६, २७८८४, २७८८५
२७८८९।

दीपिकाविवरणम् २८०७२।

दृग्दृश्यप्रकरणम् २६७८१।

दृग्दृश्यप्रकरणटीका २६७५१।

दृग्दृश्यविमर्शः सटीकः २७४९७।

दृग्दृश्यविवेकः २७३००, २८७३४।

दृग्दृश्यविवेकप्रकरणम् २८०५६।

दृग्दृश्यविवेकः सटीकः २८४१८।

दृग्दृश्यविवेकः सव्याख्यः २८८५२।

दृशिप्रकरणम् २८८९५।

देहातिरिक्तात्मप्रकरणम् २६९६१, २६९६२, २७००४।

द्वादशमहावाक्यविवरणम् २६९८६, २७१६१।

द्वादशमहावाक्यं सटीकम् २८२६२।

द्वादशमहावाक्यं सव्याख्यानम् २८४११।

द्वादशमहावाक्यसिद्धान्तः २६९६०।

द्वादशमहावाक्यसिद्धान्तविचारः २६७५८, २६७५९।

द्वादशमहावाक्यानि २८०१२।

द्वादशमहावाक्यार्थनिरूपणम् २६७४३।

द्वैतभूषणम् २८२७८।

नयनप्रसादिनी २७६५९, २७७२३, २८२२०, २८४४७
२८७७३, २८७९९।

नयनमोदिनी २७८०७, २८३७१।

नास्तिकाचार्यसिद्धान्तः २७४३४ ।

नित्यार्चनविधिः २८२३१ ।

निरोधलक्षणं सटीकम् २८४६६ ।

निर्वाणाष्टकम् २८१७६ ।

नृसिंहविज्ञापना २७३७०, २८१६०, २८१६९ ।

नृसिंहोत्तरतापिन्युपनिषत् सव्याख्या २७०५७ ।

नैष्कर्म्यसिद्धिः २७३९९, २७६३३, २७८९२
२७९०३, २८४८१, २८५५९
२८६२० ।

नैष्कर्म्यसिद्धिटीका २७९०४ ।

नैष्कर्म्यसिद्धिः सटीका २८३९२ ।

न्यायदीपावली २७५०४ २७८४९, २८६२१ ।

न्यायदीपावलीटीका २७५९९ ।

न्यायनिर्णयः २७४८४, २७८९४ ।

न्यायमकरन्दः २७८०४, २८८३३ ।

न्यायमकरन्दटीका २७५५६, २७७९८, ।

न्यायरत्नावली २७३१७, २८४७७ ।

न्यायसुधा २८५५४ ।

न्यायामृतम् २६८१५, २७३६७, २७३६८, २७५८० ।

न्यायामृतकण्टकोद्धारः २७२१२ ।

न्यायामृततरङ्गिणी २७२१३ ।

न्यायोपदेशमकरन्दः २६९८४ ।

पञ्चकोशप्रकरणम् २७४०८ ।

पञ्चकोशविवेकप्रकाशिका २७१४५, २७१४६ ।

पञ्चकोशविवेकः सटीकः २७५६१ ।

पञ्चख्यातिलक्षणम् २८८१४ ।

पञ्चदशी २६७२८, २६७८८, २६८८१, २७३८०,
२७४०७, २७५०१, २७८२७, २७८७९,
२७९८९, २८०४०, २८०४२, २८०८७ ।
२८२२९, २८६१२, २८६२२, २८८८९,
२८८९१ ।

पञ्चदशीटीका २७०७२, २७९२६, २८०४४, २८२०९,
२८५१६, २८५१८, २८५१९ ।

पञ्चदशीटीकाटिप्पणम् २७५६९, २७५७० ।

पञ्चदशीव्याख्या २६८५५, २७९५७, २८००५,
२८०२४, २८०८९, २८२३०,
२८२३२ ।

पञ्चदशी सटीका २६७४२, २६८२५, २६८४५,
२६८४८, २६८७६, २६८७७,
२६८७८, २६८७९, २६८८०,
२६९८१, २७०८३, २७१०६,
२७१०७, २७१२०, २७२०४,
२७२२९, २७२४३, २७५०२,
२७५०३, २७५०६, २७५५१,
२७५५२, २७५५३, २७६००,
२७६०१, २७६२०, २७६२४,
२७६२५, २७६५८, २७६७७,
२७७६१, २७८८४, २७८८५,
२७८८७, २७९२८, २७९९४,
२८००४, २८०४५, २८११४,
२८१५८, २८१७६, २८२०८,
२८२३५, २८२३६, २८२५७,
२८३७४, २८३२८, २८३३०,
२८३३१, २८३४९, २८३६३,
२८३७०, २८३७५, २८५१७,
२८६२६, २८६९२, २८८४७,
२८८४८, २८८६४, २८८६५,
२८८८४ ।

पञ्चदशी सव्याख्या २७८५०, २७८५१, २७८५८,
२७९५५, २८०८६, २८११९,
२८२३३, २८२५४, २८६३२,
२८६३३, २८७६२ ।

पञ्चपादिका २७१८०, २७३०७, २७३०८, २७३०९,
२७६७१, २७७८६, २७७९७, २८३४१,
१८३७३, २८४६१, २८५१२, २८५१३,
२८५१४, २८५२४, २८५२५ ।

पञ्चपादिकाटीका २८५१५ ।

पञ्चपादिकाविवरणम् २७२८६, २७२९२, २७३३९,
२७६०९, २७८७२, २७९७५,
२७९७८, २७९७९, २८०३९,
२८३४२, २८३६५, २८३७७,
२८३९८, २८५११, २८५२३,
२८६६०, २८६६२, २८७६०,
२८७६५, २८७६९, २८७७०,
२८८३५ ।

पञ्चपादिकाविवरणटीका २७८२३, २८३२६, २८३४० ।

पञ्चपादिकाविवरणतत्त्वदीपनम् २७२७६, २७३४२,
२७३४७, २७७४७,
२७७८४, २७७८८,
२७८०१, २७८७१,
२८०४६, २८०४७,
२८१३२, २८८४४ ।

पञ्चपादिकाविवरणव्याख्या २७७११ ।

पञ्चपादिकाविवरणव्याख्यानम् २७२७६ ।

पञ्चपादिकाविवरणं सटीकम् २७७६३ ।

पञ्चपादिकाविवरणोपन्यासः २६७०९ ।

पञ्चप्रकरणौ २७२७२, २७६७२, २७७६२, २७९००,
२७९९२, २७९९५, २८५५५, २८६७२ ।

पञ्चप्रकरणौ सटीका २८१३६ ।

पञ्चरत्नम् २८१७५, २८२७७ ।

पञ्चरत्नाविवरणम् २६९९८ ।

पञ्चरत्नस्तोत्रम् २७५५५ ।

पञ्चश्लोकवार्त्तिकम् २७५०० ।

पञ्चीकरणम् २६७४०, २६७७२, २६९०९, २७०७०,
२७०९०, २७०९१, २७०९२, २७०९३,
२७१०५, २७१०८, २७१०९, २७११०,
२७१११, २७१४४, २७१५६, २७१६०,
२७१६३, २७३११, २७९०२, २७९०८,
२७९१०, २७९४६, २६९६०, २८०९५,
२८०३७, २८२१४, २८३५०, २८४०७,
२८६४१, २८७३७, २८८२७, २८८४१ ।

पञ्चीकरणटीका २६७७१, २८१६२ ।

पञ्चीकरणतात्पर्यचन्द्रिका २७२८० ।

पञ्चीकरणप्रकाशः २८०५५ ।

पञ्चीकरणभाष्यम् २६९१० ।

पञ्चीकरणमहावाक्यम् २७५०८ ।

पञ्चीकरणमहावाक्यसिद्धान्तः २६७७० ।

पञ्चीकरणमहावाक्यार्थः २६७३५, २६९०७, २८८१६ ।

पञ्चीकरणमहावाक्यार्थविवरणम् २६७५६, २६७५७,
२६८३३, २७०४४,
२७०७१, २७०७३,
२७१२३, २७१५९,
२७८९५, २८१२९ ।

पञ्चीकरणवाक्यार्थविवरणम् २६८१० ।

पञ्चीकरणवार्त्तिकम् २६७०२, २६७१०, २६७११,
२६७१२, २६७१३, २६७१४,
२६७२२, २६७४५, २६७६७,
२६७६८, २६७६९, २६७८५,
२६७८६, २६८१२, २६८२०,
२६८२७, २६८३८, २६८४३,
२६८९१, २६८९२, २६८९३,
२६८९४, २६८९५, २६८९६,
२६८९७, २६८९८, २६८९९,
२६९००, २६९०१, २६९०२,
२६९०३, २६९०४, २६९०५,
२६९०६, २६९७७, २६९७८,
२७०५२, २७०७०, २७०९१,

पञ्चीकरणवार्त्तिकम् २७०९४, २७०९५, २७०९६,
 २७०९७, २७११०, २७११३,
 २७११४, २७१५८, २७१५९,
 २७१६३, २७३६३, २७११०,
 २७९०९, २७९१४, २७९१९,
 २७९४६, २७९९०, २८१५०,
 २८१३३, २८१६१, २८१६३,
 २८२१९, २८२७६, २८२९३,
 २८२९९, २८३५७, २८४४१,
 २८४७४, २८७२९, २८७५१,
 २८७८७, २८८१५, २८८२२,
 २८८७४ ।

पञ्चीकरणवार्त्तिकटीका २७१४७ ।

पञ्चीकरणवार्त्तिकपाठः २७९४६ ।

पञ्चीकरणवार्त्तिकं सटीकम् २६९७९, २७५०९,
 २७८०२, २७९४४,
 २७९४७, २७९४९,
 २७९५१ ।

पञ्चीकरणवार्त्तिकं सव्याख्यम् २७५५४ ।

पञ्चीकरणवार्त्तिकाभरणम् २७१५७, २७५०९,
 २७८५६ ।

पञ्चीकरणवार्त्तिकाभरणटीका २६९१२ ।

पञ्चीकरणवार्त्तिकार्थप्रकाशिका २७१४७, २७९४८,

पञ्चीकरणविचारः २७२०३ ।

पञ्चीकरणविवरणम् २६८६२, २७०५४, २७५११,
 २७६८०, २७६८२, २८०२८,
 २८२७५, २८३९९, २८५८०,
 २८७५८, २८८९४ ।

पञ्चीकरणविवरणटीका २७३३४, २७८११, २८१२८,
 २८६०९, २८७००, २८७५९ ।

पञ्चीकरणविवरणतत्त्वचिन्द्रिका २७११५ ।

पञ्चीकरणसन्ध्या २७५१५ ।

पञ्चीकरणं सवार्त्तिकम् २८०२० ।

पद्दीपिका २८३३०, २८३६३ ।

परमवेदान्तसिद्धान्तरत्नाञ्जलिः २७३८७ ।

परमहंसमार्गनिरूपणम् २६७४३, २७२३९ ।

परमहंससमानविधिः २६७३४ ।

परमाश्रितप्रकरणम् २७०२८ ।

परमार्थप्रदीपिका २७६०४ ।

परमार्थसारः २६९५८, २७००२, २७६८९, २७८२१,
 २७८७८, २८७१३, २८८६३ ।

परमार्थसारटीका २७६९० ।

परिभाषार्थदीपिका २८५८६ ।

परिमलः २८१५० ।

पानपात्री २७५६५ ।

पुष्पाञ्जलिः २७६५३ ।

पूर्णचन्द्रोदयः २७६६८ ।

प्रकाशः २७४६८ ।

प्रकाशिका २८४७८, २८८३८ ।

प्रणवगीता २६७५४ ।

प्रणवपञ्चीकरणवार्त्तिकं सटीकम् २६९११ ।

प्रणववालवोधिनी २८७८४ ।

प्रणवमालामन्त्रः २६७५४ ।

प्रणवपोडशनामानि २६७५४ ।

प्रणवहृदयम् २६७५४ ।

प्रणवानुस्मृतिः २६७५४ ।

प्रणवार्थप्रकाशः २८६२४ ।

प्रणवाष्टोत्तरशतनाम २६७५४ ।

प्रत्यक्तत्त्वचिन्तामणिः २८५३२ ।

प्रत्यक्तत्त्वचिन्तामणिः सटीकः २८११० ।
 प्रत्यक्तत्त्वविवेकदीपिका २८४८८ ।
 प्रत्यगात्मविचारः २७२२३ ।
 प्रत्यग्रहानिर्णयप्रकरणम् २६९६८ ।
 प्रत्यग्रहौकत्वविचारः २८३१२ ।
 प्रपञ्चमिथ्यात्वम् २७८४१, २८४१० ।
 प्रपञ्चमिथ्यात्वमानखण्डनपञ्चिका २७२३१, २७४२९,
 २७४३० ।
 प्रपञ्चमिथ्यात्वमानखण्डनपञ्चिकाटीका २७२२७ ।
 प्रपञ्चमिथ्यात्वानुमानखण्डनविवरणम् २७२३२ ।
 प्रपञ्चसारः २८३९३ ।
 प्रबोधसुधा २८१०२ ।
 प्रबोधसुधाकरः १७१९९, २७६१२, २७८६३, २८०४८,
 २८८७०, २८२४२, २८६८७ ।
 प्रबोधसुधाकरचन्द्रिका २७६६९ ।
 प्रबोधसुधाकरः सटीकः २७८९८ ।
 प्रमाणपद्धतिः २७२३०, २८६०४ ।
 प्रमाणपद्धतिटीका २७२१९ ।
 प्रमाणपद्धतिभावविवरणम् २७८६६ ।
 प्रमाणमाला २७६३२, २७८४२, २७९६६, २८२८६ ।
 प्रमाणमालाटीका २८२८७ ।
 प्रमाणरत्नमाला २८४२२ ।
 प्रमाणरत्नमालानिवन्धः २८४२३ ।
 प्रमाणलक्षणं सटीकम् २७२२० ।
 प्रमाणसङ्ग्रहः २७२२१ ।
 प्रमेयरत्नार्णवः २७२३६ ।

प्रमेयरत्नावली २८८६६ ।
 प्रश्नावली २८३७४ ।
 प्रश्नोत्तरमणिरत्नमाला २८२३९ ।
 प्रश्नोत्तरमाला २८२६१ ।
 प्रश्नोत्तरमालिका २७४४० ।
 प्रश्नोत्तररत्नमाला २७४४१ ।
 प्रश्नोत्तररत्नावली २८६५८ ।
 प्रस्थानभेदः २८७९१ ।
 प्रस्थानरत्नाकरः २७२३४, २७४०२ ।
 प्रातःस्मरणादिसङ्ग्रहः २७९४६ ।
 प्रायश्चित्तविचारः २८२६६ ।
 वहिर्मुखान्तःकरणबालबोधिनी २७०९८ ।
 वहिर्मुखान्तःप्रणवबालबोधिनी २७१०६ ।
 बालबोधसङ्ग्रहः २८३१६ ।
 बालबोधिनी २७८७४, २७९६०, २८०६८, २८०६४,
 २८२६६, २८२७०, २८६९६, २८८७६ ।
 बुद्धिविश्रान्तिप्रकारः २७२२६ ।
 बृहद्वाक्यवृत्तिः २७७६८ ।
 बोधप्रदीपिका २८७६० ।
 बोधसारः २६९९६, २७९१३, २८२७९ ।
 बोधसारः सटीकः २८३७८ ।
 बोधसारानुक्रमणिका २८६७६ ।
 बोधसारार्थदीप्तिः २८३७८ ।
 ब्रह्मचिन्तनम् २६७१६, २६७६४, २६७६६, २६७६६,
 २६८०६, २६९७६, २७८३०, २७९३३ ।
 ब्रह्मचिन्तनिका २६८९७, २६९०७, २७०१४,
 २७९४६, २७९४९, २८६३९ ।

ब्रह्मज्ञानम् २७१२६, २८१९३, २८७१८ ।

ब्रह्मतर्कविवरणम् २७६९१ ।

ब्रह्मतर्कस्तवविवरणम् २८३४४, २८९२० ।

ब्रह्मभावनानिर्णयः २६७८७ ।

ब्रह्ममीमांसाभाष्यम् २७२२२, २७६९०, २७९२६,
२८२८१ ।

ब्रह्मवादः २७००६ ।

ब्रह्मविचारः २७२४४, २७७०२, २८७०१ ।

ब्रह्मविद्या २८८६४ ।

ब्रह्मविद्याप्रयोजनविचारः २७००८ ।

ब्रह्मविद्याभरणम् २७४९८, २७७६०, २८०७६,
२८०७७, २८६८९ ।

ब्रह्मविद्यारहस्यव्याख्या २७९८४ ।

ब्रह्मविद्याविलासः २७७९९ ।

ब्रह्मविद्योपदेशः २८७८१ ।

ब्रह्मविमर्शः २७२६८ ।

ब्रह्मसूत्रम् २६७३१, २६७६३, २६७७५, २६८६३,
२६९४९, २६९९०, २७०३९, २७०८६,
२७१८२, २७१८३, २७१८४, २७१८५,
२७३९६, २७३९७, २८३९८, २७३९९,
२७३९०, २७४४६, २७४७४, २७४७५,
२७४७६, २७७८६, २७८१२, २७८२५,
२७८३२, २७८६४, २७९७४, २८१८१,
२८१९२, २८२२५, २८२३७, २८२४९,
२८३८०, २८३८१, २८६९६, २८७३२,
२८८७० ।

ब्रह्मसूत्रटीका २८१३१ ।

ब्रह्मसूत्रदीपिका २६९९२ ।

ब्रह्मसूत्रप्रदीपः २८४३५ ।

ब्रह्मसूत्रभाष्यम् २६९५१, २७२१८, २७२६२,
२७३७१, २७४३२, २७४५४,
२७७८७ ।

ब्रह्मसूत्रभाष्यटीका २७२१६, २७२१७, २७२८९,
२७२९०, २७४३३, २८६३७ ।

ब्रह्मसूत्रभाष्यटीकाव्याख्या २७६९६ ।

ब्रह्मसूत्रभाष्यप्रकाशः २७९९७ ।

ब्रह्मसूत्रभाष्यव्याख्या २७०८७, २७९३६ ।

ब्रह्मसूत्रभाष्यव्याख्यानम् २८०२२, २८०७६,
२८०७७ ।

ब्रह्मसूत्रविचारः २७२१९ ।

ब्रह्मसूत्रवृत्तिः २७३४९, २७४३९, २७६९७, २७८४८,
२७९१६, २७९९६, २८३३६, २८६१०,
२८६७७, २८६८४, २८६९६ ।

ब्रह्मसूत्रवैकुण्ठभाष्यम् २८४५० ।

ब्रह्मसूत्रव्याख्या २६८२९, २७३६९, २७८४७,
२७९७६, २८२११, २८४४९,
२८७१२ ।

ब्रह्मसूत्रव्याख्यानम् २७७४५, २८६८१ ।

ब्रह्मसूत्रव्याख्याभेदाः २७७२० ।

ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम् २६८१४, २६९९०, २७४२३ ।

ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यटीका २६७६२, २६९३४, २६९९४,
२७०३१, २७३७७, २७६३०,
२७८३१, २८१४८ ।

ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यव्याख्या २७८२०, २८६३५ ।

ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यं सटीकम् २८४०५ ।

ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यं सव्याख्यम् २८१४९ ।

ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यसारसङ्ग्रहः २८६१६ ।

ब्रह्मसूत्रशास्त्रीरकभाष्यव्याख्या २८६८९ ।

ब्रह्मसूत्रश्रीभाष्यव्याख्या २७२१४ ।

ब्रह्मसूत्रं सटीकम् २७१३१, २८२६८ ।

ब्रह्मसूत्रं सभाष्यम् २७२३८, २७२६१, २७३७२,
२७३९८, २७५६७, २७७२५,
२८०२३, २८१०९, २८११८,
२८६९१ ।

ब्रह्मसूत्रं सवृत्तिकम् २७६२८, २७६२९, २८२८४ ।

ब्रह्मसूत्रं सव्याख्यम् २८११९ ।

ब्रह्मसूत्रं सव्याख्यानम् २७८४६ ।

ब्रह्मसूत्रसिद्धान्तमुक्तावलिः २७२२६ ।

ब्रह्मसूत्रानुव्याख्यानम् २८०९९ ।

ब्रह्मसूत्रार्थप्रकाशिका २६८८५ ।

ब्रह्मसूत्रार्थप्रदीपिका २७७०६ ।

ब्रह्मसूत्रार्थसङ्ग्रहः २८७११ ।

ब्रह्मस्वरूपम् २६८७१ ।

ब्रह्मात्मैकत्वसिद्धान्तरहस्यप्रकरणम् २६९६८ ।

ब्रह्माद्वैतप्रकाशिका २८६५९ ।

ब्रह्मानुचिन्तनम् २६७९१, २६८००, २६८०६,
२७९६६ ।

ब्रह्मानुसन्धानम् २८३९७ ।

ब्रह्माभूतम् २७०८४ ।

ब्रह्माभूतचन्द्रिका २६७८२ ।

ब्रह्माभूतवर्षिणी २७६९७, २७९१६, २७९९६,
२८२८४, २८३३६, २८६८४,
२८६९६ ।

ब्रह्मावबोधः २६८७३ ।

ब्रह्मोपदेशः २७९३२ ।

ब्रह्मोपदेशविधिः २६९३२ ।

भस्मधारणमन्त्रः २७०९५ ।

भामती २६७४८, २६९९४, २७०४८, २७१३८,
२७२८९, २७२९३, २७२९४, २७२९५,
२७२९६, २७२९७, २७२९८, २७४४५,
२७६३०, २७६९९, २७७७८, २७८२०,
२८०३४, २८१४८, २८५२२, २८५३५,
२८६०६, २८६५४, २८६६४ ।

भामतीटीका २७९३५, २८७०३ ।

भामतीभावार्थसङ्ग्रहः २७०३० ।

भामती सटीका २८२७२ ।

भावदीपिका २७५४५, २८०२१, २८३८७ ।

भावनावाक्यरत्नमञ्जूषा २७४६५ ।

भावप्रकाशिका २७२२७, २७२२८, २८४६९ ।

भावप्रकाशिनी २७८२३ ।

भाषापरिच्छेदः २७५२० ।

भाष्योपनिषद्वाक्यविवरणम् २७४१७ ।

भेदखण्डनं सटीकम् २७६२६ ।

भेदजयश्रीः २८४५१ ।

भेदधिकारः २७०८०, २७५३१, २७८५५, २७८८०,
२८०७५, २८१९६, २८४८०, २८५२९,
२८६६८, २८८८७ ।

भेदधिकारटीका २७०८१, २७८८८, २८२८५, २८४७९,
२८६६९ ।

भेदधिकारव्याख्या २७६१९ ।

भेदधिकारः सटीकः २७४४३, २७४४४, २७६९८,
२८०७४ ।

भेदधिकारसत्क्रिया २७६१९, २७८८८, २८१९७,
२८६६९ ।

भेदधिकारः सव्याख्यः २७०२४ ।

भेदप्रकाशः २७५६० ।

भेदोऽजीवनम् २७८४४, २८४५२, २८४५३ ।

भौतिकसृष्टिः २७३८८ ।

मकरन्दपदपदी २७७०४ ।

मङ्गलपाठः २७१६३ ।

मध्वतन्त्रमुखमर्दनम् २७७१७ ।

मध्वतन्त्रमुखमर्दनव्याख्यानम् २७७७९ ।

मध्वमतविध्वंसनम् २७८८१ ।

मध्वमुखालङ्कारः २८४५४ ।

मन्तनप्रकरणम् २७१९२ ।

मन्तनप्रकारः २७०४५, २७२०६ ।

मन्तनाख्यप्रकरणम् २८७४१ ।

मनीपापञ्चकम् २७१७२, २८१०४ ।

मन्त्रशारीरकम् २७५१४, २७५२७, २७५३०, २७८१३,
२८६५० ।

मन्त्रार्थरहस्यटीका २७९८४ ।

मन्दारमञ्जरी २८४७० ।

महाभूतोत्पत्तिविचारः २७६२७ ।

महावाक्यम् २८२६४ ।

महावाक्यनिर्णयः २८१०१ ।

महावाक्यप्रकारविधिः २८३५० ।

महावाक्यरत्नावली २६८५०, २६९२०, २८७०५,
२८७०६, २८७४५ ।

महावाक्यविचारः २८१९०, २८८६१ ।

महावाक्यविवरणम् २६९१४, २६९१५, २६९१७,
२६९१८, २७०६९, २७७५७,
२७९७३, २७९९१, २८०८२,
२८१२८, २८१५५, २८२२६,
२८२९२, २८३९५, २८५४६,
२८५७४, २८७९७, २८८२१,
२८८७१ ।

महावाक्यविवेकः २६८२५, २६९४८, २७९०६ ।

महावाक्यविवेकः सटीकः २६८५१ ।

महावाक्यव्याख्या २८४६२, २८७८५ ।

महावाक्यसङ्ग्रहः २६७६१ ।

महावाक्यादिः २८२०१ ।

महावाक्यार्थः २६८०३, २७०७०, २७०९०, २७१२२,
२७१६३, २७९५२, २७९५३, २७९५४,
२८०१५, २८३५७, २८४०६, २८६४१ ।

महावाक्यार्थनिदिध्यासनविधिः २६९५३ ।

महावाक्यार्थप्रकारः २७८२६ ।

महावाक्यार्थप्रबोधप्रकरणादिकम् २७३१७ ।

महावाक्यार्थप्रबोधप्रकारः २६७४४, २६८८७,
२७४२७, २८६७९ ।

महावाक्यार्थप्रबोधप्रकारव्याख्या २६७६० ।

महावाक्यार्थप्रबोधप्रकारः सवार्त्तिकः २६९१३ ।

महावाक्यार्थप्रबोधविधिः २६७१८, २६७१९,
२६८१३ ।

महावाक्यार्थप्रबोधः २६९१९, २८५३३ ।

महावाक्यार्थप्रबोधप्रकारः २७०९२, २७१०९, २७१६०,
२७१६२, २७१६५ ।

महावाक्यार्थविचारः २७२५७ ।

महावाक्यार्थविवरणम् २६७२७, २६९१६, २७५५७,
२८०२७ ।

महावाक्यार्थसङ्ग्रहः २६९२१, २८७०४ ।

महावार्त्तिकम् २६९२१ ।

माण्डूक्यकारिका २७८६२ ।

माध्वतन्त्रमुखमर्दनं सव्याख्यम् २७८८१ ।

माध्वशास्त्रमुखावमर्दनम् २८५२७ ।

मानदीपिका सव्याख्या २७६३६ ।

मानसिकस्नानम् २७१६३ ।

मानसोल्लासटीका २७५३४ ।

मानसोल्लासवृत्तान्तः २७५३४ ।

मायावादखण्डनपञ्चिकाटीका २७२२८ ।

मायावादशतदूपणी २७७३१ ।

मायाविचारः २७१६४ ।

मायोत्कर्षादिविचारः २७२७५ ।

मारुतमण्डनम् २८४५४ ।

मिथ्यात्वनिरुक्तिः २६७०१, २८४०८ ।

मिथ्यात्ववादरहस्यम् २८४५५ ।

मिथ्यात्वविचारः २६९०८ ।

मिथ्यात्वावर्त्तकूटभङ्गः २८४५६ ।

मुक्तिवादः २५०१२ ।

मुक्तिविचारः २६९४७ ।

मुक्तिविमर्शः २८४५७ ।

मुमुक्षुचित्तसमाधानम् २८१६७ ।

मुमुक्षुचित्तसमाधानप्रकरणम् २७१९६ ।

मुमुक्षुसर्वस्वम् २७३१८, २८४३९ ।

मोक्षसाधनोपदेशविधिः २८३४५ ।

मोक्षस्य परमपुरुषार्थत्वनिरूपणम् २७६२२ ।

मोक्षानन्दतरङ्गिणी २७१०४ ।

मोहमर्दनी २६७४२ ।

मौनदशकम् २६९४५, २६९४६ ।

मौनस्थितिप्रकारविचारः २७२२५ ।

यतिकर्मकाण्डम् २८४२१ ।

युक्तिवरूथिनी २८४३१ ।

रत्नत्रयपरीक्षा २७२६४ ।

रत्नप्रभा २६८७४, २६९३४, २७०३१, २७४८२

२७६४०, २७७१४, २७७१६, २७७१९,

२७९३६, २८१४०, २८१४९, २८४३३,

२८७४२, २८७४४, २८७५६, २८८५५ ।

रसाभिचयञ्जिका २७५६४, २७५८५, २७६११ ।

रहस्यत्रयसारः २७८६१ ।

राजराजेश्वरीस्तोत्रम् २८३७६ ।

राधावल्लभीयम् २८०२३ ।

रामरत्नाकरटीका २७८४० ।

रामरत्नाकरः सटीकः २७७३० ।

रामानुजसिद्धान्तसारप्रकाशः २८७०९ ।

लक्षणावली २८३११

लघुचन्द्रिका २७१३२, २७६४९, २७६५०, २७६५१,

२७६५२, २८४४०, २८४४५, २८५००,

२८०५१, २८५०२, २८५०३ ।

लघुचन्द्रिकाव्याख्या २७३३५ ।

लघुवाक्यवृत्तिः २६८७२, २७००१, २७१८६,

२७४७८, २८०६७, २८०९२,

२८१७५, २८६४१, २८८३०,

२८८६० ।

लघुवाक्यवृत्तिपुष्पाञ्जलिः सटीकः २७८६३ ।

लघुवाक्यवृत्तिप्रकरणम् २७१८८ ।

लघुवाक्यवृत्तिप्रकरणं सटीकम् २६९९९ ।

लघुवाक्यवृत्तिः सटीका २७६९३ ।

लघुवार्त्तिकम् २८१०९, २८७४९ ।

लघुवार्त्तिकटीका २८७७४, २८७७९ ।

लोकसमुद्रदेशादिपूची २७२६९ ।

वचनभूषणम् २८७४३ ।

वचनभूषणं सटीकम् २८००९, २८११३ ।

वाक्यचन्द्रिका २७९३६ ।

वाक्यभाष्यम् २७३६६ ।

वाक्यरत्नाकरः सटीकः २६९७२ ।

वाक्यविवृत्तिटीका २८२१३ ।

वाक्यवृत्तिः २६७२१, २६७४१, २६७९४, २६८८३,
२६८८४, २७४७९, २७८९१, २८२२७,
२८२९० ।

वाक्यवृत्तिप्रकरणम् २६९९४ ।

वाक्यवृत्तिप्रकाशिका २७८८३, २७९१७, २८८७७ ।

वाक्यवृत्तिः सटिप्पणा २८६३९ ।

वाक्यवृत्तिः सटीका २६७९२, २७०१३, २७०२९,
२७२७०, २७२७१, २८३०९,
२८४७८ ।

वाक्यवृत्तिः सन्याख्या २७६९४ ।

वाक्यसुधा २६७३०, २६७९१, २७०६३, २७१२६,
२७६२७, २८०२९, २८०८९, २८९७१,
२८७३४, २८७९०, २८८९९ ।

वाक्यसुधाटीका २८७९० ।

वाक्यसुधाप्रकरणम् २६८६०, २७९४१ ।

वाक्यसुधाप्रकरणं सटीकम् २७१८७ ।

वाक्यसुधा सटीका २६७३८, २६९८९, २७२९९,
२७३९२, २७७०१, २७७८२,
२७८७३, २७९६७, २८०८२,
२८०८३, २८०८४, २८२९१,
२८७७७, २८८९०, २८८७२ ।

वाक्यसुधा सभाष्या २७३६९ ।

वाक्यसुधा सन्याख्या २७३००, २८४९७ ।

वाक्यार्थरत्नप्रभा २८४४९ ।

वाक्यार्थसङ्ग्रहः २८४९८ ।

वागर्थविवृत्तिः २७४८० ।

वादिभूषणम् २८४४८ ।

वार्त्तिकप्रकरणम् २८६४२ ।

वार्त्तिकसारः २६९९२ ।

वार्त्तिकसारकारिका २७०३७ ।

विचारमाला २७३२९ ।

विज्ञानन्याख्या २८४२० ।

विद्यासागरः २७६६९ ।

विद्यासागरी २७९८६ ।

वियुन्मालास्तोत्रम् २७००१ ।

विद्वदनुभवः २८०६० ।

विद्वन्मण्डनम् २८४२७ ।

विद्वन्मण्डनटीका २८४२८ ।

विद्वन्मण्डनविवरणम् २८४२९, २८९३१ ।

विद्वन्मण्डनं सटीकम् २८३९६ ।

विद्वन्मनोरञ्जनी २६८१८, २६९८७, २७११८,
२७१४३, २७१९२, २७१९९,
२८०३३, २८१४७, २८९६१ ।

विधिविवर्तः २७७८१ ।

विपक्षविज्ञेयणम् २८४३० ।

विपक्षविज्ञेयणटीका २८४३१ ।

विवरणतत्त्वदीपनम् २६८३९, २८६४४, २८७७१,
२८७७२ ।

विवरणप्रमेयसङ्ग्रहः २८१६४, ३८४००, २८५३९ ।

विवरणोपन्यासः २७०५१ ।

विवेकचूडामणिः २६९५७, २७८९०, २७९३४,
२८१७४, २८७८६, २८८६६ ।

विवेकमकरन्दः २८१७५, २८३०५ ।

विशिष्टाद्वैतविचारः २७७७७ ।

विशिष्टाद्वैतसिद्धान्तः २८६०८, २८६९९ ।

विशुद्धाद्वैततत्त्वम् २७५८१ ।

वृत्तिनिरूपणम् २६६९८ ।

वेदान्तकतकः २७५१९, २७५२०, २८५०६ ।

वेदान्तकल्पतरुः २६७७९, २६८३१, २६९८२,
२७२७७, २७३०२, २७३०४,
२७३०५, २७६२१, २७७०५,
२७७४९, २७९३५, २८०५३,
२८१३४, २८१५६, २८२३८,
२८४३२, २८४९५, २८७०३,
२८७२३, २८७२६ ।

वेदान्तकल्पतरुटीका २७२७८, २८०२६, २८०३२,
२८१५० ।

वेदान्तकल्पतरुपरिमलः २७१९५, २७७९३, २७८४३,
२८०२६, २८०३२, २८१००,
२८१२२, २८२७१, २८६६३,
२८७५७, २८८३२ ।

वेदान्तकल्पतरुसञ्जरी २८२८० ।

वेदान्तकल्पतरुव्याख्या २८६३६ ।

वेदान्तकल्पलता २७३२४ ।

वेदान्तकल्पलतिका २७३०६, २७७४८, २८३६० ।

वेदान्तकौमुदी २७४५६, २८३८८ ।

वेदान्तकौमुदीटीका २७८५९, २८३८७ ।

वेदान्तकौमुदीव्याख्या २७५१३, २७५४३, २७५४४,
२७५४५ ।

वेदान्तचन्द्रः २७८०० ।

वेदान्तचिन्तामणिः २८४९२ ।

वेदान्तडिण्डिमः २७७१०, २८०६६ ।

वेदान्ततत्त्वबोधः २६८५७ ।

वेदान्ततत्त्वमुक्तावली २५४४८ ।

वेदान्ततत्त्वविवेकः २७०५५, २७३५१, २८४९९ ।

वेदान्ततत्त्वविवेकटीका २७०५६, २८५२६ ।

वेदान्ततत्त्वविवेकटीकाव्याख्या २८३८६ ।

वेदान्ततत्त्वविवेचनम् २८३९३ ।

वेदान्ततत्त्वसारः २८३४६, २८७०२ ।

वेदान्ततात्पर्यनिवेदनम् २७४५९, २७६७४ ।

वेदान्तदीपः २७९८३ ।

वेदान्तदीपिका २७२४६, २८५८७ ।

वेदान्तनयभूषणम् २७८६८, २८५२८, २८८०३ ।

वेदान्तपञ्चरत्नम् २८७६४ ।

वेदान्तपरिभाषा २६७०३, २६९३३, २७०२१,
२७११९, २७१५०, २७३३८,
२७४०६, २७४०९, २७४३८,
२७४७३, २७४७७, २७४९२,
२७७९५, २७८७५, २७९१८,
२८०६१, २८१७९, २८१९१,
२८१९४, २८२०४, २८२९०,
७८३३३, २८५४१, २८५६८,
२८६१५, २८६२३, २८६२५,
२८७३१, २८७५५, २८७९५ ।

वेदान्तपरिभाषाटीका २६८४६, २७३३६, २७३३७,
२२४१२, २८००३ ।

वेदान्तपरिभाषा सटिप्पणा २८३७६ ।

वेदान्तपरिभाषार्थदीपिका २७९२२ ।

वेदान्तपरिभाषाव्याख्या २६७९२, २७७५०, २७७७६,
२८१३५, २८५८५ ।

वेदान्तपरिभाषा सटीका २८५८६ ।

वेदान्तपारिजातसौरभटीका २७९८१ ।

वेदान्तप्रकरणम् २७१९३ ।

वेदान्तप्रकरणसूची २७२६९ ।

वेदान्तप्रकाशाध्यारोपः २७६६७ ।

वेदान्तप्रकाशापवादः २७६६५ ।

वेदान्तप्रक्रिया २६७३३ ।

वेदान्तप्रवृत्तिविचारः २६९६९ ।

वेदान्तरत्नम् २७४६३, २८०४१ ।

वेदान्तरहस्यम् २७०२७, २८३६६, २८४२१, २८५४७ ।

वेदान्तरहस्यसङ्ग्रहः २८८०८ ।

वेदान्तवाक्यनिचयः २६९८८, २७००० ।

वेदान्तवादः २७५७९ ।

वेदान्तविभावना सटीका २८८८० ।

वेदान्तशास्त्रीयपदार्थसङ्ग्रहः २७२२४ ।

वेदान्तसङ्ग्रहः २७८६८, २८४०४ ।

वेदान्तसंज्ञा २७६५५, २७६५६ ।

वेदान्तसंज्ञानिरूपणम् २८५८३, २८५८४ ।

वेदान्तसंज्ञाप्रकरणम् २६७८४, २७००७, २७३८९,
२७६६६, २८८८६ ।

वेदान्तसंज्ञाप्रकरणं सटीकम् २८४०२ ।

वेदान्तसारः २६७२५, २६७७३, २६८१६, २६८१७,
२६८२८, २६९४३, २७०२५, २७१०१,
२७१०२, २७१०३, २७११५, २७१३९,
२७१४०, २७१४१, २७१४२, २७१५१,
२७२७९, २७३३३, २७३७९, २७३८५,
२७४१०, २७४११, २७४१४, २७४१५,
२७५३७, २७८८६, २७९२९, २७९७६,
२८००१, २८०१८, २८०१९, २८०३०,
२८०३१, २८०८८, २८०९०, २८१३७,
२८१४६, २८१७३, २८१९३, २८२६९,
२८२८९, २८३९४, २८५६०, २८५६५,
२८५७०, २८६२७, २८६४५, २८६७३,
२८६७४, २८६८१, २८७१४, २८७२०,
२८७२१, २८७२७, २८७५४, २८७६३,
२८७६८, २८७८८, २८८०१, २८८०४,
२८८३६, २८८६८, २८८९० ।

वेदान्तसारटीका २६७२६, २६९४४, २६९८७,
२७११७, २७११८, २७१४३,
२७१५२, २७१५३, २७१५४,
२७१५५, २७२६७, २७५९८,
२७९९९, २८०३३, २८०३५,
२८०५४, २८१३८, २८१४७,
२८१६६, २८१७१, २८१७२,
२८१८७, २८२२३, २८२२४,
२८३३२, २८३३५, २८३६१,
२८३६४, २८३९१, २८३९६,
२८४८२, २८५६१, २८७५३,
२८८००, २८८०२, २८८१२ ।

वेदान्तसारदीपिका २८५३४ ।

वेदान्तसारविवरणम् २७६३१ ।

वेदान्तसारव्याख्या २६८१८ ।

वेदान्तसारसङ्ग्रहः २६८४७, २७५५५, २७७६६,
२८००७ ।

वेदान्तसारः सटिप्पणः २७९४० ।

वेदान्तसारः सटीकः २७४४२, २७५०५, २७७०३,
२७७९६, २७९६८, २८००८,

वेदान्तसारः सटीकः २८३८६, २८३३७, २८३४८,
२८४०९, २८६५३, २८६६६।

वेदान्तसारः सव्याख्यः २८३१०।

वेदान्तसिद्धान्तः २८५१०।

वेदान्तसिद्धान्तक्रीतुकम् २७२४७।

वेदान्तसिद्धान्तचन्द्रिका सटीका २७७१४, २८२८२।

वेदान्तसिद्धान्तदीपिका २८३७१।

वेदान्तसिद्धान्तमुक्तावली २७२४८, २७३१६, २७३८२,
२७४१८, २७४२८, २७४२९।

वेदान्तसिद्धान्तमुक्तावलीटीका २७३४२।

वेदान्तसिद्धान्तमुक्तावली सटीका २७०६६, २७०६७,
२७७२२, २७७३६,
२७७३९, २७७७४।

वेदान्तसिद्धान्तसूत्रमाला २७७६४।

वेदान्तसिद्धान्तसङ्ग्रहः २६७९३, २७२४९।

वेदान्तसिद्धान्तमूर्त्तिनञ्जरी सटीका २७४१३, २७४३८,
२७९३०, २७९४३,
२८२२२।

वेदान्तमूत्रम् २६८५३, २७१६६, २७१६८, २७४७४,
२७४७५, २७४७६, २८३०१, २८३०७।

वेदान्तमूत्रभाष्यटीका २७२४३।

वेदान्तमूत्रमुक्तावलीः २७२३०।

वेदान्तमूत्रमुक्तावली २७९२३।

वेदान्तमूत्रवृत्तिः २७४८०, २७४८७, २८४१६,
२८४८३।

वेदान्तमन्त्रमन्त्रः २७३४४, २७३४५, २७९८०,
२८४७०, २८५३०, २८५३८।

वेदान्तफेडरागहान्यानि २७०२६।

वेदान्तधिकरणमाला २७४१८, २७४२०।

वेदान्तानुमितिनिष्पगम् २७३३८।

वेदान्तानुमृतम् २७८९७।

वेदान्तार्थविवेकभाष्यम् २८५६९।

वेदान्तार्थसङ्ग्रहश्लोकाः २७०३३।

वेदान्तोपदेशः २६७७४, २७८९९।

वेदान्तोपनिषद्वास्तिकवृत्तिः २७६६४।

वेदान्तविवेकभाष्यम् २७८०३।

वेदान्तसङ्ग्रहः २८७०७।

वेदान्तसङ्ग्रहटीका २८११६।

वेदान्तसङ्ग्रहः सटीकः २८११७।

वैयासिकन्यायमाला २६९३९, २७०६१, २७१००,
२७४१८, २७४२८, २७४७२,
२७५३८, २७५९७, २७६७५,
२७६७९, २७८९३, २७९२४,
२८३९०, २८४४३, २८५५३,
२८६९४, २८७६१, २८८५१।

वैयासिकन्यायमाला सव्याख्या २७४१९।

व्यासतृप्तवृत्तिः २७८३४, २७८३५, २८६७६।

व्यासतृप्तं सभाष्यम् २६२७५।

शङ्करसर्वस्वम् २७०४७।

शङ्कराचार्यसुरेश्वराचार्यवचनानि २८१३९।

शक्तद्रूपगी २७४१६, २७४३७, २८११६, २८७०८,
२८७३८।

शक्तद्रूपगीटीका २८४६०।

शक्तद्रूपगी २७८५२।

शक्तद्रूपगी सव्याख्या २८०१३।

शक्तद्रूपगी सटीका २६९१३, २७२९४।

शब्दवृत्तिविवेकः २७३८३।

शरीरस्य काशीक्षेत्रसादृश्यम् २६९३०, २६९३१ ।

शाङ्करभाष्यटीका २६७८० ।

शान्तिपाठः २७१६३ ।

शारीरककारिकाभाष्यवार्तिकम् २८०१७ ।

शारीरकन्यायनिर्णयः २७२८५, २७३४३, २७४६७,
२७५७८, २७७४२, २७८३६ ।

शारीरकन्यायमणिमाला २७७६९ ।

शारीरकन्यायरक्षामणिः २७७७१, २७७७३, २७७७४,
२७७७५, ।

शारीरकभाष्यन्यायनिर्णयः २८५६४ ।

शारीरकभाष्यन्यायसङ्गतिसङ्ग्रहः २८८५३ ।

शारीरकमीमांसान्यायसङ्ग्रहः २८६१९ ।

शारीरकमीमांसाभाष्यम् २६७३६, २६८२२, २६८२३,
२६८२४, २६८६८, २७१२४,
२७१९०, २७२५०, २७२६६,
२७२८१, २७३१२, २७३१३,
२७३१४, २७३२०, २७३२१,
२७३५५, २७३६०, २७३६१,
२७३६४, २७४२१, २७४२२,
२७४५३, २७४६६, २७४८१,
२७७०९, २७७१५, २७७६८,
२७८५७, २७९३६, २७९४५,
२८०१०, २८०१६, २८०६२,
२८०९८, २८१५२, २८१५७,
२८१८८, २८२०७, २८३१९,
२८३२०, २८५४९, २८६००,
२८६३४, २८६४६, २८६४७,
२८६४८, २८६४९, २८७२२,
२८७३९, २८७४०, २८७४२,
२८७४६, २८७७६, २८८०७,
२८८१९, २८८२३, २८८२४ ।

शारीरकमीमांसाभाष्यटीका २६७४८, २६८५४, २७१३४,
२७६९९, २७७१४, २७७७८,
२८४६५, २८८३७ ।

शारीरकमीमांसाभाष्यटीकाव्याख्या २८८५५ ।

शारीरकमीमांसाभाष्यतात्पर्यम् २७९१२ ।

शारीरकमीमांसाभाष्यरत्नप्रभा २६७६२ ।

शारीरकमीमांसाभाष्यव्याख्या २७१३३, २७६४०,
२७८८२, २७८८३,
२८१४०, २८४३३,
२८५२२, २८७४४,
२८७५६, ।

शारीरकमीमांसाभाष्यव्याख्यान्तम् २७७४६ ।

शारीरकमीमांसाभाष्यं सटीकम् २७७१६, २७७१९,
२७८९४, २८३५८,
२८६८९ ।

शारीरकमीमांसाभाष्यं सव्याख्यम् २७४८२, २७४८३,

शारीरकमीमांसासूत्रम् २८२४९, २८३८२ ।

शारीरकशास्त्रदर्पणम् २७४३१, २८४९८ ।

शारीरकसूत्रटीका २७००९, ।

शारीरकसूत्रभाष्यव्याख्या २६८७४ ।

शारीरकसूत्रभाष्यं सव्याख्यम् २६८७५ ।

शारीरकसूत्रभाष्यसारसङ्ग्रहः २७३९१ ।

शारीरकसूत्रवृत्तिः २७४६१, २७५१९ ।

शारीरकसूत्रं सटीकम् २७०११ ।

शारीरकसूत्रसारार्थचन्द्रिका २६९९५ ।

शारीरकार्थसङ्क्षेपः २७८३७ ।

शारीरकार्थसङ्क्षेपविवृतिः २७३८२ ।

शास्त्रप्रकाशिका २८१४१ ।

शास्त्रसिद्धान्तलेशसङ्ग्रहः २७१८१ ।

शिखामणिः २६८४६, २७३३६, २७३३७, २७७५०,
२७७७६, २८५८५ ।

शिवपादविन्यासः सटीकः २७७१८ ।

शिवाद्वैतदर्पणम् २६७०४ ।

शिवार्कमणिदीपिका २८८४६ ।

शिवाष्टकम् २८०३३ ।

शुक्राष्टकम् २६७६१ ।

शुद्धसुसंवेदः २८५९५ ।

श्रद्धाप्रकरणम् २६७९७ ।

श्रीकण्ठभाष्यव्याख्या २८८४६ ।

श्रीदर्पणः २८३२४ ।

श्रीभाष्यम् २७५२९, २८११८, २८७४६ ।

श्रुतप्रदीपिका २८७३६ ।

श्रुतिसमुच्चयः २८७६४ ।

श्रुतिसारसमुद्धरणम् २६८४४, २७०५९ ।

श्रुतिसारसमुद्धरणं सटीकम् २७३३५ २७७५५
२७९९८ ।

श्रुतिसारसमुद्धरणं सन्याख्यम् २७६८६ ।

श्रुतिसारार्थसङ्ग्रहप्रदीपिका २८८७८ ।

श्रुत्यर्थदीपिका सटीका २८५८७ ।

इलोकपञ्चकतात्पर्यदीपनम् २८२४० ।

इलोकपञ्चकविवरणम् २८४२४ ।

पोडशपदवाक्यार्थः २६७१५ ।

पोडशमहावाक्यम् २७०७०, २७०७१, २७१६३,
२७९१०, २८७४८ ।

पोडशमहावाक्यप्रकरणम् २७४७१ ।

पोडशमहावाक्यविवरणम् २८०९१ ।

पोडशमहावाक्यस्मरणम् २६७५५, २६७५६, २६७५७,
२६८१०, २७०७३, २७१२३ ।

पोडशमहावाक्यानि २६८००, २६८०२, २६८११,
२६८१३, २६८३२, २६८३३,
२६८३४, २८०९५, २८४८६ ।

पोडशमहावाक्यार्थस्मरणम् २७१५९ ।

पोडशवर्णकम् २८२९१ ।

पोडशवाक्यानि २७९५२, २७९५३, २७९५४ ।

संक्षिप्तनिर्गुणब्रह्मविचारप्रकरणम् २६९६७, २६९६८ ।

संक्षिप्तवेदान्तशास्त्रप्रक्रिया २७०३६ ।

संक्षिप्तवेदान्तार्थोपन्यासः २६९७३ ।

संक्षेपशारीरकम् २७०६२, २७२४२, २७२८२,
२७२८३, २७२८४, २७३८६,
२७३९२, २७४७०, २७४९०,
२७५३३, २७७२१, २७७४३,
२७८२९, २८०५७, २८३२१,
२८३४३, २८६५१ ।

संक्षेपशारीरककारिका २७४४७ ।

संक्षेपशारीरकटीका २७२९१, २७३१९, २७३८४,
२८२८२, २८२९७, २८६०१,
२८६६७ ।

संक्षेपशारीरकभाष्यम् २७७४४ ।

संक्षेपशारीरकव्याख्या २७३०१, २७७३५, २७७५३,
२७७५६, २८३६२, २८६०२ ।

संक्षेपशारीरकव्याख्यानम् २८७८९ ।

संक्षेपशारीरकसङ्गतिसङ्ग्रहः २७३९३ ।

संक्षेपशारीरकं सटीकम् २७२६०, २७४६२, २७६८७,
२८१४२, २८३१८, २८७३५ ।

संक्षेपशारीरकं सन्याख्यम् २८०९७ ।

संशयखण्डनम् २८४२५ ।

संस्कारपयोधिमन्थनम् २८१४३, २८१४४ ।

सच्चिदानन्दानुभवप्रदीपिका २८५५६ ।

संस्तुखानुभवः २७५७२ ।

सदाचारप्रकरणम् २७९४९ ।

सन्ध्योपनिषत् २६७५७, २६८१० ।

सप्तभङ्गीनयनिरूपणम् २८३०१ ।

सप्तश्लोकी २७५७६ ।

सप्ताष्टकम् २६९४० ।

समञ्जसा २७६२८ ।

समानशतकम् २७५३९ ।

सम्बन्धवार्तिकटीका २८१४१, २८८३८ ।

सर्वतन्त्रशिरोमणिः २७९८२ ।

सर्वदर्शनशिखामणिः २७९८२ ।

सर्वदर्शनसङ्ग्रहः २८१०७ ।

सर्वमतसारसङ्ग्रहः २८६३७ ।

सर्ववेदान्तसारः २८७९८ ।

सर्ववेदान्तसारभूतोपदेशः २७०२२ ।

सर्ववेदान्तसारामृतोपदेशः २७०२३ ।

सर्वात्मत्वविचारः २७३७५ ।

सर्वोपनिषद्धानुभूतिप्रकाशः २६८६४ ।

सहस्रोपदेशीप्रकरणम् २७१२९ ।

साधनपञ्चकं सटीकम् २८३१६ ।

सारचन्द्रिका २६९५९, २८३००, २८३०३ ।

सारसङ्ग्रहः २८६३७ ।

सारार्थचन्द्रिका २८२६८ ।

सिद्धान्तचन्द्रिका २५१२७, २७५४२ ।

सिद्धान्तचन्द्रिकोद्गारः २७७९४ ।

सिद्धान्ततत्त्वम् २७८२२, २८२००, २८२९६ ।

सिद्धान्तदीपः २७७३५, २८३६२, २८४२६,
२८६०१, २८६०२ ।

सिद्धान्तदीपावली २७७९९ ।

सिद्धान्तदीपिका २७७३९ ।

सिद्धान्तविन्दुः सटीकः २७४४९ ।

सिद्धान्तभूषणम् २७७९० ।

सिद्धान्तरत्नम् २७५६८ ।

सिद्धान्तरत्नमाला २७७३४, २७७६७, २८६०३ ।

सिद्धान्तरहस्यसारः २७७३३ ।

सिद्धान्तलेशः २६९८३, २७४८९ ।

सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहः २६७४६, २६७८९, २६९६३,
२७१८१, २७३५०, २७५०८,
२७५४६, २७७९१, २७८६०,
२७९३८, २७९५८, २८०११,
२८२०५, २८२०६, २८४१३,
२८४१४, २८४८९, २८४९१,
२६५७३, २९५७६ ।

सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहकारिका २८५९३ ।

सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहटीका २८७३३ ।

सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहव्याख्या २७३४८, २७४६९,
२७७२४, २८५८८ ।

सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहः सटीकः २७४५०, २७७६५,
२७७७०, २८३०८,
२८६१७ ।

सिद्धान्तलेशसारसङ्ग्रहः २८००० ।

सिद्धान्तलेशसारसङ्ग्रहः सटीकः २७५३५ ।

सिद्धान्तवाङ्मालाप्रकाशः २७४०१ ।

सिद्धान्तशतकम् २७९४१ ।

सिद्धान्तशिरोमणिशतकं सटीकम् २७७९९ ।

सिद्धान्तस्तोत्रम् २८१७५ ।

मुख्यपदार्थनिरूपणम् २७४५१ ।

सुप्रभा २७७१८ ।

सुवोधिनी २७१५३, २७१५४, २७३०१, २७४४२,
२७७९३, २७९६८, २८२२३, २८२२४,
२८३९१, २८६५२ ।

सुवर्णसूत्रम् २८४२९ ।

सूत्रवैभवमञ्जरी २८३०७ ।

सृष्टिकमः २७२५१ ।

सृष्टिसंहारप्रकरणम् २८५९० ।

सोमतत्त्वविवेकः २७७३२ ।

स्थितप्रज्ञलक्षणम् २६७९५ ।

स्थूलजगदुत्पत्तिप्रदर्शकचित्रम् २७८९७ ।

स्वप्ननिवेदनम् २७२२५ ।

स्वप्नप्रकाशप्रदीपिका २७३७६ ।

स्वप्नप्रकाशात्मविवेकः सव्याख्यः २७९०६ ।

स्ववोधः २८६१३ ।

स्ववोधरत्नम् २७७२७ ।

स्वयंप्रकाशविचारः २७६७८ ।

स्वयम्बोधः २८२४४ ।

स्वरूपनिरूपणं सटीकम् २७७२६ ।

स्वरूपनिर्णयः २७७९२, २८५९२ ।

स्वरूपप्रकरणम् २८२७० ।

स्वरूपप्रकाशः २६६९७, २७६८४ ।

स्वरूपस्थितिः २६९७० ।

स्वात्मनिरूपणम् २६९७१, २७००३, २७५४८, २७८७७ ।

स्वात्मनिरूपणं सटीकम् २७१६७, २८४७६ ।

स्वात्मनिरूपणं सव्याख्यम् २८५९०, २८५९१ ।

स्वात्मप्रकाशः २७४५२ ।

स्वात्मबोधः सटीकः २६८७० ।

स्वात्मयोगप्रदीपबोधिनी २८२४८ ।

स्वात्मसंवित्त्युपदेशः २८८०६, २८८२६ ।

स्वात्मसंविदुपदेशः २८१५४, २८६८७ ।

स्वात्मानन्दप्रकाशः २८६४० ।

स्वात्मानन्दप्रकाशिका २७५४९, २८०७३, २८१४५,
२८५९९ ।

स्वात्मानन्दप्रकाशिकार्या २६७९६, २६८५९ ।

स्वात्मानुभवदर्पणः २७७१३ ।

स्वात्मानुभवादर्थः २७६८१, २८७९२ ।

स्वात्मानुभवार्थप्रकरणं सव्याख्यम् २७६७० ।

स्वात्मानुभवार्थ सटीका २७८४५ ।

स्वात्मानुभूतिः २६८४९ ।

स्वानुभवप्रकाशिका २७२४१ ।

स्वानुभवादर्थः २६८५८, २७२४०, २७२५४, २८३२७ ।

स्वानुभवादर्थः सटीकः २७४६४ ।

स्वानुभूतिप्रकाशः २७२७३ ।

स्वाराज्यसिद्धिः २७१४८, २७६१३ ।

स्वाराज्यसिद्धिः सटिप्पणा २७७८९ ।

स्वाराज्यसिद्धिः सटीका २८४८४ ।

स्वाराज्यसिद्धिव्याख्या २७९८५ ।

हस्तामलकम् २६८२८ ।

हेत्वाभासनिराकरणविवेकः २६७०० ।

सप्तमभागोल्लिखितमीमांसाग्रन्थानामन्तरानुक्रमणिका

अङ्गत्वनिस्तुतिः २९१७८, २९२०७ ।

अधिकरणकौमुदी २८९६२, २८९७०, २८९७१,
२९१७७ ।

अधिकरणचन्द्रिका २९५०५ ।

अधिकरणनिरूपणम् २९२९० ।

अधिकरणन्यायमाला २९७२० ।

अधिकरणन्यायमालासिद्धान्ताः २९२२९ ।

अधिकरणमाला २८८९६, २८९२८, २९३४३, २९६७३ ।

अधिकरणमालानवीनटीका २९६९९ ।

अधिकरणादिनिरूपणम् २९१८८ ।

अध्ययनविधिचर्चा २९१७६ ।

अध्ययनविधिविचारः २९०३० ।

अध्वरमीमांसाकुतूहलवृत्तिः २९६२४—२९६२९ ।

अपत्नीकाधानविचारः २८९०९ ।

अमृतविन्दुटीका २९१७५ ।

अर्थसङ्ग्रहः २८९२०, २८९२९, २८९६६, २८९९१,
२९०००, २९०१३, २९०१४, २९०२६,
२९२८९, २९५४२, २९५४६, २९५९६,
२९६५६—२९६५८, २९६६२, २९७५८,
२९७५१ ।

अर्थसङ्ग्रहटिप्पणम् २९५६३ ।

आलोकः २९५:९ ।

इष्टिकालनिर्णयः २९०४३, २९२०९ ।

उपक्रमपराक्रमः २८९६९, २९४६७, २९७६७ ।

एकशक्तिपक्षश्रेयस्त्ववादः २९४८१ ।

कर्मप्रकाशः २९२८७ ।

काशिका २८९७३, २९०३२, २९६७०, २९७०४ ।

काशिकाटिप्पणी २८९१८ ।

गुणगुण्येकशक्तिवादः २९३९६, २९४०४ ।

चित्रपटी २९१७४, २९१८९, २९३९३ ।

चिन्त्यसङ्ग्रहः २९१७३, २९५५९ ।

जैमिनिन्यायमालाविस्तरः २९०३१, २९०३३,
२९४६८ ।

जैमिनिसूत्रम् २९०६०, २९०९०, २९२०८, २९२६०,
२९२६१, २९२६५—२९२६९, २९२७२,
२९२७३ ।

जैमिनिसूत्रवृत्तिः २८९८०, २८९८१, २९०३९,
२९०४०, २९४६९, २९६१९,
२९६८७ ।

जैमिनिसूत्रव्याख्या २८९१९, २९२३५ ।

जैमिनीयन्यायमालाविस्तरः २८९३५ — २८९३९,
२८९४४, २९००८,
२९२७१, २९३४५ ।

जैमिनीयन्यायमालावृत्तिः २९३२४ ।

जैमिनीयन्यायमाला सटीका २९३७६—२९३७८ ।

ज्ञप्तिप्रामाण्यम् २९१७२ ।

डुष्टीका २९०३६, २९०३८, २९०४१, २९०४२,
२९१६७—२९१७१, २९५४८, २९५५३,
२९५५४ ।

डुष्टीकान्याख्यानम् २९४१७ ।

तत्त्वक्रमलाकरः २८९५७ ।

तन्त्रदर्णम् २९०४८, २९०४९ ।

तन्त्ररत्नम् २९००७, २९१५९—२९१६६, २९२३६,
२९५९७, २९५६०, २९५६६, २९७५८ ।

तन्त्रवार्तिकम् २८९०७, २८९१०, २८९१३, २८९३०,
२८९४६, २९०३७, २९०८६, २९०८९,
२९११७, २९२१०, २९३३७—२९३३९,
२९३५१, २९३५२, २९४७८, २९५७४,
२९५७५—२९५८३, २९५८५, २९५९७,
२९५९८, २९६०३, २९६०४, २९६०६—
२९६१७, २९६२२, २९६३८, २९६३७—
२९६४९, २९६९०, २९६९१ ।

तन्त्रवार्तिकटीका २८९१४, २८९५३ — २८९५५,
२८९६५, २८९६७, २८९७९,
२९०५७, २९०५८, २९१२८—
२९१३७, २९१५८, २९२०१,
२९२११ — २९२१६, २९३१२,
२९३५०, २९३५३, २९४७१—
२९४७३, २९४९३, २९६८२,
२९६०५, २९७०४, २९७१३,
२९७३६ ।

तन्त्रवार्तिकतात्पर्यम् २९०१६ ।

तन्त्रवार्तिकविवरणम् २९४९६ ।

तन्त्रसारः २९१९८ ।

तन्त्रसारसङ्ग्रहः २९५०९ ।

तात्पर्यटीका २९३२३ ।

तौतातितमततिलकम् २९३१८, २९३२२ ।

त्रिकाण्डमण्डनम् २८९२४ ।

दुर्गमग्रन्थयोजना २९०५९ ।

देवतावादार्थः २९२०४ ।

देवतास्वरूपविचारः २९४९९ ।

द्वादशलक्षण्या अर्थसङ्क्षेपः २९५७५ ।

द्वैतनिबन्धः २९४३२ ।

धर्ममीमांसा २९६३४ ।

धर्ममीमांसातरणिः २९६२३ ।

धर्ममीमांसावृत्तिः २९६६८ ।

नयविवेकः २९४३३, २९४३४ ।

नयविवेकटीका २९६५३, २९६५५ ।

नयविवेकदीपिका २९६५१, २९६९३—२९६९५ ।

नायकरत्नम् २९३९१; २९५०६, २९५६२ ।

न्यायचन्द्रिका २९२३३ ।

न्यायप्रकाशटीका २९५८९, २९७३८, २९७५२ ।

न्यायविन्दुः २९४७७, २९४७८, २९५१९, २९५२०,
२९५२२, २९५२३ ।

न्यायमाला २९३९८ ।

न्यायमालाविस्तरः २९३९७, २९३९९,—२९४०३,
२९४०५ — २९४०७, २९४१८,
२९४१९, २९४२१—२९४२५,
२९४२९ — २९४३१, २९४८४,
२९४८६ — २९४८९, २९४९१,
२९४९२, २९४९४, २९४९५ ।

न्यायरत्नमाला २९१३८, २९२३२, २९३७०, २९४७४—
२९४७६, २९५१५, २९५२९, २९५६१ ।

न्यायरत्नमालाटीका २९४५० ।

न्यायरत्नमालान्याख्या २९०२२, २९५६२ ।

न्यायरत्नमालान्याख्यानम् २९३९१ ।

न्यायरत्नाकरः २८९६८, २९१३९, २९१४०, २९३२५ ।

न्यायरहस्यम् २९४९७, २९५१० ।

न्यायसुधा २८९२३, २८९५४, २८९५५, २८९६३,
२८९६५, २९१२८, २९१९३, २९०५८,
२९३५३, २९४८५, २९५९०, २९५९१,
२९५९९, २९६००, २९७११—२९७१४,
२९७३४—२९७३७, २९७३९—२९७४७,
२९७५७, २९७५९ ।

न्यायसुधान्याख्या २९५९३ ।

पर्यनियमाः २९३२६ ।

पापण्ड्यखण्डनम् २९०५५, २९६२१ ।

पिष्टपशुतिरस्करिणी २८९०१, २९५५८ ।

पिष्टपशुनिर्णयः २९३७३ ।

पिष्टपशुमण्डनम् २८८९८ ।

पिष्टपशुमीमांसा २८८९७, २९४२० ।

पिष्टपशुमीमांसाखण्डनखण्डनम् २८८९९ ।

पिष्टपशुयागखण्डनम् २८९०४ ।

पिष्टपशुविचारः २८९०२, २८९०३ ।

पिष्टपशुसरणिः २९५६४ ।

पिष्टपश्विज्ञानिराकृतियादः २८९०० ।

पूर्वमीमांसामतसङ्ग्रहः २९०३५ ।

प्रकरणपञ्चिका २९३७२ ।

प्रकाशः २९०९७, २९५४१, २९५५१ ।

प्रभा २९०४६ ।

प्रभावली २९७००—२९७०३, २९७२४ ।

प्रमाणपरायणम् २९३२७ ।

प्रमेयविचारः २९०४४ ।

प्रामाण्यस्वतस्त्वपरतस्त्वविचारः २९३१९ ।

फलसाङ्ख्यखण्डनम् २९१४१, २९३५४, २९५९५ ।

व्रीहिप्रोक्षणादिविचारः २९०२९ ।

भट्टनयद्योतः २९१८७ ।

भट्टभास्करः २८९२५ ।

भट्टचिन्तामणिः २९५०१ ।

भट्टतन्त्ररहस्यम् २९०४५ ।

भट्टदिनकरः २९१४६—२९१५७, २९४५८—२९४६६,
२९५००—२९५०४, २९५०७, २९५०८ ।भट्टदीपिका २८९३२, २८९८९, २९०१०, २९४७९,
२९४८२, २९४८३, २९४९०, २९४९८,
२९५००, २९५११, २९५७१, २९५७२,
२९५८४, २९५८६, २९६२०, २९६७४,
२९६७५, २९७२४, २९७२५ ।

भट्टदीपिकाटीका २९७००—२९७०३ ।

भट्टभापाप्रकाशिका २९१४५, २९२३४, २९३४४,
२९६५२ ।भट्टभास्करः २९१४३, २९१४४, २९५५७, २९५७३,
२९६६३, २९७१५, २९७१७, २९७२१ ।

भट्टमतप्रदीपः २९६५४ ।

भट्टरहस्यम् २९०९७, २९०९९, २९७६०—२९७६२,

भट्टसिद्धान्तमञ्जरी २९२३० ।

भट्टार्कः २९६१८, २९७१६ ।

भट्टालङ्कारः २९५८६, २९७३८, २९७५२—२९७५५,

भावनाकारिकान्याख्या २९३२८ ।

भावनाविवेकटीका २८९१५, २८९७८ ।

भावनाविवेकः सटीकः २९१४२ ।

भावनाविवेकः सन्याख्यः २९००९ ।

भावनासारसङ्ग्रहः २९०८४ ।

मयूखमालिका २९०४७, २९१९०—२९१९२, २९२७८,
२९६२१ ।

महार्णवप्रभाकरः २८९७७ ।

मासाग्निहोत्रादिवादः २९५६८ ।

मीमांसाकुतूहलम् २८९५७, २९०९२ ।

मीमांसाकौस्तुभः २८९०६, २८९१२, २९०८५,
२९०८८, २९०९१, २९५२४—
२९५२८, २९५३१, २९५३३—
२९५३६ ।

मीमांसाग्रन्थविशेषः २९०१३, २९३४०, २९३४१,
२९३४६, २९३४८, २९३६८,
२९३७४ ।

मीमांसादर्शनं तन्त्रवार्त्तिकसहितम् २९०१० ।

मीमांसादीधितिः २९०६१ ।

मीमांसाधिकरणम् २९३९४ ।

मीमांसाधिकरणकौमुदी २९७६१, २९७६६ ।

मीमांसाधिकरणानुक्रमणिका २९०६१ ।

मीमांसानुक्रमणी २८९०८ ।

मीमांसान्यायप्रकाशः २८९०६, २८९२१, २८९१०—
२८९१२, २९००३, २९००४,
२९०२४, २९०२९, २९०९८,
२९१००, २९३४२, २९६९२,
२९७२८—२९७३३, २९७४८,
२९७४९ ।

मीमांसान्यायसङ्ग्रहः २८९२६, २९३७१, २९४४०,
२९६३० ।

मीमांसापरार्थनिर्णयः २९४८० ।

मीमांसापरिभाषा २९३४७, २९६१०, २९७६३,
२९७६४ ।

मीमांसाबालप्रकाशः २९७२६, २९७२७ ।

मीमांसाभाष्यम् २८९४१, २८९४२, २८९४९,
२८९४७, २८९७४, २८९८४,
२८९८९, २८९९८, २८९९९,
२९०१६, २९०६२, २९०६७,
२९०७१, २९०७८, २९०८३,
२९१०१—२९१०७, २९२२४—
२९२२७ ।

मीमांसाभाष्यवार्त्तिकम् २८९८६—२८९८८ ।

मीमांसारत्नम् २९३१६, २९४२६ ।

मीमांसारसपत्न्यलम् २९४४९ ।

मीमांसार्थसङ्ग्रहकौमुदी २९७१६ ।

मीमांसावार्त्तिकम् २९०६३, २९०६४, २९०६६,
२९१९९, २९२००, २९२१७—
२९२२३, २९३३६, २९३३६ ।

मीमांसावार्त्तिकव्याख्या २९१८३ ।

मीमांसावार्त्तिकाभरणम् २९३९२, २९४१७, २९७७० ।

मीमांसाविधिभूषणम् २९३९०, २९४२७ ।

मीमांसाश्लोकवार्त्तिकम् २९१८४ ।

मीमांसासारः २९०७१, २९५२१ ।

मीमांसासारसङ्ग्रहः २९६३२ ।

मीमांसासिद्धान्तसर्वस्वम् २९३८९ ।

मीमांसासूत्रम् २८९६९, २९१२२ ।

मीमांसासूत्रं सभाष्यम् २९०७०, २९०७२, २९०७९—
२९०८२, २९१०८—२९११८,
२९१२३—२९१२७, २९३०३,
२९३९१ ।

मीमांसासूत्रं सव्याख्यानम् २८९१८ ।

मीमांसासूत्रटीका २८९३४ ।

मीमांसासूत्रदीधितिः २८९६०, २८९७९, २९१२१,
२९६१२, २९६१३, २९६१७,
२९६१८ ।

मीमांसासूत्रभाष्यव्याख्या २९३२९ ।

मीमांसासूत्रवृत्तिः २९०२८, २९१८६, २९६८८ ।

मीमांसासूत्रव्याख्या २८९८३, २९६८९, २९६८६ ।

मीमांसास्तवकम् २९३७१ ।

यज्ञपशुमीमांसा २९३८८, २९४१६ ।

यागवर्णनम् २९२३९ ।

यागाधिकारनिर्णयः २९२३८।

राणकम् २८९२२, २८९६३—२८९६५, ९८९६७,
२९१८०, २९१८२।

राणकफक्त्रिकाव्याख्या २९५६०।

राणकश्लोकव्याख्या २८९२७।

लघुचिन्तनम् २८९७२।

लघुन्यायसुधा २९५१४, २९५१६।

लघुवार्त्तिकम् २८९११।

लघुवार्त्तिकटीका २९५१४, २९५१६, २९६०१।

वाक्यभेदः २९०६९।

वाक्यभेदवादः २९३३०।

वाक्यार्थबोधः २९०५२।

वाक्यार्थव्याख्यानम् २९०५१।

वाजपेय्यरहस्यम् २९३५७।

वादोद्योतः २९२३१।

वार्त्तिकयोजना २९५६९।

विकृतिबोधककाण्डविचारः २९२३७।

विधिनिर्णयः २८९९०।

विधिनिषेधवाक्यशास्त्रत्वविचारः २८९१७।

विधिभूषणम् २८९६१।

विधिरत्नसमुच्चयः २९१२०।

विधिरसायनम् २८९५६, २८९९२, २९३३१,
२९३५६, २९७२२, २९७२३,
२९७६८, २९७६९।

विधिरसायनदूषणम् २९०६८, २९२०२, २९३३२।

विधिरसायनं सटीकम् २९०७६,

विधिवादः २९३३३, २९७१८।

विधिविवेकः २९११९।

विधिविवेकटीका २९०४७।

विधेरपूर्वबोधकताविचारः २८९१६।

विष्णुजैमिनिसाम्यनिर्णयः २९२०६।

शावरभाष्यम् २८९३१, २९००१, २९२४०—२९२५९,
२९२६२—२९२३४, २९३०४—२९३११,
२९३१३—२९३१७, २९३५८—२९३६६,
२९३७९—२९३८७।

शावरभाष्यवार्त्तिकम् २९००२।

शावरभाष्यव्याख्या २९५५६।

शास्त्रदीपिका २८९३३, २८९४०, २८९४३, २८९४८,
२८९४९, २८९७६, २८९८२, २८९९२—
२८९९७, २९०११, २९०१२, २९०१७—
२९०२१, २९०२३, २९०२७, २९०७३,
२९०७४, २९०९३—२९०९६, २९१८५,
२९१९४—२९१९६, २९२७०, २९२८०—
२९२८६, २९२८८, २९२९१—२९२९३,
२९३००—२९३०२, २९३२०, २९३४९,
२९३६७, २९३६९, २९४०८—२९४१५,
२९४२८, २९४३५—२९४४१, २९४४३—
२९४४८, २९४५१—२९४५७, २९६६९—
२९६७२।

शास्त्रदीपिकाटीका २९०८७, २९१८१, २९२२८,
२९२७५—२९२७९, २९२९४—
२९२९९, २९३३९—२९५४१,
२९५६७, २९५८७, २९५८८,
२९६२१, २९६३२, २९६३३,
२९६७८—२९६८२, २९७१९।

शास्त्रदीपिकाप्रकाशः २९५४३—२९५४५, २९५४७।

शास्त्रदीपिकालोकः २९५३७, २९५३८।

शास्त्रदीपिकाव्याख्या २९००५, २९००६, २९०१६,
२९०३४, २९०४६, २९०४७,
२९०५४, २९१९०—२९१९२,
२९५४९—२९५५२, २९६५९—
२९१६१, २९६६४—२९६६७,
२९६९६—२९६९८।

शास्त्रदीपिका सटीका २९२७४, २९६७६, २९६७७,
२९६८३, २९६८४ ।

श्लोकवार्त्तिकम् २९६३१, २९६३५, २९६३६,
२९६८९ ।

शास्त्रमालावृत्तिः २९१७९, २९२०३, २९२०५,
२९३३४, २९७०६ — २९७०९ ।

श्लोकवार्त्तिकटीका २८९६८, २८९७३, २९०३२,
२९३२५, २९५७८, २९७१० ।

श्रवणविधिविचारः २९५९४ ।

हिसार्थवादः २९५९२ ।

सप्तमभागोल्लिखितसाङ्ख्ययोगग्रन्थानामक्षरानुक्रमणिका

अगस्त्यसंहिता ३००७१ ।
 अजपाविधिः ३०००३ ।
 अद्वैतानुभूतिः २९९८१ ।
 अध्यात्मविद्या २९८८९ ।
 अध्यात्मशास्त्रम् ३००८१ ।
 अमनस्कयोगशास्त्रम् २९८०२, २९८९७, २९९०२,
 ३००६८, ३०१०६, ३०१११ ।
 अमनस्कयोगशास्त्रं सटीकम् २९९९१ ।
 अवधूतगीता ३०१२१ ।
 अष्टाङ्गयोगनिरूपणम् २९७९८ ।
 अष्टाङ्गयोगः सटीकः २९८६२, २९८६४ ।
 आत्मबोधप्रकाशः २९८६१ ।
 आध्यात्मिकयोगः २९८६९ ।
 आसनमुद्रादिनिरूपणम् ३०११४ ।
 आसनलक्षणम् ३०१०८ ।
 आसनानि २९८९३ ।
 कपिलसूत्रवृत्तिः २९८४९ ।
 कलातरङ्गः २९८६७ ।
 क्रमदीपिका ३०११३ ।
 गुरुशतनामस्तोत्रम् २९८५७ ।
 गोरक्षचन्द्रिका ३००६२ ।
 गोरक्षशतकम् २९८११, २९८१२, २९८१७, २९८१८,
 २९९३६, २९९५०, २९९८०, २९९८०-
 २९९८४, २९९८६, ३००६१, ३००६५,
 ३०१२८ ।

गोरक्षसंहिता ३००९० ।
 घेरण्डसंहिता २९८७०, २९९४४, २९९८७, ३०००३,
 ३००१२, ३०१२१ ।
 छायापुरुषलक्षणम् २९८७७ ।
 ज्ञानप्रकाशशतकम् २९९८९ ।
 ज्ञानशङ्करी २९८८४ ।
 ज्ञानशङ्कली २९८८६, ३००८८, ३००८९, ३००९३ ।
 तत्त्वमीमांसा २९८२२, २९८२३ ।
 तत्त्वयाध्याध्ययदीपनम् २९७७२, २९७७९, ३००७८ ।
 तत्त्वयोगविन्दुः ३००१९ ।
 तत्त्वसमांसः २९७८३, २९७८८—२९७९०, २९९१० ।
 तत्त्वसमाससाङ्ख्यसूत्रवृत्तिः ३००८३ ।
 तत्त्वार्णवप्रकाशः २९९७१ ।
 तारावली २९८८३ ।
 ध्यानशतकम् २९९९९ ।
 नरचक्रम् २९८९९, २९८६० ।
 नाडीचक्रम् २९८७९, २९९४९ ।
 पञ्चब्रह्मविवरणम् २९८८८ ।
 पञ्चविंशतितत्त्वज्ञानम् २९९४९ ।
 पतञ्जलिरहस्यम् २९८०३ ।
 पवनविजयः २९८०४, २९८०६, २९९७९, ३०००६,
 ३००१६, ३००२७, ३००२८, ३००३३,
 ३००३४ ।
 पातञ्जलभाष्यवाचिकम् २९८७१, २९९०९ ।

पातञ्जलभाष्यव्याख्या २९९१९ ।
 पातञ्जलयोगसूत्रम् २९८६८ ।
 पातञ्जलयोगसूत्रं सभाष्यम् २९८७२ ।
 पातञ्जलयोगसूत्रवृत्तिः २९९९० ।
 पातञ्जलसूत्रविवरणम् २९८९४ ।
 पिण्डब्रह्माण्डज्ञानम् २९८७८ ।
 प्रधानकर्तृत्वनिरूपणम् २९८९८ ।
 प्रश्नोत्तरम् २९८८२ ।
 प्राकृतप्राज्ञापत्यसूत्रम् २९९१८, ३००४९ ।
 प्राणादिकृत्यम् २९८८७ ।
 प्राणायामप्रशंसा २९८७६ ।
 ब्रह्मविद्भूमिकाभेदः २९८६३ ।
 भिक्षुभाष्यसारसङ्ग्रहः ३०१३४ ।
 महादेवस्तोत्रम् २९८७९ ।
 मुक्तानुभवः ३००९९ ।
 मुक्तिसोपानम् २९९९२, २९९९१, २९९९४ ।
 योगक्रमदीपिका २९९४२ ।
 योगक्रिया ३०११८ ।
 योगचिन्तामणिः ३००९९, ३००९३, ३००६२, ३००७९ ।
 योगतारावली २९८६६, २९९१६ ।
 योगनिरूपणम् ३००९४ ।
 योगपदार्थसङ्ग्रहः ३०००३ ।
 योगमहिमा २९८९४ ।
 योगविचारः ३००९७ ।
 योगविधिः २९९२० ।

योगविवरणम् २९९९४ ।
 योगविवेचनम् ३०१२९ ।
 योगशास्त्रम् ३०१२४, ३०१२९ ।
 योगशिखा २९८९६ ।
 योगसङ्ग्रहः ३००२० ।
 योगसाधना २९८४९ ।
 योगसारः २९८९० ।
 योगसारसङ्ग्रहः २९८९९, ३०००९ ।
 योगसारसमुच्चयः २९८७८, ३००६६ ।
 योगसिद्धान्तसङ्ग्रहः ३००९८ ।
 योगसिद्धिः २९८९२ ।
 योगसूत्रम् २९८२६, २९८३९, २९८७७, २९९००, २९९०७, २९९२२, २९९३९, २९९४७, ३००४३-३००४९, ३००४७, ३०१३३ ।
 योगसूत्रं कारिकासहितम् २९९९३ ।
 योगसूत्रं सटीकम् २९८२७, २९९०४, २९९१६, २९९४०, ३००९७ ।
 योगसूत्रं सभाष्यम् २९८०७, २९८०८, २९८१४, २९८१९, २९८१९, २९९२७, ३००९६ ।
 योगसूत्रं सभाष्यम् भाष्यटीकाच २९९०६, ३००४२ ।
 योगसूत्रं सभाष्यवार्त्तिकम् ३००७० ।
 योगसूत्रं सवृत्तिकम् २९८००, २९८०१, २९८९६, २९९०९, २९९०८, २९९३१, २९९४३, २९९९२, ३००००, ३०००२, ३०००८, ३००१०, ३००२२, ३००९१, ३०१०१, ३०१३१, ३०१३२ ।

योगसूत्रं सव्याख्यम् २९८३९, २९९२८, २९९३३,
३०१३५ ।

योगसूत्रभाष्यम् २९८१६, २९९२९, २९९३० ।

योगसूत्रभाष्यव्याख्या ३००४१, ३०१०६, ३०१०७ ।

योगसूत्रवृत्तिः २९७९२, २९७९४, २९७९५, २९७९९,
२९८३६-२९८३८, २९८४०-२९८४२,
२९९४१ ।

योगसूत्रव्याख्या २९९३२ ।

योगानुशासनम् २९८८१ ।

योगाभ्यासक्रमः ३०११० ।

योगार्णवः ३००८६, ३००८७ ।

योगासनवन्धविधिः २९८५७ ।

योगिलक्षणावली ३००८० ।

लघुवासिष्ठम् ३००२१ ।

लघुसाङ्ख्यवृत्तिः ३०१३४ ।

लघुसाङ्ख्यसूत्रवृत्तिः २९७८१, २९७८२ ।

वाक्यवृत्तिः २९९१७ ।

वाचस्पतिसंहिता २९९१४ ।

वासिष्ठसंहिता २९९३९ ।

शिवसंहिता २९८९५, २९९२१, ३००६३ ।

पट्कर्मविधिः ३०११७ ।

सङ्क्षिप्तकापिलसूत्रवृत्तिः २९९२३ ।

सप्तज्ञानभूमिकाकथनम् २९८९० ।

सप्तभूमिका २९८८८ ।

सप्तभूमिकानिरूपणम् २९८९१ ।

सप्तभूमिकाविचारः २९८८९ ।

सम्यग्दर्शनयोगः ३००१७ ।

साङ्ख्यकारिका २९८२८, २९८२९, २९८३१,
२९८३३, २९८३४, २९९०३,
२९९५३, २९९५५ — २९९६८,
२९९६३ — २९९६६, २९९७२-
२९९७८, २९९८८, २९९८९,
२९९९५ — २९९९८, ३००११,
३००६०, ३०१००, ३०१२६ ।

साङ्ख्यकारिका सटीका २९७७४, २९८२४, २९८३२,
२९८९८, २९९५४, २९९६१,
२९९६२, २९९६७, २९९६८,
२९९७०, ३००१३, ३००२४,
३००८५, ३००९५, ३००९८,
३००९९, ३०१०२, ३०११२ ।

साङ्ख्यकारिका सभाष्या २९७९३ ।

साङ्ख्यकारिका सव्याख्या २९९११, ३००५३,
३००७४, ३०११५,
३०१२७ ।

साङ्ख्यतत्त्वकौमुदी २९७७१, ३०००५, ३०१८,
३००७५ ।

साङ्ख्यतत्त्वकौमुदीटीका २९७७६ ।

साङ्ख्यतत्त्वकौमुदीव्याख्या २९९७१, ३०१०३ ।

साङ्ख्यतत्त्वकौमुदी सटीका २९७७३ ।

साङ्ख्यतत्त्वप्रदीपः २९८२०, २९८२१ ।

साङ्ख्यतत्त्वप्रदीपिका २९८२५ ।

साङ्ख्यतत्त्वविधेचनम् २९८४३, २९८४६ ।

साङ्ख्यपरिभाषा ३००४६ ।

साङ्ख्यपरिभाषास्वानुभवः ३०१३७ ।

साङ्ख्यप्रवचनभाष्यम् २९७७७, २९७७८, २९७८४,
२९७८५ ।

साङ्ख्यप्रवचनवृत्तिसारः २९७८६, २९७८७ ।

साङ्ख्यसारः २९७८०, २९८१३, २९८४७, २९९२४,
२९९३४ ।

साङ्ख्यसूत्रं सभाष्यम् २९८०९, २९८१०, ३००२६ ।

साङ्ख्यसूत्रं सवृत्तिकम् ३००२३, ३००७६ ।

साङ्ख्यसूत्रक्रमदीपिका २९९१३, २९९४६, ३००३२,
३००६७ ।

साङ्ख्यसूत्रप्रक्षेपिका ३०११३ ।

साङ्ख्यसूत्रविवरणम् २९८३०, २९८४४, २९९२५,
२९९२६, २९९६९, ३००७२ ।

साङ्ख्यार्थतत्त्वप्रदीपिका ३००४८ ।

साङ्ख्यालङ्कारः ३००६७ ।

सिद्धसिद्धान्तपद्धतिः २९९०१, ३०००७ ।

सिद्धसिद्धान्तसङ्ग्रहः ३०००५ ।

स्वयम्योधः ३०१०५, ३०१११ ।

स्वरोदयः २९७९७, २९८०५, ३०००६, ३००१६,
३००३५—३००३७, ३००३९, ३००४०,
३००८४, ३०१३० ।

स्वरोदयः सटीकः ३००३८, ३०११६ ।

स्वरोदयविवरणम् २९९१२ ।

स्वानुभूतिः २९८९१ ।

हठतत्त्वकौमुदी २९८५३ ।

हठदीपिका २९८७४ ।

हठप्रदीपः ३००१५ ।

हठप्रदीपिका २९७७५, २९७९१, २९७९६, २९८६९,
२९९३७, २९९३८, २९९९१, ३००१४,
३००२९—३००३१, ३००५०—३००५३,
३००६४, ३००६९, ३००७७, ३००९४,
३०१०४, ३०१०९, ३०११०, ३०११९,
३०१२०, ३०१२२, ३०१२३, ३०१२८,
३०१३६ ।

हठप्रदीपिका सटीका ३०००१, ३००२०, ३००८२ ।

हठयोगः २९८९३, ३०१०८ ।

हठयोगप्रदीपिका २९८९९ ।

हठयोगविचारः २९८७३ ।

हठसङ्केतचन्द्रिका २९८५१, २९८५२, २९९४८ ।

हरिहरसंवादः २९८६१ ।

| अशुद्धम् | शुद्धम् | क्रमसंख्या | स्तम्भे |
|---|--------------------------------|------------|---------|
| २ | ३ | २६६९७ | ४ |
| २६७३७ | २६७३७ | २६७३७ | १ |
| X | * | २६७६९ | ११ |
| X | * | २६८१२ | ११ |
| X | * | २६८१३ | ११ |
| २६७४१ | २६८४१ | २६८४१ | १ |
| अद्वैतसिद्धिटीका सारचन्द्रिका | सारचन्द्रिकाख्या | २६९९९ | १२ |
| पञ्चीकरणं सटीकम् | पञ्चीकरणवार्त्तिकं सटीकम् | २६९७९ | २ |
| ७७०२० | २७०२० | २७०२० | १ |
| २२ । (गणतया) | २२ | २७०८३ | ४ |
| शारीरकभाष्यव्याख्या | शारीरकमीमांसाभाष्यव्याख्या | २७१३३ | २ |
| शारीरकभाष्यटीका | शारीरकमीमांसाभाष्यटीका | २७१३४ | २ |
| शारीरकभाष्यम् | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | २७१९० | २ |
| तत्त्वविन्दुः | तत्त्वविन्दुः | २७३१८ | २ |
| वाक्यसुधा | वाक्यसुधा सभाष्या | २७३६५ | २ |
| सभाष्या | X | २७३६५ | १२ |
| श्रुतिपुराणरहस्यतात्पर्यम् | नृसिंहविज्ञापना | २७३७० | २ |
| पञ्चदशीविवरणम् | पञ्चदशी | २७३८० | २ |
| " (= पू०) | अपू० | २७४२१ | ११ |
| भेदधिकार | भेदधिकारः सटीकः | २७४४३ | २ |
| " | पू० | २७४४७ | ११ |
| ब्रह्मसूत्रम् | ब्रह्मसूत्रम् | २७४७४ | २ |
| शारीरकभाष्यं सव्याख्यम् | शारीरकमीमांसाभाष्यं सव्याख्यम् | २७४८३ | २ |
| १-९० | १९० | २७५०६ | ४ |
| " | " | २७५०६ | ११ |
| " (पञ्चीकरणवार्त्तिकं सटीकम्) | पञ्चीकरणवार्त्तिकम् | २७५१० | २ |
| ११ गणतया | १-८, | २७५७३ | ४ |
| पू० | अपू० | २७५७३ | ११ |
| " | " | २७५८७ | ११ |
| " (= पू०) | अपू० | २७५९९ | ११ |
| " | पू० | २७६०० | ११ |
| शारीरकमीमांसाभाष्य- व्याख्याव्याख्या | शारीरकमीमांसाभाष्यव्याख्या | २७६४० | १२ |
| " (= पू०) | अपू० | २७६४२ | ११ |
| " | पू० | २७६४३ | ११ |
| २६७५२ | २७६५२ | २७६५२ | १ |
| X | शारीरकमीमांसाभाष्यटीका | २७६९९ | १२ |
| शारीरकमीमांसाभाष्यटीका | X | २७७०० | १२ |
| उपदेशसाहस्री | उपदेशसाहस्री | २७७०८ | २ |

| अशुद्धम् | शुद्धम् | क्रमसंख्या | स्तम्भे |
|-----------------------------------|-----------------------------------|------------|---------|
| प्रत्यक्स्वरूपः | प्रत्यक्स्वरूपः | २७७२३ | ३ |
| पू० | पू० ❀ | २७७२५ | ११ |
| शारीरकभाष्यव्याख्यानम् | शारीरकमीमांसाभाष्यव्याख्यानम् | २७७४६ | २ |
| अप्यप्यदीक्षितः | अप्यप्यदीक्षितः | २७७७१ | ३ |
| " | " ❀ | २७७९३ | ११ |
| पू० | पू० ❀ | २७८०८ | ११ |
| २ | २-५, ११-३८ | २७८२२ | ४ |
| " | " ❀ | २७८६५ | ११ |
| " (= पू०) | अपू० | २७८९८ | ११ |
| " | पू० | २७९०० | ११ |
| " | " ❀ | २७९०९ | ११ |
| × | पोडशावाक्यानि च | २७९५२ | १२ |
| × | " | २७९५३ | १२ |
| × | " | २७९५४ | १२ |
| २-९ | १-९, १-७, १-७, १-७, २-९ | २७९६३ | ४ |
| १-४ | १-४, १-६, १-९ | २७९६४ | ४ |
| १-८ | १-८, १-६ | २७९६५ | ४ |
| × | कैवल्यकल्पद्रुमाख्या | २७९८५ | १२ |
| " | " ❀ | २८००४ | ११ |
| " | " ❀ | २८००७ | ११ |
| २८२१९ | २८०१९ | २८०१९ | १ |
| तत्त्वप्रकाशिकाभावबोधः | तत्त्वप्रकाशिकाभावबोधः | २८०२२ | २ |
| " (= पञ्चदशीटीका) | पञ्चदशी सटीका | २८०४५ | २ |
| पू० | पू० ❀ | २८१५६ | ११ |
| शारीरकभाष्यम् | शारीरकमीमांसाभाष्यम् | २८१५७ | २ |
| " | " | २८१८८ | २ |
| " | " | २८२०७ | २ |
| शुकजनकसम्वादरूपा | शुकजनकसंवादरूपा | २८२६१ | १२ |
| " | " ❀ | २८३३१ | ११ |
| ६-१०७ | ६-१०..... | २८३९८ | ४ |
| " (= पू०) | अपू० | " | ११ |
| १-१२ | १-११२ | २८४१९ | ४ |
| वेदान्तकल्पतरुः | वेदान्तकल्पतरुः | २८४३२ | २ |
| वेणीदत्ततर्कवागीश | वेणीदत्ततर्कवागीशः | २८४४९ | ३ |
| वेणीदत्ततर्कवागीशः | वेणीदत्ततर्कवागीशः | २८४५१ | ३ |
| " (= पू०) | अपू० | २८४७७ | ११ |
| तत्त्वविन्दुः | तत्त्वविन्दुः | २८५३६ | २ |
| ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यसारसङ्ग्रहः | ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यसारसङ्ग्रहः | २८६१६ | २ |
| सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहः सटीकः | सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहः सटीकः | २८६१७ | २ |

| अशुद्धम् | शुद्धम् | क्रमसंख्या | स्तम्भे |
|-------------------|-------------------|------------|---------|
| टि० का० | टी० का० | २८६३५ | ३ |
| तत्त्वबोधः | तत्त्वबोधः | २८६८३ | २ |
| उपदेशसाहस्री | उपदेशसाहस्री | २८६८५ | २ |
| तत्त्वानुसन्धानम् | तत्त्वानुसन्धानम् | २८६९३ | २ |
| × | ब्रह्माभूतवर्षिणी | २८६९६ | १२ |
| वेदान्तपरिभाषा | वेदान्तपरिभाषा | २८७९५ | २ |
| शठकोपदासः | शठकोपदासः | २८८७९ | ३ |

मीमांसाग्रन्थानां शुद्धिपत्रम्

| | | | |
|-------------|---|-------|----|
| × | म. म. परितोपमिश्रः | २८९५३ | ३ |
| × | अजितानात्रीटीका | " | १२ |
| × | न्यायसुधेतिनामान्तरम् | २८९५५ | १२ |
| × | १६९५ | २८९५७ | १० |
| × | श० | २८९६२ | १० |
| ५३७ | ४२५ | २९००७ | ४ |
| ४५-४८ | ४५-४९ | २९-४१ | ४ |
| अपू० | पू० | २९०८० | ११ |
| २८०९३ | २९०९३ | २९०९३ | १ |
| ३०-४५ | ३०-४८ | २९१११ | ४ |
| १-२४, २६-५४ | १-२४ = (२५)-२६ = (२७)-५४ | २९१५४ | ४ |
| ४१-६२ | ४१-४६ | २९२०५ | ४ |
| १-२२ | १-२६ | २९२१९ | ४ |
| १७३४ | × | २९२३२ | १० |
| १-४८ | ३-४८ | २९२३६ | ४ |
| १-८८ | १-९, ९, १०, १०-२८, २२-८८ | २९२८० | ४ |
| १-२४ | १-१९, २३-२४ | २९२८१ | ४ |
| १-१२४ | १-२८, २२-३०, ३९-४७, ४९-५१, ५३-८७, ८९-१०३, १०६-११५, १२०-१२४ | २९२८३ | ४ |
| कर्मप्रकाशः | कर्मनिर्णयटीका | २९२८७ | २ |
| × | कर्मप्रकाशाख्या | २९२८७ | १२ |
| ४२९ | ३६९ | २९२९५ | ४ |
| ३६-९२ | २६-९२ | २९३०२ | ४ |
| १-७१ | १-७, ११, १६, १९-२८, ४८, ५२-६०, ६५-७१ | २९३०४ | ४ |
| १-१९४ | १-११२, ११३ = (११४) ११५-१९४ | २९३०५ | ४ |
| × | १७०८ | २९३१३ | १० |
| २-१० | २-११ | २९३१४ | ४ |

| अशुद्धम् | शुद्धम् | क्रमसंख्या | स्तम्भे |
|----------------------------|--|------------|---------|
| २-४७ | २-४७, ४९-९७ | २९५६६ | ४ |
| ४-२६ | ४-१७, २०-२६ | २९५८० | ४ |
| १-३४० | १-३४० पृ० | २९५९० | ४ |
| १-१७ | २-१७ | २९५९२ | ४ |
| १-४१४ | १-४१४ पृ० | २९५९९ | ४ |
| २-३१ | २-३०, ३२ | २९६०१ | ४ |
| १-९७४, ९७७-१४८५ | १-९७४, ९७७-१४८५ पृ० | २९६१९ | ४ |
| २-७८, ८०-१११, ११३... | २-७८ (= ७९) ८०-११०, ११२-११३... | २९६२७ | ४ |
| १७-४३ | १५, १८-४१, ४५-४६ | २९६३० | ४ |
| दे.ना. | वङ्ग | २९६३४ | ८ |
| ११-१३, ३०-३२ | १०-१३, ३०, ३२ | " | ४ |
| ३३-५४ | १-२० (= २१) २२-२४, २४-६९, ७३-८५, ८५-११६ | २९६३७ | ४ |
| ५१-७३ | ५६-७३ | २९६५३ | ४ |
| ७४-९२ | ७५-९२ | २९६५५ | ४ |
| ३३-३४ | १३३-१३४ | २९६६५ | ४ |
| १-२६...१-३८४ | १-२६...१-३८४ पृ० | २९६७५ | ४ |
| १-७७, १-२, ६-५० | १-७९, ६-५७ | २९६८३ | ४ |
| ३५-४५ | ३५-५४ | २९६८५ | ४ |
| १२-१३, २८-५४ | १२-१३, २८-५४, ६७-१०७ | २९६९१ | ४ |
| २-८२ | २-८३ | २९६९२ | ४ |
| १-३४० | ५५५-८९४ | २९६९५ | ४ |
| ५१-५६, १-२१ | ५१-७७, | २९७०० | ४ |
| १-३१ (= ३२) | २-३१ (= ३२) | २९७०२ | ४ |
| ५३ गणनया | ९१ गणनया | २९७०३ | ४ |
| २२-९९ | २-९९ | २९७०६ | ४ |
| ...१३२-२०१...२१७-२२४, | ...१३२-१३८, १४०-२०१... | २९७०९ | ४ |
| २२६-२४९ | २१७-२४९ | | |
| १-२३, २३-२२९, १-२४० | १-२५, २४-२२८, १-१५० (१५० क-च) १५१-२४० | २९७१३ | ४ |
| १-७२ | ३-७२ | २९७२२ | ४ |
| १-३८१ | १-३८१ पृ० | २९७२३ | ४ |
| २-८, १२, १५-४७, ४७-६१, ६३, | १५-४६, ४६-४९, ४९-६१, ६३, | २९७२४ | ४ |
| ६३-७१, ७४-८३, २, ४-१६, | ६३-७१, ७४-८३, २, ४-१६, | | |
| १८-३०, १-२७, ३०-३५, | १८-३०, १-६, ६-२७, ३०-३५ | | |
| १-३८० | १-३८० पृ० | २९७२७ | ४ |
| १-१७ | १-७ | २९७३२ | ४ |

| अशुद्धम् | शुद्धम् | क्रमसंख्या | स्तम्भे |
|----------|---------|------------|---------|
| १८७८ | १८६४ | ३००५९ | १० |
| १८६४ | × | ३००६० | १० |
| × | १८५० | ३००६२ | १० |
| १८५० | १८०५ | ३००६३ | १० |
| १८०५ | १८४४ | ३००६४ | १० |
| १८४४ | १८९२ | ३००६५ | १० |
| १८९२ | × | ३००६६ | १० |
| × | १७०७ | ३००६९ | १० |
| १७०७ | × | ३००७० | १० |